"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૫૬

પ્રાકૃત પ્રકાશ સટીક

: દ્રવ્ય સહાયક :

કચ્છવાગડ દેશોદ્ધારક અધ્યાત્મયોગી
પૂ. આ. શ્રી વિજય કલાપૂર્ણસૂરીશ્વરજી મ.સા. શિષ્યરત્ન
પૂ. આ. શ્રી મુક્તિચન્દ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા. તથા
પૂ. આ. શ્રી મુનિચન્દ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી
શ્રી સામખીયારી જૈન સંઘ- સામખીયારીના
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रमांक	पुस्तकनुं नाम	कर्त्ता-टीकाकार-संपादक	पृष्ठ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	824
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	288
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	520
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	578
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	278
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	252
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	324
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची । *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

॥ श्रीः ॥

प्राकृतप्रकाशः ।

भामहकृतः ।

श्रीमद्वररुचिप्रणीतप्राकृतसूत्रसहितः ।

स च डबरालोपाह्वेन उदयरामशास्त्रिणा

संशोधितः ।

टिप्पण्या च संयोजितः ।

सेठ श्रीहरिदासात्मजेन-जयकृष्णदास गुप्तेन

स्वकीय--

विद्याविलासनाम्नि यन्त्रालये मुद्रयित्वा

प्रकाशितः ।

—:o:—

PRAKRIT-PRAKASH

BY

BHÂMAHA

A commentary on Bararuchis

Prakrit Sutras

Edited By Pandit Udaiya Ram

Shastree Dabral.

Printed by Jaykrishna Dass Gupta,

at the Vidya Vilas Press

Benares.

1920

Aho ! Shrutgyanam

श्रीविश्वनाथः शरणम् ।

प्रास्ताविकम् ।

श्रीमद्वाग्देवताऽनुरञ्जन विमलमतीनां प्रेक्षावतां सुविदितमेवै-तद् धर्मार्थकाममोक्षाणांचतुर्णांवर्गप्राप्तय एव यतितव्यम् सर्वैः । तत्प्राप्त्युपायाश्चबहवोऽसंख्यैः प्रबन्धैः प्रतिपादिता अपि मृदु बु-द्धीनां क्रीडनैकमनोऽनुरागिणाम् न तथोपकर्तुं शक्ता यथादृश्य-काव्यानि—तानि हि ह्लादति दर्शनमात्रेणैवानन्दसन्दोह जनकानि सदुपदेशं ग्राहयन्ति । तदुक्तम् नाट्या ऽऽचार्येण श्रीमताभरत मुनिना नाट्यशास्त्रे प्रथमे ऽध्याये—

ब्रह्मो वाच "सर्वशास्त्रार्थ सम्पन्नं सर्वशिष्य प्रवर्तकम् ।
नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम् ॥ १५ ॥

पुनश्च तत्रैव ब्रह्मणोदैत्यसान्त्वनावसरे—

"भवतां देवतानां च शुभाशुभ विकल्पकैः ।
कर्म भावान्वयापेक्षी नाट्यवेदोमयाकृतः ॥ ७२ ॥
नैकान्ततो ऽत्र भवतां देवानां चापि भावनम् ।
त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्य भावानुकीर्तनम् ॥ ७३ ॥
धर्मा धर्मप्रवृत्तानां कामाः कामार्थसेविनाम् ।
निग्रहं दुर्विनीतानां मत्तानां दमन क्रिया ॥ ७५ ॥
देवाना मसुराणां च राज्ये लोकस्य चैव हि ।
महर्षीणां च विज्ञेयं नाट्यं वृत्तान्त दर्शकम् ॥ ८४ ॥
धर्म्यं यशस्य मायुष्यं हितं बुद्धि विवर्द्धनम् ।
लोको पदेशजननं नाट्य मेतद्भविष्यति ॥ ८६ ॥

इति ।

तानिच संस्कृतमयानि प्राकृतमयानि च भवन्ति; तदाह मुनिः—

"नानादेश समुत्थं हि काव्यं भवति नाटके " इति ।

तत्र संस्कृत भाषापरिज्ञानं पाणिनीयादिव्याकरणेन, प्राकृत ज्ञा-नायच वररुच्यादीनां प्रयत्नः । तच्च किमिति कुशीलवाधीनमेव । वयन्तु आचार्याणां वचनोपन्यासेनैवोदाहरामहे—

अत्र मुनिः—

"एतदेव विपर्यस्तं संस्कार गुणवर्जितम् ।
विज्ञेयं प्राकृतं पाठ्यं नानावस्थान्तरात्मकम् ॥ अ १७ ॥
श्लो० २ ॥ तथा च वाक्यपदीये भर्तृ हरिः—

Aho ! Shrutgyanam

दैवी वाक् व्यवकीर्णेय मशक्तै रभिधातृभिः । इति ।

कथमिय मशक्तिरिति तु न प्रयत्नावगम्यम् ।

"अम्बम्बेति यथाबालः शिक्षमाणः प्रभाषत ।"

इत्यादिरीत्या देश काल भेदेनैव प्रतीमहे ॥

वङ्गमध्यपञ्चालादिदेशजानां परस्पर मेकस्यैव शब्दस्य उच्चारणको महानुच्चारण भेद एव विप्रतिपन्नानां तुष्टिदो भविष्यति ।

हेमोऽपि–प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् । इति ।

तथाच गीतगोविन्दे रसिकसर्वस्वः—

"सँस्कृतात्प्राकृतम् इष्टं ततो ऽपभ्रंशभाषणम्" इति शाकुन्तलायां शङ्करोऽपि संस्कृतात्प्राकृतं श्रेष्ठं ततो ऽपभ्रंश भाषणम् इति प्रमाणत्वेनोदाजहार–संस्कृताद् श्रेष्ठं प्राकृतं जातम् ततोऽपभ्रंशः ।

केचित्तु प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धम् प्राकृतम् । ततश्च वैयाकरणैः साधितं हि संस्कृत मित्यभिधीयते । अतो न सँस्कृतमूलकम् प्राकृतम् । प्रत्युत प्राकृत मूलकमेव संस्कृतम् । इत्याहुः ।

अपरेतु वेदमूलकमिदम् । त्तनत्वनादिप्रत्ययानाम्, अम्हे अस्मे आदि पदानां, लिङ्ग वचन विभक्त्यादीनाञ्च वैदिकैः प्रयोगैः साम्यदर्शनात् । एतन्मूलकं च संस्कृतम् । इति वदन्ति ।

साम्प्रदायिकै स्तूभयमपि नाद्रियते–यदि स्वभावसिद्धम् प्राकृतम्, तर्हि कोऽसौ स्वभावः कीदृशश्च येनेदृगेव भाषणं स्यात् । किं समेवतश्च । जनसमवेतश्चेद् "दैवीवाग् व्यवकीर्णेय" मित्यस्मदभिमतपक्षपातः । पारमेश्वरे तु स्वभावे वैरूप्यं नोपपद्यते–नह्यग्नौ शैत्यं क्वचिदपिकदाप्युपलभ्यते । एवम् तत्तद्भाषाभेदः सुतरांनोपपद्यते ।

सर्वासामेव भिन्नानामपि पारमेश्वरस्वभावसिद्धत्वे तु भाषापरिज्ञानिनां विदुषां महान् कोलाहलो भविष्यति ।

अथ च यदीयं भाषा वेदभाषा समुद्भवा तत्समकालिका संस्कृतात्प्राचीना वा स्वीक्रियते तर्हि पाणिनीयव्याकरणस्याऽपूर्णतास्यात्, तत्र प्राकृत स्याऽव्याकृतत्वात् । भगवतापाणिनिना च तत्र २ बाहुलकेनाऽपि वैदिकशब्दव्याकृत्या स्वव्याकरणस्य पूर्णतायाः प्रदर्शनात् । तथा च गावी गोणी–गोपोतलिकेत्यादीनामपि असाधुशब्दत्वव्यवहारोनोपयुज्येत । प्रत्युत संस्कृताद्विकृतस्य प्राकृतस्यैव प्राकृता द्विकृतस्य संस्कृतस्यै वा पभ्रंशव्यवहारापत्तिः स्यात् । न तथा व्यवहारस्तथाव्युत्पन्नानामपीष्टः । न ह्यस्ति राजाज्ञा-

Aho ! Shrutgyanam

"पाणिनीयादिव्याकृतस्य नाऽपभ्रंशव्यवहारः" इति ।

लिङ्गवचन साम्यन्तु न दृढतरं प्रमाणम् । नहि आङ्ग्लभाषायाः "फादर" इति, शब्दः उच्चारणसौकर्येणोच्चरितस्य पितृ शब्दस्य प्रकृतिरिति कोऽपि प्रेक्षावान् मनुते तथा च-"डाटर" इति शब्दं दुहितृ शब्दस्य । नच कोऽपि, तात इत्युच्चारयितव्ये टाट इति रटन् भारतीयो बाल आङ्गभाषापाठकस्तद्देशीयोऽवगण्यते ।

अतो युक्त मुत्पश्यामः-प्रकृतिः संस्कृतम् ततः प्राकृतमिति। तथा च प्राकृत मञ्जर्याम्-"व्याकर्तुं प्राकृतत्वेन गिरः परिणतिंगताः" इति।

वेदमूलकत्वेऽपि न किमपि प्रमाणम् ।

अस्तु वा यद्यपि तज्ज्ञानायाऽवश्यं प्रयतितव्यम् । यतोऽत्रभाषायां सुललिताः प्रबन्धाः सन्ति । तदुक्तम्—

"अहो तत्प्राकृतं हारि प्रिया वक्त्रेन्दु सुन्दरम् ।

सूक्तयो यत्र राजन्ते सुधानिष्यन्दनिर्झराः" इति ।

तच्च प्राकृतम् वररुचिमते-प्राकृतम् १ पैशाची २ मागधी ३ ॥ शौरसेनी ४ भेदेन चतुर्द्धा । तासु पैशाचीमागधी शौरसेनीविकृती प्रकृतिः शौरसेनीत्युभयत्र दर्शनात्। शौरसेनी संस्कृतविकृतिः प्राकृतवत् । प्रकृतिः संस्कृतम ॥ इति दर्शनात् शौरसेन्यामनुक्तं कार्यं नवभिः परिच्छेदैः प्रतिपादितप्राकृतानुसारिभवति 'शेषं महाराष्ट्रीवद् इत्यत्र महाराष्ट्री पदेन तस्यैव ग्रहणात् । तथा च काव्यादर्शे—

महाराष्ट्राशयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः, इति

हेमस्तु-चूलिकापैशाचिकम् १ आर्षं प्राकृतम् २ अपभ्रंशम् ३ चेत्यधिकभेदैः सप्तधा विभजते ।

तथा च भेदप्रतिपादकानि सूत्राणि ।

आर्षम् । ८ । १ । ३ ।

चूलिका पैशाचिके द्वितीयतुर्ययो राद्यद्वितीयौ । ८ । ४ । ३२५ ।

स्वराणां स्वराः प्रायोऽपभ्रंशे । ८ । ४ । ३२९ । इति ।

प्राकृत सर्वस्वकारमार्कण्डेयेन-भाषा १ विभाषा २ ऽपभ्रंश ३ पैशाची ४ भेदाद् भाषाश्चतुर्धा विभक्ताः ।

तत्र भाषा-महाराष्ट्री १ शौरसेनी २ प्राच्या ३ ऽवन्ती ४ मागधी ५ भेदेन पञ्चधा ।

अर्द्धमागधी तु मागध्या मेवान्तर्भाविता ।

विभाषा-शाकारी १ चाण्डाली २ शावरी ३ आभीरिकी ४

Aho ! Shrutgyanam

शाकी ५ (शाखी) चेति पञ्चधा।

अपभ्रंशः–आर्द्री द्राविडी च विना सप्तविंशतिधा च विभक्तः।

अन्या अपि तिस्रो भाषाः स्वीकृताः–नागर–व्राचडोपनागर-भेदेन। पैशाचीभाषा तिसृषु नागरभाषासु विभक्ता तद्यथा कैकयी २ शौरसेनी २ पाञ्चाली ३ च॥ रामतर्कवागीशेनाऽपि एवमेव प्रकटितम्। सर्वैरपि प्राकृतवैयाकरणैर्महाराष्ट्री पैशाची मागधी शौरसेनी चेताः प्राकृतभाषाः स्वीकृताः। काव्यालङ्कारे रुद्रटः भाषाणांतिस्रोविधाः "प्राकृतं संस्कृतश्चैतदपभ्रंश इति ;त्रिधाः" इति

काव्यादर्शे दण्डी च "तदेतद्वाङ्मयं भूयः संस्कृतं प्राकृतं तथा अपभ्रंशश्च मिश्रं चेत्याहु रार्याश्चतुर्विधाः" ॥ १। ३२। चतुर्विधा हि ग्रन्थाः संस्कृनिबद्धाः केचिद्, प्राकृत निबद्धाः केचिद् केचिदपभ्रंश निबद्धाः केचिदासां साङ्कर्येण निबद्धा मिश्रा इत्युच्यन्ते इत्यर्थः। संस्कृतं सर्गबन्धादि–प्राकृतं स्कन्धकादिकम्। आसारादीन्यपभ्रंशो· नाटकादिषु मिश्रकम् इति च।

पुराण वाग्भट्टोऽपि वाग्भट्टालङ्कारे २। १ संस्कृत प्राकृतापभ्रंश भूतभाषितेति भेदेन चतुर्धाविभजते।

अर्वाचीनोऽपि अलङ्कारतिलके १५–३॥ एवम् रुद्रटश्च काव्या-लङ्कारे २। १२ सूत्रे॥ एवमपभ्रंशाविचारस्यावश्यकत्वाद् वररुचिना-कथमुपेक्षित इति विप्रतिपत्तौ कश्चिद्–इयमपूर्णतैव वररुचेरिति।

आसां प्रादुर्भाव एवनेति त्वन्यः।

अपरे तु–"वररुचिना दादादयो बहुलम्" ४। ३३ इति सूत्र करणा-देवाऽपभ्रंशोऽपि संगृहीत एव। तस्य च भामहेन आदिशब्दो यं प्रका-रार्थः तेन सर्व एव देश संकेत प्रवृत्ताः भाषाशब्दाः परिगृहीताः। इति व्याख्यातत्वात्। अपभ्रंशश्च देशसङ्केतप्रवृत्ता एव भाषाः तदुक्तं वृद्धवाग्भट्टेन–"अपभ्रंशस्तु यच्छुद्धं तत्तद्देशेषु भाषितम्" इति तथा च काव्यादर्शे दण्डी–यदा च आभीर्यादयोदेशभाषाः काव्यनाटकेषु निबद्धास्तदाऽपभ्रंशपदेन व्यवह्रियन्ते, तदुक्तम् तेन–"शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी। याति प्राकृतमित्येवं व्यवहारेषु सन्निधिम्॥ १। ३५ आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्" १। ३६। इति। यत्तु अप-भ्रंश पदेन भारतीयाः प्रचलिता भाषा गृह्यन्ते ताश्च निबध्यन्ते का-व्यनाटकेषु। तदुक्तम् नाट्यशास्त्रे भरत मुनिना "शौरसेनं समाश्रित्य

Aho ! Shrutgyanam

भाषा कार्या तु नाटके अथवा छन्दतः कार्या देशभाषाप्रयोक्तृभिः" १७-४६ इति अधुना प्रचलित तत्तद्देशभाषास्वपि बङ्गदेशे यात्रा गन्धर्वगानम् नैपाले कूर्माचले च हारश्चन्द्रादिनर्तनम् उपलभ्यते एव अतोऽपभ्रंशस्य-प्राकृतपदेन गृहीतुमशक्यत्वा दुचित एव तदनुल्लखः प्राकृत प्रकाशे इति तत्तु दण्डिविरोधादुपेक्ष्यम्।

वररुचि समयेऽपभ्रंशस्य व्यवहारानुदय इति तु न सम्यक् प्रतिभाति "त्रिविधं तच्च विज्ञेयं नाट्ययोगे समासतः। समानशब्दैर्विभ्रष्टं देशीमतमथापि वा" इति भरतमुनिनाऽपि तस्य प्रदर्शितप्रायत्वात्। यथा "गौरित्यस्य गावी गोणी गोपोतलिकेत्येवमादयोबहवोऽपभ्रंशाः"। इति भगवता पतञ्जलिना महाभाष्येऽपभ्रंशस्य व्यवहृतत्वात्। स्वयं दाढत्यादि सूत्रप्रणयनाच्च स्यादेतत्। सर्वमेवैतद् प्राकृतम् तद्भवः। तत्समः। देशी चेति त्रिधा विभजन्ते सूरयः। तदाह दण्डी-"तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेक प्राकृत क्रमः" इति, तत्र यद्यपि तद्भव प्राकृत व्याकृत्यर्थमेव प्राकृत वैयाकरणानां प्रयत्नः तदुक्तम् "अथ प्राकृतम्। ८।१।१। इति सूत्रे व्याख्यानावसरे हेमेन "संस्कृतानन्तरं प्राकृतस्याऽनुशासनं सिद्धसाध्यमानभेदसंस्कृतयोनेरेव तस्य लक्षणं न देश्यस्य इति ज्ञापनार्थम्। संस्कृतसमं तु संस्कृतलक्षणेनैव गतार्थम्" इति। तथापि तत्तत्प्रदेशेषु बाहुलकेन दैशिकानामप्युल्लेखाद्दैशिकमपि प्रायस्तद्भवत्वेन स्वीकुर्वन्ति। ४। ३३ सूत्रव्याख्यानावसरे भामहेन देशसङ्केतत्यादिनैतस्यार्थस्य स्पष्ट मुक्तत्वात्।

हेमोऽप्याह "गोणादयः" ८।२।७४ गोणादयः शब्दा अनुक्त प्रकृति प्रत्ययलोपागमवर्णविकारा बहुलं निपात्यन्ते तद्यथा गौः-गोणी। गावी। त्रिपञ्चाशात्-तेवण्णा। त्रिचत्वारिंशत्-तेआलीसा"। इति। तत्समस्तु न संस्कृतात्पृथगिति न तद्विषयकः प्रयत्नः कस्यापि।

अथ कोऽयं प्राकृत सूत्र प्रणेता वररुचिः कदासमभवत्कदा चैतत्सूत्राणि प्रणिनायेति वृत्तं सम्यक्तयानिश्चेतुं न शक्यते। एको वररुचिः सुप्रसिद्धविक्रमराजसमानकालिकोऽप्युपलभ्यते तथाहि—"धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्ट घटखर्पर कालिदासाः। ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य" इति।

अन्यत्र "पाणिनिं सूत्रकारं च भाष्यकारं पतञ्जलिम्। वाक्य-

Aho ! Shrutgyanam

कारं वररुचिम्—

इति पाणिनि समकालिकः कात्यायना ऽपराभिधः प्रतीयते। महाभाष्यकारैरपि "तेन प्रोक्तम्" ४।३।१०७ सूत्रे "वररुचिना प्रोक्तो ग्रन्थः वाररुचः" इति चोदाहृतम्। तथाच प्राकृत मञ्जर्याम्— "प्रमीदन्तु च वाचस्ता यासां माधुर्य मुच्छ्रितम् प्राकृतच्छद्मना चक्रे कात्यायन महाकविः व्याकर्तुं प्राकृतत्येन गिरः परिणतिं गताः। कोऽन्यः शक्तो भवेत्तस्मात्कवेः कात्यायनादृते" । इति ।

अय मेव कात्यायनापराभिख्यः श्रौतसूत्रकारः पाणिनीय सूत्र वार्तिककारो रूपमाला प्रणेता बृहत्संहिता निर्माता चेत्यत्र दृढतर प्रमाणा भावेऽपि विरोधं नाऽऽकलयन्ति सूरयः। कथा सरित्सागर कथा मञ्जर्यादावुपवर्णितोऽपि वररुचि र्विलक्षण प्रतिभाशालित्वेन नोक्तार्थे विरोध मवतारयतीति विवेचकैर्विवेचनीयम्।

अन्यो वाप्ययं वररुचिः स्यात्। तथाप्येत त्प्रतीयते यदयं सर्वेषु प्राकृत वैयाकरणेषु प्रथम आचार्यः।

एतत्सूत्रप्रकाश वृत्तिं प्रणेता भामहः कदा समभवत् इत्यप्यति-दुरुहतांगतो निर्णेतुम्।

भामह प्रणीत मलङ्कारलक्षणमप्यस्तीति श्रूयते। सच काश्मी-रदेशीयः परमप्राचीनश्चेति झल्कीकरोपाख्यै र्वामनाचार्यैर्निरूपि-तम। एतेनापि वररुचेः परमपुराणता प्रतीयते। इत्यलम् पल्लवितेन।

अन्यत्र प्राकृतसूत्रेषु भाषाबाहुल्येन—कार्यवैविध्येनच वररुचेः प्राचीनता प्रदर्श्यते। यच्चकार्यं वररुचिना बाहुलकेन आदिशब्देन च संगृहीतम्। तदर्थमपि अन्येषां सूत्रप्रणयन प्रयत्नः। आस्तामेतद्॥ हेमच-न्द्रसमयेहिविविधाभाषाः भिन्नरूपाः सञ्जाता इति प्रतीयते—तथा च—

प्राकृतप्राकशतो विशेषकार्याणां दिग्दर्शनम्—

प्रत्यये ङीर्नवा ८।३।३१। नीली। नीला—३२—३३।

अणादि प्रत्यय निमित्तो ङीस्त्रियां वा भवति। साहणी, कुरुच-री—साहणा, कुरुचरा॥

धातवो ऽर्थान्तरेऽपि ८।४।२५९।

उक्तादर्था दर्थान्तरेऽपि धातवोवर्तन्ते। वलिः प्राणने पठितः खादनेऽपि वर्तते। वलइ। खादति प्राणनं करोति वा। एवं कलिः संख्याने। संज्ञानेऽपि। कलइ। जानाति संख्यानं करोति वा॥

विलप्युपालभ्यो झङ्खः आदेशः। झङ्खइ विलपति। उपालभते।

Aho ! Shrutgyanam

भाषते वा ।

फक्कते स्थक्क: । थक्कइ नीचां गतिं करोति विलम्बयति वा । नीहरइ पुरीषोत्सर्गं करोति ॥

बहुलम् ८ । १ । २ । बहुलमित्यधिकृतं वेदितव्य मापादसमाप्तेः। लुप्त य-र-व-श-ष-सा दीर्घः ८ । १ । ४३ ।

प्राकृतलक्षणवशा ल्लुप्ता याद्या उपर्यधोवा येषां शकार षकार-सकाराणां तेषा मादेः स्वरस्य दीर्घो भवति ।

शस्य—यलोपे, पश्यति पासइ । रलोपे-विश्राम्यति, वीसमइ । मिश्रम्-मीसं । वलोपे-अश्वः । आसो । विश्वासः । वीसासः । शलोपे-दुश्शासनः । दूसासणो ।

षस्य यलोपे-शिष्यः । सीसो । रलोपे वर्षः । वासो । वलोपे-विष्वक् वीसुं । षस्य-निषिक्तः नीसित्तो । सस्य यलोपे-सस्यम् सासं कस्यचित् कासइ । रलोपे-उस्रः ऊसो । वलोपे निस्वः । नीसो । सलोपे-निस्सहः-नीसहो ॥

न दीर्घोऽनुस्वारात् ८ । २ । ९२ ।

इति द्वित्वनिषेधः ॥

अवर्णो यश्रुतिः ८ । १ । १८० । कगजेत्यादिना लुकि सतिशेषोऽवर्णो ऽवर्णात्परोलघु प्रयत्नतरयकारश्रुति र्भवति ।

तित्थयरो-सयढं । नयरं । इत्यादि क्वचिदृश्यतो ऽपि इति । पियइ ।

इतः प्राचीनं पुस्तकमधिकमशुद्धमासीद् श्रीमतां वाराणसीस्थराजकीय संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्षाणां पण्डितवर श्रीगोपीनाथ कविराजमहोदयानां म० म० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवदिनां च साहाय्येन लिखितपुस्तकं जर्मन्देशीय काविल महोदयसम्पादित पुस्तकं च दृष्ट्वा यथामति सावधानं संशोधितम् । तत्सहायेनैव यत्र क्वचिद् टिपण्यापाठान्तरेणचसंयोजितम् । द्वादश परिच्छेद वृत्तौ च सहाय्यं प्रापम् ।

छात्राणा मुपकाराय पदसाधुत्वज्ञानार्थं तत्तत्कार्यप्रतिपादकसूत्राणाम् संख्या कोष्ठकान्तरे प्रदर्शिता । अन्यग्रन्थेभ्यः कार्यविशेषाश्च टिपण्यां प्रदर्शिताः । मानुष मात्र सुलभतया दृष्टि प्रमादा ज्ञाताऽनवधानताक्षन्तव्या विद्वद्भिरिति विज्ञापयते विदुषामनुचरः—

वैशाखशुक्ला एकादशी वि.सं.१९७७ । पर्वतीय उदयराम डबरालः ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ नाट्याचार्य मुनिमतेन भाषाणां भेद प्रदर्शन पूर्वकं-विनियोगः प्रदर्श्यते—

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शूरसेन्यर्द्ध मागधी ।
बाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्तभाषाः प्रकीर्तिताः ॥ ४८ ॥
शबरा भीर चण्डाल सचर द्रविडोद्रजाः ॥
हीना वनेचराणां च विभाषा नाटके स्मृता ॥ ४९ ॥
मागधी तु नरेन्द्राणा मन्तः पुर निवासिनाम् ।
चेटानां राज पुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्द्ध मागधी ॥ ५० ॥
प्राच्या विदूषकादीनां धूर्तानामप्यवन्तिजा ।
नायिकानां (च) सखीनां च सूरसेना विरोधिनी ॥ ५१ ॥
योधनागरकादीनां दाक्षिणात्याथदीव्यताम् ।
वाह्लीकभाषोदीच्यानां खसानां च स्वदेशजा ॥ ५२ ॥
शबराणां शकादीनां तत्स्वभावश्चयोगणः ।
(श) सकारभाषायोक्तव्या चण्डाली पुक्कसादिषु ॥ ५३ ॥
अङ्गारकार व्याधानां काष्ठयन्त्रोपजीविनाम् ।
योज्याशबरभाषातु किंचिद्वानौकसीतथा ॥ ५४ ॥
गवाश्वाजाविकोष्ट्रादि घोषस्थाननिवासिनाम् ।
आभीरोक्तिः शाबरीवा द्राविडी द्राविडादिषु ॥ ५५ ॥
सुरङ्गा खनकादीनां सौण्डीकाराश्च (शौण्डिकानां) रक्षिणाम् ।
व्यसने नायकानां स्या दात्मरक्षासु मागधी ॥ ५६ ॥
नर्बर किरातान्ध्र द्रविडाद्यासु जातिषु ॥
नाट्य प्रयोगे कर्तव्यं काव्यं भाषा समाश्रयम् ॥ ५७ ॥
गङ्गासागरमध्ये तु ये देशाः श्रुतिमागताः ।
एकारबहुलां तेषु भाषां तज्ज्ञः प्रयोजयेत् ॥ ५८ ॥
विन्ध्य सागरमध्येतु ये देशाः श्रुतिमागताः ।
नकार बहुलां तेषु भाषां तज्ज्ञः प्रयोजयेत् ॥ ५९ ॥
सुराष्ट्रावन्तिदेशेषु वेत्रवत्युत्तरेषु च ।
ये देशा स्तेषु कुर्वीत चकार बहुला मिह ॥ ६० ॥
हिमवत्सिन्धुसौवीरा न्येच देशाः समाश्रिताः ।
उकार बहुलां तज्ज्ञ स्तेषु भाषां प्रयोजयेत् ॥ ६१ ॥
चर्मण्वती नदीपारे ये चार्बुद समाश्रिताः ।
तकार बहुलां नित्यं तेषु भाषां प्रयोजयेत् ॥ ६२ ॥
एवं भाषा विधानं तु कर्तव्यं नाटकाश्रयम् ।
अत्र नोक्तं मयायच्च लोकाद् ग्राह्यं बुधैस्तु तद् ॥ ६३ ॥

इति शम् ।

Aho ! Shrutgyanam

श्रीगणेशाय नमः ।

प्राकृतप्रकाशः ।

जयति मदमुदितमधुकरमधुररुताकलनकूणितापाङ्गः ।
करविहितगण्डकण्डूविनोदसुखितो गणाधिपतिः ॥ १ ॥
वररुचिरचितप्राकृतलक्षणसूत्राणि लक्ष्यमार्गेण ।
बुद्ध्वा चकार वृत्तिं संक्षिप्तां भामहः स्पष्टाम् ॥ २ ॥

आदेरतः ॥ १ ॥

अधिकारोयम् । यदितऊर्द्ध्वमनुक्रमिष्याम आदेरतः स्थाने तद्भवतीत्येवं वेदितव्यम् । आदेरित्येतदा ऽऽपरिच्छेदसमाप्तेः । अत इति च आकार विधानात(१) । तकारग्रहणं सवर्णनिवृत्त्यर्थम् ॥ १ ॥

आ समृद्ध्यादिषु वा ॥ २ ॥

समृद्धि इत्येवमादिषु शब्देष्वादेरकारस्याकारो भवति वा । समिद्धी सामिद्धी(२)।(१-२८ ऋ=इ ३-१ दलोपः ३-५० द्वित्वम् ३-५१ ध्=द् ५-१८ दीर्घः)। पअडं पाअडं (३-३ रलोपः २-२ कलोपः २-२० ट्=ड् ५-३० बिन्दुः) अहिजाई आहिजाई (२-२७ भ्=ह् २-२ तलोपः ५-१८ दीर्घः) मणंसिणी, माणंसिणी।(२-४२ न्=ण् ४-१५ बिन्दुः ३-३ वलोपः२-४२

---

(१) क्वचित्-आ आकार विधानात् पा०

(२) "अन्त्यस्य हलः" ४-६ इति सोर्लोपः एवं सर्वत्र सोर्लोपे बोध्यम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

न् ण्) पडि(१)अ पाडिअ। (३-३ रलोपः २-१५ प्=व् २-२ दुलोपः) सरिच्छं सारिच्छं। (१-३१ ऋ=रि २-२ दुलोपः ३-३० क्ष्=च्छ् ५-३० विन्दुः) पडिसिद्धी पाडिसिद्धी। (३-३ रलोपः २-४३ ष्=स् ३-१ दुलोपः ३-५० द्वित्वम् ३-५१ ध्=द् ५-१८ दीर्घः) पसुत्तं पासुत्तं । (३-३ रलोपः ३-१ पलोपः ३-५० तद्वित्वम् ५-३० विन्दुः)। पसिद्धी पासिद्धी। (३-३ रलोपः २-२ दुलोपः ३-५० द्वित्वम् ३-५१ ध्=द् ५-१८ दीर्घः) अस्सो आसो(२)। (२-४३ श् स् ३-३ वलोपः ३-५८ द्वित्वम्(३) ५-१ ओ) समृद्धि, प्रकट, अभिजाति, मनस्विनी, प्रतिपदा(४) सदृक्ष, प्रतिषिद्धि,(५)प्रसुप्त, प्रसिद्धि, अश्व । आकृतिगणोयम् ॥ २ ॥

इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गाऽङ्गारेषु ॥ ३ ॥

ईषदादिषु शब्देषु आदेरतः स्थाने इकारादेशो भवति । वेति निवृत्तम्। इसि(६) (४-१ ई=इ २-४३ ष्=स् ४-६ अन्त्यलोपः)

---

(१) प्रत्यादौडः ८ । १ । २०६ इति हेमसूत्रेण तोडः । केचित्तु "प्रतिसरवेतसपताकासुडः" २-८ इतिसूत्रे प्रतिसरादयः प्रत्यादीनामुपलक्षणमिति वदन्ति ॥

(२) न दीर्घाऽनुस्वारात् ८ । २ । ९२ इतिहेमसूत्रेण द्वित्वनिषेधः ॥

(३) द्वित्वा भाव पक्षे असो ॥

(४) क. पुस्तके प्रतिपद् पाठ-स्तत्र-(४-७ द्=आ)।

(५) यत्र प्रतिस्पर्द्धि पाठस्तत्र (३-३७ स्प=सि)इति विशेषः

(६) "इत्वमीषत्पदे कैश्चिदीकारस्यापि चेष्यते ।
इसि चुम्बिअमित्यादि रूपं तेन हि दृश्यते" । इत्यभियुक्ताः ॥
हेमस्तु ईसि इति मन्यते तथा च शाकुन्तले "ईसीसि चुम्बिआइं" इति प्रायोदीर्घादिर्लभ्यते ॥

Aho ! Shrutgyanam

पिक्कं (३-३ वलोपः ३-५० कृद्वित्वम् ५-३० विन्दुः) सिवि-णो(१)(३-३ वूलोपः ३-६२ विप्रकर्ष इकारताच २-४२ न्=ण् ५-१ ओ) वेडिसो (२-८ त्=ड् ५-१ ओ) वअणो (३-२ यूलोपः २-२ जूलोपः २-४२ न् ण् ५-१ ओ) मिइंगो(२) (१-२८ ऋ=इ ४-१७ विन्दुः २-२ दूलोपः, ५-१ ओ) इंगालो (४-१७ विन्दुः २-३० र्=ल् ५-१ ओ) ॥ ३ ॥

लोपो ऽरण्ये ॥ ४ ॥

अरण्यशब्दे आदेरतो लोपो भवति । रण्णं (३-२ यूलोपः ३-५० द्वित्वम् ५-३० विन्दुः) ॥ ४ ॥

ए शय्यादिषु ॥ ५ ॥

शय्या इत्येवमादिषु शब्देषु आदेरत एकारादेशो भवति । सेज्जा (२—४३ श्=स् ३—१७ य्य्=ज् ३—५० द्वित्वम्) सुंदेरं । (४-१७ विन्दुः १-४४ औ=उ ३-१८ र्य्=र् ५-३० विन्दुः) उक्केरो (३-१ तलोपः ३-५० द्वित्वम् ५-१ ओ) तेरहो । (३-३ रलोपः २-२ यूलोपः ४-१ ओलोपः २-१४ द्=र् २-४४ श्=ह् ५-१ ओ) अच्छेरं (४-१ आ=अ(३) ३-४० श्च्=छ् ३-५० द्वित्वम् ३-५१ छ्=च् ३-१८ र्य्=र् ५-३० विन्दुः) पेरन्तं (३-१८ र्य्=र् ५-३०

---

(१) स्वप्ननीव्योर्वा ८ । १ । २५९ । सिमिणो । सिविणो । हे०

(२) इदुतौ वृष्टि वृष्ट पृथङ् मृदङ्ग नप्तृके ८ । १ । १३७ तेणाहिहं गीअं मुइङ्गि करताडिय मिइङ्गं ॥ हे०

का. पु. मुइङ्ग पाठे १-२९ सूत्रेणोत्वं बोध्यम्, तत्र गणे आदि-ग्रहणाद् ॥

(३) ह्रस्वः संयोगे ८ । १ । ८४ । तित्थम् । हे । एवं सर्वत्र बोध्यम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

विन्दुः) । वेल्ली (३–३ लूलोपः ३–५० द्वित्वम्) । शय्यासौ-न्दर्योत्करत्रयोदशाश्चर्यपर्यन्तवल्लयः ॥ ५ ॥

ओ बदरे देन ॥ ६ ॥

बदरशब्दे दकारेण सहादेरत ओत्वं भवति । बोरं (५-३० विन्दुः) ॥ ६ ॥

लवणनवमल्लिकयोर्वेन ॥ ७ ॥

लवणनवमल्लिकयोरादेरतो वकारेण सह ओकारः स्यात् । लोणं (५–३० विन्दुः) णोमल्लिआ (२–४२ न्=ण् २–२ कूलोपः) ॥ ७ ॥

मयूरमयूखयोर्य्वा वा ॥ ८ ॥

मयूर मयूख इत्येतयोर्यूशब्देन सहादेरत ओत्वं वा भवति । मोरो, मऊरो । (५–१ ओ) मोहो, मऊहो । (२–२७ ख्=ह् ५–१ ओ,) उभयत्र, पक्षे २–२ यलोपः ॥ ८ ॥

चतुर्थीचतुर्दश्योस्तुना ॥ ९ ॥

एतयोस्तुना सहादेरत ओत्वं भवति वा चोत्थी, चउत्थी । (३–३ र् लोपः ३–५० थ्द्वित्वं ३–५१ थ्=त्, पक्षे २–२ तलोपो विशेषः) चोद्दही, चउद्दही (१) । (२–४४ श्=ह् शेषं पूर्ववद्) ॥९॥

अदातो यथादिषु वा ॥ १० ॥

अत इति निवृत्तम् । स्थान्यन्तरानिर्देशात् । यथा इत्येवमादिषु आतः स्थाने अकारादेशो भवति वा । जह, जहा, तह, तहा । (२–२७ थ्=ह्) । पत्थरो, पत्थारो । (३–३ रलोपः ३–१२ स्त्=थ् ३–५० थ् द्वि० ३–५१ थ्=त् ५–१ ओ) पउअं, पाउअं । (३–३ रलो-

---

(१) क. पु. चतुर्थी तत्र चोत्थी, चउत्थी । चतुर्दशी तत्र चोद्दही, चउद्दही । पा० ॥

Aho ! Shrutgyanam

पः १-२१ ऋ=उ २-२ कतयोर्लोपः ५-३० त्रिन्दुः) तलवेण्टअं, तालवेण्टअं। (१-२८ ऋ=इ(१) १-१२ इ=ए(२) ३-४५ न्त=ण्ट २-२ कलोपः ५-३० त्रिं) उक्खअं, उक्खाअं । (३-१ तलोपः ३-५० खद्वि० ३-५१ ख्=क् २-२ तलोपः ५-३० त्रिं) चमरं,चामरं। (५-३०त्रिं) पहरो, पहारो ।(३-३ रलोपः ५-१ ओ) चडु, चाडु । (२-२० ट्=ड्) दवग्गी, दावग्गी । (३-२ नूलोपः ३-५० द्वि० ५-१८ दीर्घः) खइअं, खाइअं । (२-२ दलोपः । तलोपश्च ५-३० त्रिं) संठविअं, संठाविअं । (८-२६ स्था=ठा ३-५६ द्वित्वनिषेधः २-१५ पू=व् २-२ तलोपः ५-३० त्रिं) हलिओ, हालिओ । (२-२ कलोपः ५-१ ओ)। यथा तथाप्रस्तारप्राकृततालवृन्तकोत्खातचामरप्रहारचाटु दावाग्नि खादितसंस्थापितहालिकाः ॥ १० ॥

इत्सदादिषु ॥ ११ ॥

सदा इत्येवमादिष्वात इकारो भवति वा । सइ-सआ (२-२ दलोपः) एव मग्रिमेष्वपि । तइ, तआ । जइ, जआ । सदा, तदा, यदा, ॥ ११ ॥

इत एत् पिण्डसमेषु ॥ १२ ॥

पिण्ड इत्येवंसमेषु इकारस्यैकारादेशो भवति वा । पेण्डं, पिण्डं । (५-३० त्रिं) णेद्दा,णिद्दा। (२-४२ न्=ण ३-३ रलोपः ३-५० दृद्वि०) सेंदूरं,सिंदूरं ।(४-१७ वर्गान्तविं ५-३० त्रिं) धम्मेल्लं, धम्मिल्लं। (५-३० त्रिं) चेंधं, चिंधं। (३-३४ न्ह्=न्ध् ५-३०

(१) ऋष्यादे राकृति गणत्वात् ॥

(२) संयोगपरत्वेन पिण्डसमत्वात् ।

"इदेदोवृत्ते" ८ । १ । १३९ । विण्ट, वेण्ट वोण्ट । हे०

Aho ! Shrutgyanam

विं) वेण्हू, विण्हू । (३-३३ष्ण्=ण्हू ५-१८ दीर्घः) पेट्ठं, पिट्ठं (३-१० ष्ठ=ठ् ३-५० द्वि० ३-५१ ठ्=ट् ५-३० विं) पिण्ड निद्रा सिन्दूर धम्मिल्ल चिन्ह विष्णु पिष्टानि । समग्रहणं संयोगपरस्योपलक्षणार्थम् ॥ १२ ॥

अत् पथिहरिद्रापृथिवीषु ॥ १३ ॥

पथ्यादिषुशब्देषु इकारस्याकारो भवति । पहो । (२-२७ थ्=ह् ४-६ न्लोपः ५-१ ओ) हलद्दा । (२-३० र्=ल् ३-३ रलोपः ३-५० द्वि०) पुहवी । (१-२९ ऋ=उ २-२७ थ्=ह्) ॥१३॥

इतेस्तः पदादेः ॥ १४ ॥

पदादेरितिशब्दस्य यस्तकारस्तस्मात् परस्येकारस्य अकारो भवति । इअ (२-२ तलोपः) उअह(१), अण्णहा (३-२ य्लोपः २-४२ न्=ण् ३-५० ण्द्वि० २-२७ थ्=ह्) वअणं (२-२ चलोपः २-४२ न्=ण् ५-३० विं) इअ, विअसन्तीउ (२-२ कलोपः ५-२० जस्=उ) चिरम् । इतिपश्यतान्यथावचनम् । इति विकसन्त्यश्चिरम् । पदादेरिति वचनादिह न भवति । पिओत्ति(२) । (३-३ रलोपः २-२ यलोपः ५-१ ओ ४-१ इलोपः) प्रिय इति ॥ १४ ॥

उदिक्षुवृश्चिकयोः ॥ १५ ॥

इक्षुवृश्चिकयोरित उत्वं भवति । उच्छू (३-३० क्ष=च्छ् ५-१८ दीर्घः) विच्छुओ (१-२८ ऋ=इ ३-४१ श्च्=च्छ् २-२ कलोपः ५-१ ओ) ॥ १५ ॥

---

(१) "उअ पश्य" ८ । २ । २११ पक्षे देक्ख ॥ हे०

(२) इतेः स्वरात् तश्चद्विः । ८ । १ । ४२ पदात्परस्य इते रादेर्लुग् भवति, स्वरात्परश्चःतकारो द्विर्भवति क्विन्ति जान्ति ॥ स्वरात्-तहत्ति-झत्ति । पुरिसोत्ति । हे०

ओ च द्विधा कृञः ॥ १६ ॥

कृञ्धातुप्रयोगे द्विधाशब्दस्यौ(१)कारो भवति चकारादुत्वं च । द्विधा कृतम् दोहाइअं दुहाइअं (३-३ वलोपः २-२७ धू=हू १-२८ ऋ=इ २-२ कतयोर्लोपः ५-३० विं०) द्विधाक्रियते दोहाइज्जइ दुहाइज्जइ (७-८ यक्=इज्ज ४-१ इलोपः ३-३ रलोपः २-२ कलोपः ७-१ त=इ) ॥ १६ ॥

ईत् सिंहजिह्वयोश्च ॥ १७ ॥

एतयोरादेरिकारस्य ईकारो भवति । सीहो(२) (५-१ ओ)(३) जीहा । (३-३ वलोपः) चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः, तेन वीसत्थो (३-३ वलोपः २-४३ शू=सू ३-१२ स्त=थू ३-५० द्वि० ३-५१ थू=त् ५-१ ओ) वीसंभो (३-३ रलोपः २-४३ शू=सू ४-१७ बिन्दुः ५-१ ओ) इत्येवमादिषु ईत्वं भवति ॥ १७ ॥

इदीतः पानीयादिषु ॥ १८ ॥

पानीय इत्येवमादिष्वादेरीकारस्य इकारो भवति । पाणिअं (२-४२ नू=णू २-२ यूलोपः ५-३० सोर्विन्दुः) अलिअं (२-२ कलोपः ५-३० बिन्दुः) वलिअं (३-२ यूलोपः २-२ कूलोपः ५-३० विं०) तआणिं (२-२ दलोपः २-४२ नू=णू ४-१२=बिन्दुः) करिसो (२-४३ षू=सू ५-१ ओ) दुइअं (३-३ वलोपः ४-१ इ=उ २-२ तूलोपः । यलोपश्च ५-३० बिन्दुः) तइअं (१-२७= ऋ=अ २-२ तयोर्लोपः ५-३० बिन्दुः) गहिरं (२-२७ भू=हू ५-३० बिन्दुः) । पानीयाऽलीकव्यलीकतदानींकरीषद्वितीयतृतीयगभीराः ॥ १८ ॥

---

(१) क. पु. इत इत्यधिकः पाठः ॥

(२) होघोऽनुस्वारात् ८ । १ । २६४ । सींहो सिंघो हे०

(३) बाहुलकादनुस्वार निवृत्तिः साध्या ।

Aho ! Shrutgyanam

एन्नीडापीडकीदृगीदृशेषु ॥ १९ ॥

नीडादिष्वीकारस्यैकारो भवति । णेडं (१) २-४२ न्=ण् ५-३० विन्दुः) आमेलो(२-१६ प्=म् २-२३ ड्=ल् ५-१ ओ) केरिसो (१-३१ ऋ=रि २-२ दलोपः २-४३ श्=स् ५-१ ओ) एरिसो पूर्ववत् ॥ १९ ॥

उत ओत् तुण्डरूपेषु ॥ २० ॥

तुण्ड इत्येवंरूपेषु आदेरुकारस्यौकारो भवति । तोण्डं (५-३० विन्दुः) मोत्ता (२-२ कलोपः ३-५० द्वित्वम्) पोक्खरो (३-२९ ष्क्=ख् ३-५० द्वित्वं ३-५१ ख्=क् ५-१ ओ) पोत्थओ (३-१२ स्त=थ् ३-५० द्वि० ३-५१ थ्=त् ५-१ ओ) लोद्धओ (३-३ वलोपः ३-५० द्वि० ३-५१ध्=द् ५-१ ओ) कोट्टिमं । (५-३० विन्दुः) तुण्डमुक्तापुष्करपुस्तकलुब्धककुट्टिमानि । रूपग्रहणं संयोगपरोपलक्षणार्थम् ॥ २० ॥

उलूखले ल्वा वा(२) ॥ २१ ॥

उलूखलशब्दे लेन सह उकारस्यौकारो भवति वा । ओखलं-उलूखलं (५-३० विन्दुः) ॥ २१ ॥

अन्मुकुटादिषु ॥ २२ ॥

मुकुट इत्येवमादिष्वादेरुकारस्य स्थाने अकारो भवति(३) । मउडं (२-२ कलोपः २-२० ट्=ड् ५-३० विं०) मउलं (२-२ कलोपः ५-३० विं०) गरुअं(४) २-२ स्वार्थिकस्य लोपः ५-३०

---

(१) का. पु. णेड्डं तत्र सेवादित्वाद्द्वित्वं ज्ञेयम् ॥

(२) क्वचिद् "उदूखले ल्वावा" पा० उदूखलं ॥

(३) का. पु. वेति निवृत्तम् इत्यधिक पाठभेदः प्रदर्शितः ॥

(४) ४-२५ सूत्रेण पाक्षिकः कः ॥

Aho ! Shrutgyanam

त्रि०) गरुई (३-६१ रस्यविप्रकर्षे उत्वं(१)च) जहिट्ठिलो (२-३१ य्=ज् २-२७ ध्=ह् ३-१ ष्लोपः ३-५० द्वि० ३-५१ ठ्=ट् २-३० र्=ल् ५-१ ओ) सोअमल्लं (१-४१ औ=ओ २-२ कुलोपः ४-१ आ=अ ३-२१ र्य=ल् ३-५० द्वि० ५-३० विन्दुः) अवरि (२-१५ प्=व्) मकुटमुकुलगुरुगुर्वीयुधिष्ठिरसौकुमार्योपरयः ॥ २२ ॥

इत्पुरुषे रोः ॥ २३ ॥

पुरुषशब्दे यो रुस्तस्य उकारस्य इकारो भवति। पुरिसो २-४३ ष्=स् ५-१ ओ ॥ २३ ॥

उदूतो मधूके ॥ २४ ॥

मधूकशब्दे ऊकारस्य उकारो भवति। महुअं (२-२७ध्=ह् २-२ कूलोपः ५-३० विन्दुः) ॥ २४ ॥

अदू दुकूले वा लस्य द्वित्वम् ॥ २५ ॥

दुकूलशब्दे ऊकारस्याकारो भवति वा, तत्संयोगेन लकारस्य द्वित्वम्। दुअल्लं दुऊलं (२-२ कूलोपः ५-३० विन्दुः) ॥ २५ ॥

एन्नूपुरे ॥ २६ ॥

नूपुरशब्दे ऊकारस्य एकारो भवति। णेउरं (२-४२ न्=ण् २-२ पूलोपः ५-३० बिन्दुः) ॥ २६ ॥

ऋतोऽत् ॥ २७ ॥

आदेर्ऋकारस्याकारो भवति। तणं (२-४२ न्=ण् ५-३० त्रि०) घणा (२-४२ न्=ण्) मअं (२-२ त्लोपः) ५-३० त्रि०) कअं (पूर्ववत्) वद्धो (३-१ दलोपः ३-५०

(१) तन्वीसमत्वात्। यद्वा, "अजातेः पुंसः" ८।३।३२ हेम सूत्रानुसाराद् संस्कृतवद् ङीपि वा ऽसन्धौ बोध्यम्।

२

Aho ! Shrutgyanam

द्वि० ३-५१ घ्=द् ५-१ ओ) वमहो (२-४३ ष्=स् २-२७ भ्=ह् ५-१ ओ) तृणघृणामृतकृतवृद्धवृषभाः ॥ २७ ॥

इदृष्यादिषु ॥ २८ ॥

ऋष्यादिषु शब्देषु आदेर्ऋकारस्य इकारो भवति। इसी (२-४३ ष्=स् ५-१८ दीर्घः) विसी (पूर्ववत्) गिट्ठी (३-१० ष्ट्=ठ् ३-५० द्वि० ३-५१ ठ्=ट् ५-१८ दीर्घः) दिट्ठी (पूर्ववत्) एवमुत्तरत्रापि । सिट्ठी । सिङ्गारो (२-४३ श्=स् ४-१७ वर्गान्तो वा ५-१ ओ) मिअंको (२-२ गलोपः ४-१ आ=अ ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः ५-१ ओ) भिङ्गो (४-१७ ङ्=विं० ५-१ ओ) भिङ्गारो (पूर्ववत) हिअअं (२-२ दयोर्लोपः ५-३० बिन्दुः) विइण्हो (२-२ तलोपः ३-३३ ष्ण्=ण्ह् ५-१ ओ) विंहिअं (२-२ तलोपः ५-३० विं) किसरो (२-४३ श्=स् ५-१ ओ) किच्चा (३-२७ त्य्=च् ३-५० द्वि०) विच्छुओ (१-१५ सू०स्प०(१) सिआलो (२-४३ श्=स् २-२ गलोपः ५-१ ओ) किई (२-२ तलोपः ५-१८ दीर्घः) किसी। (२-४३ ष्=स् ५-१८ दीर्घः) किवा (२-१५ प्=व्) ऋषिवृषीगृष्टिदृष्टिसृष्टिशृङ्गारमृगाङ्कभृङ्गभृङ्गारहृदयवितृष्णबृंहितकृशरकृत्यावृश्चिकशृगालकृतिकृषिकृपाः ॥ २८ ॥

उदृत्वादिषु ॥ २९ ॥

ऋतु इत्येवमादिषु आदेर्ऋत उकारो भवति । उदू (२-७ त्=द् ५-१८ दी०) मुणालो (२-४२ न्=ण् ५-१ ओ) पु॰

---

(१) का० पु० विंचुओ इति पाठभेदे प्रदर्शित स्तत्र "वृश्चिके श्चे र्ञ्चुर्वा" ८।२।१६ छापवादः विञ्चुओ, विंचुओ। पक्षे विच्छिओ। इति हेमानुसारिणी प्रक्रिया ऽनुसर्तव्या।

Aho ! Shrutgyanam

हत्ती (१-१३ सू० स्प०) वुंदावणं (४-१७ विं० २-४२ न्=ण् ५=३० विं०) पाउसो (३-३ रलोपः वलोपश्च ४-११ ष्=स्-४-१८ पुंवत् ५-१ ओ) पउत्ती (३-३ रलोपो वलोपश्च ३-१ तलोपः ३-५० द्वि० ५-१८ दी०) णिउदं (२-४२न्=ण् २-२ वलोपः २-७ त्=द् ५-३० विं०) संवुदं (२-७त्=द् ५-३० विं०) णिव्वुदं (२-४२ न्=ण् ३-३ रलोपः ३-५० द्वि० २-७ त=द् ५-३० विं) वुत्तंतो (३-१ तलोपः ३-५० द्वि० ४-१ आ=अ ४-१७ न्=विं० ५-१ ओ) परहुओ (२-२७ भ्=ह् २-२ तलोपः ५-१ ओ) माउओ (२-२ तलोपः २-२ कलोपः ५-१ ओ) जामाउओ । (पूर्ववत) ऋतु, मृणाल, पृथिवी, वृन्दावन, प्रावृष्, प्रवृत्ति, निवृत,(१) संवृत, निर्वृत, वृत्तान्त, परभृत, मातृक,(२) जामातृक, इत्येवमादयः ॥ २९ ॥

ऋ रीति ॥ ३० ॥

वर्णान्तरेणायुक्तस्यादेर्ऋकारस्य रिकारो भवति । रिणं (५-३० विं०) रिद्धो (३-१ दलोपः ३-५० द्वि० ३-५१ ध्=द् ५-१ ओ) रिच्छो (३-३० क्ष्=छ् शे० पू०(३) ॥ ३० ॥

क्वचिद्युक्तस्यापि ॥ ३१ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि क्वचि दृकारस्य रिकारो भवति । एरिसो (१-१९ ई=ए २-२ दलोपः १-४३ श्=स् ५-१ ओ) सरिसो, तारिसो । एरिसोवत्(४) ॥ ३१ ॥

---

(१) क० पु० विवृत्त पाठः । विउदं प्रा० ।

(२) क० पु० भ्रातृक इत्यधिकः पाठः । भाउओ इति प्रा० ।

(३) क० पु० ऋणं, ऋद्धं, ऋच्छ इत्येव मादयः अ० पा० । केचिद् ऋक्षं पठन्ति ।

(४) क० पु० ईदृश, सदृश, तादृश, कीदृश इत्येव मादयः । केरिसो प्रा० । अ० पा०

Aho ! Shrutgyanam

वृक्षे वेन रुर्वा ॥ ३२ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुकारो भवति वा । रुक्खो-(३-२९ क्ष्=ख् ३-५० द्वि० ३-५१ ख्=क् ५-१ ओ) वच्छ (१-२७ ऋ=अ ३-३१ क्ष्=छ् शे० पू०) व्यवस्थितविभाषा-ज्ञापनाच्छत्वपक्षे न भवति खत्वपक्षे तु नियमेव भवति ॥ ३२ ॥

ऌतः क्लृप्त इलिः ॥ ३३ ॥

क्लृप्तशब्दे ऌकारस्य इलीत्ययमादेशो भवति । किलित्तं । (३-१ प्लोपः ३-५० द्वि० ५-३० बिं०) तदेवमादेशान्तर-विधानात्प्राकृते ऋकारऌकारौ न भवतः ॥ ३३ ॥

ऐत इद्वेदनादेवरयोः ॥ ३४ ॥

वेदनादेवरयोरेकारस्य इकारो भवति । विअणा (२-२ द्-लोपः २-४२ न्=ण्) दिअरो । (२-२ व्लोपः ५-१ ओ) वाग्रहणानुवृत्तेः क्वचिद् वेअणा, देअरो इत्यपि ॥ ३४ ॥

ऐत एत् ॥ ३५ ॥

आदेरैकारस्य एकारो भवति । सेलो (२-४३ श्=स् ५-१ ओ) सेच्चं (२-४३ श्=स् ३-२७ त्य्=च् ३-५० द्वि० ५-३० बिं०) एरावणो, केलासो (५-१ ओ) तेल्लोक्कं । (३-३ र्लो-पः ३-५८ ल्=द्वि० ३-२ य्लोपः ३-५० क्=द्वि०) शैलशै-त्यैरावणकैलासत्रैलोक्यानि ॥ ३५ ॥

दैत्यादिष्वइ ॥ ३६ ॥

दैत्यादिषु शब्देषु ऐकारस्य अइ इत्ययमादेशो भवति । दइच्चो (३-२७ त्य्=च् ३-५० द्वि० ५-१ ओ) चइत्तो (३-३-रलोपः ३-५० द्वि० ५-१ ओ) भइरवो (५-१ ओ) सइरं (३-३ वलोपः ५-३० बिन्दुः) वइरं (५-३० बिं०) वइदेसो (२-४३ श्=स् ५-१ ओ) वइदेहो (५-१ ओ) कइअवो (२-२

Aho ! Shrutgyanam

वलोपः ५-१ ओ) वइमाहो (२-४३ श्=स् २-२७ ख्=ह् ५-१ ओ) वइसिओ २-४३ श्=स् २-२ कलोपः ५-१ ओ) वइसंपाअण(१) (२-४३ श्=स् ४-१७ विं० २=२ यूलोपः २-४२ न्=ण्) ५-२७ ओत्वनिषेधः ४-६सोर्लोपः दैत्यचैत्रभैरवस्वैरवैरवैदेशवै-देहकैतववैशाखवैशिकवैशम्पायनाः । इत्यादयः ॥ ३६ ॥

दैवे वा ॥ ३७ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइ इत्ययमादेशो भवति वा । दइवं(२) (५-३० विं०) देव्वं (पूर्ववत्) । अनादेशपक्षे नीडादित्वाद् द्वित्वम् ॥ ३७ ॥

इत्सैन्धवे ॥ ३८ ॥

सैन्धवशब्दे ऐकारस्य इकारो भवति । सिंधवं (४-१७ न्= विं० ५-३० विं०) ॥ ३८ ॥

ईद् धैर्ये ॥ ३९ ॥

धैर्यशब्दे ऐकारस्य ईकारो भवति । धीरं (३-१८ र्य=र् ५-३० विं०) ॥ ३९ ॥

ओतोऽद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ४० ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओकारस्य अकारो भवति वा तत्संयोगेन च ककारस्य वत्वम् । पवट्ठो । (३-३ र्लोपः ३-१० ष्ठ्=ठ् ३-५० द्वि० ३-५१ ठ्=ट् ५-१ ओ) पओट्ठो (२-२ क्लोपः शेषं पूर्ववत्) ॥ ४० ॥

औत ओत् ॥ ४१ ॥

औकारस्यादेरोकारो भवति । कोमुई (२-२ दुलोपः) जो-

(१) क० पु० वइसम्पाइणो पा० ।

(२) क्वचिद् दइव्वं पाठः स तु भ्रममूलकः । विभाषासु व्यवस्थितविभाषाश्रयणादनादेश पक्षे नित्यमेव आदेशपक्षे नेति मूल एव स्फुटं वक्ष्यमाणत्वाद् ॥

Aho ! Shrutgyanam

व्वणं (२-३१य्=ज् ३-५० द्वि० २-४२ न्=ण् ५-३० विं) कोत्थुहो (३-१२ स्त्=थ् ३-५० द्वि० ३-५१ थ्=त् २-२७भ्=ह् ५-१ ओ) कोसंबी। (२-४३ श्=स् ४-१७ विं० ४-१ ह्रस्वः) कौमुदी, यौवनम्, कौस्तुभः, कौशाम्बी ॥ ४० ॥

पौरादिष्वउ ॥ ४२ ॥

पौर इत्येवमादिषु शब्देषु औकारस्य अउ इत्ययमादेशो भवति। पउरो (५-१ ओ) एवमुत्तरत्र। कउरवो। पउरिसो (शेषं १-२३ सू० स्प०) पौरकौरवपौरुषाणि। आकृतिगणोऽयम्। कौशले विकल्पः। कोसलो, कउसलो। कौशलम्॥४२॥

आ च गौरवे ॥ ४३ ॥

गौरवशब्दे औकारस्य आकारो भवति। चकारादउत्वं च ॥ गारवं गउरवं (५-३० विन्दुः) ॥ ४२ ॥

उत्सौन्दर्यादिषु ॥ ४४ ॥

इति वररुचिकृतप्राकृतसूत्रेषु अज्विधिर्नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

सौन्दर्य इत्येवमादिषु औकारस्य उकारो भवति। सुन्देरं(१-५सू० स्प०) मुञ्जाअणो(४-१७ पञ्चमः २-२ य्लोपः २-४२न्=ण् ५-१ ओ)सुण्डो (२-४३ श्=स् ४-१७ पञ्चमः ५-१ ओ) कुक्खेअओ (३-२९ क्ष्=ख् ३-५० द्वि० ३-५१-ख्=क् २-२ यकयोर्लोपः ५-१ ओ) दुव्वारिओ (३-५२ व्=व्व्-२-२ क्लोपः ५-१ ओ) सौन्दर्यमौञ्जायनशौण्डकौक्षेयकदौवारिकाः ॥ ४४ ॥

इति भामहविरचिते प्राकृतप्रकाशे प्रथमः परिच्छेदः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ द्वितीयः परिच्छेदः ।

अयुक्तस्यानादौ ॥ १ ॥

अधिकारो ऽयम् । इत उत्तरं यद्वक्ष्यामस्तदयुक्तस्यऽप्य-अनस्यानादौवर्तमानस्य कार्यं भवतीत्येत्र वेदितव्यम् । वक्ष्यति कादीनां लोपः । मउडं । (१-२२ सू०स्प०) अयुक्तस्येतिकिम् । अग्घो (३-३रूलोपः ३-५० द्वित्व० ३-५१ घ्=ग् ५-१ ओ) अक्को(१) (पूर्ववद्) आनादौ इति किम् । कमलं(२) । अयुक्तस्येत्यापरिच्छेदसमाप्तेः । अनादाविति च, आज(३)कारविधानात् ॥ १ ॥

कगचजतदपयवां प्रायोलोपः ॥ २ ॥

कादीनांनवानांवर्णानामयुक्तानामनादौवर्तमानानांप्रायो बाहुल्येनलोपो भवति(४) । कस्य तावत, मउलो (१-२२ सू० स्प० ५-१ ओ) णउलं । (२-४२ न्=ण् ५-३० विं०) गस्य, साअरो (५-१ ओ) णअरं । (२-४२ न्=ण् ५-३० विं०) चस्य, वअणं (२-४२ न्=ण् ५-३० विन्दुः) सूई । जस्य, गओ (५-१ ओ) रअदं । (२-७ त्=द् ५-३० विन्दुः)

---

(१) क० पु० अर्घः । अर्कः ॥ सं० ।

(२) क० पु० कंकणं । अ० पा० ।

(३) "आदेर्योजः" इति सूत्र पर्यन्तमित्यर्थः ॥

(४) प्रायो ग्रहणात्क्वचिदादेरपि । सपुनः- सउण । क्वचिन्नस्यजः, पिशाची-पिसाजी । कस्यगः, एकत्वम्-एगत्वं । इत्यादौ बाहुलकात् । आर्षे—आकुञ्चनम् । हे० ।

Aho ! Shrutgyanam

तस्य, कअं (१-२७ ऋ=अ ५-३० बिन्दुः) विआणं। (२-४२ न्=ण् ५-३० बिन्दुः) दस्य, गआ। मओ। (५-१ ओ) पस्य, कई। (५-१८ दी०) विउलं (५-३० बिन्दुः) सुउरिसो (१-२३ सू० स्प०) सुपुरुष इति यद्यपि उत्तरपदस्य-पुरुषशब्दस्यादि(१)स्तथापिलोपो भवतीत्यनेनज्ञापयति वृत्तिकारः—यथा "उत्तरपदादिरनादिरेवे"ति। यस्य, वाऊ (५-१८ दी०) णअणं। (२-४२ उभयत्रणत्वम् ५-३० बिन्दुः) वस्य, जीअं(२) (५-३० बिन्दुः) दिअहो। (२-४७ स्=ह् ५-१ ओ) मुकुलनकुलसागरनगरवचनसूचीगजरजतकृतविता-नगदामदकपिविपुलसुपुरुषवायु(३)नयनजीवदिवसाः। प्रायोग्रहणाद्यत्र श्रुतिसुखमस्ति तत्र(४) न भवत्येव। सुकुसुमं (५-३० बिन्दुः) पिअगमणं (३-३ र्लोपः २-४२ न्=ण् ५-३० बिन्दुः) सचावं। अवजलं। (२-१५ प्=व् ५-३० बिन्दुः) अतुलं (५-३० बि०) आदरो (५-१ ओ) अपारो (५-१ ओ) अजसो (२-३१ य्=ज् २-४३ श्=स् ४-१८ पुम्वत्-४-६-अन्त्यलोपः ५-१ ओ) सबहुमाणं (२-४२ न्=ण् ५-३० बि०) सुकुसुम-प्रियगमनसचापाऽपजलाऽतुलाऽऽदराऽपाराऽयशस्सबहुमानानि। अयुक्तस्येत्येव। (५)सक्को (२-४३ श्=स् ३-३ र्लोपः ३-५०

---

(१) क० पु० आदि र्य स्तथापि। अ० पा०।

(२) क० पु० जीओ-पाठः।

(३) क० पु० कायः। काओ। प्रा० ॥ अ० पा०।

(४) क० पु० तत्र लोपो न भवत्येवेति। तेन- अ० पा०।

(५) क० पु० तेन-सक्को,। मग्गो, अच्चा, अज्जुणो, अत्तवा*त्ता, रुद्दो, सुद्दो, सप्पो, दप्पो, अज्जो, सुज्जो, गव्वो। शक्र, मार्ग, अर्चा, अर्जुन, आर्तवार्ता, रुद्र, शूद्र, सर्प, दर्प, आर्य, सूर्य, गर्व इति अ०पा०॥

* बाहुलकान्न ह्रस्वः।

Aho ! Shrutgyanam

द्वि० ५-१ ओ) मग्गो । (४-१ आ=अ ३-३ रूलोपः ३-५० द्वि०५-१ ओ) शक्रः । मार्गः । अनादावित्येव । कालो गन्धो । (५-१ ओ उभयत्र) कालः । गन्धः ॥ २ ॥

यमुनायां मस्य ॥ ३ ॥

यमुनाशब्दे मकारस्य लोपो भवति । जउणा (२-३१ य्=ज् २-४२ न्=ण्) ॥ ३ ॥

स्फटिकनिकषचिकुरेषु कस्य हः ॥ ४ ॥

अनादाविति वर्तते । एषु कस्य हकारो भवति ॥ लोपापवादः । फलिहो (३-१स्लोपः २-२२ ट्=ल् ५-१ ओ) णिहसो (२-४२ न्=ण् २-४३ ष्=स् ५-१ ओ) चिहुरो (५-१ ओ) ॥ ४ ॥

शीकरे भः ॥ ५ ॥

शीकरशब्दे ककारस्य भकारो भवति । सीभरो । (२-४३ श्=स् ५-१ ओ) ॥ ५ ॥

चन्द्रिकायां मः ॥ ६ ॥

चन्द्रिकाशब्दे ककारस्य मकारो भवति । चंदिमा (३-३ रूलोपः ४-१७ विन्दुः ३-५६ द्वित्वनिषेधः) ॥ ६ ॥

ऋत्वादिषु तो दः(१) ॥ ७ ॥

ऋतु इत्येवमादिषु तकारस्य दकारो भवति(२) । उदू (१-२९

---

(१) "ऋत्वादिषु" शौरसेनी मागधी विषय एव । प्राकृते तु रिऊ उऊ ।

(२) क. पु. तकारोपादानं जमादीनां जकारादे माभूदित्यर्थः । भ० पा०

Aho ! Shrutgyanam

सू० स्य०)। रअदं (२–२ जूलोपः ५–३० बि०) आअदो (२–२ गूलोपः ५–१ ओ) णिव्वुदी (२–४२ नू=णू ३–३ रूलोपः ३–५० द्वि० १–२९ ऋ=उ ५–१८ दी०) आउदी (२–२ वूलोपः १–२९ ऋ=उ ५–१८ दी०) सुबुदी (प्रायोग्रहणात् वूलोपो न शे० पू० ४–१२ मूबिन्दुः) सुइदी (२–२ कूलोपः १–२८ ऋ=इ ५–१८ दी० एव मुत्तरत्रापि) आइदी। हदो (५–१ ओ) सञ्जदो (२–३१ यू=जू ५–१ ओ) विउदं (२–२ वूलोपः १–२९ ऋ=उ ५–३० बिन्दुः) सञादो (सञ्जदोवत्) संपदि (४–१२ मबिन्दुः ३–३ रूलोपः ३–५६ द्वित्वनिषेधः) पडिवदी। (३–३ रूलोपः २–८ तू=डू २–१५ पू=वू ३–१ तलोपः तकारस्य दकारेकृते ३–५० दूद्वि० ५–१८ दी०) ऋतुरजतागतनिर्वृत्यावृतिसंवृतिसुकृताकृतिहतसंयतविवृतसंयातसम्प्रतिप्रतिपत्तयः ॥ ७ ॥

प्रतिसरवेतसपताकासु डः(१) ॥ ८ ॥

एषु शब्देषुतकारस्य डकारो भवति। लोपापवादः पडिसरो (३–३ रूलोपः ५–१ ओ) वेडिसो (१–३ अ=इ ५–१ ओ) पडा-आ (२–२ कूलोपः) ॥ ८ ॥

वसतिभरतयोर्हः ॥ ९ ॥

वसतिभरतशब्दयोः तकारस्य हकारो भवति। वसही (५–१८दी०) भरहो (५–१ ओ) ॥ ९ ॥

---

(१) प्रति वेतसपताकासु डः–प्रते रुपसर्गस्य वेतसपताकयो। श्च य स्तकारस्तस्य डकारः स्यात्। पडिवाआ। पडिच्छन्दो पडिसरो। पडिकूलो। इत्यादि। कगजेति लोपापवादः। इति केचित्पठन्ति।

Aho ! Shrutgyanam

गर्भिते णः ॥ १० ॥

गर्भितशब्दे तकारस्य णकारो भवति । गब्भिणं (३-३ र् लोपः ३-५० द्वि० ३-५१ भ्=ब् ५-३० बिन्दुः)(१) ॥ १० ॥

ऐरावते च ॥ ११ ॥

ऐरावतशब्दे तकारस्य णकारो भवति । एरावणो (१-३५ ऐ-ए ५-१ ओ) ॥ ११ ॥

प्रदीप्तकदम्बदोहदेषु दो लः ॥ १२ ॥

एषु शब्देषु दकारस्य लकारो भवति । पलित्तं (३-३ र्लोपः ४-१ ई=इ ३-१ प्लोपः ३-५० तद्वि० ५-३० बिन्दुः) कलंबो (४-१७ बिं० ५-१ ओ) दोहलो (५-१ ओ) ॥ १२ ॥

गद्गदे रः ॥ १३ ॥

गद्गदशब्दे दकारस्य रेफादेशो भवति । गग्गरो (३-१ द्लोपः-३-५० ग्द्वि० ५-१ ओ) ॥ १३ ॥

संख्यायाश्च ॥ १४ ॥

संख्यावाचिनि शब्दे यो दकारस्तस्य रेफादेशो भवति । एआरह (२-२ क्लोपः २-४४ श्=ह्) बारह (३-१ द्लोपः शेषंपूर्ववत्) तेरह । (१-५ सूत्रेद्रष्टव्यम्) एकादश द्वादश त्रयोदश । अयुक्तस्येत्येव । नेह चउद्दह (१-९ सू० स्प०) ॥ १४ ॥

पो वः ॥ १५ ॥

पकारस्यायुक्तस्यानादिवर्तिनो वकारादेशो भवति । सावो २-४३ श्=स् ५-१ ओ) सवहो (२-२७ थ्=ह् शे० पूर्व-

---

(१) हरिते दिना णणः ८ । १ । २०९ रुण्णं । हे०

Aho ! Shrutgyanam

वत) उलवो । (५-१ ओ) शापः शपथः उलपः । प्रायोग्रहणा- द्यत्र लोपो(१) न भवति तत्रायं विधिः ॥ १५ ॥

आपीडे मः ॥ १६ ॥

आपीडशब्दे पकारस्य मकारो भवति । आमेलो (१-१९ ई=ए् २-२३ ड्=ल् ५-१ ओ) ॥ १६ ॥

उत्तरीयानीययोर्ज्जो वा(२) ॥ १७ ॥

उत्तरीयशब्देऽनीयप्रत्ययान्ते च यस्य ज्जो भवति वा । उत्तरीअं (२-२ यूलोपः ५-३० बि०) एव मुत्तरत्रापि । उत्त- रिज्जं । रमणीअं । रमणिज्जं । भरणीअं । भरणिज्जं ॥ १७ ॥

छायायां हः ॥ १८ ॥

छायाशब्दे यकारस्य हकारो भवति । छाहा ॥ १८ ॥

कबन्धे बो मः ॥ १९ ॥

कबन्धशब्दे बकारस्य मकारो भवति । कमन्धो (४-१७ बि० ५-१ ओ) ॥ १९ ॥

टो डः ॥ २० ॥

टस्यानादिवर्तिनोडकारोभवति। णडो (२-४२ न्=ण् ५-१ ओ) विडवो (२-१५ प्=व् ५-१ ओ) नटः । विटपः ॥ २० ॥

सटाशकटकैटभेषु ढः ॥ २१ ॥

एतेषु टकारस्य ढकारो भवति । सढा, सअढो (२-२ क्-

---

(१) कगचजे त्यादिना पूलोप इत्यर्थः ।

(२) क. पु. उत्तरीयानीययो र्यस्य ज्जो वा । सू० पा० । आरम- णिज्जं, आकरणिज्जं । अ० पा० । उत्तरीयानीययो र्यो ज्जो वा । इति केचित् ।

Aho ! Shrutgyanam

लोपः ५-१ ओ) केढवो (१-३५ ए=ए२-२९ भ्=व्
५-१ ओ) ॥ २१ ॥

स्फाटिके लः ॥ २२ ॥

स्फटिकशब्दे टकारस्य लकारो भवति। फलिहो (३-१ स्-
लोपः २-४ क्=ह् ५-१ ओ) ॥ २२ ॥

डस्य च ॥ २३ ॥

डकारस्यायुक्तस्यानादिभूतस्य लकारो भवति। दालिमं
(५-३० विं०) तलाअं (२-२ गुलोपः ५-३० विं०) वलही।
(२-२७ भ्=ह्) प्राय इत्येव(१)। दाडिमं (५-३० विं०) वडिसं
(२-४३ श्=स् ५-३० विं०) णिविडो (२-४२ न्=ण् ५-१ ओ)
दाडिमः। तडागः। वलभी। वडिशं। निविडं ॥ २३ ॥

ठो ढः ॥ २४ ॥

ठकारस्यायुक्तस्यानादिभूतस्य ढकारो भवति। मढं (५-३०
विं०) एवमग्रेऽपि-जढरं कढोरं। मठः। जठरं। कठोरं ॥ २४ ॥

अङ्कोले ल्लः ॥ २५ ॥

अङ्कोल शब्दे लकारस्य ल्लकारो भवति। अङ्कोल्लो
५-१ ओ)(२) ॥ २५ ॥

फो भः ॥ २६ ॥

फकारस्यायुक्तस्यानादिभूतस्य भकारो भवति। सिभा
(२-४३ श्=स्) सेभालिआ (२-२ कूलोपः) सभरी (२-४३

---

(१) क्वचिल्लकारो न भवतीत्यर्थः।

(२) क० पु० अङ्कोटेलः-अङ्कोटशब्दे टकारस्य लकारो भवति। अंकोलो।

शू=मू) सभलं (५-३० विं०)(१) ॥ २६ ॥

खघथधभां हः ॥ २७ ॥

खादीनाम्पञ्चानामयुक्तानामनादिवर्तिनां हकारो भवति। खस्य तावत्, मुहं (५-३० विं०) मेहला । घस्य, मेहो, (५-१ ओ) जहणं, (२-४२ नू=णू ५-३० विं०) थस्य गाहा। सवहो (२-१५ सू० स्प०) । धस्य, राहा । बहिरो (५-१ओ) भस्य, सहा । रासहो (५-१ ओ) प्राय इत्येव,(२) पखलो (३-३ रूलोपः ५-१ ओ) पलंघणो (३-३ रूलोपः ४-१७ वर्गान्त० २-४२ नू=णू ५-१ ओ) अधीरो (५-१ओ) अधणो (२-४२ नू=णू ५-१ ओ) उवलद्धभावो (२-१५ पू=वू ३-३ बूलोपः ३-५० धूद्वि० ३-५१ धू=दू प्रायोग्रहणात् न वूलोपः ५-१ ओ) मुखम्, मेखला, मेघः, जघनं, गाथा, शपथः, राधा, बधिरः, सभा, रासभः, प्रखलः, प्रलङ्घनः, अधीरः अधनः उपलब्धभावः ॥ २७ ॥

प्रथमशिथिलनिषधेषु ढः ॥ २८ ॥

एतेषु थधयोर्ढकारो भवति । पढमो (३-३ रूलोपः ५-१ ओ) सिढिलो (२-४३ शू=सू ५-१ ओ) णिसढो (२-४२ षू=सू शे० पूर्ववत) ॥ २८ ॥

कैटभेवः ॥ २९ ॥

कैटभशब्दे भकारस्य वकारो भवति । केढवो (१-३५ ऐ=ए २-२१ टू=ढू ५-१ ओ) ॥ २९ ॥

---

(१) क० पु० अयुक्तस्येति किम् । तवप्फलं । अनादाविति किम् । फलिहो । अ० पा०

(२) क्वचिद् हकारो नेत्यर्थः ।

Aho ! Shrutgyanam

हरिद्रादीनां रो लः ॥ ३० ॥

हरिद्रा, इत्येवमादीनां रेफस्य लकारो भवति । हलद्दा(१-१३ इ=अ ३-३ र्लोपः ३-५० द्वित्वं ५-२४ आत्वं बाहुल्यात्) चलणो (२-४२ न्=ण् ५-१ ओ) मुहलो (२-२७ ख्=ह् ५-१ ओ) जहिट्ठिलो (१-२२ सू० स्प०) सोमालो(१) (५-१ ओ) कलुणं (प्रायोग्रहणात्कुलोपाभावः ५-३० विं०) अङ्गुली (स्पष्टम्) इंगालो (४-१७ विं० ५-१ ओ) चिलादो (२-३३ क्=च् २-७त्-द्-५-१ ओ) फलिहा (२-३६ प्=फ् २-२७ ख-ह्) फलिहो (५-१ ओ शे० पूर्ववत्) हरिद्रा, चरण, मुखर, युधिष्ठिर, सुकुमार, करुण, अङ्गुरी, अङ्गार, किरात, परिखा, परिघ, इत्येवमादयः ॥ ३० ॥

आदेर्योजः । ३१ ।

अनादेरिति निवृत्तम् । आदिभूतस्य यकारस्य जकारो भवति । जट्ठी (३-१० ष्ट्=ठ् ३-५० द्वित्वं० ३-५१ ठ्=ट्५-१८ दीर्घः) जसो (२-४३ श्=स्४-६ स्लोपः ४-१८ पुंस्त्वं ५-१ ओ) जक्खो । (३-२९ क्ष्=ख् ३-५० ख्द्वि० ३-५१ ख्=क्- ५-१ ओ) यष्टिः, यशः यक्षः ॥ ३१ ॥

यष्ट्यां लः । ३२ ।

यष्टिशब्दे यकारस्य लकारो भवति लट्ठी (जट्ठीवत) ॥ ३२ ॥

किरातेचः । ३३ ।

किरातशब्दे आदेर्वणस्य चकारो भवति । चिलादो (२-३०

---

(१) नवा मयूख लवण चतुर्गुण चतुर्थ चतुर्दश चतुर्वार सुकुमार कुतूहलो दूखलो लूखले ८ । १ । १७१ मयूखादिष्वादेः स्वरस्य परेण सस्वरव्यञ्जनेन सह ओद् वा भवति । मोहो, मऊहो इत्यादि । हेम० । पक्षे-सुउमालो ।

Aho ! Shrutgyanam

सू० स्प०)(१) ॥ ३३ ॥

कुब्जखः ॥ ३४ ॥

कुब्जशब्दे आदेर्वर्णस्य खकारो भवति। खुज्जो (२)(३-३व्-लोपः ३-५० जूद्वि० ५-१ ओ) ॥ ३४ ॥

दोलादण्डदशनेषुडः(३) ॥ ३५ ॥

एषु आदेर्वर्णस्य डकारो भवति । डोला। डंडो (५-१ ओ) डसणो। (२-४३ श्=स् २-४२ न्=ण् ५-१ ओत्वं) ॥ ३५ ॥

परुषपरिघपरिखासुफः(४) ॥ ३६ ॥

एतेषु आदेर्वर्णस्य फकारो भवति। फरुसो (२-४३ ष्=स् ५-१ ओ) फलिहो, फलिहा (२-३० सू० स्प०) ॥ ३३ ॥

पनसे ऽपि ॥ ३७ ॥

पनसशब्दे ऽपि पकारस्य फकारो भवति) फणसो (२-४२ न्=ण् ५-१ ओत्वं) ॥ ३७ ॥

बिसिन्यां भः ॥ ३८ ॥

बिसिनीशब्दे आदेर्वर्णस्य भकारो भवति। भिसिणी। (२-४२ न्=ण्) स्त्रीलिङ्गनिर्देशादिह न भवति बिसं (२-४३ ष्=स् ५-३० त्रि०) ॥ ३८ ॥

---

(१) चिलाओ, पुलिन्द एवायं विधिः। तेन कामरूपिणि नेष्यते। नमिमोहरकिरायं-इति हे०।

(२) क० पु० खज्जो। पा०

(३) दशन दष्ट दग्ध दोला दण्ड दर दाह दम्भ दर्भ कदन दोहदे दो वा डः ८। १। ११७ एषु दस्य डोवा भवति ॥ हे०

(४) परुष पलितपरिखासु फः-इतिपाठे पलितेत्यपपाठः प्रतीयते। पलिते वा ८। १। २१२ पलिलं। पलिअ। हेम० इत्युदाहृतम्।

Aho ! Shrutgyanam

मन्मथे वः ॥ ३९ ॥

मन्मथशब्दे आदेर्वर्णस्य वकारो भवति । वम्महो (३-४३ न्म्=म् ३-५० द्वि० २-२७ थ्=ह् ५-१ओत्वं) ॥ ३९ ॥

लाहले णः ॥ ४० ॥

लाहलशब्दे आदेर्वर्णस्य णकारो भवति । णाहलो (ओत्वं पू०) ॥ ४० ॥

षट्शावकसप्तपर्णानां छः ॥ ४१ ॥

एतेषामादेर्वर्णस्य छकारो भवति। छट्ठी (३-१० ष्ठ्=ठ् शे० २-३१ सू०स्प०)छम्मुहो (१०-५* ण्=न् ३-४३ न्म्=म् ३-५० द्वि०२-२७ ख्=ह् ५-१ ओ०) छावओ (२-२ कूलोपः ५-१ ओ) छत्तवण्णो) ३-१ पूलोपः ३-५० त्द्वि० २-१५ प्=व् ३-३ र्लोपः ३-५० ण्द्वि० ५-१ ओ)। षष्ठी षण्मुखः शावकः सप्तपर्णः ॥४१॥

नो णः सर्वत्र ॥ ४२ ॥

आदेरिति निवृत्तम्(१)। सर्वत्र नकारस्य णकारो भवति(२)। णई (२-२ द्लोपः ५-१८ दीर्घः) कणअं (२-२ कूलोपः ५-३० विं०) वअणं (२-२ चूलोपः २-४२ न्=ण् ५-३० विं०) माणंसिणी (१-२ सू० स्प०) नदी । कनकं । वचनं । मनस्विनी ॥ ४२ ॥

शषोःसः ॥ ४३ ॥

सर्वत्र शकारषकारयोस्सकारो भवति । शस्य, सद्दो(३)३-३व्लोपः ३-५० द्वि० ५-१ ओ) णिसा (२-४२न्=ण् अंसो(४) (५-१ ओत्वं)। षस्य, संठो (४-१७ वर्गान्त० २-२४ ढ्=ठ्-ओत्वं

* व्यत्ययात्प्राकृतेऽपि । (१) सर्वत्रेति ग्रहणात् ।

(२) अयुक्तस्येत्येव क्वचित्पाठः । अयुक्तस्येति किम्, कन्दरा अन्तरम्

(३) सद्दो, इति क्वचित् । (४) अङ्सो इति क्वचित् ।

Aho ! Shrutgyanam

पू० ३·५६द्वि०न) वसहो (१-२७ ऋ=अ २-२७ भ्=ह्-ओत्वं पू०) क-साअं (२-२-यलोपः ५-३० विं०) शब्दः। निशा। अंशः। षण्ढः। वृषभः। कषायम् ॥ ४३ ॥

दशादिषु हः ॥ ४४ ॥(१)

दश इत्येवमादिषु शकारस्य हकारो भवति। दह (स्पष्ट) एआरह (२-२ क्लोपः २-१४ द्=र्) बारह (३-१ द्लोपः २-१४ द्=र्) तेरह(१-५ सू० स्प०) दश, एकादश, द्वादश, त्रयोदश ॥ ४४ ॥

संज्ञायां वा ॥ ४५ ॥

संज्ञायां गम्यमानायां वा दशशब्दे शस्य हत्वं भवति। दहमुहो, पक्षे दसमुहो (२-४३ श्=स् २-२७ ख्=ह् ५-१ ओ) दहबलो दसबलो, (पूर्ववत्) दहरहो दसरहो (२-२७ थ्=ह् ५-१ ओत्वम्) दशमुखः, दशबलः, दशरथः ॥ ४५ ॥

दिवसेसस्य ॥ ४६ ॥(२)

दिवसशब्दे सकारस्य हकारो वा भवति। दिअहो दिअसो (२-२ वलोपः ५-१ ओ) दिवसः ॥ ४६ ॥

स्नुषायां ण्हः ॥ ४७ ॥(३)

इति वररुचि कृत प्राकृत सूत्रेषु अयुत वर्ण विधिर्नाम द्वितीयः परिच्छेदः।

स्नुषाशब्दे षकारस्य ण्हकारो भवति। सोण्हा (१-२० ओत्वम् ३-२ नकारलोपः ॥ ४४ ॥

इति भामहविरचिते प्राकृतप्रकाशे द्वितीयः परिच्छेदः ॥

---

(१) दशपाषाणेहः। ८। १। २६२ ॥ दहमुहो, दसमुहो-पाहाणो, पासाणो। हे०।

(२) दिवसे सः। ८। १। २६२ दिवहो, दिवसो। हे०

(३) स्नुषायां ण्हो न वा। ८। १। २६१ ॥ सुण्हा, सुसा। हे०

Aho ! Shrutgyanam

तृतीयः परिच्छेदः ।

उपरिलोपः कगडतदपषसाम् ॥ १ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्योपरि स्थितानां लोपो भवति । कस्य तावत् भत्तं, (३–५० तद्वि० ५–३० बिं०) सित्थओ (३–५० थद्वि. ३–५१ थू=तू २-२ कूलोपः ५–१ ओ)गस्य, मुद्धो (३–५०धद्वि० ३–५१ धू=दू ५–१ओ) सिणिद्धो (२–४२ नू=णू ३–५९ अधिकारसूत्रात विप्रकर्षः पूर्वस्वरता च ३–५० धद्वि० ३–५१ धू=दू ओ० पूर्व०) डस्य, खग्गो ३–५० गद्वि० ओ–पू०) तस्य, उप्पलं (३–५० पद्वि० ५–३० बिं०) उप्पाओ (३–५० पद्वि २-२ तलोपः ५–१ ओ) दस्य, मुग्गा (३–५० गद्वि० ५–११ दी० ५–२ जसोलोपः) मुग्गरो । (५–१ ओ शे० पू०) पस्य, सुत्तो(१) । ३–५० तद्वि०ओ०पू०) षस्य,गोट्ठी (३–५० ट्वि० ३–५१ ठू=टू) णिट्ठुरो । (२–४२ नू=णू ३–५० ठद्वि० ३–५१ ठू=टू ५–१ ओ) सस्य, खलिअं (२–२ तलोपः ५–३० बिं०) णेहो । (२–४२ नू=णू ५-१ ओ) भक्तम् सिक्थकम् मुग्धः स्निग्धः खड्गः उत्पलम् उत्पातः मुद्गाः मुद्गरः सुप्तः गोष्ठी निष्ठुरः स्खलितम् स्नेहः ॥ १ ॥

अधो मनयाम् ॥ २ ॥

मकारनकारयकाराणां युक्तस्याधः स्थितानां लोपो भवति । मस्य, सोस्सं(२–४३ शू=सू१–२०उ=ओ मलोपे २–४३ षू=सू

(१) का० पु० पज्जत्तो, पर्याप्तः अ० पा० ।

Aho ! Shrutgyanam

३-५० मुद्वि० ५-३०विं०) रस्सी (२-४३शू मलोपे ३-५० मुद्वि० ५-१८ दीर्घः) जुग्गं । (२-३१ य्=ज् मलोपे ३-५० गुद्वि० विं०पू०) वग्गी, (४-१ आ=अ शे०पू० ५-१८ दीर्घः) नस्य, णग्गो । (२-४२ न्=ण् न्लोपे ३-५० गुद्वि० ५-१ओ) यस्य, सोम्मो (१-४१ औ=ओ य्लोपे (३-५० मद्वि० ओत्वंपू०) जोग्गो (२-३१ य्=ज् शे० पूर्ववत्) शुष्म, रश्मिः, युग्मम्, वाग्मी, नग्नः, सौम्यः, योग्यः ॥ २ ॥

सर्वत्र लवराम् ॥ ३ ॥

लकारवकाररेफाणां युक्तस्योपर्यधः स्थितानां लोपो भवति। लस्य, उक्का (३-५० कुद्वि०) वक्कलं, विक्कवो (प्राय इति वलोपो न ५-१ ओ) वस्य लुद्धओ (३-५० धू=द्वि० ३-५१धू=द् २-२ क्लोपः ५-१ ओ)(१) पिक्कं । (१-३ सू०स्यष्ट)रस्य, अक्को (३-५० कुद्वि०५-१ ओ) सक्को (२-४३ श्=स्, शे० पूर्व०) उल्का, वल्कलम्, विक्लवः, पक्वम्, अर्कः, शक्रः ॥३॥

द्रे रो वा ॥ ४ ॥(२)

द्रशब्दे रेफस्य वा लोपो भवति । दोहो ५-१ ओ) द्रोहो । चन्दो (३-५६ दुद्वि० न शे० पू०) चन्द्रो । रुद्दो (३-५० दुद्वि० ५-१ ओ) रुद्रो । द्रोहचन्द्ररुद्राः ॥ ४ ॥

सर्वज्ञतुल्येषु ञः ॥ ५ ॥

सर्वज्ञतुल्येषु अकारस्य लोपो भवति । सव्वज्जो । (३-३

---

(१) लोद्धओ इति क्वचित् तत्र तुण्डरूपसमत्वादोत्वम् ।

(२) बाधो रोलुक् ८।४।३९८ अपभ्रंशे संयोगादधोवर्तमानो रेफो लुग् वा भवति । उदाहृतं लोपाभावे-जइ भग्गा पारक्कडा तो सहि भज्जु प्रियेण इति हे०

Aho ! Shrutgyanam

रकार लोपः ३–५० वजयोर्द्वि० ओत्वं पू०) इंगिअज्ञो (४–१७ वर्गान्तोवा २–२ तूलोपः ञूलोपे जद्वि० पू०) जानात र्यान्येवं रूपाणि तत्र ञूलोपः(१) ॥ ५ ॥

श्मश्रुश्मशानयोरादेः ॥ ६ ॥

श्मश्रुश्मशानयोरादेर्वर्णस्य लोपो भवति । मस्सु (२–४३ शू=स् ३–३ रूलोपः ३–५० सूद्वि०) मसाणं (२–४३ शू–स् २–४२ नू=णू ५–३० विं०) ॥ ६ ॥

मध्याह्ने हस्य ॥ ७ ॥

मध्याह्नशब्दे हकारस्य लोपो भवति । मज्झण्णो(३–२८ ध्यू=झू ३–५० झूद्वि० ३-५१ झू=जू ४–१आ=अ २–४२ नू=णू ३–५० द्वि० ५–१ ओ) ॥ ७ ॥

ह्नह्लह्मेषु नलमां स्थितिरूर्ध्वम् ॥ ८ ॥

ह्न ह्ल ह्म इत्येतेषु अधः स्थितानां नकारलकारमकाराणां स्थितिरूर्ध्वमुपरिष्टाद्भवति । ह्नस्य, पुव्वण्हो । (४–१ पू=पु३–३ रूलोपः ३–५० वद्वि० २–४२ नू=णू ५–१ ओ) अवरण्हो । (२–१५ पू=वू ४–१ रा=र शे० पू०) ह्लस्य, अल्हादो । (४–१ आ=अ ५–१ ओ)ह्मस्य, वम्हणो (३–३ रूलोपः ४–१ आ=अ- ५–१ ओत्वम्) ॥ ८ ॥

युक्तस्य ॥ ९ ॥

अधिकारो ऽयमापरिच्छेदसमाप्तेः, यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामो युक्तस्येत्येवं वेदितव्यम् । वक्ष्यति अस्थनि, अट्ठी (३-११ स्थू=ठू ३–५० ठूद्वि० ३–५१ठू= टू ५–१८ दीर्घः) अस्थि। युक्तग्रहणं हलो ऽन्त्यस्य मा भूत ॥ ९ ॥

(१) क० पु० मणोज्ञो 'अ० पा। सर्वज्ञेङ्गितमनोज्ञाः ।

Aho ! Shrutgyanam

ष्टस्य ठः ॥ १० ॥

ष्ट इत्येतस्य युक्तस्य ठकारो भवति । लट्ठी (२-३२ य्=ल् शे० पू०) दिट्ठी (१-२८ सू० स्प० शे० पू०) यष्टिः, दृष्टिः ॥ १० ॥

अस्थनि ॥ ११ ॥

अस्थिशब्दे युक्तस्य ठकारो भवति । अट्ठी (३-९ सू० स्प० ॥ ११ ॥

स्तस्य थः ॥ १२ ॥

स्तशब्दस्य थकारो भवति । उपरिलोपापवादः । हत्थो (३-५० थ्द्वि० ३-५१ थ्=त् ५-१ ओ) समत्थो, ३-३ र्लोपः शे० पू०) थुई (२-२ तलोपः ५-१८ दीर्घः) थवओ (२-२मायो ग्रहणात् वलोपो न, कलोपस्तु भवति ५-१ ओ) कोत्थुहो । (१-४१ सू० स्पष्टं) हस्तः समस्तः स्तुतिः स्तवकः कौस्तुभः ॥ १२ ॥

स्तम्बे ॥ १३ ॥

स्तम्बशब्दे स्तकारस्य थकारो न भवति । तंबो (३-१ स् लोपः ४-१७ वर्गान्त० ५-१ ओ) ॥ १३ ॥

स्तम्भे खः ॥ १४ ॥

स्तम्भशब्दे स्तकारस्य खकारो भवति । खंभो (४-१७ वर्गान्त० ओत्वं पू०) ॥ १४ ॥

स्थाणावहरे ॥ १५ ॥

स्थाणुशब्दे युक्तस्य खकारो भवति, अहरे हरेऽभिधेये न भवति । खाणू । (५-१८ दीर्घः) अहर इति किम् । थाणू (३-१ सूलोपः शे० पू०) हरो (५-१ ओ) स्थाणु हरः ॥ १५ ॥

स्फोटके ॥ १६ ॥

स्फोटकशब्दे युक्तस्य खकारो भवति ॥ खोडओ (२-२० ट्=ड् २-२ क्लोपः ५-१ ओ) ॥ १६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

र्यशय्याभिमन्युषु जः ॥ १७ ॥

र्य इत्यस्य शय्याभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जकारो भवति। कज्जं (४-१आ=अ३-५० जद्वि० ५-३० बिं) सेज्जा (१-५ सू०स्पष्टं) अहिमज्जू(१) (२-२७ भू=हू ३-५० जद्वि०५-१८दीर्घः) कार्यम्, शय्या, अभिमन्युः ॥ १७ ॥

तूर्यधैर्यसौन्दर्याश्चर्यपर्यन्तेषु रः ॥ १८ ॥

एतेषु शब्देषु र्यस्य रेफो भवति । तूरं (३-५४ रस्याद्वि० न ५-३०बिं) धीरं (१-३९ सू०स्पष्टं) सुंदेरं अच्छेरं पेरन्तं (१-५ सू० स्प०) ॥ १८ ॥

सूर्ये वा ॥ १९ ॥

सूर्यशब्दे र्यकारस्य रेफादेशो भवति वा। सूरो (५-१ ओत्वं) सुज्जो(२)। पक्षे (४-१ ऊ=उ ३-१७ र्य=ज् ३-५० जद्वि० ओ० पू०) ॥ १९ ॥

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २० ॥

चौर्यसमेषु शब्देषु र्यस्य रिअमित्यादेशो भवति। चोरिअं (१-४१ औ=ओ) सोरिअं वीरिअं (२-४३श्=स् शे० पूर्व०) चौर्यशौर्यवीर्याणि । समग्रहणादाकृतिगणोयम् ॥ २० ॥

पर्यस्तपर्याणसौकुमार्येषु लः ॥ २१ ॥

एषु शब्देषु र्यस्य लकारो भवति(३)। पल्लत्थं (३-५० लद्वि० ३-१२ स्त=थ्-३-५० थद्वि० ३-५१ थ्=त् ५-३० बिं०)

---

(१) क० पु० शेषादेशयोर्द्वित्वमनादाविति द्वित्वम् । तत्र जकारस्य वर्ग तृतीयत्वेन युक्ताभावा "द्वर्गेषु युजः पूर्व"इत्यस्य न प्राप्तिः। अ० पा०

(२) वाग्राहणात् "र्यशय्यादि" सूत्रेण जकारो पि।

(३) लकारोभवति। क० पु० पा०।

Aho ! Shrutgyanam

पल्लाणं (पूर्ववत) सोअमल्लं (१–२२ सू०स्पष्टं) ॥ २१ ॥

र्तस्य टः ॥ २२ ॥

र्त इत्येतस्य टकारो भवति। केवट्टओ (१-३४ ऐ=ए प्रायोग्रहणात् वलोपो न ३–५० द्वि० २–२ कृलोपः ५–१ओ) णट्टओ, णट्टई (२–४२ न्=ण् शे० पू०) कैवर्तक–नर्तक–नर्तक्यः(१) ॥ २२ ॥

पत्तने ॥ २३ ॥

पत्तनशब्दे युक्तस्य टकारो भवति। पट्टणं (३–५० द्वि०) २–४२ न्=ण् ५–३० विं०) ॥ २३ ॥

नधूर्तादिषु ॥ २४ ॥

धूर्त इत्येवमादिषु त इत्येतस्य टकारो न भवति। धुत्तो(३-३ र्लोपः ३–५० तद्वि० ४–१ ह्रस्वः ५–१ ओ) कित्ति (३–३ र्लोपः ३-५० त्द्वि० ४-१ ह्रस्वः ५-२१ ह्रस्वः) वत्तमाणं (३–३ र्लोपः ३–५० द्वि० २–४२ न्=ण् ५-३० विं) वत्ता (४–१ आ=अ ३–३ र्लोपः शे० पू०) आवत्तो (५–१ ओ शे० पू०) संवत्तओ(३-३ र्लोपः ३-५० द्वि० २–२ कलोपः शे० पू०) णिवत्तओ (२–४२ न्=ण्० शे० पू०) वत्तिआ (३-३ र्लोपः ३-५० तद्वि० २-२ कलोपः) अत्तो,कत्तरी मुत्ती (पूर्ववद्रलोपो ह्रस्वादिकश्च) धूर्तः, कीर्तिः, वर्तमानम्, वार्ता, आवर्तः,संवर्तकः, निवर्तकः, वर्तिका, आर्तः, कर्तरी, मूर्तिः ॥२४॥

गर्ते डः ॥ २५ ॥

गर्तशब्दे र्तस्य डकारो भवति। गड्डो (३-५० ड्द्वि० ५-१ ओ) ॥ २५ ॥

---

(४) वट्टई पाठे वर्तत इति क्वचिदधिकम्।

Aho ! Shrutgyanam

गर्दभसंमर्द(१)वितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य ॥ २६ ॥

एतेषु र्दस्य डो भवति । गड्डहो (३-५० ड्द्वि० २-२७ भ्=ह् ५-१ ओ) (संमड्डो पूर्व०) विअड्डी (२-२ तलोपः ३-३ रलोपः ड्द्वि० पू० ५-१८ दीर्घः) विछड्डी (पूर्ववत्) ॥ २६ ॥

त्यथ्यद्यां चछजाः ॥ २७ ॥

त्यथ्य द्य इत्येतेषां च छ जइत्येते यथासंख्यंभवन्ति । त्यस्य, णिच्चं(२) (२-४२ न्=ण् ३-५० च्द्वि० ५-३० बिं०)पच्च-च्छं। (३-३ रलोपः ३-३० क्ष्=छ् ५-३० बिं०) थ्यस्य रच्छा,मिच्छा पच्छं (३-५० छ्द्वि० ३-५१ छ्=च्)द्यस्य,विज्जा (३-५० ज्द्वि०) वेज्जो । (१-३४ ऐ-ए पू० ज्द्वि० ५-१ ओ) नित्यम्,प्रत्यक्षम्,रथ्या,मिथ्या,पथ्यम्,विद्या,वैद्यः ॥ २७ ॥

ध्यह्योर्झः ॥ २८ ॥

ध्य ह्य इत्येतयोर्झकारो भवति । ध्यस्य, मज्झं (३-५० झ्द्वि० ३-५१ झ्=ज् ५-३० बिं) अज्झाओ। (५-१ ओ शे० पू०) ह्यस्य, वज्झओ (४-१ आ=अ २-२ कलोपः शे० पू०) गुज्झओ (पूर्ववत्) । मध्यः,अध्यायः, वाह्यकः, गुह्यकः ॥ २८ ॥

ष्कस्कक्षां खः ॥ २९ ॥

ष्कस्कक्षां खकारो भवति । ष्कस्य, सुक्खं (३-५० ख्द्वि० ३-५१ ख्=क् ५-३० बिं०) पोक्खरो (१-२० मू० स्प०) । स्कस्य, खंदो, खन्धो (४-१७ वर्गान्त० ५-१ ओ) क्षस्य, खदो

---

(१) क्वचिद् विमर्दइत्यधिकः पाठस्तत्र विमड्डुतिबोध्यम्।

(२) क्वचित्सच्चं, पच्चखं, पच्चच्चं । सत्यं, प्रत्यक्षं, पाश्चात्यमित्य-धिकम् ।

Aho ! Shrutgyanam

जक्खो (२–३१ सू० स्प०)(१) ॥ २९ ॥

अक्ष्यादिषुच्छः ॥ ३० ॥

अक्षि, इत्येवमादिषु क्षकारस्यच्छकारो भवति। अच्छी (३–५० छद्वि०(२) ३–५१ छ्=च् ५–१८ दीर्घः) लच्छी (३–२ मलोपः शे० पू०) छुण्णो (५–१ ओ) छीरं (स्पष्टं) छुद्धो (३–३ वूलोपः ३–५० धद्वि० ३–५१ ध्=द् ५–१ ओ) उच्छित्तो (३–१ तपयोर्लोपः ३–५० छद्वि० ३–५१ चत्वं ३–५० तद्वि० ५–१ ओत्वं) सरिच्छं (१–२ सू० स्प०) उच्छू (१–१५ सू० स्पष्टं) उच्छा (५–४७ आत्मवत् कार्यं शे० पू०) रिच्छो (१–३ ऋ=रि ३–५० छद्वि० ३–५१ छ्=च् ५–१ ओ) मच्छिआ (२–२ कूलोपः शे० पू०) छुअं (२–२ तूलोपः ५–३० बिं०) छुरं (५–३० विं०) छेत्तं (३–३ रूलोपः ३–५० तद्वि० ५–३० विं०) वच्छो (३–५० छद्वि० ३–५१ छ्=च् ४—१८ पुं० ४—६ लोपः ५–१ ओ) दच्छो (पूर्ववत) कुच्छी (५–१८ दीर्घ शे० पू०)। अक्षि, लक्ष्मी, क्षुण्ण, क्षीर, क्षुब्ध, उत्क्षिप्त, सदृक्ष, इक्षु, उक्षन्, क्षार, ऋक्ष, मक्षिका, क्षुत,क्षुर(३), क्षेत्र, वक्षस्(४),दक्ष,कुक्षि, इत्येवमादयः(५)॥३०॥

क्षमावृक्षक्षणेषु वा ॥ ३१ ॥

एतेषु क्षकारस्य छकारो भवति वा छमा खमा(६) (३-२९

---

(१) शुष्क, पुष्कर, स्कन्द, स्कन्ध, क्षत, यक्षाः। मुक्खमिति पाठे मुष्केति।

(२)चकाररहितच्छकार आदेशो बोध्यः। तेथव च छुण्णादिषु दृश्यते

(३) क्षुरे विकल्पः, छुरो, खुरो इति पठन्ति केचित्।

(४) वृक्ष इति केचित्।

(५) आर्षे इक्खू, खीर, सारिक्ख मित्याद्यपि दृश्यते। हे० ॥

(६) क्षमा पृथिवी, खमा क्षान्तिः। हे०

Aho ! Shrutgyanam

क्ष्=ख्) वच्छो रुक्खो (१-३२ सू० स्पष्टं) छणं खणं (पक्षे ३-२९ क्ष्=ख् ५-३० वि०) वृक्ष शब्दे ऋकारस्याकारे कृते क्षणशब्देचोत्सवाभिधायिनि छत्वमिष्यते(१) ॥ ३१ ॥

ष्मपक्ष्मविस्मयेषुम्हः ॥ ३२ ॥

ष्म इत्येतस्य पक्ष्मविस्मयशब्दयोश्च युक्तस्य म्हकारो भवति ष्मस्य, गिम्हो (३-३ रेफलोपः ह्रस्वः संयोगे=ई=इ ५-१ ओ) उम्हा(५-४७ आत्मवत् कार्यं शे०पू०)पम्हो (५-१ओ शे०पू०) विम्हओ ॥ (२-२ यूलोपः शे० पू०) ग्रीष्म, उष्मन्, पक्ष्मन्, विस्मयः ॥ ३३ ॥

ह्नस्नष्णक्ष्णश्नां ण्हः ॥ ३३ ॥

ह्नादीनां ण्ह इत्ययमादेशो भवति । ह्नस्य, वण्ही, जण्हू ५-१८ दीर्घः) । स्नस्य, ण्हाणं (५-३० विं, पण्हुदं (३-३ रूलोपः १२-३(२) त्=द् ५-३० विं) ष्णस्य, विण्हू (५-१८ दी०)कण्हो(३-६१ वि[illegible]कर्षात् ऋ=अ५-१ओ)। क्ष्णस्य, सण्हं(२-४३श्=स् विप्र[illegible]बाहुलकेन लत्थात्त्वे५-३० विं०)ति ण्हं।(ह्रस्वः संयो[illegible] शे० पू०)श्नस्य, पण्हो (३-२ रूलोपः ५-१ ओ) [illegible] (२-४३ श्=स् शे० पू०) वह्निः, जह्नुः, स्नानम्, [illegible]ष्णुः, कृष्णः, श्लक्ष्णं, तीक्ष्णम्, प्रश्नः, शिश्नः ॥३३॥

चिन्हे न्धः ॥ ३४ ॥

चिन्हशब्दे युक्तस्य न्ध इत्ययमादेशो भवति । चिन्धं(१-१२ सू० स्प०) ॥ ३४ ॥

---

(१) क० पु० छणो क्षण उत्सव इत्यर्थः । अ० पा०

(२) व्यत्ययात्प्राकृतेऽपि एवं खदो इत्यत्रापि बोध्यम् ।

Aho ! Shrutgyanam

ष्पस्य फः ॥ ३५ ॥

ष्प इत्येतस्य फ इत्ययमादेशो भवति । पुप्फं (३-५० फद्वि० ३-५१ फ्=प् ५-३० विं) सप्फं (२-४३ श्=स् शे० पू०) णिप्फाओ (२-४२ न्=ण् २-२ प्लोपः फद्वित्वं पत्वं च पू० ५-१ ओ) पुष्पम्, शष्पम्, निष्पापः ॥ ३५ ॥

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ ३६ ॥

स्प इत्येतस्य सर्वत्र स्थितस्य फ इत्ययमादेशो भवति । फंसो (४-१५ बिन्दुः ३-३रलोपः २-४३ श्=स्५-१ ओ) फंदणं । २-४२ न्=ण् ५-३० विं शे० पू०) स्पर्शः, स्पन्दनम् ॥३६॥

सि च ॥ ३७ ॥

स्पस्य क्वचित् सि इत्ययमादेशो भवति । पाडिसिद्धी(१-२ सू० स्पष्ट) । प्रतिस्पर्द्धी ॥ ३७ ॥

बाष्पे अश्रुणि हः ॥ ३८ ॥

बाष्पशब्दे ष्प इत्येतस्य हकारो भवति अश्रुणि वाच्ये । बाहो । (५-१ ओ ३-५४ हद्वि० न) अश्रुणि किम् । बप्फो (४-१ बा=ब ३-३५ ष्प्=फ् ३-५० फद्वि० ३-५१ फ्=प् ५-१ ओ) उह्मा(१) । (५-४७ आत्मवत्) बाष्पः, ऊष्मा॥३८॥

कार्षापणे ॥ ३९ ॥

कार्षापणशब्देयुक्तस्य हकारो भवति । काहावणो(२-१५ प्=व् २-४२न्=ण्५-१ओ) ॥ ३९ ॥

श्चत्सप्सां छः ॥ ४० ॥

एतेषां छकारो भवति । श्चस्य, पच्छिमं (३-५० छद्वि० ३-

(१) क्वचिदयं पाठो न दृश्यते ।

Aho ! Shrutgyanam

५१ छ्=च् ४-१२ विं) अच्छेरं। (१-५-सू०स्पष्टं) त्सस्य, वच्छो (५-१ ओ) वच्छरो। (३-५० छद्वि० ३-५१ छ्=च् ५-१ ओ) प्सस्य, लिच्छा, जुगुच्छा। (स्पष्टं) पश्चिमम्, आश्चर्यम्, वत्सः, वत्सरः, लिप्सा जुगुप्सा ॥ ४० ॥

वृश्चिके ञ्छः ॥ ४१ ॥

वृश्चिकशब्दे श्चकारस्य ञ्छ इत्ययमादेशो भवति। विञ्छ-ओ (शे० १-१५ सू० स्प०) ॥ ४१ ॥

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ ४२ ॥

उत्सुक, उत्सव, इत्येतयोः छकारो न भवति। श्चत्सप्सां छ इति प्राप्ते प्रतिषिध्यते। उस्सुओ (२-२ क्लोपः ५-१ ओ) उस्सवो (३-१ तलोपः ३-५० सद्वि०) (२-२ प्रायोग्रहणात् वलोपो न शे० पू०) ॥ ४२ ॥

न्मो मः ॥ ४३ ॥

न्म इत्येतस्य म इत्ययमादेशो भवति। अधोलोपे प्राप्ते। जम्मो (३-५० मद्वि० ५-१ ओ) वम्महो (२-२९ सू०स्प०) जन्म, मन्मथः ॥ ४३ ॥

म्नज्ञपञ्चाशत्पञ्चदशेषु णः ॥ ४४ ॥

म्न ज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णकारो भवति। म्नस्य, पज्जुण्णो। (३-३ रलोपः ३-२७द्य्-ज् ३-५० जणयोर्द्वि० ५-१ ओ) ज्ञस्य(१), जण्णो (२-३१ य्=ज् शे० पू०) विण्णाणं (३-५० णद्वि० २-४२ न्=ण् ५-३० विं) पण्णासा (२-४३श्=स् ४-७ त्=आ शे० पू०) पण्णरहो।

---

(१) ज्ञोञः। ८। २। ८३॥ ज्ञः सम्बन्धिनोञस्य लुग् भवति। संजा, सण्णा। क्वचिन्न भवति विण्णाणं। हे०

Aho ! Shrutgyanam

३-५० ण्द्वि० २-१४ दु=रू २-४४ श=ह ५-१ ओ) पञ्जु-ण्णः, यज्ञः, विज्ञानम्, पञ्चाशत्, पञ्चदश ॥ ४४ ॥

तालवृन्ते ण्टः ॥ ४५ ॥

तालवृन्तेयुक्तस्यण्टइत्ययमादेशोभवति । तालवेण्टअं(१-१० सू० स्पष्टं) ॥ ४५ ॥

भिन्दिपालेण्डः ॥ ४६ ॥

भिन्दिपालशब्दे युक्तस्य ण्ड इत्ययमादेशो भवति । भिण्डि-वालो (२-१५ प=व् ५-१ ओ) ॥ ४६ ॥

विह्वले भहौ वा(१) ॥ ४७ ॥

विह्वलशब्दे युक्तस्य भकारहकारौ भवतो वा । बिब्भलो(२) (३-५० भ्द्वि० ३-५१ भ्=ब् ५-१ ओ) विहलो (३-५४ ह्द्वित्वं न) विह्वलः ॥ ४७ ॥

आत्मनिपः ॥ ४८ ॥

आत्मशब्दे युक्तस्य पकारो भवति । अप्पा (३-५० प्द्वि० ५-४६ अन्=आ) ॥ ४८ ॥

क्मस्य ॥ ४९ ॥

क्म इत्येतस्य पकारो भवति । रुप्पं (३-५० प्द्वि० ५-३० विं) रुप्पिणी (पूर्व०) । रुक्मं, रुक्मिणी । योगविभागो नियमार्थः ॥ ४९ ॥

शेषादेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ५० ॥

युक्तस्य यौशेषादेशभूतौतयोरनादौवर्तमानयोर्द्वित्वं भवति ।

---

(१) वा विह्वले वौ वश्च । ८ । २ । ५८ विह्वलेह्वस्य भो वाभवति, तत्सन्नियोगे च विशब्दे वस्य वा भो भवति । भिब्भलो । हे० ।

(२) क्वचिद् वेब्भलो तत्र पिण्डसमत्वादेत्वं बोध्यम् ।

Aho ! Shrutgyanam

शेषस्य तावत्, भुत्तं (३-१ कूलोपः ३-५० तद्वि० ५-३० विं०) मग्गो । (३-३ रूलोपः ३-५० गद्वि०५-१ ओ) आदेशस्य, लट्ठी (२-३२ सू० स्प०) दिट्ठी (१-२८ सू० स्प०) हत्थो । (३-१२सू० स्प०) अनादाविति किम् । खलिअं (३-१ सूलोपः २-२ तलोपः ५-३० विं०) खंभो (३-१४ सू० स्प०) थवओ (३-१२ सू० स्प०) भुक्तम्, मार्गः, यष्टिः, हस्तः, स्खलितम्, स्तम्भः, स्तवकः ॥ ५० ॥

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ५१ ॥

युक्तस्य यौ शेषादेशावनादिभूतौतयोर्द्वित्वेपिविहिते अथ ऊर्ध्वे(१) च यौ वर्गेषुवर्णोद्वितीयश्चतुर्थोवा(२) विहितस्तस्य पूर्वः प्रथमस्तृतीयो वा भवति । वर्गेषु युग्मस्य द्वितीयस्य प्रथमः, चतुर्थस्य तृतीयो द्वित्वेन विधीयते, अयुग्मयोः प्रथमतृतीययाश्चप-रूपयोः शेषादेशयोस्तु तावेव भवतः । शेषस्य, वक्खाणं (३-२ उभयत्र यूलोपः ४-१ ह्रस्वः ३-५० खद्वित्वे पूर्व० ख्=क् २-४२ न्=ण् ५-३० विं०) अग्घो (३-३ रूलोपः ५-१ ओ) मुच्छा (४-१ ह्रस्वः) णिज्झरो लुद्धो णिब्भरो (पू० दुलोपादि) । आदेशस्य, दिट्ठी (१-२८ सूत्रतोऽनुसन्धेयम्) लट्ठी (२-३२ सूत्रे स्पष्टम् ।) वच्छो (३-३० सू० स्प० शेषमवदातम्) विप्फरिसो (३-३५ स्प्=फ् ३-६२ विप्रकर्षः पूर्वस्वरतयारिकारश्च २-४३ श्=स् ५-१ ओ.) णित्थारो (२-४२ न्=ण् ३-१२ स्त्=थ् शे० स्प०) जक्खो (१-३१ सूत्रोदाहरणे स्प०) लच्छी (३-३० सूत्रे स्पष्टम्) अट्ठी (३-११ सूत्रे स्प०) पुप्फं (३-३५

(१) क० पु० ऊर्ध्वेण० । अ० पा०

(२) क० पु० "अवशिष्टो विहितो यः" अ० पा०

Aho ! Shrutgyanam

सूत्रे स्प०) (सर्वत्र द्वित्वम् ३–५० सूत्रेणबोध्यम्) । व्याख्यानम्, अर्घः, मूर्च्छा, निर्झरः, लुब्धः, निर्भरः, दृष्टिः, यष्टिः, वक्षः, विस्पर्शः, निस्तारः, यक्षः, लक्ष्मीः, अस्थि, पुष्पम्, ॥५१॥

नीडादिषु ॥ ५२ ॥

नीड इत्येवमादिषु अनादौ वर्तमानस्य च द्वित्वं भवति(१) । णेड्डं (स्पष्टम्) एन्नीडापीडेत्यादिना एत्वम् । सोत्तं(३–३ रलोपः ४–६ अन्त्यलोपः५–३०विन्दुः) पेम्मं(३–३ रलोपः वाहुलकाद् उभयत्र ४-१८ मवृत्ति न शे० पूर्ववत्) वाहित्तं(२)(२–२ यलोपः १–२८ ऋ=इ ५–३० विन्दुः) उज्जुओ(३) (१–२९ ऋ=उ ५-१ ओ० २-२ कलोपः ५-१ ओ) जण्णओ (१-४१ औ=ओ २–४२ न्=ण् २–२ कलोपः ५–१ ओ) जोव्वणं (१-४१ औ=ओ २–३१ य्=ज् २-४२ न्=ण् ५–३० विं०) नीडम्, स्रोतः, प्रेम, व्याहृतम्, ऋजुकः, जनकः, यौवनम् ॥ ५२ ॥

आम्रताम्रयोर्वः ॥ ५३ ॥

आम्र ताम्र इत्येतयोर्द्वित्वेनवकारोभवति । अव्वं, तव्वं(४) (४–१ ह्रस्वः संयोगे ३–५० वृद्धि० ५–३० विं०) ॥ ५३ ॥

न रहोः ॥ ५४ ॥

रेफहकारयोर्द्वित्वं न भवति । धीरं (१–३९ सूत्रे स्प०) तूरं

---

(१) अनादेशत्वादप्राप्तेविधिरयम् ।

(२) इत्कृपादौ । ८ । १ । १२८ हेम सूत्रे कृपाद्यन्तर्गतव्याहृतस्य पाठात् ।

(३) ऋणर्जृवृषभत्वृषौ वा ८ । १ । १४१ इति हेमानुसारतः रिज्जू । उज्जू ।

(४) हेमस्तु "ताम्राम्रेम्बः" अनयोः संयुक्तस्य मयुक्तोवो भवति। अम्बं, तम्बं, इत्याह ।

Aho ! Shrutgyanam

(३-१८ सू० स्पष्टं) जीहा (१-१७ सू० द्रष्टव्यं) वाहो (३-३८ सू० स्पष्टं)। धैर्यम, तूर्यम्, जिह्वा, वाष्पः ॥ ५४ ॥

आङोज्ञस्य ॥ ५५ ॥

आङ उत्तरस्य ज्ञ इत्येतस्यादेशस्य द्वित्वं न भवति। आणा (३-४४ ज्ञ्=ण्) आणत्ती। (पूर्ववत्ज्ञ्=ण् ३-१ प्लोपः ३-५० तद्वि० ५-१८ दीर्घः) आज्ञा, आज्ञप्तिः । आङइतिकिम्। सण्णा। (३-४४ ज्ञ्=ण् ३-५० ण् द्वि०) संज्ञा ॥ ५५ ॥

न बिन्दुपरे ॥ ५६ ॥

अनुस्वारेपरे द्वित्वं न भवति। संकन्तो (३-३ रेफलोपः ४-१७ वर्गान्त० ४-१ ह्रस्वः ५-१ ओ) संझा (३-२८ ध्य्=झ् ४-१७ वर्गान्त०)। सङ्क्रान्तः, संध्या ॥ ५६ ॥

समासे वा ॥ ५७ ॥

समासे शेषादेशयोर्वा द्वित्वंभवति । णइग्गामो, णईगामो (२-४२ न्=ण् २-२ द्लोपः ३-३ र्लोपः ४-१ ह्रस्वः, द्वित्वा भावेतुयथावदीकारः ५-१ ओ) कुसुमप्पअरो (३-३ र्लोपे २-२ क्लोपः ५-१ ओ) कुसुमपअरो (प्द्वित्वाभावः शे पू०) देवत्थुई, देवथुई (३-१२ स्त्=थ् ३-५१ थ्=त् २-२ त्लोपः ५-१८ दीर्घः) आणालक्खंभो, अणालखंभो (४-२९ परिवृत्तौ आनाले जाते २-४२ न्=ण् ३-१४ स्त्=ख् ३-५१ ख्=क् ४-१७ वर्गान्त० ५-१ ओ) । नदीग्रामः, कुसुमप्रकरः, देवस्तुतिः, आलानस्तम्भः ॥ ५७ ॥

सेवादिषु च ॥ ५८ ॥

सेवा इत्येवमादिषु चानादौ वा द्वित्वं भवति । सेव्वा, सेवा (२-२ प्रायोग्रहणात्वलोपोनशेषंस्पष्टं) एक्कं, एअं (द्वित्वा-

Aho ! Shrutgyanam

भावे २--२ कूलोपः ५--३० विं०) णक्खो (२--४२ न्=ण् द्वित्व-पक्षे ३--५१ ख् क् ५-१ ओ) णहो (द्वित्वाभावे २--२७ ख्=ह् ५--१ ओ) देव्वं, दइवं (१--३७ सू० स्प०) असिव्वं, असिवं। तेलोक्कं (१-३५ सूत्रेस्प०) तेलोअं (द्वित्वाभावे ३-१ कलो-पः शे० पू०) णिहित्तो (२-४२ न्=ण् द्वित्वे ५-१ ओ) णिहिओ (द्वित्वाभावे २-२ तलोपः शे० पू०) तुण्हिक्को (३-३३ ष्णू=ह्ण ह्रस्वःसंयोगे, कस्यद्वित्वे ५-१ ओ) तुह्णिओ (द्वित्वाभावे २-२ कलोपः शे० पू०) कण्णिआरो, कणिआरो (३-३ रलो-प २-२ कलोपः द्वित्वभावाभावौचपूर्ववत् ५-१ ओ) दिग्घं (३-३ रलोपः ३-५१ घ्=ग् ह्रस्वःसंयोगेइतिदी=दि ५-३० विं०) दीहं (द्वित्वाभावेरलोपे च असंयोगपरत्वात्ह्र-स्वाभावः २-२७ घ्=ह् शेषंस्पष्टं) रत्ती (३-३ रलोपः ४-१ ह्र० ५-१८ दीर्घः) राई (३-१ तलोपः ३-३ रलोप०) दुक्खिओ (खद्वित्वे ३-५१ ख्=क् २-२ तलोपः ५-१ ओ) दुहिओ (द्वित्वाभावे २-२७ ख्=ह् शे० पू०) अस्सो असो (१-२ सू० द्रष्टव्यं) इस्सरो (३-३ वलोपः २-४३ श्=स् द्वित्वे ह्रस्वः संयोगे ई=इ ५-१ ओ) ईसरो (द्वित्वाभावेह्रस्वाभावः शे० पू०) विस्सासो, वीसासो। णिस्सासो, णीसासो (२-४२ न्=ण् शे० पू०) रस्सी (३-२मलोपः २-४३ श्=स् स्द्वित्व ५-१८ दीर्घः) रसी (द्वित्वाभावः शे० पू०) मित्तो (३-३ रलोपः ५-१ ओ) मिओ(१) (द्वित्वाभावे ३-१ तलोपः शे०पू०)

---

(१) तइ इन्दोनिच्चिन्दोविहरदु अन्देउरम्मि सोदाव। इन्दस्य तावमित्तंहवेसि महि-सामिआतुमयं इति कुमारपालचरिते ७ सर्ग ९३। त्वयाइन्द्रो निश्चिन्तोविहरतु अन्तः पुरे स तावत्। इन्द्रस्यतावन्मित्रं भवसि महीस्वामिन् त्वम्। एतदनुसारेण सुहृद्वाचकमित्रशब्दो नपुंसकः सूर्य्यवाचकस्तु पुंलिङ्गो भवितुमर्हति।

Aho ! Shrutgyanam

पुंसो (३-२ यलोपः २-४३ ष्=स् ५-१ ओ) पुमो(द्वित्वाभावे पूर्ववत्शेषं) सेवा, एकः, नखः, दैवम्, अशिवम्, त्रलोक्यम्, निहितम्, तूष्णीकः, कर्णिकारः, दीर्घम्, रात्रिः, दुःखितः, अश्वः, ईश्वरः, विश्वासः, निश्वासः, रश्मिः, मित्रम् पुष्पः, । उभयत्र विभाषेयम् । सेवादीनामप्राप्ते(१) दीर्घादीनां च प्राप्ते ॥ ५८ ॥

विप्रकर्षः ॥ ५९ ॥

अधिकारोऽयम् । आपरिच्छेदसमाप्तेर्युक्तस्यविप्रकर्षो भवति ॥ ५९ ॥

क्लिष्टश्लिष्टरत्नक्रियाशार्ङ्गेषु तत्स्वरवत्पूर्वस्य ॥ ६० ॥

क्लिष्टादिषु युक्तस्य विप्रकर्षो भवति विप्रकृष्टस्यचयः पूर्वो वर्णो निरर्थस्तस्य तत्स्वरता भवति तेनैव पूर्वेण स्वरेण पूर्वो वर्णःसार्थोभवति इत्यर्थः । किलिट्ठं (ष्टकारविप्रकर्षे लकारेणसहपूर्वस्वरतया चकिलिजाते ३-१० ष्ट=ठः ३-५० ठद्वि० ३-५१ पूर्वठ्=ट् ५-३० विं) सिलिट्ठं (२-४३ श्=स् शे० पू०) रअणं (विप्रकर्षात्(रत)जाते ३-१ तलोपः २-४२ न्=ण् ५-३० विं०) किरिआ (२-२ यलोपः शेषं विप्रकर्षादिकं पू०) सारङ्गो (२-४३ श्=स् ४-१७ विं० ५-१ ओ) ॥ ६० ॥

कृष्णे वा ॥ ६१ ॥

कृष्णशब्दे युक्तस्य वा विप्रकर्षो भवति पूर्वस्य च तत्स्वरता । व्यवस्थितविभाषेयम् । तेनवर्णेनित्यंविप्रकर्षः, विष्णौतुन भवत्येव । कसणो (१-२७ ऋ=अ ष्णस्यविप्रकर्षे (षण) जाते २-४३ ष्=स् २-४२ न्=ण् ५-१ ओ) कह्णो (३-३३ सू० स्पष्टम्) ॥ ६१ ॥

---

(१) अनादेशत्वादशेषाच्चेति शेषः ।

Aho ! Shrutgyanam

इः श्रीह्रीक्रीतक्लान्तक्लेशम्लानस्वप्नस्पर्शहर्षार्हगर्हेषु ॥ ६२ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षो भवति पूर्वस्य इकारः तत्स्वरता च भवति । सिरी (२-४३ श्=स् विप्रकर्षत्वे पूर्वस्य इत्वे तत्स्वरतायां च सिरी इति जातं)(एवं)हिरी । किरीतो(१) । किलन्तो (विप्रकर्षेपूर्वस्येत्वे ४-१७ वर्गान्तो विन्दुर्वा ५-१ ओ) किलेसो (स्पष्टम्) मिलाणं (पूर्ववत् इत्वं तत्स्वरता च २-४२ न्=ण् ५-३० विं०) सिविणो (१-३ सू० स्पष्टम्) फरिसो (३-३५ स्प्=फ् इत्वं तत्स्वरताच २-४३ श्=स् ५-१ ओ एवमुत्तरत्रापि) हरिसो । अरिहो । गरिहो (स्पष्टाः) । श्रीः, ह्रीः, क्रीतः, क्लान्तः, क्लेशः, म्लानम्, स्वप्नः, स्पर्शः, हर्षः, अर्हः, गर्हः ॥ ६२ ॥

अः क्ष्माश्लाघयोः ॥ ६३ ॥

क्ष्मा श्लाघा इत्येतयोर्युक्तस्य विप्रकर्षोभवति, पूर्वस्य अकारस्तत्स्वरता च भवति । खमा (३-२९ क्ष्=ख् शे० स्पष्टम् ।) सलाहा (२-४३ श्=स्-विप्रकर्षः पूर्वस्याऽत्वं तत् स्वरता च २-२७ घ्=ह्) ॥ ६३ ॥

स्नेहे वा ॥ ६४ ॥

स्नेहशब्दे युक्तस्य विप्रकर्षो वा भवति पूर्वस्य च अकारस्तत्स्वरताभवति । सणेहो (पूर्ववत् विप्रकर्षादिकं २-४२न्=ण् ५-१ ओ) णेहो (३-१ सूत्रस्पष्टम्) ॥ ६४ ॥

उः पद्मतन्वीसमेषु ॥ ६५ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंसमेषुच युक्तस्यविप्रकर्षोभवतिपूर्वस्य च उकारस्तत्स्वरता च भवति । पउमं(२) (३-२ पलोपः शेषं

(१) प्रायोग्रहणान्न तलोपः ।
(२) ओत्पद्मे ८ । १ । ६१ । तेन पोम्मं । हे०

Aho ! Shrutgyanam

स्पष्टम्) तणुई (२-४२ न्=ण् उत्वादिपूर्ववत् वलोपश्च)। लहुई (२-२७ घ्=ह् शे० पू०) तन्वी लघ्वी ॥ ६५ ॥

ज्यायामीत् ॥ ६६ ॥

ज्याशब्दे युक्तस्य विप्रकर्षो भवति पूर्वस्य च ईकारस्तत्स्वरता च जीआ (२–२ यलोपः) ॥ ६६ ॥(१)

इति प्राकृतप्रकाशे युक्तवर्णविधिर्नाम।
तृतीयः परिच्छेदः ॥

—:०:—

सन्धावचामज्लोप(२)विशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचामितिप्रत्याहारग्रहणम् अजिति च। सन्धौ वर्तमानानामचां स्थाने अज्विशेषा लोपविशेषाश्च बहुलं भवन्ति। अज्विशेषास्तावत्, जउणअडं जउणाअडं (२-३ सूत्रेस्पष्टं जउणा, तटमिति२-२ तलोपः(३) २-२० ट=ड् अत्र बहुलग्रहणात् 'णा'-इत्यत्रह्रस्वत्वंविकल्पेन ५-३० सोर्बिन्दुः) णइसोत्तो णईसोत्तो (२-४२ न्=ण् २-२ दलोपः ह्रस्वविकल्पःपू० सोत्तो ३-५२ सूत्रेद्रष्टव्यः अत्र विशेषः ४-१८(४) पुं०) बहुमुहं बहूमुहं (२-२७ ख्=ह् ५-३० विं० शे० पू०) कण्णउरं, कण्णऊरं (३-३र्लोपः ३-५० णुद्वि० २-२ पलोपः शे० पू०) सिरोवेअणा,

---

(१) क० पु० "इवेव" ॥ ६७ ॥

इव शब्दे व इति निपात्यते। प्पाण व्व धनं। अ० पा०

(२) अयं पाठः का० पु० सम्मतः। इतः प्राचीनेषु अजूपविशेषा इति पाठः ॥

(३) वृत्ता वय मनादिरेव गृह्यते।

(४) ३-५२ सूत्रेतु व्यत्ययेन नपुंसकत्वम्।

Aho ! Shrutgyanam

सिरवेअणो (२-४३ श्=स् ४-६ स्लोपे आविशेष ओ=सिरो इति-वेअणा १-३४ सू० स्प० शे पू०) पीआपीअं, पिआपिअं, सीआसीअं, सिआसिअं (२-२ तलोपः शेषं ह्रस्वविकल्पादि पूर्ववत्) सव्वोमुओ (३-३ रलोपः ओत्वमकारस्य २-२७ ख्=ह् ५-१ ओ) सव्वोमूओ (३-३ रलोपः २-१५ प्=व् ओत्वमूत्वंवाहुलकात् शे० पू०) सरोरुहं, सररुहं। (४-६ स्लोपः ओत्वविकल्पः शे० स्पष्टं) लोपविशेषाः, राउलं, राअउलं (जलोपे विकल्पेनाऽलोपः २-२ कलोपः ५-३० विं) तुहद्धं, तुहअद्धं (६-३१ तव=तुह विकल्पेन बाहुलकादकारलोपे ३-३ रकारलोपः ५-३० विं) महद्धं, महअद्धं (६-५० मम=मह शे० पू०) वावडणं, वाअवडणं (२-१५ प्=व् २-२ दलोपे बाहुलकाद् विकल्पेन अकारलोपे वापतनमितिजाते पुनः २-१५ प=व्-वावतन इतिजाते ८-५१ त्=ड् २-४२ न्=ण् ५-३० विं०, अलोपाभावे स्पष्ट०) कुम्भारो, कुम्भआरो (अनादिग्रहणात् २-२ कलोपेन ४-१७ वर्गान्त० २-२ कलोपे ४-१ भकारोत्तरवर्त्तकारलोपे ५-१ ओ, अलोपाभावे स्पष्टं) पत्तणुद्धअं पत्तणउद्धअं। (प्राय इतिवलोपो न २-४२ न्=ण् पूर्ववदकारलोपः पत्तण्उद्धतमितिजाते २-२ तलोपः ५-३० विं०, अलोपाभावे पूर्ववत्) यमुनातटं, नदीश्रोतस्. बहुमुखं, कर्णपूरं, शिरोवेदना, पीतापीतं, सीतासीतं, (शीताशीतं) सर्वमुखः, (सर्पमुखः) सरोरुहं, राजकुलं, तवार्द्धं, ममार्द्धं, पादपतनं, कुम्भकारः, पत्तनोद्धतम् ॥ संयोगपरे सर्वत्र पूर्वस्याचो लोपः,(ह्रस्वश्च। यथा-णत्थि, सक्कंती, णिक्कन्तो, अत्तो इत्यादयः)(५)। (स्पष्टाः) क्वचिन्नित्यं, क्वचिदन्यदेव बहुलग्रहणात्। तेनान्यदपि लाक्षणिककार्यं भवति ॥ १ ॥

(५) ( ) एतत्कोष्ठकान्तर्गतः पाठो न सार्वत्रिकः।

Aho ! Shrutgyanam

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २ ॥

उदुम्बरशब्देदुइत्येतस्यलोपोभवति । उम्बरं (४-१७ वर्गान्तः ५-३० सोर्बिन्दुः ॥ २ ॥

कालायसे यस्य वा ॥ ३ ॥

कालायसशब्दे यस्य वा लोपो भवति। कालासं, कालाअसं (स्पष्टं) ॥ ३ ॥

भाजने जस्य ॥ ४ ॥

भाजनशब्दे ज(१)कारस्य लोपो वा भवति । भाणं, भाअणं (२-४२ न्=ण् ५-३० विं० पक्षे २-२ सूत्रेणकेवलजकारलोपो भवति) ॥ ४ ॥

यावदादिषु वस्य ॥ ५ ॥

यावदित्येवमादिषु व(२)कारस्य वा लोपो भवति। जा, जाव ता, ताव (२-३१ य्=ज् ४-६ तलोपः पक्षेस्पष्टं) पाराओ पारावओ (२-२ तलोपः ५-१ ओ, पक्षस्पष्टं) अणुत्तन्त, अणुवत्तन्त (२-४२ न्=ण् वलोपे ३-३ रलोपः ३-५० तद्विं० ७-१० मान=न्त वलोपाभावे स्पष्टं) जीअं, जीविअं (२-२ तलोपः ५-३० विं० शे० स्पष्टं०) एव्वं (३-५८ वद्वित्वं ५-३० विं०) एअं (द्वित्वाभावे वलोप विकल्पः) (एवम) एअं (स्पष्टं) कुअलअं कुवलअं(३)। (विकल्पेनस्वररहित वलोप २-२ यलोपः ५-३० विं०) यावत, तावत, पारावत,

---

(१) सस्वरस्यलोपोज्ञेयः हेमस्तु ८।१।२६७ सूत्रे सस्वरस्येतिपठत्येव।

(२) सस्वरवलोपः क्वचिद्बाहुलकात्स्वररहितस्याऽपि।

(३) क० पु० चक्काओ,चक्कवाओ। देउलं,देवउलं। अ० पा०—

Aho ! Shrutgyanam

अनुवर्तमान, जीवितं, एवम्, एव, कुवलय इत्येवमादयः ॥ ५ ॥

अन्त्यहलः ॥ ६ ॥

वेतिनिवृत्तम् । शब्दानांयोन्त्योहलुतस्यलोपोभवति । जसो (२-३१ य्=ज् २-४३ श्=स् ४-१८ पुंस्त्वं ५-१ ओ) णहं (२-४२ न्=ण् ४-१९ पुंस्त्वाभावः, ५-३० विं०) सरो (जसोवत्) कम्मो ३-३ रलोपः ३-५० मद्वि० शे० पू०) जाव। ताव। (४-५ सू० द्रष्टव्यं) यशः, नभः, सरः, कर्म, यावत्, तावत् ॥ ६ ॥

स्त्रियामात् ॥ ७ ॥

स्त्रियां वर्त्तमानस्यान्त्यहलआकारोभवति । सरिआ (स्पष्टं) पडिवआ (१-२ सू० स्पष्टं) वाआ (स्पष्टं) सरित्,प्रतिपद् वाक् ॥७॥

रोरा ॥ ८ ॥

स्त्रियामन्त्यस्यहलोरेफस्यरा इत्ययमादेशो भवति । धुरा, गिरा। (स्पष्टं) ॥ ८ ॥

न विद्युति ॥ ९ ॥

विद्युच्छब्दे आकारो न भवति विज्जू (३-२७ द्य्=ज् ४-६ तलोपः ३-५० जद्वि० ५-१८ दीर्घः) विद्युत् ॥ ९ ॥

शरदो दः ॥ १० ॥

शरच्छब्दस्यान्त्यहलो दो भवति । सरदो(१) (२-४३ ४-१८ पु० श्=स् ५-१ ओ) ॥ १० ॥

दिक्प्रावृषोः सः ॥ ११ ॥

दिक्छब्दस्यान्त्यहलः प्रावृट्शब्दस्यापि सकारो भवति ।

---

(१) "शरदादेरत्" ८।१।१८ सरओ। शरद्। भिषओ। भिषक्। "क्षुधोहा" ८।१।१७ छुहा। क्षुत्। हे०

Aho ! Shrutgyanam

दिसा(१) (स्पष्टम् ।) पाउसो (१-३० सू० स्प०) ॥ ११ ॥

मो बिन्दुः ॥ १२ ॥

अन्त्यस्यहलोमकारस्यबिन्दुर्भवति । अच्छं (४-२० विकल्पे-नपुंसिअमि ५-३ अमोऽकारस्यलोपः शे० ३-३० सू० स्प०) वच्छं (स्पष्टम्) भद्दं (३-३ रलोपः ३-५० द्विद्वि० शे० पू०) (अग्गिं ३-२ नलोपः ३-५० ग्द्वि० शे० पू०) दट्ठं (३-१० ष्ट्=ठ् ३-५० ठ्द्वि० ३-५१ ठ्=ट् शे. पू.) वणं, धणं(२) (२-४३न्=ण् शे० पू०) ॥ १२ ॥

अचि मश्च ॥ १३ ॥

अचिपरतोमो(३)भवतिवा । फलमवहरइ, फलंअवहरइ(४) (स्प०) ॥ १३ ॥

नञोर्हलि ॥ १४ ॥

नकारञकारयोर्हलिपरतोबिन्दुर्भवति मकारश्च । नस्य, अंसो अम्सो (५-१ ओ शे. स्प.) । कंसो, कम्सो । ञस्य, वंचणीअं, वम्चणीअं (२-४२ न्=ण् २-२ यलोपः ५-३० त्रि०शे०स्प०) विंझो, विम्झो(५) (३-२८ ध्य्=झ् नकारस्यबिन्दौमकारेच ३-५६ सूत्रेण द्वित्वादिबाधः) ॥ १४ ॥

वक्रादिषु ॥ १५ ॥

वक्रादिषुशब्देषुबिन्दुरागमोभवति । वंकं (३-३ रलोपः

---

(१) अपि कृते दिशाशब्दः प्रकृतिः । क्वचिद् दिशा, प्रावृड् इति संस्कृतदर्शनात् ।

(२) अक्षः, वत्सः, भद्रं, अग्निः, दष्टः, वनं, धनम् ।

(३) क० पु० बिन्दुः पा० ।

(४) फलमपहरति । (५) अन्सः कन्सः, वञ्चनीयं विन्ध्यः ।

Aho ! Shrutgyanam

५–३० वि०) तंसं (३–३ रकारयोर्लोपः ३–२ यलोपः शे. स्प.) हंसो (३–३ रेफलोपः वलोपश्च ५–१ ओ) अंसू (३–३ रलोप। ३–४३ शू=सू ५–१८ उद्दीर्घः) मंसू (३–६ शूलोपः २–४३ शू=सू ३–३ रलोपः ५–१८ दीर्घः) गुंठी (१–२९ ऋ=उ ३–१० ष्ट=ठ् ५–१८ दीर्घः) मंथं (१–२२ उ=अ-(१)३–१२ स्त्=थ् ५–३० वि०) मणंसिणी (१–२ सू. स्प.) दंसणं ३–३ रलोपः २–४३ शू=सू २–४२ न्–ण् ५–३० वि०) फंसो (३–३६ सू० स्प.) वंण्णो (३–३ रलोपः ३–५० ण्द्वि० ५–१ ओ) पडिसुदं (३–३ रलोपः २–८ त्=इ् २–४३ शू=स् ३–३ रलोपः १२–३ त-द् ५–३० वि. २–४२ शू=स् ५–१ ओ) अंसो (स्पष्टम्) अहिमुंको(२) (२–२७ भू=ह् ३–१ तलोपः ५–१ ओ)। वक्र, त्र्यस्र, ह्रस्व, अश्रु, श्मश्रु, गृष्टि, मुस्त, मनस्विनी, दर्शन, स्पर्श, वर्ण, प्रतिश्रुत, अश्व, अभिमुक्त, इत्यादयः ॥१५॥

मांसादिषु वा ॥ १६ ॥

मांसादिषुशब्देषु वा बिन्दुःप्रयोक्तव्यः। मंसं, मासं। (स्पष्टं) कहं, कह। (२–२७ थ्=ह् शे. स्प.) णूणं, णूण। (स्प.) तहिं, तहि (स्प०) असुं असु,(३) (स्प०) तदयमपाठतोमांसादिर्गणः। यत्रक्वचिद्वृत्तभङ्गभयात्त्यज्यमानःक्रियमाणश्चबिन्दुर्भवति स मांसादिषुद्रष्टव्यः ॥ १६ ॥

---

(१) मुकुटादे राकृतिगणत्वात्।

(२) शक्त मुक्त, दष्ट, रुग्ण, मृदुत्वे कोवा ८। २। २ मुक्को–मुक्को ऽक्को दट्ठो लुक्को लुग्गो भाउक्कं भाउत्तणं इति हे० अत्र अहिमुंको इत्यत्र न विन्दु परे इत्यनेन द्वित्वनिषेधो ज्ञेयः।

(३) क० पु० मांसः, कथम्, नूनम्, तर्हि, असु अ० पा०।

Aho ! Shrutgyanam

यथि तद्वर्गान्तः ॥ १७ ॥

यथिपरतोबिन्दुस्तद्वर्गान्तोवाभवति । सङ्का (२-४३ शू=सू शे. स्प.) सङ्खो (५-१ ओ. शे.पूर्व.) अङ्को । अङ्गं । (स्प) सञ्चरइ (७-१ ति=इ शे० स्प०) सण्ढो (२-४३ षू=सू) सन्तरइ (स्प०) सम्पत्ती (५-१८ दीर्घः शे. स्प.) । यथीति किम् । अंसो । (४-१४ सूत्रस्प.) वाधिकारात् पंकं, विंदू, संका संखो (१) । (सुगमानि) ॥ १७ ॥

नसान्तप्रावृट्सरदः पुंसि ॥ १८ ॥

नकारान्ताःसकारान्ताश्चप्रावृट्शरदौ च पुंसिप्रयोक्तव्याः । नान्ताः, कम्मो (४-६ अन्त्यनकारलोपः ३-३ रलोपः ३-५० मद्वि० ५-१ ओ) जम्मो (३-४३ सू० स्प.) वम्मो । (३-३ रलोपः ३-५० मद्वि० ४-६ नूलोपः ५-१ ओ) सान्ताः, जसो (२-३१ सू० स्प०) तमो ४-६ सूलोपे पुस्त्वे च ५-१ ओ) सरो, पाउसो (१-३०सू०स्प०) सरदो(२) ॥ १८ ॥

न शिरोनभसी ॥ १९ ॥

शिरस्,नभस्, इत्यतौ नपुंसिप्रयोक्तव्यौ । सिरं (४-६ सलोपः ५-३० विं) णहं ॥ १९ ॥

पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ॥ २० ॥

एते स्त्रियां वाप्रयोक्तव्याः । पुट्ठी (१-२९ ऋ=उ ३-१०

---

(१) शङ्काः, शङ्खः, कन्सः, अङ्कः, अङ्गं, सञ्चरति, षण्ढः, सन्तरति, सम्पत्तिः, अन्स, पङ्कं, विन्दुः ।

(२) कर्म्मन्, जर्मन्, वर्म्मन्, यशस्, तमस्, सरस्, प्रावृष्, शरदः । यच्च सेयं, वयं, सुमणं, सम्मं, चम्ममिति दृश्यते तद्बाहुलकाधिकारात् इति हेमः ।

Aho ! Shrutgyanam

ष्ट=ठः ३-५० द्वि० ३-५१ ठ्=ढ् स्त्रीत्वे ई) (एवम्) अच्छी, अच्छं। अच्छो (अक्षस्य तु ३-३० क्ष्=छ द्वित्वचत्वे ५-१ ओ) पण्हा, पण्हो (३-२ लोपः ३ ३३ श्न=ण्ह स्त्रीत्वे आत्वं, पुंस्त्वे ५-१ ओ)। पृष्टम्, अक्षि, प्रश्नः ॥ २० ॥

ओदवापयोः ॥ २१ ॥

अव, अप, इत्येतयोरुपसर्गयोर्वा ओत्वं भवति। ओहासो, अवहासो। ओसारिअं, अवसारिअं (२-२ तलोपः ५-३० बिं०)। अवहासः, अपसारितम् ॥ २१ ॥

तल्त्वयोर्दात्तणौ* ॥ २२ ॥

तल्त्वइत्येतयोः प्रत्यययोर्यथासंख्यं दा, त्तण इत्येतावादेशौ स्त। पीणदा (२-४२ न्=ण्) मूढदा (१२-३ त्-द्) पीणत्तणं। मूढत्तणं (५-३० बिं) ॥ २२ ॥

क्त्वऊणः(१) ॥ २३ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्यऊणइत्ययमादेशोभवति। घेऊण (८-१६ ग्रह्=घेव्) सोऊण (३-३ रलोपः २-४३ श्=स् उ=ओ गुणेन(२) काऊण (८-१७ कृञ्=का) दाऊण। (स्पष्टं) गृहीत्वा, श्रुत्वा, कृत्वा, दत्त्वा ॥ २३ ॥

तृण(३) इरः शीले ॥ २४ ॥

शीलेयस्तृन् प्रत्ययोविहितस्तस्यइर इत्ययमादेशोभवति।

---

* त्वतलोः प्पणः ८। ४। ४३७ अपभ्रंशे। इति हे०।

(१) का० पु० पा० 'उण्' इति पा०।

(२) युवर्णस्य गुणः ८। ४। २३७। धातोरिवर्णोवर्णस्य क्ङित्यपि गुणः। जेऊण, नेऊण, नेइ, नेन्ति, उड्डेइ, उड्डेन्ति, मोत्तूण सोऊण। क्वचिन्न नीओ—उड्डीणो इ० हेमच०।

(३) का० पा० तृन्।

Aho ! Shrutgyanam

भ्रमणशीलो भ्रमिरो(१)। हसनशीलो हसिरो (५-१ ओ स्पष्ट-प्राये) ॥ २४ ॥

आल्विल्लोल्लालवन्तेन्तामतुपः ॥ २५ ॥

आलु,इल्ल,उल्ल,आल,वन्त,इन्त,इत्येतआदेशामतुपःस्थानेभवन्ति। आलुस्तावत्, ईसालू (३-३ रलोपः २-४३ षू=सू आलुकृते ५-१८ दीर्घः) णिद्दालू। (२-४२ नू=णू ३-३ रलोपः ३-५० द्विद्वि॰ शे॰ पू॰) इल्लः, विआरिल्लो(२) (२-२ कलोपः इल्ले कृते ५-१ ओ) मालाइल्लो। (५-१ ओ शे॰ स्प॰) उल्लः, विआरुल्लो (२-२ कलोपः शे॰ स्प॰)। आलः(३), धणालो (२-४२ नू=णू ५-१ ओ) सद्दालो (३-३ बूलोपः ३-५० द्विद्वि॰ ५-१ ओ)। मन्तः, धणवन्तो (स्प॰) जोवणवन्तो (२-३१ यू=जू प्राय इति वलोपो न २-४२ नू=णू ५-१ ओ)। इन्तः(४), रोसाइन्तो(५) (२-४३ ष=सू ५-१ ओ) पाणाइन्तो (३-३ रलोपः शे॰पूर्व॰)(६)। यथादर्शनमेतेप्रयोक्तव्याः, न सर्वे सर्वत्र। इर्षावत्, निद्रावत्, विकारवत्, मालावत्, धनवत्, शब्दवत्, यौवनवत्, रोषवत्, प्राणवत्।

["क्वचि दा मतुपो ऽन्त्यस्यमन्तोवादृश्यतेक्वचित्।

हणुमा, हणुमंतो (२-४३ नू=णू मतुपो ऽन्तस्यात्वं) (पक्षे-मन्तादेशः ५-१ ओ) ॥

इल्लोल्लावपरे प्रायः शैषिकेषु प्रयुज्जते" ॥

पौरस्त्यं, पुरोभवं-पुरिल्लं (पुरस् अत्र ४-६ सलोपे च शैषिक इल्ल प्रत्यये ४-१ अलोपे ५-३० विं)। आत्मीयं-

(१) क्वचिद् भमिरो पा॰। (२) का॰ पा॰ विआर इल्लः।
(३) का॰ पा॰ अल्लः। (४) का॰ पा॰ इतः। (५) का॰पा॰ रोसः।
(६) एषु सर्वत्र लोपादिकमविशेष कार्यं ४-१ सूत्रेण बोध्यम्।

Aho ! Shrutgyanam

अप्पुल्लं ॥ (३-४८ त्मू=प् ३-५० पद्वि० ४-६ नूलोपः ४-१ अलोपः उल्लप्रत्ययः ५-३० बिं०) ॥

"परिमाणेकिमादिभ्योभवन्तिकेद्दहादयः ।

केद्दहं, केत्तिअं । जेद्दहं, जेत्तिअं । तेद्दहं, तेत्तिअं । एद्दहं, एत्तिअं । (किमः केद्दह, केत्तिअ । यदो जेद्दह, जेत्तिअ । तदो तेद्दह, तेत्तिअ । एतद् एद्दअ, एत्तिअ । इत्यादेशाः भवन्तीत्यर्थः ५-३० बिन्दुः सर्वत्र)

कृत्वसो हुत्तमित्यन्ये देशीशब्दः स इष्यते" ॥

सअहुत्तं (२-४३ श्=स् २-२ तलोपेकृत्वसोहुत्तादेशे ५-३० बिं०) सहस्सहुत्तं (३-३ रलोपः ३-५० सद्वि० शे० पूर्ववत्) । जातौ वा स्वार्थिकः कः *(१) ॥ जातौ स्वार्थे ककारः प्रयोक्तव्यः](२) (पद्म, पदुमअं, पक्षे पदुमम्(३)(४) ॥ २५ ॥

विद्युत्पीताभ्यां वा(५)लः ॥ २६ ॥

विद्युत्पीतशब्दाभ्यां परतः स्वार्थे लप्रत्ययो भवति । विज्जू (३-२७ द्य्=ज् ३-५० जद्वि० ५-१८ दीर्घः) विज्जुली (इवन्तः स्त्रिया शे० पू०) पीअं (२-२ तलोपः ५-३० बिं०) पीअलं(६) (स्पष्टं) ॥ २६ ॥

वृन्दे वो रः ॥ २७ ॥

वृन्दशब्देवकारात्परःस्वार्थेरेफोवाप्रयोक्तव्यः । व्रन्दं (१-

(१) केचिद् सूत्र रूपेण पठन्ति ।

(२) क० पु० न दृश्यते [ ] कोष्ठकान्तर्गतः पाठः ।

(३) ( ) कोष्ठान्तर्गतः पाठः प्रायस्त्रुटित एव ।

(४) अतोर्डेत्तुलः ८ । ४ ४३५ । अपभ्रंशे इदं किं यत्तदेतद्भ्यः परस्य अतोः प्रत्ययस्य डेत्तुल इत्यादेशो भवति । एत्तुलो-केत्तुलो जेत्तुलो तेत्तुलो एत्तुलो ॥ इति हेमः ।

(५) वेतिसार्वत्रिको न ।

(६) क० पु० विद्युत्, पीतवर्ण इत्यर्थः अ० पा०

Aho ! Shrutgyanam

२७ ऋ=अ, वकारात्परेरेफेकृते ४-१७ वर्गान्तः ५-३० त्रिं०) वंद्रं(१) (१-२७ ऋ=अ शे० स्प०) ॥ २७ ॥

करेण्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः ॥ २८ ॥

करेणुशब्दे रेफणकारयोःस्थितिपरिवृत्तिर्भवति । कणेरू । पुंसि न भवति*(२) । करेणू (५-१८ दीर्घः) ॥ २८ ॥

आलाने लनोः ॥ २९ ॥

आलानशब्देलकारनकारयोर्हलमात्रयोःस्थितिपरिवृत्तिर्भवति । आणालखंम्भो (३-५७ सू० स्प०) ॥ २९ ॥

बृहस्पतौ बहोर्भभौ ॥ ३० ॥

बृहस्पतिशब्दे बकारहकारयोर्यथासख्यं भकाराकारौ भवतः । भअप्फई(३) (१-१७ ऋ=अ बह-इत्यस्य भअकृते ३-३५ स्प=फ् ३-५१ द्वि० २-२ तलोपः ५-१८ दीर्घः) ॥ ३० ॥

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ ३१ ॥

मलिनशब्देलिकारनकारयोर्यथासंख्यमिकारलकारौवाभवतः । मइलं, मलिणं (पक्षे २-४२ न्=ण् ५-३० विं०) ॥ ३१ ॥

गृहे घरोऽपतौ ॥ ३२ ॥

गृहशब्देघरइत्ययमादेशोभवति । पतिशब्दे परतो न भवति । घरं (५-३० विं०) भवनम् । अपताविति किम् । गहवई(४) (१-१८ ऋ=अ २-१५ प्-व् २-३ तलोपः ५-१८ दीर्घः) ॥३२॥

---

(१) वृन्दं विन्दं क्वचित्पाठः ।

(२) क्वचिद् करेण्वामिति स्त्रीलिङ्गनिर्देशात् । अ० पा० ।

(३) का० पा० भअप्पई । सूत्रे हयौ इतिपाठे हयप्पई इत्युदाहार्यम् ।

(४) गृहपतिः ।

Aho ! Shrutgyanam

दाढादयो बहुलम् ॥ ३३ ॥

दाढाइसेवमादयः शब्दाबहुलंनिपात्यन्तेदंष्ट्रादिषु । दंष्ट्रा, दाढा । इदानीं, एण्हिं । दुहिता, धीआ, धूदा(१) । चातुर्यं, चातुलिअं । मण्डूकः, मण्डूरो । गृहेनिहितं, घरेणिहितं । उत्पलं, कन्दोट्टो । गोदावरी, गोला । ललाटं, णिडालं । भूः, भुमआ(२) । वैदूर्यं, वेलुरिअं । उभयपार्श्वं, अवहोवासं । चूतः, माइंदो, माअंदो । (दंष्ट्रादिषुदाढादयोनिपातसिद्धाःशब्दाःसंस्कृत शब्दानुसारेणदेशसंकेतप्रवृत्तभाषाशब्दानुसारेणचयथायथंलिङ्गेषु-प्रयोज्याःस्पष्टाश्चैतेऽतोऽलंविस्तरेण) । आदिशब्दोयं प्रकारे तेन सर्व एव देशसंकेतप्रवृत्तभाषाशब्दा परिगृह्यताः ॥ ३३ ॥

इति प्रकृतप्रकाशे संकीर्णविधिर्नाम
चतुर्थः परिच्छेदः ॥

अथ पञ्चमः परिच्छेदः ।

अत ओत् सोः ॥ १ ॥

अकारन्ताच्छब्दात्परस्य सोः स्थाने ओत्वं भवति । वच्छो (१-३२ । ३-३० । ३-३१ सूत्रेषु स्पष्टम्) वसहो (१-२७ । २-४३ सू० स्प०) पुरिसो (१-२३ सू० स्प०) वृक्षः, वृषभः, पुरुषः ॥ १ ॥

जश्शसोर्लोपः ॥ २ ॥

अत इत्यनुवर्तते । आकारान्तस्यानन्तरयोजश्शसौतयो-

(१) का० पा० दिधी, धिया, दिट्ठी, धूआ ।
(२) का० पा० भूमआ ।

Aho ! Shrutgyanam

लोपोभवति । वच्छासोहंति । जश्शस्ङस्यांसुदीर्घ इतिदीर्घेकृते पश्चाल्लोपोजसः (१-२७ ऋ=अ ३-३१ छत्वविकल्पः(१) ३-५० द्वि० ३--५१ छ=च् ५-११ जसि दीर्घेकृते लोपः, सोहंति इति २-४३ श्=स् २-२७ भ्=ह् ७-४ न्ति,) । वृक्षाः शोभन्ते । वच्छेणिअच्छइ । ए च सुपीत्येतत्वे कृते शसो लोपः । (पूर्ववत् वृक्ष=वच्छ ५-१२ एत्वे कृते शसोलोपः, णिअ इति २-४२ न्=ण् २-२ यलोपः ७-१८त=ह्) वृक्षान्नियच्छत ॥२॥

अतो मः ॥ ३ ॥

अकारान्तस्यानन्तरंयोऽमृद्वितीयैकवचनमतस्काररस्यलोपो भवति । वच्छं पेक्खइ (४-१२ मो वि०) (वृक्षं पश्यति) ॥ ३ ॥

टामोर्णः ॥ ४ ॥

अतोनन्तरंटामोस्तृतीयैकवचन षष्ठीबहुवचनयोर्णकारो भवति । वच्छेण । ए च सुपीत्येत्वम् । (५-१२ एत्वे कृतेटा=ण) वच्छाण जश्शस्ङस्यांसु दीघइति दीर्घः (वृक्षेण, वृक्षाणाम्) ॥ ४ ॥

भिसोहिं ॥ ५ ॥

अतोनन्तरस्य भिसो हिं भवति । वच्छेहिं । ए च सुपीत्येत्वम् (५-१२ एत्वं शे० स्प० =वृक्षैः) ॥ ५ ॥

ङसेरादोदुहयः ॥ ६ ॥

अतोनन्तरस्य ङसेः पञ्चम्येकवचनस्य स्थाने आ, दो दु, हि, इत्येतआदेशा भवन्ति । वच्छा, वच्छादो, वच्छादु, वच्छाहि । श्शस्ङस्यांसु(२)दीर्घत्वम् । (स्पष्टाः=वृक्षात्) ॥ ६ ॥

सो हिंतो सुंतो ॥ ७ ॥

अतोऽनन्तरस्य भ्यसो, हिंतो, सुंतो, इत्येतावादेशौ भवतः ।

---

(१) वत्सशब्दप्रयोगे तु ३-४० त्स=छ ।

(२) का० पा० जस्भ्यस्ङस्यां सु

Aho ! Shrutgyanam

वच्छाहिंतो, वच्छासुन्तो । ए च सुपीति चकारेण दीर्घत्वम् (स्पष्टे-वृक्षेभ्यः) ॥ ७ ॥

स्सो ङसः ॥ ८ ॥

अतोनन्तरस्य ङसः स्स इत्यादेशो भवति । वच्छस्स (स्प० वृक्षस्य) ॥ ८ ॥

ङेरेम्मी ॥ ९ ॥

अतोनन्तरस्य ङेः ए, म्मि इत्यादेशौ भवतः । वच्छे । वच्छ-म्मि । क्वचिन्ङसिङ्योर्लोपः । इत्यकारलोपः । (स्प०=वृक्षे) ॥९॥

सुपः सुः ॥ १० ॥

अतोनन्तरस्य सुपः सु इत्यादेशोभवति । वच्छेसु (वृक्षेषु) (एवं वत्सशब्दरूपाण्यपि बोध्यानि) । ए च सुपीसेत्वम् ॥ १० ॥

जश्शस्ङस्यांसु दीर्घः ॥ ११ ॥

जसादिषु परतो ऽतोदीर्घोभवति । वच्छा सोहंति । जश्शसोर्लोप इति जसो लोपः, (५-२ सू० स्पष्टं, वत्सा शोभन्ते) । वच्छादो, वच्छादु, वच्छाहि, आगदो (वत्सात्,) ङसेरादोदुहयः । वच्छाण । (वत्सेन) टामोर्णः ॥ ११ ॥

ए च सुप्यङिङसोः ॥ १२ ॥

अतोकारस्यैत्वं भवति सुपि परतो ङिङसौवर्जयित्वा । च-कारादीर्घश्च । वच्छे (वत्सान्) पेक्खह । जश्शसोर्लोपः । (१२-१८ दृश्=पेक्ख८-१९ थ=ह=पश्यत) वच्छेण । टामोर्णः । (=वत्सेन) वच्छेहिं (=वत्सैः) । वच्छेसु (वत्सेषु) । चकारादीर्घ-श्चेति । वच्छाहिंतो, वच्छासुंतो (वत्सेभ्यः) । भ्यसो हिंतो, सुंतो । अङिङसोरिति किम् । वच्छम्मि (वत्से) । वच्छस्स(वत्सस्य) ॥ १२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः ॥ १३ ॥

अतो ङसि, ङि इत्येतयोः परतः क्वचिल्लोपो भवति । वच्छा आगदो । ङसेरादोद्धय इति आ । (आगदो इति आङ्पूर्वकगमेः क्तान्तस्य १२-३ त=द् ५-१ ओ) वच्छेठिअं (वत्से स्थितम् ङेर्म्मी इत्येत्वम् (ठिअं० स्था=ठ शेष संस्कृतवद्) ॥१३॥

इदुतोः शसो णो ॥ १४ ॥

इदुदन्तयोः शसो णो भवति । अग्गिणो पेक्खह (४-१२ सूत्रे अग्गि इत्यत्र निष्पादितात् शसो=णो=अग्नीन्) वाउणो पेक्ख (२-२ यलोपः शे० पू०=वायून्, 'पेक्ख'इति शौरसेन्यां दृशेः पेक्खादेशोभवति तस्याश्च "प्रकृतिःसंस्कृतम्", इति संस्कृतवद्धेर्लुक्भवति) ॥ १४ ॥

ङसो वा ॥ १५ ॥

इदुदन्तयोर्ङसो वा णो भवति । अग्गिणो, अग्गिस्स (स्पष्टे=) वाउणो, वाउस्स (२-२यलोपेकृतेङसो णो, पक्षे ५-८=स्स) अग्नेः वायोः ॥ १५ ॥

जसश्च ओ यूत्वम्(१) ॥ १६ ॥

इदुदन्तयोर्जस ओकारादेशो भवति । इदुतोश्च ईत्वं, ऊत्वं वा चकाराद् णो च । अग्गीओ, वाऊओ । अग्गिणो, वाउणो (स्पष्टानि=अग्नयः, वायवः) ॥ १६ ॥

---

(१) जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च । इदुदन्तयोः शब्दयोर्जस ओ वो इत्यादेशौ भवतः । अत्वं, ईत्वं, ऊत्वं च विकल्पेन । चकारात् णोऽपि । पक्षे अदन्तवत् । अग्गीओ, अग्गीवो, अग्गवो, अग्गी । वाऊओ । जसश्च ओ यूत्वं । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

टा णा ॥ १७ ॥

इदुदन्तयोष्टाविभक्तेः णा इत्ययमादेशोभवति । अग्गिणा, वाउणा (स्पष्टे=अग्निना-वायुना) ॥ १७ ॥

सुभिस्सुप्सु दीर्घः ॥ १८ ॥

इदुदन्तयोः सु, भिस्, सुप् इत्येतेषुदीर्घोभवति । सु, अग्गी (३-२ नलोपः ३-५० गद्वि० ४-६ सोर्लोपः शे०स्प० अग्निः) वाऊ (२-२ यलोपः शे० स्प० वायुः) भिस्, अग्गीहिं (४-६ सोर्लोपः ५-५ भिस्=हिं=अग्निभिः) वाऊहिं । (२-२ यलोपः शे० पू०=वायुभिः) सुप्, अग्गीसु (३-२ नलोपः ३-५० गद्वि० दीर्घः २-४३ष्=स्=अग्निषु) वाऊसु (२-२ यलोपः दीर्घः २-४३ष्=स्=वायुषु) ॥ १८ ॥

स्त्रियां शस उदोतौ(१) ॥ १९ ॥

स्त्रियां वर्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ भवतः । मालाउ, मालाओ । (स्पष्टे=मालाः) णईउ, णईओ (२-२ न्=ण् २-२ द्लोपः शे० स्प०=नदीः) । बहूउ, बहूओ (२-२७ ध्=ह् शे० स्प० वधूः) ॥ १९ ॥

जसो वा(२) ॥ २० ॥

जसः स्त्रियाम् उत् ओत् इत्येतावादेशौ वा भवतः । पक्षे अदन्तवत् । मालाउ, मालाओ । माला (स्प०, अदन्ते ५-२ जसो लोपः=मालाः) ॥ २० ॥

अमि ह्रस्वः ॥ २१ ॥

अमि परतः स्त्रियां ह्रस्वो भवति । मालं (ह्रस्वेजाते ५-३

---

(१) स्त्रियां जश्शसोरुदोतौ । का० पा०

(२) ङसो वा । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

अकारलोपः ४-१२ मकारबिन्दुः=मालाम्) णइं (२-४२ न्=ण् २-२ दलोपः ४-१ अगो ऽकारलोपः ४-१२ त्रिं=नदीम्) बहुं (२-२७ ध्=ह् शे० पूर्व०) वधूम् ॥ २१ ॥

टाङस्ङीनामिदेददातः(१) ॥ २२ ॥

टा, ङस्, ङि, इत्येतेषां स्त्रियाम् इत्, एत्, अत्, आत् इत्येतआदेशाभवन्ति। टा, णईइ, णईए, णईअ, णईआ कअं। (५-२१ सू० नकारस्य ण्, दलोपश्च दर्शितःशे० स्प०=नद्या) (कअं इति १-२७ सू० स्प०=कृतम्) ङस्, णईइ, णईए, णईअ, णईआ, वणं। (णईपूर्ववत् अन्यत्स्पष्टं=नद्याः) (वणं इति ४-१२ सू० स्प०) ङि, णईइ, णईए, णईअ, णईआ ठिअं (पूर्ववत् णईशब्दः शे० सुगमं=नद्यां) (ठिअं इति ५-१३ सू०स्पष्टं=स्थितम्) ॥२२॥

नातोऽदातो ॥ २३ ॥

आत-आकारान्तस्यस्त्रीलिङ्गस्यानन्तरंटाङस्ङीनाम् अत्, आत्, इत्येतावादेशौन भवतः। पूर्वेणप्राप्तो निषिध्यते। मालाइ, मालाए कअं, धण, ठिअं। (५-२२ सूत्रादिदेतावेवभवतः, अ० स्प०=मालया) ॥ २३ ॥

आदीतौ* बहुलम् ॥ २४ ॥

स्त्रियामाकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं प्रयोक्तव्यौ। सहमाणा, सहमाणी। (२-४२ न्=ण् शे० स्प०) हलद्दा, हलद्दी। (१-१३ सूत्रद्रष्टव्ये) सुप्पणहा, सुप्पणही। (३-३ रलोपः ३-५० पद्वि० ४-१ हूस्वः २-४२न्=ण् २-२७ ख्=ह् शे०स्प०) छाहा, छाही। (२-१८ सू०द्रष्टव्यं शे०स्प०)(२) ॥२४॥

---

(३) टाङसिङस्ङीनामिदेददातः। का० पा०

* आदितौ-अदितौ। का० पा० (१) यत्तत्किमः।

न नपुंसके (१)॥ २५ ॥

प्रथमैकवचने नपुंसके दीर्घत्वं न भवति। सौदीर्घः पूर्वस्येत्यनेन इदुदन्तयोः प्राप्तं पूर्वस्यदीर्घत्वं न नपुंसके इत्यनेन बाध्यते(२) दहिं (५-३० सोर्बिन्दुः शे० स्प०) महुं (२-२७ध्=ह् शे० स्प०) हविं। (४ ६ षलोपः २-२ प्रायो ग्रहणात् वलोपोन शे० पू०) दधि, मधु, हविः। २५ ॥

इज्जश्शसोर्दीर्घश्च ॥ २६ ॥

नपुंसके वर्तमानयोर्जश्शसोःस्थाने इदादेशो भवति पूर्वस्य चदीर्घः। वणाइ (२-४२ न्=ण् जश्शसोरिदादेशः पूर्वस्य दीर्घः=वनानि) दहीइ। महूइ। (पू०) ॥२६॥

नामन्त्रणे सावोत्वदीर्घबिन्दवः ॥ २७ ॥

आमन्त्रणे गम्यमाने सौपरतओत्वदीर्घबिन्दवो न भवन्ति। "अत ओत् सो"रित्योत्वंप्राप्तम्। "सुभिस्सुप्सु दीर्घ" इति दीर्घः। "सोर्बिन्दुर्नपुंसके"इतिबिन्दुःप्राप्तः। हे वच्छ, हे अग्गि, हे वाउ, हे वण, हे दहि, हे महु(व्याख्यातप्रायाः पूर्वमेव, विशेषकृत्यं सुस्पष्टम्) ॥ २७ ॥

स्त्रियामातएत् ॥ २८ ॥

स्त्रियामामन्त्रणेआतःस्थानेएत्वंभवति सौ परतः। हे माले हे साले। (स्पष्टं) "अन्त्यस्य हल"इति सोर्लोपः ॥ २८ ॥

बहुलमित्यनुवर्तते यत्तत्किमित्येतेषु परतः आतः स्थाने ईत्ययमादेशोभवति। स्त्रियामित्यनुवर्तते। प्रथमैकवचनवर्जं ए आदेशश्चबहुलवचनात्। जीए, तीए, कीए, जीहिं, तीहिं, कीहिं। पक्षे। जाए, ताए, जाहिं, काहिं। यस्याः तस्याः, कस्याः, याभिः ताभिः, काभिः। इति क्वचिदधिकः पाठः। का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ २९ ॥

आमन्त्रणे ईदूतोर्ह्रस्वोभवति । हे णइ, हे बहु ॥ २९ ॥

सोर्बिन्दुर्नपुंसके ॥ ३० ॥

नपुंसके वर्तमानस्य सोर्बिन्दुर्भवति । वणं, दहिं, महुं । (स्प०) ॥ ३० ॥

ऋत आरः सुपि(१) ॥ ३१ ॥

ऋकारान्तस्य सुपि परत आर इत्यादेशो भवति । भत्तारो सोहइ (३-५० तद्वि० ५-१ओ=भर्ता) (२-४३ श्=स् युवर्णस्य गुण २-२७ भ्=ह ७-१ त=इ=शोभते) भत्तारं पेक्खमु (५-३ अमोऽकारलोपः ४-१२ मवि० शे० पू० भर्तारं) (१२-१८ दृश=पेक्ख ७-४ मु=पश्यामः) भत्तारेण कअं (५-१२ एत्वं ५-४ टा=ण) ॥ ३१ ॥

मातुरात् ॥ ३२ ॥

मातृसम्बन्धिन ऋकारस्याकारो भवति । माआ (२-२ तलोपः) सोहइ (२-४३ श्=स् सोहन्तिवत् गुणः ७-१ इ= शोभते) माअं पेक्खसु (३-३ तलोपः ह्रस्वः ५-३ अमो ऽकारलोपः ४-१२ वि० । अस्प०) माआइ माआए (२-२ तलोपः आत्वेकृते ५-२२ कअं ॥ ३२ ॥

उर्जश्शस्टाङस्सुप्सु वा(२) ॥ ३३ ॥

जश्शस्टाङस्सुप्सुपरत ऋकारस्यस्थानेउकारादेशोभवति वा। जस्, भत्तुणो (३-३ रलोपः ३-५० तद्वि० ५-१६ णो) भत्तारा । (५-३१ ऋ=आर ५-११ दीर्घः ५-२ जसो

(१) सौ । का० पा० (२) उण जश्शस्टाङसिङस्सु वा । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

लोपः शे० पू०) शस्, भत्तुणो (५-१४ शसो=णो शे० पू०) भत्तारे। (५-३१ आर ५-१२ एत्वं ५-२ शसोलोपः शे० पू०) टा, भत्तुणा (५-१७ टा=णा शे० पू०) भत्तारेण। (पू० व० रलोपादिकं ५-३१ आर ५-१२ एत्व ५-४ टा-ण) ङस्, भत्तुणो (५-१५ णो शे० पू०) भत्तारस्स (रलोपे तद्वित्वे चकृते५-३१ आर ५-८ ङसः स्सः) सुप्, भत्तूसु (५-११ दीर्घः शे० स्प०) भत्तारेसु। (५-१२ एत्वं शे० पू०) ॥ ३३ ॥

पितृभ्रातृजामातृणामरः ॥ ३४ ॥

पित्रादीनां सुपि परत ऋतोऽरो भवति। आरापवादः। पिअरं (२-२ तलोपः ५-३ अमोऽकारस्यलोपः ४ १२ मोबिन्दुः पिअरेण (५-१२ एत्वं ५-४ ट=ण शे० पू०) भाअरं, भाअरेण। जामाअर, जामाअरेण (पूर्ववत्) ॥ ३४ ॥

आ च सौ(१) ॥ ३५ ॥

पित्रादीनामाकारोभवति सौ परतः। चकारादरश्च। पिआ (स्पष्टं) पिअरो (५-१ ओ शे०स्प०) भाआ, भाअरो। जामाआ, जामाअरो ॥ ३५ ॥

राज्ञश्च ॥ ३६ ॥

राजन् शब्दस्य आ इत्ययमादेशोभवतिसौ परतः। राआ (स्पष्टं) ॥ ३६ ॥

आमन्त्रणे वा बिन्दुः ॥ ३७ ॥

राजन् शब्दस्य आमन्त्रणे वा बिन्दुः स्यात्। हेराअं(४-६ नलोपः २-२ जलोपः शेषमदन्तवत्) हराअ (५-२७ बिन्दुर्न ॥३७॥

जश्शस्ङसां णो ॥ ३८ ॥

राज्ञ उत्तरेषां जस् शस् ङस् इत्येतेषां णो इत्ययमादेशो भ-

(१) आच्च सौ। का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

वति । राआणो (पूर्ववत् नलोपेकृते ५ ४४ ज=आ शे० स्प०) पेक्खंति (पूर्ववत् दृशेः पेक्ख आदेशे झिस्थाने ७-४न्तिः=राजानः पश्यन्ति) राआणो पेक्ख (शसिरूपमेतत्स्पष्टं पूर्ववत्=राज्ञः पश्य) राइणो धणं (४-६ नलोपः २ २ जलोपः ५ ४३ इः=राज्ञः) रण्णो (धणं २-२ जलोपः ५-४२ णद्वि० अन्त्यलोपश्च अलोपो ह्रस्वश्च संयोगे ४-१ सूत्रे द्रष्टव्यम् ॥ ३८ ॥

शस एत् ॥ ३९ ॥

राज्ञः परस्यशस ए इत्ययमादेशोभवति । राए पेक्ख (नजयोः पूर्ववल्लोपः ४ १ आलोपः=राज्ञः) (पूर्ववत् पेक्खादेशः=पश्य) राआणो पेक्ख (पूर्वसूत्रेस्पष्टम्) ॥ ३९ ॥

आमो णं ॥ ४० ॥

राज्ञ उत्तरस्यामः षष्ठीबहुवचनस्य णं इत्ययमादेशो भवति । राआणं (४—६ नलोपः ५-४४ ज=आ=राज्ञाम्) ॥ ४० ॥

टा णा ॥ ४१ ॥

राज्ञ उत्तरस्याः टाविभक्तेः णा इत्ययमादेशः स्यात् । राइणा (४-६ नलोपे ५ ४३ ज=इ शे० स्प०=राज्ञा) ॥ ४१ ॥

ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च* ॥ ४२ ॥

राज्ञ उत्तरस्य ङसादेशस्य टादेशस्य च वा विकल्पेन द्वित्वं भवति । अन्त्यस्य च लोपः । रण्णो (५—३८ सूत्रे स्पष्टं) रा-

---

* ङस् ङसि टाम् णोणौ ङण् २ २५९ । राजन् शब्दस्य अना सहितस्य जस्य, ङस्, ङसि, टावचनानां णो, णा इत्यादेशौ, तयोः परयो ङेण् इत्यादेशो वा भवति । टिलोपः । रण्णा । राजन् णा कृते 'अन्त्यहल' इति नकार लोपे जस्य ङण् राकारस्याकारस्य टि-लोपे च कृते रण्णा इति रूपं भवति । इति वाल्मीकिः०

Aho ! Shrutgyanam

इणो धणं । (५-४१ सूत्रे स्प०) रण्णा, राइणा कअं । (४-६ नलोपः ५-४१ टा=णा द्वित्वे अन्त्यजलोपे ह्रस्वे च) ॥ ४२ ॥

इदद्वित्वे ॥ ४३ ॥

वेति निवृत्तम् । ङसादेशस्य टादेशस्य च अकृते द्वित्वे राज्ञ इत्वं भवति । राइणा, राइणो ।(स्प०) कृते द्वित्वे तिवत्त्वं न भवति रण्णा, रण्णो (५-४२ सू० ५-३८ सूत्रे च स्पष्टं) ॥ ४३ ॥

आ णोणमोरङसि ॥ ४४ ॥

णोणमोः परयो राज्ञो जकारस्य आकारादेशः स्यात् । अङसि । षष्ठ्येकवचने न भवति । राआणो पेक्खन्ति । राआणो पेक्ख । (५-३८ सूत्रे व्याख्याताः) । राआणं धणं (५-४० सू.स्प०) । अङसीति किम् । राइणो, रण्णो धणं । शेषमदन्तवत् । राअं, राएहिं । राआ, राआदो, राआदु । राआ । (५-६ सूत्रेण दो-दु—हयः ङसेः स्थाने प्रयुज्यन्ते शे० स्प०) राआहिंतो, आसुंतो(५-७ भ्यसः हिंतो-सुंतो-आदेशौ) राअम्मि, राए (५-९ ङेः ए-म्मि) राएसु । (५-१२ एत्वे शे० स्प०)राजानं, राजभिः, राज्ञः, राजभ्यः, राज्ञि, राजसु ॥ ४४ ॥

आत्मनो ऽप्पाणो वा ॥ ४५ ॥

आत्मनोऽप्पाण इत्यादेशो भवति वा । अप्पा अप्पाणो (४-६ न् लोप० शे० स्प०) ॥ ४५ ॥

इत्वद्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ ४६ ॥

आत्मनोऽनादेशे राजवत्कार्यस्यादित्वद्वित्वे वर्जयित्वा । अप्पा, अप्पाणो, अप्पणा, अप्पणो । (५-३८ सूत्रानुसारतः जसादीनां णोत्वादिकं सर्वं राजवत) आत्मा, आत्मानः, आत्मना, आत्मनः ॥ ४६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ब्रह्माद्या आत्मवत्(१) ॥ ४७ ॥

ब्रह्माद्याः शब्दा लक्ष्यानुसारेणात्मवत् साधवो भवन्ति । बह्मा, बह्माणो । (३-३ रलोपः ४-६ नलोपः शे० लक्ष्यानु सारेणात्मनो राद्वत्कार्य्यं भवत्यतः ५-३६ सू० आत्वं,=ब्रह्मा, एव मुत्तरत्रापि) जुवा, जुवाणो (२-३१ यू=ज् ४-६ नलोपः शेषमात्मवत) अद्धा, अद्धाणो । (३-३ वलोपः ३-५० धृद्वि० ३-५१ धृ=द् ४-६ नलोपः शेषमात्मवत) ब्रह्मन्, युवन्, अध्वन्, एवमादयो लक्ष्यानुसारेणावगन्तव्याः ॥ ४७ ॥

इति प्राकृतप्रकाशे लिङ्गविभक्त्यादेशः
पञ्चमः परिच्छेदः ॥

अथ षष्ठः परिच्छेदः ।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १ ॥

सर्वादेरुत्तरस्य जस एत्वं भवति(२) । सव्वे (३-३ रलोपः ३-५० वद्वि०) जे (२-३१य=ज वएमग्रेऽपिज्ञयम्) ते (४-६ दलोपः) के (६-१३ किम्=क) कदरे । (१२-३ त=दः) सर्वे । ये । ते । के । कतरे ॥ १ ॥

---

(१) पुंस्यन आणो राजवच्च ८ । ३ । १६ ।

पुंलिङ्गे वर्तमानस्यान्नन्तस्य आण इत्यादेशोवा भवति । पक्षे यथा दर्शनं राजवत् कार्यं भवति । हे०

(२) अकारान्ताद्भवति । तथा च हेमः अतः सर्वादेर्डेजसः । ८ । ३ । ५८ अतः किम् सव्वाओ रिद्धीओ इति ।

Aho ! Shrutgyanam

ङेः स्सिम्मित्थाः(१) ॥ २ ॥

ङेः सप्तम्येकवचनस्य सर्वादिपरस्थितस्य स्थाने स्सि, म्मि, त्थ इत्येतआदेशा भवन्ति । सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ (पूर्ववत् रलोपो वद्वित्व च शे० स्प०) इअरस्सि, इअरम्मि, इअरत्थ । (२-२ तलोपः शे० स्प०) सर्वस्मिन् । इतरस्मिन् ॥ २ ॥

इदमेतत्किंयत्तद्भ्यष्टा इणा वा ॥ ३ ॥

इदम्, एतद्, किम्, यद्, तद् इत्येतेभ्यः टा इत्यस्य इणादेशो भवति वा । इमिणा (६-१४ इदम्=इम ४-१ अलोपः शे० स्प०) एदिणा (४-६ दलोपः १२-३ त=द् ४-१ अलोपः) किणा (६-१३ किम्=कः-४-१ अलोपः) जिणा तिणा । (२-३१ य्=ज् ४-६ दलोपः) पक्षे इमेण, एदेण, केण, जेण, तेण । (६-१४ इदम्=इद ५-४ सूत्रोदाहृत(वच्छेण)वददन्तकार्याणि पक्षान्तरे ज्ञेयानि-एवमुत्तरत्रापि) अनेन, एतेन, केन, येन, तेन ॥ ३ ॥

आम एसिं ॥ ४ ॥

इदमादिभ्य उत्तरस्य आम एसिं इत्ययमादेशो वा भवति । इमेसिं (पूर्ववददन्तत्वं ४-१ अलोपः शे० स्प०) इमाण (५-४ आम्=ण ५-११ दीर्घः शे० स्प०) एदेसिं (४-६ दलोपः एत इति जाते १२-३ त्=द् शे० स्प०) एदाण (५-४ आम्=ण ५-११ दीर्घः) केसिं (६-१३ किम्=क ४-१ अलोपः शे० स्प०) काण (५-४ आम् =ण ५-११ दीर्घः) जेसिं (२-३१ य-ज ४-६ दलोपः ३-१ अलोपः शे० स्प०) जाण (५-४ आम=ण ५-११

(१) ङेः स्सि म्मित्थाः-ङेः स्सं । का० पा०

दीर्घः) तेसिं (पूर्ववददन्तत्वमकारलोपश्च शे० स्पष्टं) ताण(१) (५-४ आम्=ण ५-११ दीर्घ० शे० पू० एषाम्-आसाम् । एतेषाम्-एतासाम्, केषाम्, कासाम्, येषाम्, यासाम्, तेषाम्, तासाम् ॥ ४ ॥

किंयत्तद्भ्यो ङस आसः ॥ ५ ॥

किम् यद्, तद्, एभ्य उत्तरस्य ङस आस इत्ययमादेशो भवति वा । कास, कस्स । जास, जस्स । तास, तस्स(२)। (५-८ स्स एवमुत्तरत्रापि,अदन्तत्वमकारलोपादिकं च पूर्ववत्कार्यं)॥५॥

इद्भ्यः स्सा से(३) ॥ ६ ॥

ईकारान्तेभ्यः किमादिभ्य उत्तरस्य ङसः स्सा से इत्येतावा देशौ भवतः । किस्सा, कीसे, कीआ, कीए, कीअ, कीइ । जिस्सा, जीसे, जीआ, जीए, जीअ, जीइ । तिस्सा, तीसे, तीआ तीए, तीअ, तीइ । (स्त्रियां ४-६ किम्=कः स्त्रीप्रत्यये आपि जाते ५-२४ बाहुलकात् आत्वे ईत्वे च कृते ङसः स्साः=संयो- गेह्रस्वः एवमेव यत्तद्भ्यामपि, पक्षे ५-२२ सूत्रेण ङसः स्थाने

---

(१) स्त्रीलिङ्गेऽप्येतानिरूपाणि । इमांसि । एदांसि । कांसि । जांसि । तांसि । तथाच वाल्मीकिः ।

किं यत्तदोऽस्वमामि सुपि० ७-७-४० सु अम्, आम् वर्जिते सुपि परे किं यत्तद्भ्यो ङीव् वा स्यात् पक्षे यद् । तेनैतानि रूपाणि सिद्ध्यन्ति । वा० ।

(२) किं यत्तदोऽस्यमामि ८ । ३ । ३३-सिम्-अम्-आम्-वर्जिते स्यादौ परे एभ्यः स्त्रियां ङीर्वा भवति ॥ हे०

(३) ङसः स्सा सो स्त्रियाम् । इकारान्तेभ्यश्चाकारान्तेभ्यश्च स्त्रियां कि मादिभ्य उत्तरस्य ङसः स्सासोइत्यादि-ङस्ग्रहणेन- ङसि ङि ग्रहणम् का० अ० पा० ।

Aho ! Shrutgyanam

इदादयो यथायथं प्रत्येकं योज्याः, कस्याः यस्याः तस्याः) ॥६॥

ङेर्हिं ॥ ७ ॥

किमादिभ्य उत्तरस्य ङेः हिं इत्ययमादेशो भवति वा । कहिं, कस्सिं, कम्मि, कत्थ । जहिं, जस्सिं, जम्मि, जत्थ । तहिं, तस्सिं, तम्मि, तत्थ (६-२ङि=स्सिं, म्मि, त्थ=कस्मिन्, यस्मिन्, तस्मिन्) ॥ ७ ॥

आहेइआ काले ॥ ८ ॥

किंयत्तद्भ्यो ङेः काले आहे, इआ इत्यादेशौ वा भवतः । काहे, जाहे, ताहे । कइआ, जइआ, तइआ (पूर्ववददन्तत्वं, ४-१ अकारलोपः शे०सू०)काहिं इत्यादयो ऽपि । कदा यदा तदा॥८॥

त्तो दो ङसेः ॥ ९ ॥(१)

किंयत्तद्भ्यो ङसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ भवतः । कत्तो, कदो । जत्तो, जदो । तत्तो, तदो । (स्पष्टान्येतानिपदानि) (६-७ । ६-२ सूत्रविहिताः प्रत्यया अपि काले प्रयोक्तव्याः यथा=कस्मिन्काले कदा, काहिं, कस्सिं इत्यादिज्ञेयम्) ॥ ९ ॥

तदओश्च ॥ १० ॥

तद उत्तरस्य ङसेरोकरादेशो भवति वा । तो । अदन्तत्वे त इति जाते ४-१ अलोपः ततो ङसेः ओत्वे=तो) तो, तत्तो, तदो (६-९ ङसेः त्तो, दो) ॥ १० ॥

ङसासे ॥ ११ ॥

वेति वर्तते । तदो ङसा सह से इत्ययमादेशो भवति पक्षे

---

(१) ङसे म्हा ८ । ३ । ६६ ॥ किं यत्तद्भ्यः परस्यङसेः स्थाने म्हा इत्यादेशो वा भवति । कम्हा । जम्हा । पक्षे-काओ, जाओ, ताओ ॥ हेमः ॥

Aho ! Shrutgyanam

यथाप्राप्तम् । से (१)(स्प०) तास (६-५ङस आसादेशः ४-१ तइत्यस्याकारलोपः) ॥ ११ ॥

आमासिं ॥ १२ ॥*

तद् आमा सह सिं इत्ययमादेशो वा भवति । सिं (स्प०) ताण(२) (६-४ सू० स्प०) तेषाम् तासाम् ॥ १२ ॥

किमः कः ॥ १३ ॥(३)

किंशब्दस्य सुपि परतः क इत्ययमादेशो भवति । को । (४-१ अलोपः ५-१ ओ) के । (४-१ अलोप ६-१ एत्वं) केण । (५-११ एत्वं ५-४ टा=ण) केहिं । (५-१२ ए ५-५ भिस्=हिं=कः, के, केन, कैः) ॥ १३ ॥

इदम इमः ॥ १४ ॥

सुपि परत इदम इम इत्ययमादेशो भवति । इमो (४-१ अलोपे ५-१ ओ) इमे (६-१ जस्=ए शे० पू०) इमं (५-३ अमोऽकारलोपः ४-१२ वि० शे०स्प०) इमेण (५-१२ अ=ए५-४ टा=ण) इमेहिं (५-५ भिस्=हिं शे० पू०) ॥ १४ ॥

स्ससिमोरद्वा ॥ १५ ॥

स्स स्सिमोः परत इदमोऽदादेशो वा भवति । अस्स । इमस्स ।

---

(१) तस्य तस्याः । स्त्रियामपि से तिस्सा । ङस्ग्रहणेङसिग्रहणं से तत्तो । का० पा

(२) ताण । स्सिताणा । सिंताण, तेसिं । हेमचं-सिंइत्येव । का० पा० ।

* वेदं तदेतदो ङसाम् भ्यां से सिमौ ८।४।८१ ॥ इति हेमस्तु इदमेतदोरपीच्छति ।

(३) किमः किं ८।३।८० किमः क्लीवे वर्तमानस्य स्यम्भ्यां सह किं भवति । किं कुलं तुह । हेमः ॥

Aho ! Shrutgyanam

(५-८ ङस्=स्स शे०स्प०) अस्सि । इमस्सि (६-२ स्सि शे० स्प०) ॥ १५ ॥

ङेर्देन हः ॥ १६ ॥

इदमा दकारेण सह ङेः स्थाने हकारादेशो वा भवति । इह । (स्प०) पक्षे अस्सिं, इमस्सिं, इमम्मि (पूर्ववद्) ॥ १६ ॥

न त्थः ॥ १७ ॥

इदमः परस्य ङेः त्थ इत्ययमादेशो न भवति । "ङेः स्सिम्मि त्था" इति प्राप्तप्रतिषिध्यते । इह, अस्सि, इमस्सि, इमम्मि, (शे० ६-१६ सू० द्रष्टव्यानि ॥ १७ ॥

नपुंसके स्वमो रिदमिणमिणमो ॥ १८ ॥

नपुंसकलिङ्गे इदमः स्वमोः परतः सविभक्तिकस्य इदं इणं इणमो इत्येते त्रय आदेशा भवन्ति । इदं, इणं इणमो, धणं (स्पष्टानि इदं ज्ञानम्) ॥ १८ ॥

एतदः सावोत्वंवा ॥ १९ ॥

एतच्छब्दस्य सौ परतः ओत्वं वा भवति । नित्ये प्राप्ते विकल्प्यते । एस । एसो (४-६ दलोपः ६-२२ त=स एषः ॥१९॥

त्तो(१) ङसेः ॥ २० ॥

एतदः परस्य ङसेः त्तो इत्ययमादेशो भवति । एत्तो (संस्कृतानुसारं ४-६ सूत्रा द्वादलोपे एत इति जाते ६-२० ङसि=त्तो ६-२१ तलोपः) एदादो, एदादु एदाहि । ४-६ दलोपः १२-३ त=द) ५-११ दीर्घ० ५-६ ङसि=दो, दु, हि) एतस्मात् ॥ २० ॥

(१) तो—एतो का० पा० ।

त्तोत्थयोस्तलोपः ॥ २१ ॥

एतदस्तकारस्यत्तोत्थयोः परतो लोपोभवति । एत्तो । एत्थ (६-२ ङि=त्थ अन्यत् पू०एतस्मिन्) ॥ २१ ॥

तदेतदोःसः सावनपुंसके ॥ २२ ॥

तच्छब्दस्य एतच्छब्दस्य यस्तकारस्तस्य सकारादेशो भवति।अनपुंसके सौ परतः । सो पुरिसो । सा महिला(१) । एस, एसो । एसा । (४-६ दलोपे-६-१९ ओत्वविकल्पः, स्त्रीत्वे-५-२४ आत्वं, महिलाशब्दस्तत्समः) साविति किम् । एदे । ते (४-६ दलोपः १२-३ त=द ६-१ जस्=ए=एते।=ते) एदं । तं । (४-६ दलोपः ५-३ अमोऽकारलोपः ४-१२ विं०=एतम्, एतम्।=तम्) अनपुंसक इति किम् । तं एदं धणं (नपुंसकत्वान्नतकारस्यसकारः ५-३० सोर्विंदुः पूर्ववदन्यत्=तदेतद्धनम्) ॥ २२ ॥

अदसो दो मुः ॥ २३ ॥

अदसो दकारस्य सुपि परतो मु इत्ययमादेशो भवति । अमू पुरिसो । अमू महिला(२) । (४-६ सूलोपे अमु जाते ५-१८ दीर्घः-४-६ सोर्लोपः) अमूओ पुरिसा । अमूओ महिलाओ(३) । (५-१६ जस्=ओ स्त्रियाम् ५-२० जस ओत्वं पूर्ववत् दीर्घादि) अमुं वणं अमूइ वणाइ (५-३ अमोऽकारस्यलोपः ४-१२ विं०, ५-२६ जस्=इ=पूर्वस्य दीर्घः=अदोवनम् । अमूनि वनानि ॥ २३ ॥

ह्श्च सौ* ॥ २४ ॥

अदसो दकारस्य सौ परतो हकारादेशो भवति । अह पुरिसो ।

(१) सः पुरुषः । सा महिला । (२) असौ पुरुषः । असौ महिला ।
(३) अमी पुरुषा । अमू महिलाः ।
* म्मावये औ वा ८ । ३ । ८९ । अदसोऽन्त्यव्यञ्जनलुकि द-

Aho ! Shrutgyanam

अह महिला । अह वणं(१) । (४-६ अदसः सलोपः) हादेशो ऽयमोत्वात्वबिन्दून् त्रिष्वपि लिङ्गेषु परत्वाद् बाधते ॥ २४ ॥

पदस्य ॥ २५ ॥

अधिकारोऽयमाशब्दविधानात्(२) । यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामः पदस्य तद्भवतीत्येवं वेदितव्यम् । तच्च (३)तत्रैवोदाहरिष्यामः ॥ २५ ॥

युष्मदस्तंतुमं(४) ॥ २६ ॥

साविस्येव । युष्मदः पदस्य सौ (५)परतः तं तुमं इत्येतावादेशौ भवतः । तं आगदो । तुमं आगदो(६) (आङ्पूर्वकक्तान्तस्यगमेः १२-३ त=द शौरसेन्यां २-२ सूत्रबाधेन न लोपः ५-१ ओ) ॥ २६ ॥

तुं चामि ॥ २७ ॥

युष्मदःपदस्य अमि परतः तुंइत्यादेशो वा भवति तुमं च । तुं पेक्खामि तुमं पेक्खामि(७) (१२-१ - दृश्=पेक्ख ७-३ मि ७-३०आत्वं) ॥ २७ ॥

कारान्तस्य स्थाने ङ्यादेशे म्मौ परत अय-इअ इत्यादेशौ वा भवतः । अयम्मि इअम्मि । पक्षे अमुम्मि । हे० । अमुस्मिन् । अत्यत्र ६ । २३ मु कृते यथाप्राप्तं विभक्त्यादेशाः ।

(१) असौ पुरुषः । असौ महिला । अदोवनम् ।

(२) 'द्वेर्दो' ५४ सूत्रात्प्रागित्यर्थः । तदुक्तम्—

'पदस्येत्यधिकारोऽयं द्विशब्दस्य विधेरधः' ॥

(३) तत्र तत्र विधिसूत्रेषूदाहरणानि द्रष्टव्यानीत्यर्थः ।

(४) युष्मद स्तं, तुं तुवं, तुह, तुमं सिना ८ । ३ । ९० ॥ सिना सह एते पञ्च आदेशा भवति ॥ हे० ।

(५)'सौ'इति सप्तम्यन्तनिर्देशस्तु विषयविभागार्थम्।एवं मुत्तरत्रापि

(६) त्वम् आगतः । (७) त्वां पश्यामि ।

Aho ! Shrutgyanam

तुज्झे तुह्मे जसि ॥ २८ ॥

युष्मदः पदस्य जसि परतः तुज्झे, तुह्मे इत्येतावादेशौ-भवतः। तुज्झे आगदा, तुह्मे आगदा(१) ॥ २८ ॥

वो च शसि ॥ २९ ॥

शसि युष्मदः पदस्य वो इत्यादेशो भवति चकारात् तुज्झे तुह्मे च। वो पेक्खामि। तुज्झे, तुह्मे, पेक्खामि(२)। (पेक्खामि ६-२७ सू० स्प०) ॥ २९ ॥

टाङ्योस्तइ तए तुमए तुमे ॥ ३० ॥

युष्मदुत्तरयोः टा, ङि इत्येतयोः तइ, तए, तुमए, तुमे, इ-त्यत्रआदेशा भवन्ति। टा—तइ, तए, तुमए, तुमे कअं(३)। ङि—तइ, तए, तुमए, तुमे ठिअं(४) (पूर्ववत् स्पष्टानि) ॥ ३० ॥

ङसि तुमो तुह तुज्झ तुह्म तुम्मा: ॥ ३१ ॥

युष्मदः पदस्य ङसि तुमो, तुह, तुज्झ, तुह्म, तुम्म इत्येत-आदेशा भवन्ति। तुमो पदं। तुह, तुज्झ, तुह्म, तुम्म पदं(५)। ॥ ३१ ॥

आङि च ते दे ॥ ३२ ॥

आङि तृतीयैकवचने चकाराद् ङसि च परतो युष्मदः पदस्य ते, दे इत्येतावादेशौ भवतः। ते कअं। देकअं(६)। ते धणं देधणं(७) ॥ ३२ ॥

---

(१) यूयं आगताः। (२) युष्मान् पश्यामि।
(३) त्वयाकृतम्। (४) त्वयिस्थितं।
(५) तवपदम्। पदशब्दःसंस्कृतसमोविकाराभाववान् महिला शब्दवत् 'तत्समास्ते येषु न विकारः'इति प्राकृतव्याकरणनियमः।
(६) त्वयाकृतम्। (७) तवधनम्।

Aho ! Shrutgyanam

तुमाइ च ॥ ३३ ॥

आङि युष्मदः पदस्य तुमाइ इत्ययमादेशो भवति । तुमाइ-कअं(१) ॥ ३३ ॥

तुज्झेहिं तुह्मेहिं तुम्मेहिं भिसि ॥ ३४ ॥

भिसि परतो युष्मदः पदस्य तुज्झेहिं, तुह्मेहिं, तुम्मेहिं इत्येतआदेशा भवन्ति । तुज्झेहिं, तुह्मेहिं, तुम्मेहिं कअं(२) ॥ ३४ ॥

ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ ३५ ॥

ङसौ परतो युष्मदः पदस्य तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु तुमाहि इत्येतआदेशा भवन्ति । तत्तो आगदो । तइत्तो, तुमादो, तुमादु, तुमाहि आगदो । त्वदागतः(३) ॥ ३५ ॥

तुह्माहिंतो तुह्मासुन्तो भ्यसि ॥ ३६ ॥

युष्मदः पदस्य पञ्चमी बहुवचने भ्यसि तुह्माहिंतो, तुह्मासुन्तो इत्येतावादेशौ भवतः । तुह्माहिंतो, तुह्मासुन्तो आगदो(४) ॥ ३६ ॥

वो भे तुज्झाणं तुह्माणमामि ॥ ३७ ॥

आमि परतो युष्मदः पदस्य वो, भे, तुज्झाणं, तुह्माणं इत्येतआदेशा भवन्ति । वो धणं । भे धणं । तुज्झाणं, तुह्माणं धणं(५) ॥ ३७ ॥

ङौ तुमम्मि ॥ ३८ ॥

युष्मदः पदस्य ङौ परतः तुमम्मि इत्यादेशो भवति ।

---

(१) त्वयाकृतम् ।
(२) युष्माभिः कृतम् ।
(३) त्वत्–आगतः ।
(४) युष्मदागतः ।
(५) युष्माकंधनं ।

Aho ! Shrutgyanam

तुमम्मि ठिअं(१) । पूर्वोक्ताश्च* । तइप्रभृतयश्चत्वारोऽप्यादेशा भवन्ति ॥ ३८ ॥

तुज्झेसु तुम्हेसु सुपि ॥ ३९ ॥

युष्मदः पदस्य सप्तमीबहुवचने तुज्झेसु, तुह्मेसु इत्येतावादेशौ भवतः । तुज्झेसु ठिअं । तुह्मेसु ठिअं(२) ॥ ३९ ॥

अस्मदो ह मह महअं सौ ॥ ४० ॥

अस्मदः पदस्य सौ परतो हं, अहं, अहअं इत्येतआदेशा भवन्ति । हं, अहं, अहअं करेमि(३) (१२-१५ कृञ्=कर ७-३ मि ७-३४ एत्वं) ॥ ४० ॥

अहम्मिरमि च ॥ ४१ ॥

अमि परतोऽस्मदः पदस्य अहम्मि इत्ययमादेशो भवति सौ च । अहम्मि पेक्ख । अहम्मि करेमि । मां प्रेक्षस्व । अहं करोमि ॥ ४१ ॥

मं ममं ॥ ४२ ॥

अमीति वर्तते । अस्मदः पदस्य अमि परतो मं ममं इत्येतावादेशौ भवतः मं, ममं पेक्ख(४) ॥ ४२ ॥

अह्मे जश्शसोः ॥ ४३ ॥

अस्मदः पदस्य जश्शसोः परतः अह्मे इत्ययमादेशो भवति । अह्मे आगदा(५) । अह्मे पेक्ख(६) ॥ ४३ ॥

णो शसि ॥ ४४ ॥

अस्मदः पदस्य शसि परतो णो इत्ययमादेशो भवति । णो

---

(१) त्वयिस्थितम् । (२) युष्मासुस्थितम् । (३) अहं करोमि ।
(४) मां प्रेक्षस्व । (५) वयमागताः । (६) अस्मान् प्रेक्षस्व, पश्य वा ।

Aho ! Shrutgyanam

पक्ख । अस्मान् प्रेक्षस्व ॥ ४४ ॥

आङि मे ममाइ ॥ ४५ ॥

अस्मदः पदस्य आङि परतो मे, ममाइ इत्येतावादेशौ भवतः । मे कअं । ममाइकअं(१) ॥ ४५ ॥

ङौ च मइ मए ॥ ४६ ॥

अस्मदः पदस्य ङौ परतौ मइ मए इत्येतावादेशौ भवतः । चकारात्तृतीयैकवचने च । मइ, मएठिअं(२) । मइ, मए कअं(३) ॥ ४६ ॥

अह्मेहिं भिसि ॥ ४७ ॥

अस्मदः पदस्य भिसि अह्मेहिं इत्ययमादेशो भवति । अह्मेहिं कअं(४) ॥ ४७ ॥

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ङसौ ॥ ४८ ॥

अस्मदः पदस्य ङसौ परत एते आदेशा भवन्ति । मत्तो गदो । मइत्तो, ममादो, ममादु, ममाहि गदो(५) । (स्पष्टानि, क्तान्तस्यगमेः १२-३ त=द ५-१ ओ) ॥ ४८ ॥

अह्माहिंतो अह्मासुंतो* भ्यसि ॥ ४९ ॥

अस्मदः पदस्य भ्यसि परतो अह्माहिंतो, अह्मासुन्तो इत्येतावादेशौ भवतः । अह्माहिंतो, अह्मासुन्तो गदो(६) ॥ ४९ ॥

मे मम मह मज्झ ङसि ॥ ५० ॥

अस्मदः पदस्य ङसि परत एत आदेशा भवन्ति । मे धणं

(१) मयाकृतम् ।
(२) मयिस्थितं ।
(३) मयाकृतम् ।
(४) अस्माभिः कृतम् ।
(५) मत् गतः ।
(६) अस्मद् गतः ।

* अम्हेहिंतो अम्हेसुन्तो । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

मम, मह, मज्झ धणं(१) ॥५१॥

मज्झणो(२) अह्म अह्माण मह्म आमि ॥ ५१ ॥

अस्मदः पदस्य आमि परत एतआदेशा भवन्ति । मज्झणो, अह्म, अह्माणं, अह्मे धणं । अस्माकं धनम् ॥ ५१ ॥

ममम्मि ङौ ॥ ५२ ॥

अस्मदः पदस्य ङौ परतो ममम्मि इत्यादेशो भवति । ममम्मि ठिअं(३) । पूर्वोक्तौ मइ, मए इत्येतौ च ॥ ५२ ॥

अह्मेसु सुपि ॥ ५३ ॥

अस्मदः पदस्य सप्तमीबहुवचने सुपि परतः अह्मेसु इत्ययमादेशो भवति । अह्मेसु ठिअं(४) ॥ ५३ ॥

द्वेर्दो ॥ ५४ ॥

पदस्येति निवृत्तम् । सुपीति वर्तते द्विशब्दस्य दो इत्ययमादेशो भवति सुपि परतः । दोहिं (प्राकृते द्विवचनं नास्तीति नियमात्(५) द्विशब्दात् भिसः स्थाने ५–५ हिं शे० ६।०) दोसु द्वाभ्याम् द्वयोः ॥ ५४ ॥

त्रेस्ति ॥ ५५ ॥

त्रिशब्दस्य सुपि परतः ति इत्यादेशो भवति । तीहिं । तीसु (५–१८ दीर्घः ५–५ भिस्=हिं) त्रिभिः । त्रिषु ॥ ५५ ॥

तिण्णि(६) जश्शस्भ्याम् ॥ ५६ ॥

त्रिशब्दस्य जश्शस्भ्यां सह तिण्णि इत्यादेशो भवति ।

---

(१) मम धनम् । (२) मज्झाणो । का० पा० (३) मयि स्थितम् ।
(४) अस्मासु स्थितम् । (५) एवं सर्वत्र बोध्यम् ।
(६) तिस्स–तिणा–तिणि–तिस्सि–तिणि । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

तिण्णि आगदा । तिण्णिपेक्ख । (स्पष्टानि) त्रय आगताः । त्रीन् प्रेक्षस्व ॥ ५६ ॥

द्वेर्दुवे दोण्णि वा ॥ ५७ ॥

द्विशब्दस्य जसूशसूभ्यां सह दुवे, दोण्णि इत्येतावादेशौ भवतः । दुवे कुणन्ति । दोण्णि कुणन्ति । पक्षे दो कुणन्ति । द्वौ कुरुतः । दुवे पेक्ख । दोण्णि पेक्ख । पक्षे । दो पेक्ख (८–१३ कृञ्=कुण द्विवचनाभावनियमात् ४७–४ झि=न्ति=कुणन्ति शे०स्प०) द्वौ प्रेक्षस्व ॥ ५७ ॥

चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ ५८ ॥

चतुश्शब्दस्य जश्शसूभ्यां सह चत्तारो, चत्तारि इत्येतावादेशौ भवतः । चत्तारो, चत्तारि पुरिसा कुणन्ति(१) । (१–२३ रु=रि ५–११ दीर्घः ५–२ जसो लोपः) चत्तारो पुरिसे पेक्ख(२)* (५–१२ अ=ए ५–२ शसोलोपः अन्यत् पूर्ववत्) ॥५८॥

एषामामो ण्हं ॥ ५९ ॥

एषां द्वित्रिचतुःशब्दानामामः स्थाने ण्हं इत्ययमादेशो भवति । दोण्हं धणं (६–५४ द्वि=दोशे० स्प०) तिण्हं धणं (६–५५ त्रि=ति० शे० स्प०) चतुण्हं(३) धणं (४–६ रलोपः शे० स्प० ॥५९॥

शेषो ऽदन्तवद् ॥ ६० ॥

शेषः(४) सुब्विधिरदन्तवद्भवति । अकारान्ताद् भिसो हिं इत्ययमादेश उक्त इकारोकारान्तादपि भवति । अग्गीहिं । वाऊहिं (५–१८ सू० स्प०) एवं मालाहिं । णईहिं बहूहिं । अग्गिस्स (३–२ नलोपः ३–५० गद्वि० ५–८ ङस्=स्स वाउस्स (२–२ यलोपः

(१) चत्वारः पुरुषाः कुर्वन्ति ।

* भिसादौरेफतकारयोर्लोपः । तेन चऊहिं । का० पा०

(२) चतुरः पुरुषान् पश्य । (३) चतुण्हं–चउण्हं । का० पा०

(४) शेषेसुब्विधि । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

शे० पू०) अग्गीदो । वाऊदो । (५–६ ङसि=दो) अग्गीसु वाऊसु (पूर्ववत् यलोपदीर्घौ०) एवं दोहिं (६–५४ द्वि=दो ५–५ भिस्=हिं) तीहिं (६–५५त्रि=ति ५–१८ दीर्घः) चऊहिं (४–६ रलोपः २–२तलोपः ५–१८ दीर्घः शे० पू०) ॥ ६० ॥

न ङिङस्योरेदातौ ॥ ६१ ॥

इकाराकारोन्तानां ङिङस्योरदन्तवद् एकाराकारौ न भवतः । अग्गिम्मि (६–५२ ङि=म्मि शे० अग्गिस्सेतिवत्) वाउम्मि (२–२ यलोपः शे० स्प०) अग्गीदो वाऊदो अग्गीदु वाऊदु अग्गीहि वाऊहि (५–६ ङसि=दो, दु, हि शे० पू० स्प०) ॥ ६१ ॥

ए भ्यसि ॥ ६२ ॥

नेत्यनुवर्तते भ्यसि परत इकारोकारान्तयोरदन्तवदेत्वं न भवति । अग्गीहिंतो वाऊहिंतो अग्गीसुन्तो वाऊसुन्तो (५–६, १२ सूत्रयोर्बाधः ५–११ दीर्घः ५–७ भ्यस्=हिंतो, सुंतो शे० पू०) ॥ ६२ ॥

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ६३ ॥

सर्वासां विभक्तीनां सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं प्रयोक्तव्यम् । वृक्षौ, वच्छा । वृक्षाभ्याम्, वच्छेहिं । वच्छाहिंतो । वृक्षयोः, वच्छेसु । वच्छाण । (स्पष्टंपञ्चमपरिच्छेदव्याख्याताः) तिङां यथा, तिष्ठतः चिट्ठन्ति (१२–१६ स्था=चिट्ठ ७–४ झि=न्ति) ॥ ६३ ॥

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ ६४ ॥

इति प्राकृतसूत्रेषु षष्ठः परिच्छेदः ॥

११

Aho ! Shrutgyanam

चतुर्थीविभक्तेः स्थाने षष्ठीविभक्तिर्भवति(१)। बह्मणस्स देहि (३-३ रलोपः ५-१० ङस्=स्स देहीति संस्कृतसमः) बह्मणाणं देहि। ब्राह्मणाय देहि। ब्राह्मणेभ्यो देहि (५-११ आमिदीर्घः ५-४० आम्=णंशे०स्प०) ॥ ६४ ॥

इति प्राकृतप्रकाशे सर्वनामपरिच्छेदः षष्ठः ॥

---

(१) तादर्थ्यङेर्वा ८।३।१३२ तादर्थ्यविहितस्य ङेश्चतुर्थ्येकवचनस्य स्थाने षष्ठी वा भवति ॥ देवस्स देवाय। देवार्थ मित्यर्थः। ङेरिति किम् देवाण ॥

वधाड्डाइश्चवा ८।३।१३३ वधशब्दात्परस्य तादर्थ्यङेर्डिद् आइः षष्ठी च वा भवति। वहाइ,वहस्स,वहाय। वधार्थमित्यर्थः ॥

क्वचिद् द्वितीयादेः ८।३।१३४। द्वितीयादीनां बिभक्तीनास्थाने षष्ठी भवति क्वचिद्। सीमाधरस्स वन्दे। तिस्सा मुहस्स भरिमो। अत्र द्वितीयायाःषठी। धणस्स लद्धो धनेनलब्ध इत्यर्थः। चिरस्स मुक्का चिरेण मुक्तेत्यर्थः। अत्र तृतीयायाः ॥

चोरस्स वीह। चोराद्बिदूभतीत्यर्थः अत्र पञ्चम्याः ॥ पिट्ठीए केस—भारो अत्र सप्तम्याः ॥

पञ्चम्यास्तृतीया च ८।३।१३६। पञ्चम्याः स्थाने क्वचित्। तृतीया सप्तम्यो भवतः। चोरेण वीहइ। चोराद्बिभेतीत्यर्थः। अन्तेउरे रमिउ मागओ राया। अन्त पुराद् रन्त्वा गतइत्यर्थः ॥

द्वितीयातृतीययोः सप्तमी ८।३।१३५। द्वितीया तृतीययोः स्थाने क्वचि त्सप्तमी भवति ॥ नयरे न जामि। अत्र द्वितयायाः ॥

तिसु तेसु अलं किआ पुहवी। अत्रतृतीयायाः ॥

सप्तम्या द्वितीया ८।३ १३७। सप्तम्याःस्थाने क्वचिद् द्वितीयाभवति विज्जोयं भरइ रत्तिं ॥

आर्षे तृतीयाऽपि दृश्यते। तेणं कालेणं तेणं समयेण।तस्मिन् काले तास्मिन्समय इत्यर्थः ॥

प्रथमायाअपि द्वितीया दृश्यते। चउवीसं पि जिणवरा। चतुर्विंशतिरपि जिनवराइत्यर्थः ॥ इति हेमः।

Aho ! Shrutgyanam

अथ सप्तमः परिच्छेदः ।

ततिपोरिदेतौ ॥ १ ॥

त तिप् इत्येतयोरेकस्य स्थाने इत् एत् इत्येतावादेशौ भवतः । पढइ (२-२४ ठ्=ढ शे० स्प०) पढए हसइ हसए । (यथाक्रमं तिपइः तस्य एः) पठति । पठतः । हसति । हसते ॥१॥

थास्सिपोः सि से ॥ २

थास् सिप् इत्येतयोरेकैकस्य स्थाने सि से इत्येतावादेशौ भवतः । पढसि । पढसे । हससि हससे । (पूर्ववत् ठ्=ढ अन्यत्सुगमम् ॥ २ ॥

इड्मिपोर्मिः ॥ ३ ॥

इट् मिप् इत्येतयोः स्थाने मिर्भवति । पढामि । हसामि(१) । सहामि (७-३० आत्वम्) ॥ ३ ॥

न्तिहेत्थामोमुमा बहुषु* ॥ ४ ॥

बहुषु वर्तमानेनि तिङांस्थाने न्ति, ह, इत्था, मा, मु, म

---

(१) अदन्ताद्धातोर्म्मौपरे अत आत्वं वा भवति ५ । ५ ॥ प्राकृतव्याकरणम् तथाच तत्रैव अकारान्ताद्धतोर्मौमुमेषु परेषु अत इत्व आत्वञ्च भवति, क्वचिदेत्वमपि । ५-६ ॥ हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि । इति अत्वं, इत्वं आत्वं, एत्वं च प्रतिपादित मकारान्तधातोः ।

* प्रथम पुरुषस्य न्ति, मध्यमस्य ह, इत्था । उत्तमस्य मो,मु,म, इति विवेकः । तथाच हेमः—

बहुष्वाद्यस्य न्ति, न्ते, इरे ८ । ३ । १४२ ।

मध्यमस्येत्था, हचौ । ८ । ३ । १४३ ।

तृतीयस्य मो, मु, माः । ८ । ३ । १४४ । इति ।

Aho ! Shrutgyanam

इत्येतआदेशा भवन्ति । प्रथमपुरुषस्य, रमंति पढंति । हसंति । (२-२४ ठ्=ढ झि=न्ति कृते ४-१७ विं० अ० स्प०) मध्यमस्य, रमह पढह हसह पढित्था(१) । (मध्य० थ=ह, इत्थ इति द्वावादेशौ शे०स्प०) उत्तमस्य पढामो पढमु पढम (उत्तमस्य, मो, मु, म इत्येत आदेशाः ७-३० आत्वविकल्पः शे० स्प०) ॥ ४ ॥

अत ए से ॥ ५ ॥

नित्यार्थं वचनं यतो विशेषणम् ततिपोः सिप्थासोर् ए से इत्यादेशावत एव परौ(२) भवतो नान्यस्मात । ततिपोः, रमए । पढए । सिप्थासोः रमसे पढसे । (रम्-त=ए=रमए । २-२४ ठ=ढ-पढ-ति=एपढए । रम्-थास्=से=रमसे । पढ-सिप्=से=पढसे) अत इति किम् । होइ (८-१ भू-हो ७-१ ति=इ) भवति ॥ ५ ॥

अस्ते(३)र्लोपः ॥ ६ ॥

अस्तेर्धातोः थास्सिपोरादेशयोः परतो(४) लोपो भवति । सुत्तो सि (७-२ सिप्=सिशे० ३-१ सू० स्प०) पुरिसो सि । (१-२३ सू० स्प०) सुप्तो ऽसि । पुरुषो ऽसि ॥ ६ ॥

मिमोमुमानामधो हश्च ॥ ७ ॥

मिमोमुमानामस्तेः परेषामधो हकारः प्रयोक्तव्यः । अस्तेश्च लोपः । गओ म्हि गअ म्हो, गअ म्हु गअ म्ह । (२-२ तलोपः ५-१ ओ) (७-२ मिप्=मि ७-३ मस्=मो, मु म, ५-२ जसोलोपः) गतो ऽस्मि गताः स्मः ॥ ७ ॥

---

(१) पढीत्था, पढित्थ । का० पा० (२) नित्यं-भवतः । का० पा०

(३) असेर्लोपः । का० पा०

(४) परयोः । असेर्धातोः परतः थास्सिपोर्लोपः । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

यक ईअइज्जौ ॥ ८ ॥

यकः स्थाने ईअ इज्ज इत्यादेशौ भवतः। पढीअइ। पढिज्जइ। सहीअइ। सहिज्जइ। (स्प०) पठ्यते। सह्यते ॥ ८ ॥

नान्त्यद्वित्वे ॥ ९ ॥

धातोरन्त्यद्वित्वे सति यक ईअ इज्ज इत्यादेशौन भवतः। हस्सइ। गम्मइ(१) (८–५८ गमादीनां द्वित्वं) ॥ हस्यते। गम्यते। गमादीनां विकल्पेन[द्वित्वविधानात]द्वित्वविधाने उक्तावादेशौ न भवतः द्वित्वाविधाने तु भवत एव। गमीअइ गमिज्जइ (पक्षे ७–८ ईअ इज्ज–आदेशौ शे० पू० स्प०) ॥ ९ ॥

न्तमाणौ शतृशानचोः ॥ १० ॥

शतृ शानच् इत्येतयोरेकैकस्य न्त, माण इत्येतावादेशौ भवतः। पठन्तो। पठमाणो। हसन्तो। हसमाणो (पूर्ववत् पढ, शतृ=न्तजाते ५–१ ओ एवं शानचोऽपिमाण आदेशः ५–१ ओत्वंच) ॥ १० ॥

ई च स्त्रियाम् ॥ ११ ॥

स्त्रियां वर्तमानयोः शतृशानचोरीकारादेशो भवति, न्तमाणौ च। हसई, हसन्ती, हसमाणा। बेवई, बेवंती, बेवमाणा (वेप० २–१५ प=व शे० स्प० ई, न्ती, माणा) ॥ ११ ॥

धातोर्भविष्यति हिः ॥ १२ ॥

भविष्यति काले धातोः परो हिशब्दः प्रयोक्तव्यः। होहिइ(२) (८–१ भू=हो ७–१ ति=इ) हसिहिइ (७–३३ अ=इ

---

(१) "त्यादेः ८।१।९ तिवादीनां स्वरस्य स्वरेपरेसन्धिर्न। हेम० एवं सर्वत्र सन्ध्यभावो बोध्यः।

[ ] अयं पाठो न सार्वत्रिकः (२) होहीइ। का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

शे० पूर्ववत्) होहिंति । हसिहिंति । (७-४ झि=न्ति ४-२७ त्रि० शे० पूर्व०) भविष्यति । हसिष्यति । भविष्यन्ति । हसिष्यन्ति ॥ १२ ॥

उत्तमे स्सा हा च ॥ १३ ॥

भविष्यत्युत्तमे स्सा हा इत्येतौ प्रयोक्तव्यौ चकाराद् हिश्च । होस्सामि होहामि होहिमि होस्सामो होहामो होहिमो(१) (७-३ मिप्=मि, मस्= मो । शे० स्सा, हा, हि आदेशाः ७-३० इ, आ । शे० सुगमम्) इत्यादि । भविष्यामि भविष्यामः ॥ १३ ॥

मिना स्सं वा ॥ १४ ॥

भविष्यत्युत्तमे मिना सह धातोः परः स्संशब्दः प्रयोक्तव्यो वा । होस्सं । पक्षे होस्सामि होहामि होहिमि(२) (८-१ भू=हो धातोः मिनासह स्सं, पक्षेधातोः उत्तमेपरे ७-१३ सू० स्प० ॥१४॥

मोमुमैर्हिस्सा हित्था ॥ १५ ॥

भविष्यतिकाल उत्तमे बहुवचनादेशस्य मो मु म इत्येतैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा भवतः । होहिस्सा होहित्था हसिहिस्सा हसिहित्था । एवं मुमयोरपि इत्यादि (७-४ सूत्रविहितै र्मोमुमैः सह । शे० स्प०) भविष्यामः हसिष्यामः । पक्षे होहिमो होस्सामो(३) होहामो हसिहिमो हसिस्सामो हसिहामो । (पक्षे ७-१३ सूत्रविहितरूपाणि द्रष्टव्यानि सेट्हसधातोरपि तथैव हि-स्सा, हा इत्येते प्रयोक्तव्याः एवं ७-४ सूत्र शिष्टयोर्मुमयोरपि प्रयोगः-यथा होहिमु-होहिम इत्यादयः) ॥ १५ ॥

---

(१) म, मु, होस्सामु । का० पा०

(२) हसिस्सं इत्यादयः । का० पा०

(३) होहिस्सामो । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

कृदाश्रुवचिगमिरुदृशिविदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रोच्छं दच्छं वेच्छं ॥ १६ ॥

भविष्यति कालउत्तमैकवचने कृञादीनां स्थाने यथासंख्यं काहं प्रभृतय आदेशा भवन्ति । काहं, करिष्यामि । दाहं, दास्यामि, सोच्छं, श्रोष्यामि । वोच्छं, वक्ष्यामि । गच्छं, गमिष्यामि । रोच्छं, रोदिष्यामि । दच्छं, द्रक्ष्यामि । वेच्छं, वेत्स्यामि । इत्यादि(१) ॥ १६ ॥

श्र्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ १७ ॥

श्रुइत्येवमादीनां प्रथममध्यमोत्तमेषु त्रिष्वपि पुरुषेषु परतो भविष्यति काले सोच्छं इत्यादय आदेशा भवन्ति । अनुस्वारं विहाय हिलोपश्च वा । सोच्छिइ, सोच्छिहिइ । श्रोष्यति । सोच्छिति सोच्छिहिति श्रोष्यन्ति (सोच्छादेशे ७–३३ अ=इ ७–१ ति, त=इ पक्षे ७–१२ हि ७–४ झि=न्ति ४–१७ विं० शे० पू०) । सोच्छिसि सोच्छिहिसि । श्रोष्यसि (७–२ सिप्, थास्=सि शे० पू०) सोच्छित्था सोच्छिहित्था । श्रोष्यथ । (७–४ थ=इत्था) पूर्ववत्=हि) सोच्छिमि सोच्छिहिमि श्रोष्यामि (७–३ मिप् मि शे० पू०) सोच्छिमो सोच्छिहिमो सोच्छिमु सोच्छिहिमु सोच्छिम सोच्छिहिम सोच्छिस्सा मो सोच्छिस्सामु सोच्छिस्साम(२) । श्रोष्यामः । (७–४ मस्=मा मु, म एव ७–१२ हि प्रयोग । ७–१३ स्सा-प्रयोगे मोमुमानां प्रयोगश्चाऽन्ते कार्यः) एवं वोच्छादिरपि॥१७॥

---

(१) रूपग्रहणादन्यत्रापि । यथा मोच्छं,पेच्छं । मोक्ष्यामि,प्रेक्ष्यामि । का.पा.

(२) सोच्छिहामो,मु म सोच्छिस्सा सोच्छिहित्था, बोच्छिहिस्सा । का.पा.

Aho ! Shrutgyanam

उ सु मु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ १८ ॥

विध्यादिष्वेकस्मिन्नुत्पन्नस्य प्रत्ययस्य यथासंख्यम् उ, सु, मु इत्येतआदेशा भवन्ति । हसउ । हससु । हसमु । (स्पष्टं ७-१ सूत्रस्य बाधः) हसतु । हस । हसानि ॥ १८ ॥

न्तुहमो बहुषु ॥ १९ ॥

विध्यादिषु बहुषूत्पन्नस्य प्रत्ययस्य यथासंख्यं न्तु ह मो इत्येतआदेशा भवन्ति ! हसन्तु हसह हसामो (७-४ सूत्रस्यबाधः शे० स्प०) ॥ १९ ॥

वर्तमानभविष्यदनद्यतनयोर्ज्ज ज्जावा ॥ २० ॥

वर्तमाने भविष्यदनद्यतने विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज, ज्जा इत्येतावादेशौ वा भवतः । पक्षे यथाप्राप्तम् । वर्तमाने तावत्,होज्ज । होज्जा हसेज्ज । हसेज्जा । पक्षे होइ हसइ । इत्यादि । (८-१ भू=हो पक्षे ७-१ ति=इ एवं हसधातोरपिज्ञेयम्) भविष्यदनद्यतने, होज्ज । होज्जा । पक्षेहोहिइ इत्यादिविध्यादिष्वेवम्(१) । (भविष्यत्यपि होज्जेत्यादि पूर्व० पक्षे ७-१२ सू० स्प० विध्यादिष्वपि होज्ज, होज्जा पक्षे होउ, सु, मु इत्या०) ॥ २० ॥

मध्ये च ॥ २१ ॥

वर्तमानभविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातुप्रत्यययोर्मध्ये ज्ज, ज्जा इत्येतावादेशौ वा भवतः । वर्तमाने, होज्जइ होज्जाइ । पक्षे यथाप्राप्तम् । विध्यादिषु होज्जउ होज्जाउ (विकरणस्थाने अत्रादेशौ बोध्यौ शे० स्पष्ट०) भवेदित्यादि ॥ २१ ॥

---

(१) पुरुषत्रयेऽपि एकवचन बहुवचन रूपाणि बोध्यानि। का०पा०

Aho ! Shrutgyanam

नानेकाचः ॥ २२ ॥

वर्तमानभविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः प्रत्यये परे मध्ये ज्ज ज्जा इत्येतावादेशौ न भवतः किन्त्वन्त एव भवतः । हसइ (७–१ सूत्रे स्प०) तुवरइ । (८–४ त्वरा=तुवर ७–१ त=इ) । अन्ते यथा, हसेज्ज । हसेज्जा । तुवरेज्ज । तुवरेज्जा । (७–३४ अ=ए=हसे, एवमेव भविष्य द्विध्यादिषु ज्ञेयं) एवमन्ये ऽप्युदाहर्तव्याः ॥ २२ ॥

ईअ(१) भूते ॥ २३ ॥

भूते काले धातोः प्रत्ययस्य ईअ इत्ययमादेशो भवति । हुवीअ । हसीअ । (८–१ भू=हुव–ति=ईअ. एवमग्रे) अभवत् । अहसत् ॥ २३ ॥

एकाचो हीअ ॥ २४ ॥

भूते काले एकाचो धातोः प्रत्ययस्य हीअ इत्ययमादेशो भवति । होहीअ । (स्पष्टं) अभूत् ॥ २४ ॥

अस्तेरासिः ॥ २५ ॥

अस्तेर्भूते काले एकस्मिन्नर्थे आसि इति निपात्यते(२) । आसि राआ । आसि बहू । राआ ५–३६ सू०स्प०बहू ५–१९ सू० स्प० शे० सुगमं) आसीद्राजा । आसीद्वधूः ॥ २५ ॥

---

(१) इअं, ईअं । इअभूते-भूतेवर्तमानाद्धातोः प्रत्ययस्य ईअ आदेशः स्यात् । आसीअ, गहीअ, हसीअ, पढीअ । आसीत्, अग्रहीत्,– अहसत्, अपठत्, इत्यादयः । का० पा०

(२) तेनास्ते रास्यहेसी । ८ । ३ । १६४ । अस्तेर्धातो स्तेन भूतार्थेन प्रत्ययेन सह आसि, अहेसि इत्यादेशौ भवतः । आसि सो, तुमं, अहं वा । जे आसि । ये आसन्नित्यर्थः । अहं अहेसि ॥ हे०

Aho ! Shrutgyanam

णिच एदादेरत आत्॥ २६ ॥

णिच्प्रत्ययस्य एकारादेशो भवतिधातोरादेरकारस्य च आत्वं भवति । कारेइ हासेइ पाढेइ । (८-१२ कृञ्=कर,णिच्=ए ७-१ ति=इ शे०स्प० एवं हासेइ प्रभृतयः) कारयति । हासयति । पाठयति ॥ २६ ॥

आवे च ॥ २७ ॥

णिच आवे इत्ययमादेशो भवति चकारात् पूर्वोक्तं च । करावेइ । हसावेइ । पढावेइ । कारावेइ इत्यादि (णिचआवे कृते धातोरादेरकारस्यात्वं वा भवति, उदाहृतपदेषुतादृशकार्यदर्शनात् शे० स्प०) ॥ २७ ॥

आविः क्तकर्मभावेषु वा ॥ २८ ॥

णिच आविरादेशो भवति वा क्तप्रत्यये परतो भावकर्मणोश्च। कराविअं । हसाविअं । पढाविअं । (८-१२ कृञ्=कर, णिच् आवि २-२ तलोपः ५-३० सो बिंदुः =कारितं-एव मग्रेऽपि) कारिअं । हासिअं । पाढिअं । (पक्षेसंस्कृतानुसारं कारितमिति सिद्धे २-२ तलोपः ५-३० बिं पाठित मत्र २-२४ठ=ढ शे० पू०) भावकर्मणोश्च, कराविज्जइ । हसाविज्जइ । पढाविज्जइ । णिच आवि ७-१ त=इकृते ७-२१ यकःस्थाने ज्ज-एव मग्रे) कारिज्जइ । हासिज्जइ । पाढिज्जइ । (णिचि=कारितिजाते ७-२१ यकः=ज्ज एव मग्रे) कारितम् । हासितम् । पाठितम् । कार्यते । हास्यते । पाठ्यते ॥ २८ ॥

नैदावे ॥ २९ ॥

क्तभावकर्मसु णिच्प्रत्ययस्य एत् आवे इत्येतावादेशौ न भवतः । कारिअं (णिचि=कारि २-२ तलोपः ५-३० बिं) क-

Aho ! Shrutgyanam

राविअं (७-२८ सूत्रे द्रष्टव्यं) कारिज्जई काराविज्जई (७-२७ सूत्रात् चकारानुकर्षणात् पक्षे तत्पूर्वसूत्रानुसारं धातोरादे रकारस्यात्वं भवति शेषं ७-२८ सू० द्रष्टव्यं ॥ २९ ॥

अत आ मिपि वा ॥ ३० ॥

अकारान्ताद्धातोर्मिपि परत आकारादेशो भवति वा । हसामि, हसमि । (स्पष्टे) ॥ ३० ॥

इच्च बहुषु ॥ ३१ ॥

मिपो बहुषु परतोऽत इकारादेशो भवति चकारादाकारश्च । हसिमो, हसामो, हसिमु हसामु(१) । (७-४ झि=मो, मु शे० स्प०) ॥ ३१ ॥

क्ते ॥ ३२ ॥

क्तप्रत्यये परतोऽत इर्भवति । हसिअं (२-२तलोपः शे० स्प० ५-३० विं०) पढिअं(२) (२-२४ ठ=ढ शे० पू०) ॥३२॥

ए च क्त्वातुमुन्तव्यभविष्यत्सु ॥ ३३ ॥

क्त्वा, तुमन्, तव्य इत्येतेषु भविष्यति काले च अत एत्वं भवति चकारादित्वं च । हसेऊण । हसिऊण । (४-२३ त्का=ऊण शे० स्प०) हसेउं । हसिउं । (२-२ तुमः तलोपः ४-१२ मविं० शे० पूर्व०) हसेअव्वं हसिअव्वं (२-२ तलोपः ३-५० वद्वि० ५-३० सोर्बिन्दुः शे० स्प०) हसेहिइ हसिहिइ(३) । (७-१२ धातोः परो हि प्रयोगः शे० स्प०) ॥ ३३ ॥

लादेशे वा ॥ ३४ ॥

इतिवररुचि कृत प्राकृतसूत्रेषु सप्तमः परिच्छेदः ॥

---

(१) हसामः । (२) हसितं-पाठ । (३) हसित्वा-हसितुम्-हसितव्यम् ।

Aho ! Shrutgyanam

लकारादेशे वा परतोऽत एत्वं भवति वा। हसेइ, हसइ। पढेइ, पढइ। (७-१ ति=इ शे० स्प०) हसेंति, हसंति (७-४ झि=न्ति ४-१७ विं०) हसेउ, हसउ(१)। (७-१८ ति=उ शे० स्प०) ॥ ३४ ॥

इति प्राकृतप्रकाशे तिङ्विधिर्नाम।
सप्तमः परिच्छेदः ॥

अष्टमः परिच्छेदः।

भुवो होहुवौ ॥ १ ॥

भू सत्तायाम् एतस्य धातो र्हो, हुव इत्येतावादेशौ भवतः। होइ (७-५सू० स्प०) हुवइ (७-१ ति=इ) होंति, हुवन्ति(२) (७-४ झि=न्ति ४-१७ विं शे० स्प०) ॥ १ ॥

क्ते हुः(३) ॥ २ ॥

भुवः क्तप्रत्यये परतो हु इत्यादेशो भवति। हुअं(४) (-२ तलोपः ५-३० विं०) ॥ २ ॥

प्रादेर्भवः ॥ ३ ॥

प्रादेरुत्तरस्य भुवो भव इत्ययमादेशो भवति। पभवइ (३-३ रलोपः ७-१ ति=इ) उब्भवइ (३-१ दलोपः ३-५० भद्वि० ३-५१ भ्=ब् शे० पू०) सम्भवइ, परिभवइ(५) (४-१७ वर्गा-

---

(१) हसति–पठति–हसन्ति–हसतु। (२) भवति–भवन्ति।

(३) क्तेहूः ८।४।६४। हूअं अणुहूअं पहूअं अविति हुः ८।४।६१ विहुर्जे। हुन्ति–हुन्तो। हेम०

(४) भूतम्, तः। (५) प्र, सम्, परि, भवति।

Aho ! Shrutgyanam

न्त० शो० स्प०) ॥ ३ ॥

त्वरस्तुवरः ॥ ४ ॥

ञित्वरा संभ्रमे अस्य धातो स्तुवर इत्ययमादेशो भवति । तुवरइ(१) (७-१ । त=इ शो० स्प०) ॥ ४ ॥

क्ते तुरः ॥ ५ ॥

क्तप्रत्यये तुर इत्ययमादेशो भवति । तुरिअं(२) (७-३२ अ=इ २-२ तलोप ५-३० विं०) ॥ ५ ॥

घुणो घोलः ॥ ६ ॥

घुण, घूर्ण भ्रमणे अस्य धातो र्घोल इत्ययमादेशो भवति । घोलइ(३) (७-१ ति=इ ॥ ६ ॥

णुदो णोल्लः(४) ॥ ७ ॥

णुद प्रेरणे अस्य धातोर्णोल्ल इत्ययमादेशो भवति । णोल्लइ । पणोल्लइ(५) (३-३ प्र-इत्यस्यरेफलोपः शो० पू० स्प०)॥७॥

दूङो दूमः ॥ ८ ॥

दूङ् परितापे अस्य धातोर्दूमादेशो भवति । दूमइ(६) (स्पष्टम्) ॥ ८ ॥

पटेः फलः ॥ ९ ॥

पट गतौ अस्य धातोः फल इत्ययमादेशो भवति । फलिअं (७-३२ अ=इ २-२ तलोपः ५-३० विं०) (१-२८ सू०

---

(१) त्वरते । (२) त्वरितम् । (३) घोणते-घूर्णते ।

(४) नुदो ल्लोणः । नुदप्रेरण अस्य धातो ल्लोंण इत्यादेशो भवति । ल्लोणइ पल्लोणइ । नुदेर्ल्लोण-लोणाइ पल्लोणाइ । णुदो णोलः-णोलइ-णोल्लइ गमादित्वात् द्वित्वं-नुदोल्लोणः । लोणइ पलोणइ का० पा० । (५) नुदति-नुदते । (६) दूयते-दुनोति ।

Aho ! Shrutgyanam

स्प०) हिअअं(१) ॥ ९ ॥

पदेः पालः ॥ १० ॥

पद् गतौ अस्य धातोः पाल इत्ययमादेशो भवति । पालेइ(२) (७-३४ अ=ए ७-१ ति=इ) ॥ १० ॥

वृषकृषमृषहृषामृतो ऽरिः ॥ ११ ॥

वृषादीनामृतः स्थाने अरि इत्यादेशो भवति । वरिसइ । करिसइ । मरिसइ । हरिसइ(३) । (२-४२ ष=स ७-४ ति=इ एवमुत्तरत्रापि कृष, मृष, मृश-हृष) ॥ ११ ॥

ऋतोऽरः ॥ १२ ॥

ऋकारान्तस्य धातोर्ऋतः स्थाने अर इत्यादेशो भवति । मृ, मरइ । सृ, सरइ । वृ, वरइ(४) (७-१=इ शे० स्प०) ॥१२॥

कृञः कुणो वा ॥ १३ ॥

डुकृञ् करणे अस्य धातोः प्रयोगे कुणो वा भवति । कुणइ, करइ(५) ॥ (पूर्ववत् स्प०) ॥ १३ ॥

जृम्भो जंभाअः ॥ १४ ॥

जभि, जृभी गात्रविनामे अस्य धातोर्जंभाअ इत्ययमादेशो भवति । जंभाअइ(६) (स्पष्टम्) ॥ १४ ॥

ग्रहेर्गेण्हः ॥ १५ ॥

ग्रह उपादाने अस्य धातोर्गेण्हो भवति । गेण्हइ(७)

---

(१) पटितं हृदयम् । (२) पद्यते ।

(३) वर्षति । कर्षति । मृष्यति । हृष्यति-भौवादिकस्य हर्षति ।

(४) मृयते । सरति-ससर्ति । वरति । सानुबन्धकयोः वृणोति-वृणुते । वृणीते ।

(५) करोति-कुरुते । (६) जम्भते-जृम्भते ।(७) गृह्णाति-गृह्णीते ।

Aho ! Shrutgyanam

(स्पष्टम्) ॥ १५ ॥

घेत् क्त्वातुमुन्तव्येषु ॥ १६ ॥

ग्रहेर्घेत इत्ययमादेशो भवति क्त्वातुमुन्तव्येषु परतः। घेत्तूण (४-२३ त्का=ऊण। ३-५० वद्वि०) घेत्तुं (३-५० वद्वि० २-१२ मवि) घेत्तव्वं(१) (पूर्ववत्तलोपताद्वि० ३-२ यलोपः ३-५० वद्वि० ५-३० वि०) ॥ १६ ॥

कृञः का भूतभविष्यतोश्च ॥ १७ ॥

भूतभविष्यतोः कालयोः कृञः का इत्ययमादेशो भवति। चकारात् क्त्वातुमुन्तव्येषु परतः। काहीअ (७-२४ भूते-क्तक्तवतोः स्थाने अथवा भूतभविष्य दर्थकलस्थाने हीअ इत्यादेशः) काहिइ (७-१२ भवि० धातोः परः हि भवति ७-१ति=इ) काऊण (४-२३ क्त्वा=ऊण) काउं (२-२ तलोपः ४-१२ मवि०) काअव्वं(२) (२-२ तलोपः- ३-२ तलोपः ४-१२ मवि०) ॥ १७ ॥

स्मरतेर्भरसुमरौ ॥ १८ ॥

स्मृ चिन्तायाम् अस्य धातो भर,सुमरौ भवतः। भरइ। सुमरइ(३) (७-१ ति=इ शे० स्प०) ॥ १८ ॥

भियो भावीहौ ॥ १९ ॥

ञिभी भये अस्य धातो र्भा, बीहौ भवतः। भाइ, बीहइ(४)। (पू० ति=इ शे० स्प०) ॥ १९ ॥

---

(१) गृहीत्वा गृहीतुम्। गृहीतव्यम्।

(२) चकार-चक्रे कृतम्-कृतवान्-अकर्षीत्-अकृत। करिष्यति करिष्यते। कृत्वा। कर्तुम्। कर्तव्यमित्यादि।

(३) स्मरति—स्मृणोति। (४) बिभेति—बिभीते।

Aho ! Shrutgyanam

जिघ्रतेः पा पाऔ ॥ २० ॥

घ्रा गन्धग्रहणे अस्य धातोः पा, पाअ इत्यादेशौ भवतः। पाइ, पाअइ (स्प०) ॥ २० ॥

म्लै वा वाऔ ॥ २१ ॥

म्लै हर्षक्षये अस्य धातो र्वा, वाऔ भवतः । वाइ, वाअइ(१)। (पू० स्प०) ॥ २१ ॥

तृपस्थिंपः ॥ २२ ॥

तृप तृप्तौ अस्य धातोस्थिंपो भवति। थिंपइ(२) (पू०स्प०)॥२२॥

ज्ञो जाणमुणौ ॥ २३ ॥

ज्ञा अवबोधने अस्य धातो र्जाण, मुणौ भवतः । जाणइ, मुणइ(३)। (पू० स्प०) ॥ २३ ॥

जल्पेर्लो मः ॥ २४ ॥

जल्प व्यक्तायां वाचि अस्य धातोर्लकारस्य मकारो भवति। जंपइ(४) ॥ २४ ॥

ष्ठाध्यागानां ठाअ झाअ गाआः ॥ २५ ॥

ष्ठा गतिनिवृत्तौ ध्यै चिन्तायां गै शब्दे एतेषां ठाअ, झाअ, गाअ इत्येत आदेशा भवन्ति। ठाअन्ति, झाअन्ति, गाअन्ति(५) ॥ २५ ॥

ठाझागाश्च वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु ॥ २६ ॥

ष्ठाध्यागानां ठा, झा, गा इत्यादेशा भवन्ति, चकारात् पूर्वो-

---

(१) म्लायति। (२) तृप्यति—तृप्नोति—तृपति—तृप्यति। (३) जानाति। (४) जल्पति। (५) तिष्ठन्ति। ध्यायन्ति। गायन्ति। इत्याद्युह्यम्।

Aho ! Shrutgyanam

स्थाश्च वर्तमान भविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु परतः । ठाइ, ठाअइ, ठाहिइ, ठाअहिइ, ठाउ, ठाअउ । झाइ झाअइ, झाहिइ, झाअहिइ, झाउ, झाअउ । गाइ, गाअइ, गाहिइ, गाअहिइ, गाउ, गाअउ(१) ॥ २६ ॥

खादिधाव्योः खा धौ ॥ २७ ॥

खाद भक्षणे, धावु जवे एतयोर्धात्वोः खा, धा इत्यादेशौ भवतो वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु । खाइ (७-१ ति=इ) खाहिइ (७-१२ धातोः परो हि शे० पू०) खाउ । धाइ, धाहिइ धाउ(२) (७-१८ ति=उ श० स्प०) ॥ २७ ॥

ग्रसेर्विसः ॥ २८ ॥

ग्रसु ग्लसु अदने अस्य धातोर्विसो भवति । विसइ(३) (७-१ ति=इ स्प०) ॥ २८ ॥

चिञश्चिणः ॥ २९ ॥

चिञ् चयने अस्य धातोश्चिणो भवति । चिणइ(४) (स्प०)॥२९॥

क्रिञः किणः ॥ ३० ॥

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये अस्य धातोः किणो भवति । किणइ(५) (इति स्प०) ॥ ३० ॥

वेः क्के च ॥ ३१ ॥

वेरुत्तरस्य क्रीञः क्के आदेशः किणादेशश्च भवति । विक्केइ,

---

(१) तिष्ठति-स्थास्यति-तिष्ठतु-तिष्ठत्-एवंध्यै-गै इत्यादीनापि।

(२) तिष्ठन्ति-ध्यायन्ति-गायन्ति ।

खादधावोर्लुक् ८ । ४ । २२८ इत्यत्र बहुलाधिकाराद्वर्तमानभविष्य द्विध्याद्येकवचन एव भवति । तेनेह न भवति । खादन्ति, धावन्ति क्वचिन्न भवति । धावइ पुरओ इति । हे० । खादति-खादिष्यति-खादतु खादेत् एवं धावतीत्यादीनि । (३) ग्रसते—ग्लसते ।

(४) चिनोति-चिनुते । (५) क्रीणाति-क्रीणीते ।

Aho ! Shrutgyanam

विकिणइ (पू० ९५०) विक्रीणीते ॥ ३१ ॥

उदूध्म उदूधुमा ॥ ३२ ॥

ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः, अस्य धातोरुत्पूर्वस्य उदुधुमा भवति। उदुधुमाइ(१) (७-१ ति=इ) ॥ ३२ ॥

श्रदो धो दहः ॥ ३३ ॥

श्रच्छब्दादुत्तरस्य डुधाञ् धारणपोषणयोः, अस्य धातोर्दहादेशो भवति। सद्दहइ (२-४३ श्=स ३-३ रलोपः ३-१ त्-लोपः ३-५० दद्वि० ७-१ त इ) सद्दहिअं(२) (सद्दहेत पूर्ववत् ७-३२ अ=इ २-२ तलोपः ५-३० सोर्बि०) ॥ ३३ ॥

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३४ ॥

गाहू विलोडने, अस्य धातोरवादुत्तरस्य वाहादेशो भवति। ओवाहइ(३) (४-२१ अव=ओ ७-१ ति=इ शे०९५०) (पक्षे(४)) अववाहइ (प्रायोग्रहणात् २-२ वलोपो न शे०९५०) ॥ ३४ ॥

कासेर्वासः ॥ ३५ ॥

अवादित्यनुवर्त्तते। कासृ शब्दकुत्सायाम्, अस्य धातोरवादुत्तरस्य वासो भवति। आवासइ, अववासइ(५) (४-२१ अव=ओ शे० पू० ९१०) ॥ ३५ ॥

निरो माङोमाणः ॥ ३६ ॥

माङ् माने, अस्य धातोर्निरुत्तरस्य माणादेशो भवति। णिम्माणइ(६) (३-३ लोप ३-५० मद्वि० शे० पू०) ॥ ३६ ॥

क्षियो झिज्जः ॥ ३७ ॥

क्षि क्षये,अस्य धातो झिज्जो भवति। झिज्जइ(७)(स्पष्टं) ३७॥

---

(१) उद्धमति। (२) श्रद्धते। श्रद्धितम्। (३) अवगाहते।
(४) आत्वाऽभाव पक्ष इत्यर्थः।
(५) अवकासते। (६) निर्मिमीते। (७) क्षिणोति, क्षयति।

Aho ! Shrutgyanam

भिदिच्छिदोरन्त्यस्य न्दः ॥ ३८ ॥

भिदिर्(१), छिदिर्(२) एतयोरन्त्यस्य न्दो भवति। भिन्दइ। छिन्दइ(३) (४-१७ वर्गान्त ७-१ ति=इ) ॥ ३८ ॥

क्वथेर्ढः ॥ ३९ ॥

क्वथ निष्पाके, अस्य धातोरन्त्यस्य ढो भवति। कढइ(४) (पू० स्प०) ॥ ३९ ॥

वेष्टेश्च(५) ॥ ४० ॥

वेष्ट वेष्टने, अस्य धातोरन्त्यस्य ढो भवति। वेड्ढइ(६) (ष्ट्=ड आदेशत्वात ढद्वि० ३-५१ ड्=ड् ७-१ ति=इ)। योगविभाग उत्तरार्थः ॥ ४० ॥

उत्समोर्लः ॥ ४१ ॥

उत्संभ्यामुत्तरस्य वेष्टेरन्त्यस्य लो भवति। उव्वेल्लइ, संवेल्लइ(७) (३-१ तलोपः ३-५० वद्वि० ष्ट=ल, आदेशत्वात् ३-५० लद्वि० शे० पू०) ॥ ४१ ॥

रुदेर्वः ॥ ४२ ॥

रुदिर् अस्य धातोरन्त्यस्य वो भवति। रुवइ(८) (इरित् द्=व ७-१ ति=इ) ॥ ४२ ॥

उदो विजः ॥ ४३ ॥

उत्पूर्वस्य विजेरन्त्यस्य वकारो भवति उव्विवइ(९) (३-१ तलोपः ३-५० वद्वि० शे०पू०स्प०) ॥ ४३ ॥

---

(१) पूर्वापरशैलोदर्शनात् (विदारणे) इत्यर्थनिर्देशो लेखकभ्रमात्त्रुटितः स्याद् इति प्रतीयते। (२) अत्रापि (छेदने) इत्युचितः।
(३) भिनत्ति, भिन्ते। छिनत्ति, न्ते (४) कथति, (५) क्वचित् चकारात् ठो भवति टश्च। वेढइ, वेठइ, वेटइ इत्युदाहरणानि इत्यधिकः।
(६) वेष्टते। (७) उद्वेष्टते। (८) रोदिति। (९) उद्विजते।

Aho ! Shrutgyanam

वृधेर्ढः ॥ ४४ ॥

वृधु वेधने अस्य धातोरन्त्यस्य ढो भवति। वड्ढइ(१) (१-२७ ऋ=अ (धू=ढ) तस्य आदेशत्वात् ३-५० द्वि० शे० पू० ॥४४॥

हन्तेर्म्मः ॥ ४५ ॥

हन्तेरन्त्यस्य म्मो भवति । हम्मइ(२) (स्पष्टम्) ॥ ४५ ॥

रुषादीनां दीर्घता ॥ ४६ ॥

रुषादीनां दीर्घता भवति। रूसइ । तूसइ । सूसइ (२-४३ ष= स एवं सर्वत्र शे० स० पू०) । रुष्यति, तुष्यति, शुष्यति ॥४६॥

च्चो व्रजनृत्योः ॥ ४७ ॥

व्रज, नृती, अनयोरन्त्यस्य च्चो भवति । वच्चइ(३) (३-३ रलोपः शे० पू०) णच्चइ(४) (१-२७ ऋ=अ २-४२ न्=ण् शे० स्प० ति=इ पू०) ॥ ४७ ॥

युधिबुध्योर्झः ॥ ४८ ॥

युध संप्रहारे, बुध अवगहने, अनयोरन्त्यस्य झो भवति । जुज्झइ । बुज्झइ(५) (धू=झ्, आदेशत्वात् ३-५० झद्वि० ३-५१ झ्=ज् शे० स्प०) ॥ ४८ ॥

रुधेन्धम्भौ(६) ॥ ४९ ॥

रुधिर् [अस्य* धातो] रन्त्यस्य न्धम्भौ भवतः । रुन्धइ, रुम्भइ(७) (इरि । धू= पर्यायेण न्ध, म्भ-७-१ ति=इ ४-१७ वर्णान्त०) ॥ ४९ ॥

---

(१) वर्द्धते । (२) हन्ति । (३) व्रजति, (४) नृत्यति, (५) युध्यते, बुध्यते । (६) रुधेन्धसौ=सम्सइ । का० पा० । * [ ] अयं पाठो न लभ्यते । (७) रुणद्धि, रुन्धे ।

Aho ! Shrutgyanam

मृदो लः ॥ ५० ॥

मृद क्षालने, अस्य धातोरन्त्यस्य लो भवति । मलइ(१) (स्पष्टं) ॥ ५० ॥

शदूलपत्योर्डः ॥ ५१ ॥

शदॢ शातने, पत्ऌ पतने, अनयोरन्त्यस्य डो भवति । सडइ(२) । पडइ (शे० स्प०) ॥ ५१ ॥

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ५२ ॥

शक्ऌ शक्तौ, इत्येवमादीनां द्वित्वं भवति । सक्कइ । (७-१ ति=इ स्पष्टं) लग्गइ । (७-१ति=इ शे० स्प०) शक्नोति । लगति ॥ ५२ ॥

स्फुटिचल्योर्वा ॥ ५३ ॥

स्फुटविकसने, चल कम्पने, अनयोरन्त्यस्य वा द्वित्वं भवति । फुट्टइ, (३-१ सलोपः, टद्वि० ७-१ति=इ) फुडइ (द्वित्वाभावे २-२० ट=ड शे० पू०) चल्लइ, चलइ(३) ॥ ५३ ॥

प्रादेर्मीलः ॥ ५४ ॥

प्रादेरुत्तरस्य द्वित्वं भवति वा । पमिल्लइ(४) (स्प० पू०) पमीलइ (३-३ रलोपः ह्रस्वः संयोगे इतिहेमसूत्रात् मी=मि शे० पू०) (स्प०) ॥ ५४ ॥

भुजादीनां क्त्वातुमुन्तव्येषु लोपः ॥ ५५ ॥

भुज इत्येवमादीनां क्त्वातुमुन्तव्येषु परतोऽन्त्यस्य लोपो भवति । भोत्तूण (जलोपे ३-१ कलोपे गुण(५) ३-५० तद्वि० ४-२३

---

(१) मृद्नाति । (२) शीयते । पतति ।

(३) स्फोटते, स्फुटति । चलति । (४) प्रमीलति ।

(५) युवर्णस्य गुणः । ८ । ४ । २३७ हेम सूत्रेणगुणः । एतमुत्तरत्र । वस्तुतस्तु-"रुद-भुज-मुचां तोऽन्त्यस्य" ८ । ४ । २१२-एषा

Aho ! Shrutgyanam

क्त्वः शेषस्य त्वस्थाने ऊणादेशः) भोत्तुं, भोत्तव्वं । विदः, वेत्तूण (दलोपे ३-१ कलोप ३-५० तद्वि० ४-२३ त्वा=ऊण, गुणः पूर्ववत्) वेत्तुं (पूर्ववद्गुणे कृते जलोपे च शेषभूत तुमनस्त कारस्य ३-५० द्वि० ४-१२ मवि०) वेत्तव्वं (३-२ यलोपः ३-५० वद्वि० ४-१२ मवि०) । रुदः, रोत्तूण, रोत्तुं (भोत्तुं-भोत्तव्वं वत) रोत्तव्वं() (भोत्तूणवत्) ॥ ५५ ॥

श्रुहुजिलूधुवां णोऽन्त्ये ह्रस्वः(१) ॥ ५६ ॥

श्रु श्रवणे, हु दानादाने(२), जि जये, लूञ् छेदने(३), धूञ् कम्पने, इत्येतेषामन्ते णः प्रयोक्तव्यः दीर्घस्य ह्रस्वो भवति । सुणइ । (२-४३ श्=स ३-३ रलोपः ७-१ ति=इ शे० स्प०) हुणइ । जिणइ । लुणइ । धुणइ(४) (स्पष्टाः पू०) ॥ ५६ ॥

भावकर्मणोर्व्वश्च ॥ ५७ ॥

एषां भावकर्मणोरन्त्ये व्व शब्दः प्रयोक्तव्यः चकारात् ण श्च । सुव्वइ, (२-४३ श्=स ३-३ रलोपः व्वप्रयोगे संयोग ८ । ८ । २२७ हेम० सू० ह्रस्व० ७-१ ति=इ) सुणिज्जइ (८-५६ णत्वे ह्रस्वे च कृते ७-३३ अ=इ, इति सुण=इ=सुणिजाते ७-२१ धातु प्रत्यययो र्मध्येज्ज ७-१ त=इ) । हुव्वइ, हुणिज्जइ । जिव्वइ, जिणिज्जइ । लुव्वइ, लु-

मन्त्यस्य क्त्वा, तुम्, तव्येषु तो भवति । एषः प्रकारः शोभनः प्रतिभाति क्त्व ऊणः इति क्त्वा=ऊण, पुनस्तकारस्य द्वित्वादि सर्वं सुघटमिति । रोदितुम्-रोदितव्यम् ।

(१) श्रु हुजि मुधुञां णो ह्रस्व श्च । का० पा० ।

(२) हुदानादनयोः । का० पा०

(३) मुङ् शब्दे इत्यधिकः मुणइ-मवते । का० पा०

(४) शृणोति । जुहोति । जयति । लुनाति । लुनीते धुनोति । धवते । इत्यादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

णिज्जइ । धुव्वइ, धुणिज्जइ(१) पूर्ववत् सर्वेषां सिद्धिर्ज्ञेया) ॥ ५७ ॥

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ५८ ॥

गमादीनां धातूनां द्वित्वं वा भवति । गम्मइ, (स्पष्टं) गमिज्जइ । (७-३२ भविष्यति गमोऽकारस्येत्वं ७-२१ मध्येज्ज ७-१ त=इ एवमुत्तरत्रापिज्ञेयम्) रम्मइ, रमिज्जइ । हस्सइ, हसिज्जइ । गम्यते रम्यते हस्यते ॥ ५८ ॥

लिहेर्लिज्झ(२) ॥ ५९ ॥

लिह आस्वादने अस्य धातोर्लिज्झो भवति भावकर्मणोः । लिज्झइ(३) (स्प० ७-१ सू० त=इ) ॥ ५९ ॥

हृकोर्हीरकीरौ ॥ ६० ॥

हृञ् हरणे, डुकृञ् करणे अनयोर्हीरकीरौ भवतो भावकर्मणोरर्थयोः । हीरइ । कीरइ(४) (स्प० पू०) ॥ ६० ॥

ग्रहेर्दीर्घो वा(५) ॥ ६१ ॥

ग्रहेर्धातोर्दीर्घो वा भवति भावकर्मणोरर्थयोः गाहिज्जइ, गहिज्जइ(६) (३-४ रलोप विकल्पेनदीर्घेकृते अग्रे गमिज्जइवत्) ॥ ६१ ॥

---

(१) श्रूयते-हूयते-जीयते-लूयते, धूयते ।

(२) लिहेर्ज्झः-लिज्झइ । का० पा०

(३) लिह्यते ।

(४) ह्रियते-क्रियते ॥ क्वचित् "ज्ञो णज्जणव्वौ वा" ज्ञाइत्यस्य धातोः णज्ज, णव इत्यादेशौ भवतः भावकर्मणोः । णज्जइ । णवइ । पक्षे जाणिज्जइ-मुणिज्जइ । ज्ञानृत्योर्णज्जणट्टौ । अनयो र्भावे णज्ज णट्टौ भवतः । णज्जइ । णट्टइ । ज्ञायते । नृत्यते । का० पा० इत्यधिकः ।

(५) ग्रहेर्वा वेत्थ । वेत्थइ-गेण्हिज्जइ-गृह्यते ।

(६) गृह्यते ।

Aho ! Shrutgyanam

क्तेन दिण्णादयः(१) ॥ ६२ ॥

दिण्ण, इत्येवमादयः क्तप्रत्ययेन सह निपात्यन्ते । डुदाञ् दाने, दिण्णं। (स्प०) रुदिर्, रुण्ण । (पूर्व० स्प०) त्रसी(२), हित्थं(३) । (स्प०) दह, दड्ढं(४) । रञ्जि, रत्तं(५) । (पू० स्प०) ॥ ६२ ॥

खिदेर्विसूरः ॥ ६३ ॥

खिद दैन्ये, अस्य विसूरो भवति । विसूरइ । (स्पष्टं अत्रोदाहरणमूलप्राकृतपद्यखण्डे 'विरहेण, बाला, इत्येतौ शब्दौ संस्कृते प्राकृतसमौ शेषो महिलावत) विरहेण विसूरइ बाला(६) ॥ ६३ ॥

क्रुधेर्जूरः(७) ॥ ६४ ॥

क्रुध कोपे, अस्य जूरो भवति । जूरइ(८) (पू० ति, त=इ शे० स्प०) ॥ ६४ ॥

चर्चेश्चंपः ॥ ६५ ॥

चर्च अध्ययने, अस्य धातो श्चंपो भवति । चंपइ(९) (स्पष्टम) ॥ ६५ ॥

त्रसेर्वज्जः ॥ ६६ ॥

त्रसी उद्वेगे, अस्य धातोर्वज्जो भवति । वज्जइ(१०) (पू० स्प०) ॥ ६६ ॥

---

(१) दिणादय इत्यपि-दिणं रुणं । का० पा०

(२) त्रासि नित्थं-तत्थं । का० पा०

(३) (हित्थंव्रीडितभीतयोः) ।

(४) दड्ढ-दढढं-दढं । का० पा०

(५) रन्तं-रतं-रज्जं । दत्तं रुदितं-त्रस्तं-दग्धं-रक्तं । का० पा०

(६) खिद्यति । (७) झूट । (८) कुध्यति ।

(९) चर्चयते । (१०) त्रस्यति=त्रसति ।

Aho ! Shrutgyanam

मृजेर्लुभसुपौ(१) ॥ ६७ ॥

मृजू शुद्धौ अस्य धातो लुभ, सुप इत्यादेशौ भवतः। लुभइ। सुपइ(२) (स्प०) ॥ ६७ ॥

बुड्डखुप्पौ मस्जेः(३) ॥ ६८ ॥

टुमस्जो शुद्धौ अस्य धातोर्बुड्डजुप्पौ भवतः। बुड्डइ खुप्पइ(४) (पू० स्प०) ॥ ६८ ॥

दृशेः पुलअणिअक्कअवक्खाः(५) ॥ ६९ ॥

दृशिर् प्रेक्षणे अस्य पुलअ, णिअक्क, अवक्खा भवन्ति। णिअक्कइ। अवक्खइ(६) (स्पष्टं) ॥ ६९ ॥

शकेस्तरवअतीराः ॥ ७० ॥

शक्लृ शक्तौ अस्य धातोः तर, वअ, तीर इत्येतआदेशा भवन्ति। तरइ, वअइ, तीरइ(७) ॥ ७० ॥

शेषाणामदन्तता ॥ ७१ ॥

इति वररुचि कृतप्राकृत सूत्रेषु अष्टमः परिच्छेदः ॥

शेषाणां लुप्तानुबन्धानामदन्तता भवति। भमइ। चुंबइ(८)॥७१॥

[*एवमन्येऽपि क्रियाशब्दादेशाः ज्ञेया यथा मृजेः जामइ पिबतेः पाडइ]।

इति भामहविरचिते प्राकृतप्रकाशे धात्वादेशपरिच्छेदो ऽष्टमः(९)॥

---

(१) मृजेर्जूसबुसौ–जुसइ–बुसइ। का० पा० (२) मार्ष्टि।

(३) बुत्त, बुत्था। बुत्तइ, व्युत्थइ। (४) मज्जति।

(५) दृशेर्दीस पुलणि छणि अच्छावखाः, दीसइ, पुलइ–णिछइ, अवक्वइ। दृश्यते। का० पा० (६) पश्यति। (७) शक्नोति।

(८)। भ्रमति। चुम्बति। * [ ] अयं पाठो न सार्वत्रिकः।

(९) अत्र प्रकरणान्ते ग्रन्थान्तरेभ्य आवश्यकतया धातुविहित-प्रत्ययादेशा धात्वादेशाश्चोल्लिख्यन्ते संक्षेपेण तत्र पूर्वं धातुविहितप्रत्ययाऽऽदेशाः–

Aho ! Shrutgyanam

सिनास्तेः सिः । ८ । ३ । १४६ ।

सिना द्वितीयत्रिकादेशेनसह अस्तेः सिरादेशोभवति ॥

निट्ठुरो जं सि । सिनेति किम् । से आदेशे सति अत्थि तुमं ।

गुर्वादेरविर्वा । ८ । ३ । १५० ।

गुर्वादेर्णेः स्थाने अवि इत्यादेशो वा भवति । शोषितम् ।

सोसविअं । सोसिअं । तोषितम । तोसविअं । तोसिअं ।

भ्रमेराडो वा । ८ । ३ । १५१ ।

भ्रमेः परस्य णे राड आदेशो वा भवति ॥

भमाडेइ । पक्षे भामेइ । भमावइ । भमावेइ । (भ्रमयति) ।

दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिं स्त्रयाणाम् । ८ । ३ । १७३ ।

विध्यादिष्वर्थेषूत्पन्नानामेकत्वेऽर्थे वर्तमानानां त्रयाणामपित्रि-काणां स्थाने यथासंख्यं दु, सु,-मु, इत्येते आदेशा भवन्ति ॥

हसउ सा । हससु तुमं । हसामु अहं । दकारोच्चारणं भाषा-न्तरार्थम् ।

सोर्हिर्वा । ८ । ३ । १७४ ।

पूर्वं सूत्र विहितस्य सोः स्थाने हिरादेशो वा भवति ॥

देहि । देसु ।

अत इज्जस्विज्जहि ज्जे-लुको वा । ८ । ३ । १७५ ।

अकारात्परस्य सोः इज्जसु, इज्जहि, इज्जे इत्येते लुक् च आदेशा वा भवन्ति । हसेज्जसु । हसेज्जहि । हसेज्जे । हस । पक्षे हससु । अत इति किम् । होसु ।

क्रियातिपत्तेः । ८ । ३ । १७९ ।

क्रियातिपत्तेः स्थाने ज्ज, ज्जावादेशौ भवतः ।

होज्ज, होज्जा । अभविष्यदित्यर्थः । जइ होज्ज वण्णणिज्जो ।

न्त-माणौ । ८ । ३ । १८० ।

क्रियातिपत्तेः स्थाने न्त, माणौ आदेशौ भवतः ।

होन्तो । होमाणो । अभविष्यदित्यर्थः ।

क्यङो र्य लुक् । ८ । ३ । १३८ ।

क्यङन्तस्य क्यजन्तस्य वा सम्बन्धिनोयस्य लुग् भवति ।

गरु आइ । गरु आअइ । अगुरुर्गरुर्भवति । गुरुरिवाचरतिवे-त्यर्थः । क्यच् : लोहिआइ । लोहिआ अइ ।

Aho ! Shrutgyanam

के । ८ । ३ । १५६ ।

के परत अत इत्वं भवति । हसिअं । पढिअं ।

अदेल्लुक्यादेरत आः । ८ । ३ । १५३ ।

णेरदेल्लोपेषु कृतेषु आदेरकारस्य आ भवति ।

अति, पाडइ । मारइ । एति, कारेइ । खामेइ ।

लुकि, कारिअं । खामिअं । कारीअइ । खामीअइ ।

कारिज्जइ । खामिज्जइ । अदेल्लुकीतिकिम ।

कराविज्जइ । करावीअइ । आदेरिति किम् । सङ्गामेइ । इह-व्यवहितस्य मा भूत् । कारिअं । इहान्त्यस्य मा भूत् । अत इति किम । दूसेइ ।

केचित्तु आवे आव्यादेशयोरप्यादेरत आत्वमिच्छन्ति । कारावेइ । दासाविओ जणो सामलीए ।

णेरदेदावावे । ८ । ३ । १४९ ।

णेः स्थाने अत्, एत्, आव, आवे एते चत्वारआदेशा भवन्ति । दरिसइ । कारेइ । करावइ । करावेइ । हासेइ । हसावइ । हसावेइ । बहुलाधिकारात् । क्वचिदेन्नास्ति । जाणावेइ । क्वचिद् आवे नास्ति । पाएइ । भावेइ ।

दृशिवचे र्डीस-डुच्चं । ८ । ३ । १६१ ।

दृशेर्वचेश्च परस्य क्यस्य स्थाने यथासंख्यं डीस डुच्च इत्यादेशौ भवतः । ईअ इज्जापवादः । दीसइ । वुच्चइ ।

सी-ही-हीअ भूतार्थस्य । ८ । ३ । १६२ ।

भूतेर्थेविहितोऽद्यतनादिः प्रत्ययो भूतार्थः । तस्य स्थाने-सी-ही-हीअ इत्यादेशा भवन्ति । उत्तरत्र व्यञ्जनादीअ(१) विधानात्स्वरान्तादेवायं विधिः । कासी । काही । काहीअ ।

अकार्षीत् । अकरोत् । चकारवेत्यर्थः । एवं ठासी । ठाही । ठाहीअ ।

कृदोहं । ८ । ३ । १७० ।

---

(१) "व्यञ्जनादीअ" इत्यनेन-हुवीअ । (अभूत्-अभवत्-बभूव) । अच्छीअ । (आसिष्ट आस्त-आसां चक्रे) इत्यादिषु व्यञ्जनान्ता दीअ विधानं वेदितव्यम् । प्राकृत प्रकाशे चैतद् ७-२३ सूत्रे स्पष्टम् ।

Aho ! Shrutgyanam

करोते ददातेश्च परोभविष्यति विहितस्य स्यादेशस्य स्थाने हंवा प्रयोक्तव्यः। काहं। दाहं। करिष्यामि। दास्यामीत्यर्थः। पक्षे कादिमि। दाहिमि। इत्यादि।

अधुना धात्वादेशाः प्रदर्श्यन्ते-

भुवेर्हो-हुव-हवाः। ८। ४। ६०।

भुवोधातोर्हो, हुव, हव इत्येते आदेशा वा भवन्ति(१)। होइ। होन्ति। हुवइ। हुवन्ति। हवइ। हवन्ति। पक्षे। भवइ। परिहीण विहवो। क्वचिदन्यदपि। उब्भुअइ। भत्तं। भुत्तं।

अविति हुः। ८ ४। ६१॥

विद्वर्जे प्रत्यये भुवो हु इत्यादेशो वा भवति। हुन्ति। भवन् (भुवन्) हुन्तो। अवितीति किम्। होइ।

पृथक् स्पष्टे णिव्वडः। ८। ४। ६२॥

स्थक् भूते स्पष्टे च कर्तरि भुवो णिव्वड इत्यादेशो भवति। णिव्वडइ। पृथक् स्पष्टो वा भवतीत्यर्थः।

प्रभौ हुप्पो वा। ८। ४। ६३॥

प्रभुकर्तृकस्य भुवो हुप्प इत्यादेशो वा भवति। प्रभुत्वं च प्रपूर्वस्यै वार्थः। अङ्गेच्चिअ न पहुप्पइ। पक्षे पभवेइ।

सम्भावे रासङ्कः॥ ३५॥

आसङ्कइ। सम्भावइ।

कथे वज्जर-पज्जर-उप्पाल-पिसुण-सङ्घ-बोल्ल-चव-जम्प-सीस-साहाः॥ ८। २॥

वज्जरइ। पज्जरइ। उप्पालइ। पिसुणइ। सङ्घइ। बोल्लइ। चवइ। जम्पइ। सीसइ। साहइ। पक्षे कहइ।

एते चाऽन्यैर्देशीषु पठिता अपि अत्र धात्वादेशीकृता विविधेषु प्रत्ययेषु प्रतिष्ठन्तामिति-तथाच-वज्जरिओ, कथितः। वज्जरिऊण, कथयित्वा। वज्जरणं, कथनम्। वज्जरन्तो, कथयन्। वज्जरिअव्वं, कथयितव्यम्। इतिरूपसहस्राणि सिद्ध्यन्ति। संस्कृत धातुवच्च प्रत्यय लोपागमादिविधिः।(२)

(१) 'भवते हों, हुवौ स्याताम्' इति प्राकृत सर्वस्वम्।

(२) 'शबादीनां च प्रायः प्रयोगो नास्ति'इति हेमः।

Aho ! Shrutgyanam

दुःखे णिव्वरः ॥ ३ ॥

णिव्वरइ । दुःखं कथयतीत्यर्थः ।

जुगुप्सेर्झुण-दुगुच्छ-दुगुञ्छाः ॥ ४ ॥

झुणइ । दुगुच्छइ । दुगुञ्छइ । पक्षे जुगुच्छइ । गलोपे दुउच्छइ-दुउञ्छइ । जुउच्छइ ।

बुभुक्षि-वीज्योर्णी रव-वोज्जौ ॥ ५ ॥

बुभुक्षे राचारक्विबन्तस्य च वीजेः ॥ णीरवइ । बुभुक्खइ । वोज्जइ । वीजइ ॥

उदो ध्मो धुमा ॥ ८ ॥

उधुमाइ ।

श्रदो धो दहः ॥ ९ ॥

सद्दहइ । सद्दहमाणो जीवो ।

पिबेः पिज्ज-डल्ल-पट्ट-घोट्टाः ॥ १० ॥

पिज्जइ । डल्लइ । पट्टइ । घोट्टइ । पक्षे पिअइ ।

उद्वाते रोरुम्मा वसुआ ॥ ११ ॥

ओरुम्माइ । वसुआइ । उव्वाइ ।

निद्रातेरोहीरोङ्घौ ॥ १२ ॥

ओहीरइ । उङ्घइ । निद्दाइ ।

आघ्रेराइग्घः ॥ १३ ॥

आइग्घइ । अग्घाइ । आजिघ्रतीत्यर्थः ।

स्नातेरब्भुत्तः ॥ १४ ॥

अब्भुत्तइ । ण्हाइ ।

समः स्त्यः खाः ॥ १५ ॥

संखाइ ।

स्थष्ठा-थक्क-चिट्ठ निरप्पाः ॥ १६ ॥

ठाइ । ठाअइ । ठाणं । पट्ठिओ । उट्ठिओ । पट्ठाविओ । उट्ठाविओ । थक्कइ । चिट्ठइ । चिट्ठिऊण । निरप्पइ । बहुलाधिकारात्क्वचिन्न भवति । थिअं । थाणं । पत्थिओ । उत्थिओ । थाऊण ।

उदष्ठ-कुक्कुरौ ॥ १७ ॥

उठ्ठइ । उक्कुक्कुरइ ।

Aho ! Shrutgyanam

म्ले र्वा-पव्वायौ ॥ १८ ॥

वाइ । पव्वायइ । मिलाइ । म्लायत इत्यर्थ ॥

निर्मो निम्माण-निम्मावौ ॥ १९ ॥

निम्माणइ । निम्मवइ ।

क्षेर्णिज्झरोवा ॥ २० ॥

णिज्झरइ । पक्षे झिज्जइ ।

छदेर्णेणुम-नूम-सन्नुम-ढक्कौम्बाल-पव्वालाः ॥ २१ ॥

णुमइ । नूमइ । णत्वे णूमइ । ढक्कइ । ओम्बालइ । पव्वालइ । छायइ ॥

निव्रिपत्यो र्णिहोडः ॥ २२ ॥

निवृञः पतेश्च ण्यन्तस्य । णिहोडइ । पक्षे । निवारेइ । पाडेइ ॥

धवले र्दुमः ॥ २४ ॥

ण्यन्तस्य । दुमइ । धवलइ । दीर्घत्वमपि(१) । दूमिअं । धवलितमित्यर्थः ॥

तुलेरोहामः ॥ २५ ॥

ण्यन्तस्य । ओहामइ । तुलइ ॥

मिश्रेर्वीसाल-मेलवौ ॥ २८ ॥

ण्यन्तस्य । वीसालइ । मेलवइ । मिस्सइ ॥

भ्रमेस्तालिअण्ठ-तमाडौ ॥ ३० ॥

ण्यन्तस्य ॥ तालिअण्टइ । तमाडइ । भामेइ । भमाडेइ । भमावेइ ॥

दृशेर्दाव-दंस-दक्खवाः ॥ ३२ ॥

ण्यन्तस्य । दावइ । दंसइ । दक्खवइ । दरिसइ ॥

स्पृहः सिहः ॥ ३४ ॥

ण्यन्तस्य । सिहइ ।

यापे र्जवः ॥ ४० ॥

जवइ । जावेइ ॥

प्लावे रोम्वालपव्वालौ ॥ ४१ ॥

ण्यन्तस्य ओम्वालइ । पव्वालइ । पावेइ ।

विकोशेः पक्खोडः ॥ ४२ ॥

(१) 'स्वराणां स्वराः' इति बाहुलकात् इति भावः ॥

Aho ! Shrutgyanam

ण्यन्तस्य । पक्खोडइ । विकोसइ ।

रोमन्थे रोग्गाल वग्गोलौ ॥ ४३ ॥

नामधातोर्ण्यन्तस्य । ओग्गालइ । वग्गोलइ । रोमन्थइ ।

दोले रङ्खोलः ॥ ४८ ॥

स्वार्थे ण्यन्तस्य । रङ्खोलइ । दोलइ ।

वेष्टेः परिआलः ॥ ५१ ॥

ण्यन्तस्य । परिआलेइ । वेढेइ ।

क्रियः किणो वेस्तु क्के च ॥ ५२ ॥

किणइ । विक्केइ । विक्किणइ ।

भियो भा-बीहौ ॥ ५३ ॥

भाइ । भाइअं । वीहइ । वीहिअं । वहुलाधिकाराद् । भीओ ॥

आलीङोऽल्ली ॥ ५४ ॥

अल्लियइ । (अल्लीअइ) अल्लीणो ।

निलीङ णिलीअ-णिलुक्क-णिरिग्घ-लुक्क-लिक्क-ल्हिक्काः ॥५५॥

णिलीअइ । णिलुक्कइ । णिरिग्घइ । लुक्कइ । लिक्कइ । ल्हिक्कइ ।

निलिज्जइ । (णिलिज्जइ)

विलीङ विरा ॥ ५६ ॥

विराइ । विलिज्जइ ।

रुते रुञ्ज-रुण्टौ ॥ ५७ ॥

रौतेः । रुञ्जइ । रुण्टइ । रवइ ।

श्रुटेर्हणः ॥ ५८ ॥

हणइ । सुणइ ॥

धूञे धुवः ॥ ५९ ॥

धुवइ । धुणइ ॥

काणेक्षिते णिआर ॥ ६६ ॥

काणेक्षित विषयस्य कृञो णिआर इत्यादेशो वा भवति ।

णिआरइ । काणेक्षितं करोति ॥

कृञः कुणः ॥ ६७ ॥

कुणइ । करइ ॥

श्रमे वावम्फः ॥ ६८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

वावम्फइ । श्रमं करोति ॥

मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः ॥ ६९ ॥

णिव्वोलइ । मन्युना ओष्ठं मलिनं करोति ।

शैथिल्यलम्बने पयल्लः ॥ ७० ॥

पयल्लइ । शिथिली भवति । लम्बते वा ।

क्षुरे कम्मः ॥ ७२ ॥

कम्मइ । क्षुरं करोतीत्यर्थः ॥

चाटौ गुललः ॥ ७३ ॥

गुललइ । चाटु करोतीत्यर्थः । निष्पतनविषयस्य तु णीलुञ्छइ ।

स्मरेर्झर-झूर-भर-भल लढ-विम्हर-सुमर-पयर पम्हुहाः ॥ ७४ ॥

झरइ । झूरइ । भरइ । भलइ । लढइ । विम्हरइ । सुमरइ । पयरइ । पम्हुहइ । सरइ ॥

विपूर्वकस्य तु पम्हुसइ । विम्हरइ । वीसरइ ॥

व्याहृञः कोक्कपोक्कौ ॥ ७६ ॥

कोक्कइ । ह्रस्वत्वे तु कुक्कइ । पोक्कइ । पक्षे वाहरइ ॥

प्रसरेः पयल्लोवल्लौ ॥ ७७ ॥

पयल्लइ । उवेल्लइ । पसरइ ।

गन्धविषये तु महमहइ मालई । मालई गन्धो पसरइ ॥

जाग्रे र्जग्गः ॥ ८० ॥

जग्गइ । पक्षे । जागरइ ॥

व्याप्रेराअड्डः ॥ ८१ ॥

आअड्डइ । वावरेइ ॥

आदृङः सन्नामः ॥ ८३ ॥

सन्नामइ । आदरइ ॥

अवतरतेस्तु ओहइ । ओरसइ । ओअरइ ॥

पचेः सोल्ल पउल्लौ ॥ ९० ॥

सोल्लइ । पउल्लइ । पयइ ॥

मुचेश्च-छड्डइ । अवहेडइ । मेल्लइ । उस्सिक्कइ । रेअवइ । णिलुञ्छइ । धंसाडइ । पक्षे । मुअइ ॥

दुःखेः णिव्वलः ॥ ९२ ॥

णिव्वलेइ । दुःखं मुञ्चतीत्यर्थः ॥

Aho ! Shrutgyanam

वञ्चेस्तु-वेहवइ । वेलवइ जूरवइ । उमच्छइ । वञ्चइ ॥

सिञ्चेश्च-सिञ्चइ । सिम्पइ । सेअइ ॥

गर्जेर्बुक्कः ॥ ९८ ॥ बुक्कइ । गज्जइ ।

वृषे ढिक्कः ॥ ९९ ॥ ढिक्कइ । वृषभो गर्जतीत्यर्थः ।

राजेः अग्घ-छज्ज-सह-रीर-रेहाः ॥ १०० ॥ अग्घइ । इत्यादि ॥

मस्जेराउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-खुप्पाः ॥ १०१ ॥ आउड्डइ । इत्यादि । पक्षे । मज्जइ ॥

पुञ्जेरारोल वमालौ ॥ १०२ ॥ आरोलइ । इत्यादि ।

तिजेरोसुक्कः ॥ १०४ ॥ ओसुक्कइ ॥

मृजे उग्घुस-लुञ्छ-पुञ्छ-पुंस-फुस-पुस-लुह-हुल-रोसाणाः ॥ १०५ ॥ उग्घुसइ । इत्यादि । पक्षे । मज्जइ ।

भञ्जे वेमय-मसुमूर-मूर-सूर-सूड-विर-पविरञ्ज-करञ्ज-नीरञ्जाः ॥ १०६ ॥ वेमयइ इत्यादि पक्षे-भञ्जइ । अनुव्रजेस्तु पडिअग्गइ । अणुवच्चइ ॥

युजो जुञ्ज-जुज्ज-जुप्पाः ॥ १०९ ॥ जुञ्जइ । इत्यादि ॥

भुजो भुञ्ज-जिम-जेम-कम्माण्ह-समाण-चमढ-चड्डाः ॥ ११०॥ भुञ्जइ । इत्यादि ॥ उपेन युक्तस्य तु कम्मवइ । उवहुञ्जइ ॥ घटेः । गढइ । घडइ । सम्पूर्वस्य तु सङ्गलइ । सङ्घडइ ॥

हासेन स्फुटेर्मुरः ॥ ११४ ॥ मुरइ । हासेन स्फुटतीत्यर्थः ॥

तुडेस्तोड-तुट्ट-खुट्ट-खुड-उक्खुड-उल्लुक्क-णिलुक्क-लुक्क-उल्लूराः ॥ ११६ ॥ तोडइ इत्यादि । पक्षे तुडइ ॥

घूर्णो घुल-घोल-घुम्म-पहल्लाः ॥ ११७ ॥ घुलइ इत्यादि ॥ ग्रन्थेः—गण्ठइ । गण्ठी ॥

मन्थे घुसल—विरोलौ ॥१२१॥ पक्षे मन्थइ ॥ ह्लादेः—अवअच्छइ । ह्लादते । ह्लादयति वा ॥ खिद्यते—जूरइ । विसूरइ । रिवज्जइ ॥

नेः सदो मज्जः ॥ १२३ ॥ निपूर्वस्य सदो मज्ज इत्यादेशो भवति । अत्ता एत्थ णुमज्जइ ॥ हे०

छिदेर्दुहाव-णिच्छल्ल-णिज्झोड-णिव्वर-णिल्लूर-लूराः ॥ १२४ ॥ दुहावइ । इत्यादि । पक्षे । छिन्दइ ॥ आङ्पूर्वस्य तु ओअन्दइ । उद्दालइ ॥

मृदो मल-मढ-परिहट्ट-खड्ड-चड्ड-मड्ड-पन्नाडाः ॥१२६॥ मलइ । इत्यादि ॥ स्पन्देः—चुलुचुलइ । पन्दइ ॥ विसंवदेः—विअट्टइ । विलो-

Aho ! Shrutgyanam

ट्टइ । फंसइ । विसंवयइ ॥ शीयतेः-झडइ । पक्खोडइ ॥ आक्रन्देः-णीअहरइ । अक्कन्दइ ॥ खिद्यतेः-जूरह । विसूरइ । खिज्जइ ॥

रुधे रुत्थङ्घः ॥ १३३ ॥ उत्थङ्घइ । रुन्धइ ॥ निषेधतेः-हक्कइ । निसेहइ ॥ तनेः-तडइ । तड्डइ । तड्डवइ । विरल्लइ । तणइ ॥ उपसर्पेः-अल्लिअइ । उपसप्पइ ॥

संतपे झङ्खः ॥१४०॥ झङ्खइ । पक्षे । संतप्पइ ॥ ओअग्गइ । वावेइ । व्याप्नोतीत्यर्थः ॥

क्षिपेर्गलत्थ—अड्डक्ख—सोल्ल-पेल्ल—णोल्ल-छुह—हुल-परी—घत्ताः ॥ १४३ ॥ गलत्थइ । परीइ । इत्यादि । पक्षे । खिवइ ॥

उत्क्षिपे गुलगुञ्छ—उत्थङ्घ—अल्लत्थ—अब्भुत्त-उस्सिक्क—हक्खुवाः ॥ १४४ ॥ आक्षिपे स्तु-णीरवइ । अक्खिवइ ॥

स्वपेः कमवस-लिस-लोट्टाः ॥ १४६ ॥ पक्षे सुअइ ॥ वेपेः-आयम्बइ । आयज्झइ । वेवइ ॥ विलपेर्झङ्ख-वडवडौ ॥ १४८ ॥ पक्षे विलवइ ॥ कृपेः-अवहावेइ । कृपांकरोतीत्यर्थः ॥

प्रदीपे स्तेअव-सन्दुम-सन्धुक्क-अब्भुत्ताः ॥ १५२ ॥ तेअवइ । इत्यादि । पक्षे । पलीवइ ॥ लुभेः—सम्भावइ । लुब्भइ ॥ क्षुभेः-खउरइ । पड्डुहइ । खुब्भइ । उपालम्भे झङ्ख-पच्चार-वेलवाः ॥१५६॥ पक्षे उवालम्भइ ॥ अवे जृम्भो जम्भा ॥ १५७ ॥ जृम्भे जम्भा इत्यादेशो भवति । वेस्तु न भवति । जम्भाइ । जम्भाअइ । अवेरिति किम् । केलि-पसरो विअम्भइ ॥ नमेः-णिसुढइ । भाराक्रान्तो नमतीत्यर्थः ॥ मण्डेः—चिञ्चइ । चिञ्चिअइ । चिञ्चिल्लइ । रीडइ । टिविडिक्कइ । मण्डइ ॥

विश्राम्यतेः-णिव्वाइ । वीसमइ ॥ आक्रमतेः-ओहावइ । उत्थारइ । छुन्दइ । अक्कमइ ॥

भ्रमे ष्टिरिटिल्ल-दुदुल्ल ढण्ढल्ल-चक्कम्म-भम्मड-भमड-भमाड-तलअण्ट-झण्ट-झम्प-भुम-गुम-फुम-फुस-ढुम-ढुस-परी-पराः॥१६१॥

भ्रमे एते ऽष्टादशादेशा वा भवन्ति ॥ टिरिटिल्लइ । इत्यादि । पक्षे । भमइ ॥

गमे रई-अइच्छ-अणुवज्ज-अवज्जस-उक्कुस-अक्कुस-पच्चड्डु-पच्छन्द-णिम्मह-णी-णीण-णीलुक्क-पदअ-रम्भ-परिअल्ल-वोल-परिअल-णिरिणास-णिवह-अवसेह-अवहराः ॥ १६२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गमे रेते एक विंशति रादेशा वा भवन्ति । अईइ । णीइ । इत्यादि । पक्षे गच्छइ ॥ हम्मइ । णिहम्मइ । णीहम्मइ । आहम्मइ । पहम्मइ । इत्येते तु हम्म गतौ वित्यस्यैव भविष्यन्ति ॥ हे ० । आङ् पूर्वकस्य गमेः अहिपच्चुअइ ॥ सम्युक्तस्य–अभिडइ ॥ अभ्याङ् पूर्वस्य–उम्मत्थइ । अभि मुखमागच्छतीत्यर्थः ॥ प्रत्याङ् पूर्वस्य–पलोहइ ॥ प्रत्यागच्छतीत्यर्थः ॥

शमेः–पडिसाइ । पडिसामइ । समइ ॥

रमेः संखुड्ड–खेड्ड उब्भाव–किलिकिञ्च–कोट्टुम–मोट्टाय–णीसर–वेल्लाः ॥ १६८ ॥ संखुड्डइ । इत्यादि । पक्षे रमइ ॥

पूरे–रग्घाड–अग्घव–उद्धुम–अङ्गुम–अहिरेमाः ॥ १६९ ॥

अग्घाडइ । इत्यादि । पक्षे पूरइ । पूरयतीत्यर्थः ॥ त्वरतेः–जअडइ । इत्यधिकः ॥

क्षरः खिर–झर–पज्झर–पच्चड–णिच्चल–णिट्टुआः । १७३ ॥

खिरइ । इत्यादि ॥ उच्छलतेः—उत्थलइ ॥ विगलेः थिप्पइ ॥ दलेः विसट्टइ ॥ वलेः वम्फइ ॥ पक्षे । विगलइ । दलइ । वलइ ॥

भ्रंशेः फिड–फिट्ट–फुड–फुट्ट–चुक–भुल्लाः ॥ १७७ ॥

फिडइ । इत्यादि । पक्षे भसइ ॥

नशेर्णिरनास–णिवह–अवरोह–पडिसा–सेहावहराः ॥ १७८ ॥

पक्षे नस्सइ ॥ संदिशतेः–अथाहइ । संदिसइ । अवात्काशः–ओवासइ ।

दृशो निअच्छ–पेच्छ–अवयच्छ–अवयज्झ–वज्ज–सव्वव–देक्खं–ओअक्ख–अवक्ख–अवअक्खइ–पुलोअ (पुलोए) निअ–अव आस–पासाः ॥१८१॥ निअच्छइ । इत्यादि ॥ निज्झाअइ इति तु निध्यायतेः ।

स्पृशः फास–फस–फरिस–छिव–छिह–आलुङ्ख–आलिहाः॥१८२॥

फासइ । इत्यादि । प्रविशेः—रिअइ । पविशइ ॥ प्रमृशतेः प्रमुष्णाते श्च–पम्हुसइ ॥

पिषे र्णिवह–णिरिणास—णिरिणज्ज—रोञ्च–चड्डाः ॥ १८५ ॥

णिवहइ । इत्यादि । पक्षे । पीसइ ॥ भषेः—भुक्कइ । भसइ ॥

कृषेः कड्ढ–साअड्ढ–अञ्छ–अणच्छ–अयञ्छ—आइञ्छाः ॥ १८७ ॥

कड्डइ । इत्यादि । पक्षे करिसइ ॥ असि विषयस्य तु अक्खोडइ (अक्खोडइ) असिं कोशात्कर्षतीत्यर्थः ॥

Aho ! Shrutgyanam

गवेषे ढुण्ढुल्ल-ढण्ढोल-गमेस-घत्ताः ॥ १८९ ॥ ढुण्ढुल्लइ । इत्यादि । पक्षे । गवेसइ ।

श्लिष्यतेः—सामग्गइ । अवयासइ । परिअन्तइ । सिलेसइ ॥ म्रक्षेः—चोप्पडइ । मक्खइ ॥ काङ्क्षे राह-अहिलङ्घ—अहिलङ्ख—वच्च—वम्फ—मह—सिहविलुम्पाः (विलुम्फाः) ॥ १९२ ॥ आहइ । इत्यादि । पक्षे । कङ्खइ ॥

प्रतीक्षेः सामय—विहीर—विरमालाः ॥ १९३ ॥ सामयइ । इत्यादि । पक्षे पडिक्खइ ॥

तक्षेस्तच्छ—चच्छ—रम्फाः ॥ १९४ ॥ तच्छइ । इत्यादि । पक्षे । तक्खइ ॥ विकसेः—कोआसइ । वोसट्टइ । विअसइ ॥ हसेः—गुञ्जइ । हसइ ॥ स्रंसेः-ल्हसइ । परिल्हसइ सलिलवसणं । हे० । डिम्भइ-संसइ ॥

त्रसेर्डर-वोज्ज-वज्जाः ॥ १९८ ॥ डरइ । इत्यादि । पक्षे । तसइ ।

न्यसो णिम—णुमौ ॥ १९९ ॥ णिमइ । णुमइ ॥ पर्यसस्तु-पलोट्टइ । पल्लट्टइ । पल्हत्थइ ॥

निश्वसेः—झङ्खइ । नीससइ ॥

उल्लसे ऊसल—ऊसुम्भ—णिल्लस—पुलआल—गुञ्जोल्ल-आरोआः ॥ २०२ ॥ ऊसलइ । गुञ्जोल्लइ । ह्रस्वत्वे—गुञ्जुल्लइ । इत्यादि । पक्षे । उल्लसइ ॥ भासेः—भिसइ । भासइ ॥ ग्रसेर्घ—घिसइ । गसइ ॥ ओवाहइ । ओगाहइ । अवगाहत इत्यर्थः ॥ आरोहतेः—चडइ । वलग्गइ । आरुहइ ॥ मुहे गुम्म-गुम्मडौ ॥ २०७ ॥ पक्षे मुज्झइ ॥

दहे रहिऊल-आलुङ्खौ ॥ २०८ ॥ पक्षे डहइ ॥

ग्रहो वल-गेण्ह-हर-पङ्ग-निरुवार—अहिपच्चुआः ॥ २०९ ॥ वलइ । गेण्हइ । गिण्हइ, इत्यादि ॥

वचो वोत् ॥ २११ ॥ क्त्वा तुमुन् तव्येषु ॥ वोत्तूण । वोत्तुं । वोत्तव्वं ॥

दृश स्तेन ट्ठः ॥ २१३ ॥ दृशोऽन्त्यस्य तकारेण सह द्विरुक्त ट्ठकारो भवति ॥ दट्ठूण । दट्ठुं । दट्ठव्वं ॥

आः कृगो(१) भूत-भविष्यतोश्च ॥ २१४ ॥ काहीअ । काहिइ । काऊण । काउं । कायव्व ॥

छिदि—भिन्दोन्दः ॥ २१६ ॥ छिन्दइ । भिन्दइ ॥

(१) कृञः संक्षेयम् ।

Aho ! Shrutgyanam

युध-बुध-गृध- क्रुध—सिध-मुहांज्झः ॥ २१७ ॥ जुज्झइ । बुज्झइ गिज्झइ । कुज्झइ । सिज्झइ । मुज्झइ ॥

समो ल्लः ॥ २२२ ॥ सं पूर्वस्य वेष्टते रन्त्यस्य द्विरुक्तोलो भवति । सवेल्लइ ॥

वोदः ॥ २२३ ॥ उदः परस्य तु वा भवति ॥ उव्वेल्लइ । उव्वेढइ ॥

उवर्णस्यावः ॥ २३३ ॥ धातो रन्त्यस्योवर्णस्य अवादेशो वा भवति ॥ हुङ् । निण्हवइ ॥ हु । निइवइ ॥ च्युङ् । चयुवइ ॥ रु । रवइ ॥ कु । कवइ ॥ सू । सवइ । पसवइ ॥

स्वराणां स्वराः ॥ २३८ ॥

धातुषु स्वराणां स्थाने स्वराः बहुलं भवन्ति ॥ हवइ । हिवइ ॥ चिणइ । चुणइ ॥ सद्दहणं । सद्दहाणं ॥ धावइ । धुवइ ॥ रुवइ । रोवइ ॥ क्वचिन्नित्यम् । देइ । लेइ । विहेइ । नासइ ॥ आर्षे । वेमि ॥

व्यञ्जनाददन्ते ॥ २३९ ॥ व्यञ्जनान्ताद्धातो रन्ते अकारो भवति । भमइ । हसइ । कुणइ । चुम्बइ । भणइ । उवसमइ । पावइ । सिञ्चइ । रुन्धइ । मुसइ । हरइ । करइ । शवादीनां प्रायः प्रयोगो नास्ति ॥

स्वरादनतो वा ॥ २४० ॥ अकारान्तवर्जितात्स्वरान्ताद्धातो रन्ते अकारागमो वा भवति ॥ पाइ । पाअइ ॥ धाइ । धाअइ ॥ जाइ । जाअइ ॥ झाइ झाअइ ॥ जम्भाइ । जम्भाअइ ॥ उव्वाइ उव्वाअइ । मिलाइ । मिलाअइ । विक्केइ । विक्केअइ ॥ होऊण । होअऊण (होइऊण) अनत इतिकिम् । चिइच्छइ । दुगुच्छइ ॥

जानातेः कर्मभावे—णव्वइ । णज्जइ । पक्षे जाणिज्जइ मुणिज्जइ ॥ णाइज्जइ ॥ नञ् पूर्वकस्य-अणाइज्जइ ॥ व्याहृञः कर्मभावे-वाहिप्पइ । वाहरिज्जइ ॥ आरभेः कर्मणि-आढप्पइ, आढवीअइ ॥ स्निह, सिचोः कर्मणि-सिप्पइ ॥ ग्रहेः कर्मणि-घेप्पइ । गिण्हिज्जइ ॥स्पृशेः कर्मणिः—छिप्पइ । छिविज्जइ ॥

जीहइ । लज्जइ । लज्जत इत्यर्थः ॥ विरेचयतेः—ओलुण्डइ । उल्लुण्डइ । पल्हत्थइ । विरेअइ ॥ ताडयतेः—आहोडइ । विहोडइ-पक्षे-ताडेइ । उद्धूलयतेः—गुण्ठइ । उद्धुलेइ ॥ नाशयतेः-विउडइ । नासवइ । हारवइ । विप्पगालइ । पलावइ । नासइ ॥ उत्पूर्वस्य घटे र्ण्यन्तस्य—उग्गइ । उग्घाडइ ॥ सम्भावयतेः-आसङ्घइ । सम्भावइ ॥ उत्थङ्घइ । उल्लालइ । गुलगुञ्छइ । उप्पेलइ । उन्नावइ । उत्पूर्वस्य

Aho ! Shrutgyanam

नमे ण्यन्तस्यैते प्रयोगाः ॥

पट्ठवइ । पेण्डवइ । पट्ठावइ । प्रस्थापयतीत्यर्थः ।

अर्पयतेः—अल्लिवइ । चच्चुप्पइ । पणामइ । अप्पेइ ॥ कमेः प्रयोगौ ॥ णिहुवइ-कामेइ । इति ॥

प्रकाशयतेः—णुव्वइ । पयासेइ ॥ विच्छोलइ । कम्पेइ । कम्पयतीत्यर्थः ॥ आरुहे ण्यन्तस्य—वलइ । आरोवेइ ॥ रञ्जे ण्यन्तस्य–रावेइ । रञ्जेइ ॥ घटयतेः-परिवाडेइ । घडेइ ॥ रचयतेः—उग्गहइ । अवहइ । विडविड्डइ । रयइ ॥ सम्पूर्वस्य तस्य—उवहत्थइ । सारवइ । समारइ । केलायइ । समारयइ ॥

अफुण्णादयः शब्दा क्तेन सह निपात्यन्ते तद्यथा—

अफुण्णो । आक्रान्तः ॥ उक्कोसं । उत्कृष्टम् ॥ फुडं । स्पष्टम ॥ वोलीणो । अतिक्रान्तः ॥ लुग्गो । रुग्णाः ॥ विढत्तं । वेढत्तं । अर्जितम् ॥ निमिअं । स्थापितम ॥ चक्खिअं । आस्वादितम् ॥ हीसमणं । हेषितम् ॥ इत्यादि ॥

धातवो ऽर्थान्तरेऽपि ॥ २५९ ॥

उक्तादर्था दर्थान्तरेऽपि धातवो वर्तन्ते ॥ वलिः प्राणने पठितः, खादनेऽपि वर्तते । वलइ । खादति, प्राणनं करोति वा ॥ एवम् कलिः संख्याने, सज्ञानेऽपि । कलइ । जानाति, संख्यानं करोति वा ॥ रिगि गतौ, प्रवेशेऽपि । रिगइ । (रिग्गइ, रिंगइ) प्रविशति, गच्छति वा । काङ्क्षते वम्फ आदेशः प्राकृते । वम्फइ । अस्यार्थः । इच्छति, (पृच्छति) खादति वा । फक्कते स्थक्क आदेशः । थक्कइ । नीचां गतिं करोति, विलम्बयति वा ॥ विलप्युपालम्भ्यो झङ्ख आदेशः । झङ्खइ । विलपति, उपालभते, भाषते वा ॥ एवं पडिवालइ । प्रतीक्षते,रक्षति वा ॥ केचित् कैश्चिदुपसर्गैं र्नित्यम् । हरइ । युध्यते ॥ संहरइ । संवृणोति ॥ अणुहरइ । सदृशीभवति ॥ नीहरइ । पुरीषोत्सर्गं करोति ॥ विहरइ । क्रीडति ॥ आहारइ । खादति ॥ पडिहरइ । पुनः पूरयति ॥ परिहरइ । त्यजति ॥ उवहरइ । पूजयति ॥ वाहरइ । आव्हयति ॥ पवसइ । देशान्तरं गच्छति ॥ उच्चुपइ । चटति ॥ उल्लुहइ । निःसरति ॥ इति(१) ॥ प्रयोऽत्र हेमानुसार्यादेशाना मुल्लेखः ॥

(१) अत्र सूत्र संख्या हेमचन्द्राभिधस्य शब्दानुशासनस्य परिशिष्टरूपस्याऽष्टमाध्यायस्य चतुर्थ पदान्तर्गताऽवगन्तव्या ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ नवमः परिच्छेदः ।

निपाताः ॥ १ ॥

अधिकारोऽयम् । वक्ष्यमाणा निपातसंज्ञका वेदितव्याः । संस्कृतानुसारेण निपातकार्यं वक्तव्यम् ॥ १ ॥

हुं दानपृच्छानिर्धारणेषु ॥ २ ॥

हुं इत्ययं शब्दो दानपृच्छानिर्धारणेष्वर्थेषु निपातसंज्ञो भवति। दाने यथा, हुं गेण्ह अप्पणो जीअं । (गेण्ह ८-१९ सू० स्प० अप्पणो ५-५५ सू० स्प० जीअं २-२ । ४-९ सू० स्प० शे० सुगमं) पृच्छायाम् हुं, कधेहि साहुसु सब्भावं । (कधेहि इति १२-३ शौरसेन्यांथ=ध ७-१८ विध्यादावेकत्वे सिप्=सु-कृते(१)७-३४ लादेशे सति एत्वं । मध्यमे २-२७ध्=द् २-४३ ष्=स् । अन्त्ये ३-२ दलोपः ३-५० भद्वि० ३-५१ भ्=व् प्राय इति २-२ वलोपोन ५-३ अमोऽकारलोपः ४-१२ मवि०) निर्धारणे, हुं हुवसु तुण्हिक्को (८-१ भू=हुव ७-१८ सिप्=सु । अन्यः ३-५८ सू० द्रष्टव्यः) हुं गृहाणात्मनो जीवम् । हुं कथय साधुषु सद्भावम् । हुं भव तूष्णीकः ॥ २ ॥

विअ वेअ अवधारणे(२) ॥ ३ ॥

विअ, वेअ इत्येताववधारणे निपातसंज्ञौ भवतः। एवं विअ। एवं वेअ । (एवं संस्कृतसमः शे० स्प०) एवमेव ॥ ३ ॥

---

(१) "सोर्हिर्वा" ८ । ३ । १७४ हेम० सू० सोर्हिः ।

(२) विअ वेअ चिअ । हं चिअ, तुमं चिअ । अहमेव-त्वमेव । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

ओ सूचनापश्चात्तापविकल्पेषु ॥ ४ ॥

ओ इत्ययं शब्दः सूचनापश्चात्तापविकल्पेषु निपातसंज्ञो भवति। ओ चिरअसि। (२–२ यलोप ७–२ सि) गाथासु द्रष्टव्यः ॥ ४ ॥

इरकिरकिला अनिश्चिताख्याने ॥ ५ ॥

इर, किर, किल इत्येते शब्दा अनिश्चिताख्याने निपातसंज्ञका भवन्ति। पेक्ख इर तेण हदो (आदिमः ६–५१ सू० द्रष्टव्यः। तेण ४–६ तदोन्यलोपः ५–१२ एत्वं ५–४ टा=ण(१)। अन्त्यः ४–६ हनोऽन्त्यलोपः १२–३ त=द् ५–१ ओ) अज्ज किर तेण ववसिओ। (व्यवसित इत्यत्र ३–२ यूलोपः प्राय इति २–२ वलोपो न २–२ तलोपः ५–१ ओ शे० स्प०) अअं किल सिविणओ (२–२ यलोप ४–१२ मविं शे० स्प०। अन्त्यं १–३ सू० द्रष्टव्यं)। प्रेक्षस्व किल तेन हतः। अद्य किल तेन व्यवसितः। अयं किल स्वप्नः ॥ ५ ॥

हुं क्खु निश्चयवितर्कसम्भावनेषु ॥ ६ ॥

हुं, क्खु इत्येतौ निश्चयवितर्कसम्भावनेषु निपातसंज्ञकौ भवतः। हुं रक्खसो। (हुं स्प० ३–२९ क्ष=ख ३–५० खद्वि० ३–५१ ख्=क् ४–१ ह्रस्वः ५–१ ओ) गुरुओ क्खु भारो (५–१ ओत्वम् अन्यत्स्पष्टम्)। हुं राक्षसः। गुरुः खलु भारः ॥ ६ ॥

णवरः केवले ॥ ७ ॥

णवरः इत्ययं शब्दः केवलेऽर्थे निपातसंज्ञो भवति। णवर अण्णं (अन्न शब्दस्य २–४२ न्=ण ४–१२ मविं०(२) ॥ ७ ॥

---

(१) तेनेत्यत्र २–४२ इति णत्व मात्रमिति केचित्।

(२) केवलमन्नमित्यर्थः। केचित्तु अन्य, शब्दस्य ३–२ यलोपः २–४२ न=ण ३–५० णद्वि० शे० पू०)

Aho ! Shrutgyanam

आनन्तर्ये णवरि ॥ ८ ॥

णवरि इत्ययं शब्द आनन्तर्ये निपातसंज्ञो भवति । णवरि (स्पष्टं) ॥ ८ ॥

किणो प्रश्ने(१) ॥ ९ ॥

किणो इत्ययं शब्दः प्रश्ने निपातसंज्ञो भवति । किणो धुव्वसि (८-५७ य=व्व ७-२ थास्=सि) किणो हससि । (किणो स्प० ७-२ सिप्=सि) किन्नु धूयसे । किन्तु हससि ॥ ९ ॥

अव्वो(२) दुःखसूचनासंभावनेषु ॥ १० ॥

अव्वो इत्ययं शब्दो दुःख सूचनासम्भावनेषु निपातसंज्ञो भवति । दुःखे, अव्वो कज्जलरसरंजिएहिं अच्छीहिं(३) (अव्वो स्प० कज्जलरसेति संस्कृतसमः शब्दः-रंजितेत्यस्य २-२ तलोपः ५-१२ अ=ए ५-५ भिस्=हिं । अन्त्ये २-३० क्ष=छ ३-५० क्ष द्वि० ३-५१ च्=छ् ४-२० स्त्रीत्वेई ५-५ भिस्=हिं) । सूचनायाम्, अव्वो अवरं विअ । (२-२५ प=व ५-३ अमोऽकारलोपः । ४-१२ मवि० शे० ९-३ सू० स्प०) सम्भावने, अव्वो णमिव अत्तुं । (३-१ दलोपः ३-५० तद्वि० ४-१२ मवि०) अहो कज्जलरसरञ्जिताभ्यामक्षिभ्याम् । अहो अपरमिव । अहो एनमिवात्तुम् ॥ १० ॥

अलाहि निवारणे ॥ ११ ॥

अलाहि इत्ययं शब्दो निवारणे निपातसंज्ञो भवति । अलाहि कलहलेसेण । अलाहि कलहबन्धेण । (संस्कृतसमौ-

---

(१) किणो कीस किमु परिप्रश्ने । का० पा० .

(२) अद्यो अव्वो, वो । अथो दुःखसूचना भाषणेषु । का० पा०

(३) प्राकृते द्विवचनाभावात् वहुवचनम् ।

Aho ! Shrutgyanam

कलहो बन्धश्च २-४३ शू=स् ५-४ टा=ण ५-१२ ए शे०१५०)
अलं कलहलेशेन। अलं कलहबन्धेन ॥ ११ ॥

अइ वलेसंभाषणे ॥ १२ ॥

अइ, वले इत्येतौ शब्दौ निपातसञ्ज्ञकौ भवतः। अइ मूलं पसुणइ (अइ स्प० मूलं संकृतसमः शे० ३-३ रलोपः २-४३ श, ष्=स ३-२ यलोपः ८-४६ उदीर्घः ७-३१ ति=इ) वले किं कलेसि। (वलेस्प० किं संस्कृतसमः शे) २-२ यलोपः ७-२ सिप्=सि ७-३४ एत्वं=कले शे० स्प०) अवले अपि मूलं प्रशुण्वाति। वले किं कलयसि अवले॥ १२ ॥

णवि वैपरीत्ये ॥ १३ ॥

णवि इत्ययं शब्दो वैपरीत्ये निपातसंज्ञो भवति। णवि तह पहसइ वाला। (तह १-१० सू० स्प० ३-३ रलोपः ७-१ ति=इ वाला इति संस्कृतसमः) विपरीतं तथा प्रहसति वाला ॥ १३ ॥

सू कुत्सायाम् ॥ १४ ॥

सू इत्ययं शब्दः कुत्सायां निपातसंज्ञो भवति। सू सिविणो। (सिविणो १-३ सू० स्प०) धिक् स्वप्नः ॥ १४ ॥

रे अरे हिरे संभाषणरतिकलहाक्षेपेषु ॥ १५ ॥

रे, अरे, हिरे इत्येते शब्दाः सम्भाषण, रति, कलहा, क्षेपेषु निपातसंज्ञा भवन्ति यथासंख्यम्। रे मा करेहि। णाओसि अरे। दिट्ठोसि हिरे (रेस्प० संस्कृतसमो मा शब्द, १२-१५ कृञ्=कर ७-३४ एत्वं १२-२७ [illegible]पदं, संस्कृतवत् लोटः से हिः। (२-४२ नू=ण २-२ [illegible] ७-६ स्प० सि, । अरे स्प०) (१-१८ ऋ=इ ३-१० ष्ट=ठ ३-५० ठाद्वि० ३-५१ ठ-ट ५-१ ओ)। रे मा कुरुष्व। नागोसि अरे। दृष्टोऽसि हिरे ॥१५॥

Aho ! Shrutgyanam

म्मिवमिवविआ इवार्थे ॥ १६ ॥

म्मिव, मिव, विअ, इत्येते शब्दा इवार्थे निपातसञ्ज्ञका भवन्ति । गअणं म्मिव—गअणं मिव—गअणं विअ कसणं (२-२ गलोपः २-४२ न्=ण् ५-३० बिं०) अन्त्ये ३-६१ वर्णे नित्यं विप्रकर्षः । पूर्वस्य तत्स्वरता च) । गगनमिव कृष्णम् ॥ १६ ॥

अज्ज आमन्त्रणे ॥ १७ ॥

अज्ज इत्ययं शब्द आमन्त्रणे निपात्यते । अज्ज महाणुभाव किं करेसि (अज्ज स्प० । २-४२ न्=ण २-२७ भ=ह् प्राय इति २-२ वलोपो न) (७-२ सि, शेषं ९-१५-सू० स्पष्टम्) । अहो महानुभाव किं करोषि ॥ १७ ॥

शेषः संस्कृतात् ॥ १८ ॥

उक्तादन्यः शेषः । प्रत्ययसमासतद्धितलिङ्गवर्णादिविधिः शेषः संस्कृतादवगन्तव्यः । इह ग्रन्थविस्तरभयान्न दर्शितः ॥ १८ ॥

इति प्राकृतप्रकाशे निपातसंज्ञाविधिर्नाम
नवमः परिच्छेदः ॥

—:०:—

अथ दशमः परिच्छेदः ।

पैशाची ॥ १ ॥

पिशाचानां भाषा पैशाची, सा च लक्ष्यलक्षणाभ्यां स्फुटीक्रियते(१) ॥ १ ॥

प्रकृतिः शौरसेनी ॥ २ ॥

अस्याः पैशाच्याः प्रकृतिः शौरसेनी । स्थितायां शौरसेन्यां

Aho ! Shrutgyanam

पैशाचीलक्षणं प्रवर्त्तयितव्यम्(१) ॥ २ ॥

वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोरयुजोरनाद्योराद्यौ(२) ॥ ३ ॥

वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोर्वर्णयोरयुक्तयोरनादौ वर्तमानयोः स्थाने आद्यौ प्रथमद्वितीयौ भवतः। गकनं ९–३० सोर्बिं० २–२ सूत्र-बाधः एवं अग्रेऽपि यथास्थानेषु पूर्वसूत्राणां बाधोज्ञेयः।) मेखो। राचा। णिच्छरो। वटिसं। दसवतनो। माथवो। गोविंतो केसवो। सरफसं। सलफो। (णिज्झरो ३–५१ सू० स्प० अत्र ज्=च्, झ्=छ। वडिसं २–२३ सू० स्प० अत्र ड=ट शे० स्प०। दसवतन केसव सलफ इत्येतेषु २–४३ श=स अन्यत्सर्वं स्पष्टम्। विभक्तयः पञ्चमपरिच्छेदस्थ सूत्रैर्यथालक्षणम् साधनीयाः। शे० स्प०) अयुजोरिति किम्। संगामो ३–३ रलोपः ३–५० गद्वि० ५–१ ओ=संग्रामः)वग्घो, इत्यादि। (३–२ यलोपः ३–३ रलोपः ३–५० घद्वि० ३–५१ घ्=ग् ४–१ इति ह्रस्वः ५–१ ओ) अनादाविति किम्। गमनं (स्प०) इत्यादि। गगनम्, मेघः, राजा, निर्झरः, बडिशम्, दशवदनः, माधवः, गोविन्दः, केशवः, सरभसम्, शलभः, संग्रामः, व्याघ्रः, गमनम् ॥ ३ ॥

इवस्य पिवः ॥ ४ ॥

इवशब्दस्य स्थाने पिव इत्ययमादेशो भवति। कमलं पि-

---

(१) इति वेदितव्यमिति शेषः।

(२) केचित् 'अनादा वयुजः' इति विभज्य अनादौ वर्तमानाः वर्णाः सर्वअसयुक्ताः प्रयोक्तव्याः। कसणो। पणयं ॥ कृष्णः। पणयम् ॥ ततः

'तथयो र्दधो' ॥ (उक्तोऽर्थः) इति योगविभागेनव्याचख्युः। का० पा० ॥

Aho ! Shrutgyanam

व मुखं (कमलं, मुखं संस्कृतसमौशब्दौशे० स्प०) ॥ ४ ॥

णो नः ॥ ५ ॥

णकारस्य स्थाने न इत्ययमादेशो भवति। तलुनी। (स्प०) तरुणी(१) ॥ ५ ॥

ष्टस्य सटः ॥ ६ ॥

ष्ट इत्यस्य स्थाने सट इत्ययमादेशो भवति। कसटं मम-वट्टइ (५–३० विं०। मम तत्समः। ३–२२ र्तस्य टः ३–५० टद्वि० ७–१ त=इ) कष्टं मम वर्तते ॥ ६ ॥

स्नस्य सनः ॥ ७ ॥

स्न इत्यस्य स्थाने सन इत्ययमादेशो भवति। सनानं। स-नेहो (स्प० पू० विभक्तिः साध्या)। स्नानम्। स्नेहः ॥ ७ ॥

र्यस्य रिअः ॥ ८ ॥

र्य इत्यस्य स्थाने रिअ इत्ययमादेशो भवति। भारिआ। भार्या ॥ ८ ॥

ज्ञस्य ञ्ञः ॥ ९ ॥

ज्ञ इत्यस्य स्थाने ञ्ञ इत्ययमादेशो भवति। विञ्ञातो (५–१ ओ शे० स्प०) सव्वञ्ञो। (३–३ रलोपः ३–५०वद्वि० शे० स्प० पू०) विज्ञातः। सर्वज्ञः ॥ ९ ॥

कन्यायां न्यस्य ॥ १० ॥

कन्याशब्दे न्यस्य स्थाने ञ्ञ इत्ययमादेशो भवति। कञ्ञा (स्पष्टं) ॥ १० ॥

---

(१) र-सो ल-शौ ॥ ८ । ४ । २८८

मागध्यां रेफस्य दन्त्यशकारस्य च स्थाने यथासंख्यं लकारस्तालव्यशकारश्च भवति ॥ हे०। बाहुलकाद् पैशाच्यामपि भवति।

Aho ! Shrutgyanam

ज्ज च्च ॥ ११ ॥

ज्जशब्दस्य शौरसेनीसाधितस्य च्च इत्ययमादेशो भवति । कच्चं । (१)कार्यम् ॥ ११ ॥

राज्ञो राचि टाङसिङस्ङिषु वा ॥ १२ ॥

राजन्शब्दस्य टा, ङसि, ङस्, ङि, इत्येतेषु परतो राचि इत्ययमादेशो वा भवति। राचिना (५-४१टा=णा कृते१०-५णा=ना(२)शे० स्प०) रञ्जा (राज्ञा अत्र १०-९ ज्ञा=ञ्जा ह्रस्वः संयोग इति ह्रस्वः एवमग्रेऽपि) । राचिनो (५-३८ ङसि, ङस्=णो(३) १०-५ णो=नो) रञ्जो राचिनि, रञ्जि । (राचि=ङि ५-३८ ङि णो शे० पू०) राज्ञः । एतेष्विति किम् । राचा । राचानं । रञ्जो (राजा इत्ययुक्तस्य १०-३ सू० जा=चा एवं राजानं=राचानं । राज्ञः १०-९ ज्ञ=ञ्ज ॥ १२ ॥

क्त्वस्तूनं ॥ १३ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने तूनं इत्ययमादेशो भवति ॥ १३ ॥

दातूनं (दाधातोः क्त्वास्थाने तूनमादेशः) कातूनं (८-१७ कृञ्=का शे० पू०) घेत्तूनं (८-१६ग्रह=घेत शे०स्प०)

हृदयस्य हितअकं ॥ १४ ॥

इति वररुचिकृते प्राकृतसूत्रेषु दशमः परिच्छेदः ॥

हृदयशब्दस्य हितअकं निपात्यते । हितअकं हरसि मे तलुनि (१-२७ऋ=अ ७-२ थास्, सिप्=सि । मे, तत्समः तलुनि

---

(१) ३-१७ प्रतिपादितस्येत्यर्थः तत्र ज्ज इति पाठान्तरं दृश्यते । प्राकृतस्य शौरसेनी व्यवहारस्य प्रायशो दर्शनाच्च ॥

(२) लक्षणि कस्याऽपीति साम्प्रदायिकाः ।

(३) तत्र ङस् ग्रहणान्ङसे रपि ग्रहणं ।

Aho ! Shrutgyanam

५-२९ ह्रस्वः शे० १०-९ सू० ३१०) ॥ १४ ॥

इति भामहकृते प्राकृतप्रकाशे पैशाचिको नाम
दशमः परिच्छेदः(१) ॥

(१) ज्ञोञ्ञः पैशाच्याम् ८ । ४ । ३०३ ॥

अभि मञ्ञू । पुञ्ञकम्मो । पुञ्ञाहं । कञ्ञका ।

लोळः ॥ ८ । ४ । ३०८ ॥ लकारस्य ळकार एव । सीळं । कुळं । सलिलं ॥ नकगजादिषट्शम्यन्तसूत्रोक्तम् ८ । ४ । ३२४ । इति सूत्रणप्रायो द्वितीय परिच्छेदस्थ कार्याभावोऽत्रज्ञेयः । यथा सुबुसा । क्वचित्तृतीयस्यापि । तेन भगवती पव्वतीत्यादौ न तलोपः । पताका । वेतसो इत्याद्यपि चासिद्ध्यति । तथा च मकरकेतू—सगरपुत्तवचनं । विजयसेनेनलपितमित्यादिसङ्गच्छते । शषोः सस्तु भवति "शषोः सः" ८ । ४ । ३०९ । इति पुनः सूत्राऽऽरम्भात् ।

हृदयस्य पः ८ । ४ । ३१० । हितपकं । किंपि किंपि हितपके अत्थं चिन्तयमानी ।

टोस्तु र्वा ८ । ४ । ३११ । कुतुम्बकं—कुटुम्बकं ।

क्त्वो तूनः ८ । ४ । ३१२ । (?) तद्धून तथून ... नद्धू-नत्थून । तद्धून तत्थून-र्य-स्न-ष्टां रिय्-सिन-सटाः क्वचित् । ८ । ४ । ३१४ ॥ यथा संख्यम् । भार्या । भारिया ॥ स्नातम् । सिनातम् ॥ कष्टम् कसटम् ॥ क्वचिदिति किम् सुज्जो—सुनुसा—तिट्ठो इत्यादि । सूर्यः । स्नुषा । दिष्टम् ।

यादृशादे र्दु स्तिः—८ । ४ । ३१७—यातिसो-तातिसो-केतिसो-एतिसो-युम्मातिसो-अम्मातिसो । यादृशः । तादृशः । कीदृशः । एतादृशः । युस्मादृशः । अस्मादृशः । अन्यादृशस्य तु अञ्ञा दृशो इति शेषं शौरसेनीवद्ववगन्तव्यम् ।

हेमस्तु पैशाची, शुद्ध चूलिका भेदेन द्विधा भित्त्वा

वर्गाणा मिति प्रतिपादितं कार्यं चूलिका विषयकं मन्यते । पैशाच्यां दकारस्य तकार विधानार्थं 'तदोस्तः' ८ । ४ । ३०७ सूत्र मेव पठितवान्, मतन परवसो । मदन परवशः । इति । अत एव-पैशाच्यां सगर पुत्तवचनं । भगवती त्यायुदाजहार । तत्र रस्य लोवेति भेद-मेकमित्थ मुदाजहार । 'उच्छलन्ति समुद्दा सइला निपतन्ति तं हलं नमथ' इति । अन्यत् पूर्ववत् ।

Aho ! Shrutgyanam

अथैकादशः परिच्छेदः ।

मागधी ॥ १ ॥

मागधानां भाषा मागधी, लक्ष्यलक्षणाभ्यां स्फुटीक्रियते ॥१॥

प्रकृतिः शौरसेनी ॥ २ ॥

अस्या मागध्याः प्रकृतिः शौरसेनी(१) इति वेदितव्यम् ॥२॥

षसोः शः ॥ ३ ॥

षकारसकारयोः स्थाने शो भवति । माशे । विलाशे। (स्प०) माषः । विलासः ॥ ३ ॥

जो यः ॥ ४ ॥

जकारस्य यकारो भवति । यायदे । (प्रायो ग्रहणात् २-२ यलोपो न १२-३ त=द्) जायते ॥ ४ ॥

चवर्गस्य स्पष्टता तथोच्चारणः ॥ ५ ॥

चवर्गो यथा स्पष्टस्तथोच्चारणो भवति । पलिचए(रसोर्लशौ ८।४।२८८ हेम० सू० र्=ल २-२ यलोप एत्वं पूर्ववत्) गहिदच्छले (२-२७ ऋ=अ १२-३ त=द शे० पू०) वियले (११-४ ज=य शे० पू०) णिज्झले । एत्वं पूर्ववत शे० ३-५१ सू० स्प०) परिचयः । गृहीतच्छलः । विजलः । निर्झरः ॥ ५ ॥

हृदयस्य हडक्कः ॥ ६ ॥

हृदयस्य स्थाने हडक्को भवति । हडक्के आलले मम (स्पष्ट०) हृदये आदरो मम ॥ ६ ॥

र्यर्जयोर्य्यः(२) ॥ ७ ॥

---

(१) प्राकृतस्याप्यत्र ग्रहणं वेदितव्यम् ।

(२) कचिद् ज्ज, इति पाठ स्तन्मते । कज्जं दुज्जनो इति ।

Aho ! Shrutgyanam

र्यकारर्जकारयोः स्थाने य्यो भवति । कय्ये (संयोगेह्रस्वः ११-१० एत्वम्) दुय्यणे । (२-४२ नू=ण पूर्ववत् एत्वम्) कार्यम् । दुर्जनः ॥ ७ ॥

क्षस्य स्कः ॥ ८ ॥

क्षस्य स्थाने स्ककारो भवति । लस्कशे । दस्के (पक्षिवएषवत् र=ल ११-३ स=श एत्वं मासेवत् एवं दस्के) । राक्षसः । दक्षः ॥ ८ ॥

अस्मदः सौ हके हगे अहके ॥ ९ ॥

अस्मदः स्थाने सौ परतो हके, हगे, अहके इत्येत आदेशा भवन्ति । हके, हगे, अहके भणामि । (स्प०) अहं भणामि ॥ ९ ॥

अत इदेतौ लुक् च(२) ॥ १० ॥

साविस्यनुवर्तते अकारान्ताच्छब्दात्सौ परत इकारैकारो भवतः पक्षे लोपश्च । एशि (एतत्सूत्रेण इकारैकारौ पक्षे लुप्यते ११-३ ष=श-) लाआ (राजा इत्यत्र रसोर्लशौ इति हेम० व्याकारणानुसारं र=ल शे० ५-३६ सू० स्प०) एशे (एशिवत् शकारः शे० स्प०) पुलिशे (लाआवत् लकारः शे० पू०) । एष राजा । एष पुरुषः ॥ १० ॥

क्तान्तादुश्च ॥ ११ ॥

क्तप्रत्ययान्ताच्छब्दात्सौ परतः उकारश्च भवति । चकाराद् इदेतौ लुक् च । हशिदु, हशिदि, हशिद, । (शकारः पूर्ववत् शे० स्प० पू०) हसितः ॥ ११ ॥

ङसो हो वा दीर्घत्वं च ॥ १२ ॥

ङसः षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने हकारादेशो वा भवति तत्संयोगे च दीर्घत्वम् । पुलिशाह (पुलिशवत् र=ल शकारश्च शे० स्प०)

Aho ! Shrutgyanam

धणे (२-४२ नू=णू एत्वं माशेवत्) [पक्षे] पुलिशश्श धणे। (५-८ ङस्=स्स ११-३ स्स=श्श शे० पू०) पुरुषस्य धनम् ॥ १२ ॥

अदीर्घः संबुद्धौ ॥ १३ ॥

अदन्तादित्येव अदन्ताच्छब्दादकारो दीर्घो भवतिसंबुद्धौ। पुलिशा आगच्छ। माणुशा (२-४२ नू-ण ११-३ ष=श ५-२ जसो लोपः) आगच्छ। संबुद्धाविति किम्। वह्मणश्श धणे। (५-४७ सू०स्प०शे० पुलिशश्शवत्)। ब्राह्मणस्य धनम् ॥१३॥

चिट्ठस्य चिष्ठः ॥ १४ ॥

चिट्ठस्य(१) स्थाने चिष्ठ इत्ययमादेशो भवति। पुलिशे चिष्ठदि। (पुलिशे व्याख्यातः १२-१३ चिट्ठ=चिष्ठ १२-३ ति=दि) पुरुषास्तिष्ठति ॥ १४ ॥

कृञ्मृङ्गमां क्तस्य डः ॥ १५ ॥

डुकृञ् करणे, मृङ् प्राणत्यागे, गम्लृ गतौ एतेषां क्तप्रत्ययस्य स्थाने डकारो भवति। कडे। मडे। गडे। (१-२७ ऋ=अ एत्वं सोर्लोपश्च माशेवत् शे० स्प०) कृतः। मृतः। गतः ॥१५॥

क्त्वो दाणिः ॥ १६ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने दाणि इत्ययमदेशो भवति। शहिदाणि गडे। (१-३ स=श ७-३३ इत्वं शे० स्प०। कारिदाणि (१२-१५ कृञ्=कर इकारः पू० शे० स्प०) आअडे। (२-२ गलोपः शे० पू०) सोढ्वा गतः। कृत्वा ऽऽगतः ॥ १६ ॥

शृगालशब्दस्य शिआलाशिआलकाः ॥ १७ ॥

इत्येकादशः परिच्छेदः ॥

---

(१) "स्थाश्चिट्ठ" इति साधितस्येत्यर्थः ॥

Aho ! Shrutgyanam

शृगालशब्दस्य स्थाने शिआलादय आदेशा भवन्ति। शिआले आअच्छदि । शिआलके आअच्छदि (आङ्पूर्वकगमेः २–६ गलोपः १२ । ५१०) शृगाल आगच्छति ॥ १७ ॥

इति प्राकृतप्रकाशे मागध्याख्य एकादशः परिच्छेदः(१) ॥

---

(१) अत एत् सौ पुंसि मागध्याम् ८ । ४ । २८७ ॥

मागध्यां भाषायां सौ परे अकारस्य एकारो भवति पुंलिङ्गे । एष मेषः । एशे मेशे । एशे पुलिशे करोमि भदन्त । करेमि भन्ते ॥ अत इति किम् । णिही । कली । गिली ॥ पुंसीतिकिम् ॥ जलम् ॥ [रसोर्लशौ] र । नले । कले ॥ स । दंशे । उभयोः ॥ शालशे । पुलिशे ।

स–षोः संयोगे सोऽग्रीष्मे ८ । ४ । २८९ ॥

मागध्यां सकार षकारयोः संयोगे वर्तमानयोः सो भवति ग्रीष्म शब्दे तु न भवति ॥ उर्ध्वलोपाद्यपवादः ॥ स, पस्खलदि हस्ती । बुहस्पदी । मस्कली । ष, सुस्कदालु । कस्टं । विस्नु । शस्प कवले । उस्मा । निस्फल । धनुस्खण्डं ॥ अग्रीष्म इति किम् । गिम्ह वाशले ॥ ट्टष्ठयोः स्टः ८ । ४ । २९० ॥ द्विरुक्तस्य टस्य षकाराक्रान्तस्य च ठकारस्य मागध्यां सकाराक्रान्तः स्टकारो भवति ॥ ट्ट, भस्टालिका । भस्टिणी ॥ ष्ठ, शुस्टु कदं । कोस्टागालं ॥ स्थ, र्थयोस्तः ८ । ४ २९१ ॥ स्थ, र्थ इत्येतयोः स्थाने मागध्यां सकाराक्रान्त स्तो भवति । स्थ । उवस्तिदे । शुस्तिदे ॥ र्थ । अस्त वदी । शस्त वाहे ॥

जद्यर्या यः ८ । ४ । २९२ मागध्यां ज, द्य, र्यां स्थाने यो भवति ॥ ज । यणवदे ॥ द्य । मय्यं । अय्य किल विय्या हले आगदे ॥ यस्य यत्व विधानम् आदेर्योजः ८ । १ । २४५ इति बाधनार्थम् ॥

व्रजोञः ॥ ८ । ४ । २९४ ॥

मागध्यां व्रजेर्जकारस्य ञो भवति । यापवादः ॥ वञति ॥

छस्यश्चोनादौ ॥ ८ । ४ । २९५ ॥

मागध्या मनादौ वर्तमानस्य छस्य तालव्यशकाराक्रान्तश्चो भवति ॥ गश्च । पिश्चिले । पुश्चदि ॥ लाक्षणिकस्यापि । आपन्नवत्सलः । अवन्नवश्चले ॥ तिर्यक्, तिरिच्छि । तिरिश्चि ॥ अनादाविति

Aho ! Shrutgyanam

अथ द्वादशः परिच्छेदः ।

शौरसेनी ॥१॥

अस्मिन् परिच्छेदे सर्वत्र वृत्त्यनुलब्धिर्वर्तते । तत्र मया यथामति भामहानुसृतांशैली मवलम्ब्य वृत्तिर्वितन्यते ।

शूरसेनानां भाषा शौरसेनी । सा च लक्ष्य लक्षणाभ्यां स्फुटी क्रियते । इति वेदितव्यम । ?

अधिकार सूत्र मेतदा परिच्छेद समाप्तेः ॥ १ ॥

प्रकृतिः संस्कृतम् ॥ २ ॥

शौरसेन्यां ये शब्दा स्तेषां प्रकृतिः संस्कृतम् ॥ २ ॥

अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ ॥ ३(१) ॥

किम् । छाले ॥ स्कः पेक्षा चक्षोः ८ । ४ । २९७ मागध्यां प्रेक्षे राचक्षेश्च क्षस्य सकारा क्रान्तः को भवति ॥ जिह्वामूलीयापवादः । पेस्कदि । आचस्कदि ॥

अवर्णा द्वा ङसो डहः ॥ ८ । ४ । २९९ ॥

मागध्या मवर्णात्परस्य ङसो डित् आह इत्यादेशो वा भवति ॥ हगे न एलिशाह कम्माह काली ॥ पक्षे हिडिम्बाए घडुक्कय शोकेण उवशमदि ॥

आमो डाहँ वा ८ । ४ । ३००॥

मागध्या मवर्णा त्परस्य आमोऽनुनासिकान्तोडित् आहादेशो वा भवति ॥ शय्यणाँह सुहं । पक्षे । नलिन्दाणं । व्यात्ययात्प्राकृतेऽपि ताहँ तुम्हाहँ । अम्हाहँ । सरिआह । कम्माहं ॥

अहँ वयमोर्हगे ८ । ४ । ३०१

मागध्या महं वयमोः स्थाने हगे इत्यादेशो भवति ॥ हगे शक्का वदालतिस्त णिवाशी धीवले । हगे शंपत्ता ॥ शेषं शौरसेनीवत् ॥ इति हेमः ।

---

(१) अधिकारो ऽयम । अत्र केचिद् "अनादावयुजः" अनादौ वर्त्तमाना वर्णाः सर्वे असंयुक्ताः प्रयोक्तव्याः ॥ कसणो । पणयं । कृष्णः । पण्यम् । इति । ततः "तथयोर्दधौ" इति च छेदेन व्याख्यातवन्तः । का० पा०

Aho ! Shrutgyanam

अनादौ वर्तमानयो रसंयुक्तयो स्तथयो र्दधौ भवतः । तस्य, मारुदिना मन्तिदो (त=द् शो० संस्कृतवत्–३–३ रलोपः ५–१ ओ) थस्य, करेध (१२–१५कृञ्=कर७–३४ एत्वं) तथा स्प०) असंयुक्तयोरित्येव । तेन अज्जउत्त–हला सउन्तले इत्यादौ न। अनादाविति किम् । तस्स । मारुतिना मन्त्रितः । कुरुथ । तथा । आर्य्यपुत्र । हला शकुन्तले । तस्य ॥ ३ ॥

व्यापृते डः ॥ ४ ॥

व्यापृतशब्दे तस्य डो भवति । पूर्वसूत्रापवादः । वावडो (३–२ यलोपः २ -१५ प=व ५–१ ओ) व्यापृतः ॥ ४ ॥

पुत्रेपि क्वचित् ॥ ५ ॥

क्वचित् पुत्रशब्दे ऽपि तस्य डो भवति । पुडो–(३–३रलोपः) पक्षे पुत्तो(३–३रलोपः ३–५० तद्वि० ५–१ ओ) ॥ ५ ॥

इ गृध्रसमेषु ॥ ६ ॥

गृध्रसमेषु ऋकारस्य इ भवति । गिद्धो (३–३ रलोपः (३–१ दलोपः–३–५०धद्वि० ३–५१ ध्=द् ५–१ ओ) गृद्धः॥ ६ ॥

ब्रह्मण्यविज्ञयज्ञन्यकानां ण्यज्ञन्यानां ञ्जो वा ॥ ७ ॥

एतेषां ण्य ज्ञ न्याना ञो वा भवति । पैशाच्यां तु नित्यमिति विशेषः ब्रम्हञो (३–३ रलोपः ३–८ ह्मस्य विपर्ययः ५–१ ओ) विञो जञो–कञा, (एते १०–९ । १०–१० सूत्रयोः स्प०) पक्षे–बह्मण्णो–विण्णो, कण्णा ३–४४ सू० द्रष्टव्यम् ॥ ७ ॥

सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोर्णः ॥ ८ ॥

एतयोः संयुक्तस्यान्त्ययो र्णो भवति । सव्वण्णो (३–३ रलोपः ३–३ वणौ द्वि० ५–१ ओ) इंगिअण्णो (२–२ तलोपः शो० पूर्व०) ॥ ८ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्त्व इअः(१) ॥ ९ ॥

क्त्वा इत्यस्य इअ आदेशः । भणिअ । भविअ । (स्पष्टं) भणित्वा । भूत्वा ॥ ९ ॥

कृगमोर्दुअः(२) ॥ १० ॥

आभ्यां परस्य क्त्वाप्रत्ययस्य दुअ इत्यादेशः । कदुअ-कृत्वा । गदुअ=गत्वा (स्प०) ॥ १० ॥

णिर्जश्शसोर्वा क्लीबे स्वरदीर्घश्च ॥ ११ ॥

नपुंसके जश्शसो र्णिर्भवति पूर्वस्य स्वरस्य दीर्घश्च । वणाणि—धणाणि=वनानि धनानि (२—४२ न्=ण शे० स्प०) ॥११॥

भो भुवस्तिङि ॥ १२ ॥

भूधातो र्भो भवति तिङि । भोमि=भवामि ॥ १२ ॥

न लृटि ॥ १३ ॥

भूधातो र्लृटि भो न भवति—भविस्सदि,=भविष्यति ॥ १३ ॥

ददातेर्दे(३) दइस्स लृटि ॥ १४ ॥

---

(१) सिद्ध हेमस्तु "क्त्व इय दूणौ । ८ । ४ । २७१ । भवतः । भोदूण । भविय । हविय । होदूण ॥ पठिय पठिदूण । रमिय—रन्दूण । पक्षे भोत्ता । होता । पठित्ता । रन्ता इति" ।

ता अहं ब्रह्मणो भविअ दाणिं भवन्तं सीसेण पडिअ विण्णेमि । तदहं ब्राह्मणो भूत्वेदानीं भवन्तं शीर्षेण पतित्वाविज्ञापयामि ।

(२) कृगमो ड डुअ । ८ । ४ । २७२ कडुअ । गडुअ पक्षे करिय, करिदूण । गच्छिय, गच्छिदूण ।

(३) अत्र केचित् सूत्रद्वयं लिखितवन्तः । "तदस्तेदे" । तच्छब्दस्य तेदे आदेशो भवति । तेदो गदो । तेदं पुच्छ । तेदेण किदं । इति ततः "ददातेर्देदस्य लृटि" । दा धातोः दकारस्य लृटि परतो दे आदेशो भवति । देस्सदि । इति च । का० पा० ।

Aho ! Shrutgyanam

दाधातो र्दे आदेशो भवति तिङि, दइस्स इति लृटिच ॥ देमि=ददामि दइस्स=दास्यामि ॥ १४ ॥

डुकृञः करः ॥ १५ ॥

डुकृञ् धातोः कर आदेशो भवति । करेमि (६–४१ सू० स्प०) ॥ १५ ॥

स्थाश्चिट्ठः ॥ १६

तिङि । एशे चालुदत्ते रुक्खवाडिआए चिट्ठदि । स्प०) ॥ १६ ॥

स्मरतेः सुमरः ॥ १७ ॥

तिङि, स्मृधातोः केवलं सुमर इत्यादेशो भवति । स्मरते र्भरसुभरौ प्राप्तौ तदेकं भरादेशं निवर्तयति । सुमरइ=स्मरति ८–१४ सू० स्प० ॥ १७ ॥

दृशेः पेक्खः ॥ १८ ॥

दृश् धातोः पेक्खादेशस्तिङि । पेक्ख=पश्य । अरेरे पेक्ख पेक्ख ओहारिओ पवहणो वच्चइ मज्झेण राअमग्गस्स । एदं ताव विआरह कस्स कहिं पवसिओ पवहणोत्ति ॥ १८ ॥

अस्तेरच्छः ॥ १९ ॥

असधातो स्तिङि अच्छादेशो भवाति ॥ १९ ॥

तिपात्थि(१) ॥ २० ॥

अस्ते स्तिपासह त्थि इत्यादेशो । भवाति । अत्थि=अस्ति । पसंसिदुं णात्थि मे वाआविहवो । प्रशंसितुं नास्ति मे वाग्विभवः ॥ २० ॥

---

(१) "मिपि थः" । मिपिपरतः अस् धातोः थ आदेशो भवाति । थम्मि । इति केचित् । का० पा० ॥

भविष्यति मिपा स्सं वा स्वरदीर्घत्वं च ॥ २१ ॥

अस्ते मिपा सह स्सं इत्यादेशः पक्षे-धातोः स्वरदीर्घत्वं च । स्सं, आस्सं=भविष्यामि ॥ २१ ॥

स्त्रियामित्थी ॥ २२ ॥

स्त्री शब्दस्य स्थाने इत्थी इत्यादेशो भवति। इत्थी=स्त्री॥२२॥

एवस्य जेव्व ॥ २३ ॥

स्पष्टम् । जेव्व=एव ॥ २४ ॥

इवस्य विअ ॥ २४ ॥

सुगमम् विअ=इव ॥ २४ ॥

अस्मदो जसा वअं च ॥ २५ ॥

अस्मदो जसासह वअं इत्यादेशः । चकारात् अम्हे ऽपि भवति । वअं । अह्मे=वयम् ॥ २५ ॥

सर्वनाम्नां ङेः सित्वा(१) ॥ २६ ॥

सर्वनाम्नां ङेः सप्तम्येकवचनस्य स्थाने सित्वा इत्यादेशो भवति सव्वसित्वा-इदरसित्वा=सर्वस्मिन्-इतरस्मिन् ॥ २६ ॥

धातोर्भावकर्तृकर्मसु परस्मैपदम् ॥ २७ ॥

शौरसेन्या मेव । भावे-सासाअसि । किदाणि दासीएपुत्ता ? दुभिक्खकाले रुद्दरक्को विअ उद्धकं सासाअसि एसा सा सेत्ति । किमिदानीं दास्याः पुत्र ? दुर्भिक्षकाले वृद्धरङ्कु इव ऊर्द्धकं श्वासायसे, एषा सा सेति । कर्तरि अज वन्दामि=आर्य्य वन्दे

---

(१) केचित् "सर्वनाम्नां ङेः" सर्वनाम शब्दानां चतुर्थ्येकवचनस्य वअं इत्यादेशो भवति । सव्ववअं । कवअं । मह्वअं । तुह्वअं । सर्वस्मै । कस्मै । मह्यम् । तुभ्यम् । ततः "सित्वो धात्वो" रित्यादि इत्याहुः । का० पा० ॥

Aho ! Shrutgyanam

कर्मणि—कामीअदि अदोऽनेन कामीअदि=अतएव काम्यते ॥२७॥

अनन्त्य(१) एच ॥ २८ ॥

अन्त्यभिन्नेवर्णे एत्वं च भवति। करेदि ॥ २८ ॥

मिपो लोटि च ॥ २९ ॥

मिपश्चैत्वं भवति लोटि परतः(२) ॥ २९ ॥

आश्चर्यस्याचरिअं ॥ ३० ॥

आश्चर्य इत्यस्य अचरिअ मित्यादेशः ॥ ३० ॥

अहह, अचरिअं अच्चरिअं।

प्रकृत्या(३) दोलादण्डदशनेषु ॥ ३१ ॥

दोलादिषु प्रकृतिवद्भावो भवति ॥ ३१ ॥

शेषं महाराष्ट्रीवत्(४) ॥ ३२ ॥

अनुक्तं कार्यमहाराष्ट्रीवज्ज्ञेयम्। महाराष्ट्री पदेनात्रप्राकृतस्य ग्रहणं बोध्यम् ॥ ३२ ॥ (इत्यभिनवायां वृत्तौ द्वादशः परिच्छेदः) ॥

इति प्राकृतप्रकाशे मनोरमायां वृत्तौ भामहविरचितायां शौरसेनीलक्षणं नाम द्वादशः परिच्छेदः ॥

समाप्तोयं ग्रन्थः ॥

शुभम्।

---

(१) "अन्त्ये एच" सिब्वोर्धातोर्भावादिषु विहितं यद् परस्मैपदं तदन्त्य वर्णस्य एव भवति ॥ इति केचित्। का० पा० ॥ गच्छदे। गच्छदि। हे०।

(२) "मिपो लोटि च" लोटि परतऽन्त्येमिप एव भवति, अहं करंयामि अहं गच्छामि। अहं करवाणि गच्छानि इति केचित् व्याचख्युः। का० पा० ॥

(३) प्राकृतो—इति प्राकृतः शब्दः प्रयोक्तव्यः इति च व्याचख्युः। का० पा० ॥

(४) पूर्वस्य पुरवः ८।४।२७०

Aho ! Shrutgyanam

शौरसेन्यां पूर्वशब्दस्य पुरव इत्यादेशोवा भवति । अपुरवं नाडयं । अपुरवागदं । पक्षे । अपुव्वं पदं । अपुव्वागदं ॥

दिरिचेचोः ८ । ४ । २७३ ·

त्यादीना माद्यत्रयस्याद्यस्ये चे चौ ८ । ३ । १३९ । इति विहितयोरि चे चोः स्थाने दि भवति चेति निवृत्तम् । नेदि । देदि । भोदि । होदि ॥

अतोदेश्च ८ । ४ । २७४ । अकारात्परयोरिचेचयोः स्थाने देश्चकाराद् दिश्च भवति । अच्छदे । अच्छदि ॥ गच्छदे । गच्छदि ॥ रमदेरमदि ॥ किज्जदे । किज्जदि । अत इति किम् । वसुआदि । नेदि । भोदि ।

भविष्यति स्सिः । ८ । ४ । २७५ शौरसन्यां भविष्यदर्थे विहिते प्रत्यये परे स्सि भवति हिस्साहामपवादः ।

इदानीमोदाणिं । ८ । ४ । २७७ शौरसेन्या मिदानीमः स्थाने दाणिं मित्यादेशो भवति । अनन्तर करणीयं दाणिं आणवेदु अय्यो । व्यत्ययात्प्राकृतेऽपि अन्न दाणिं बोहिं ॥

तस्मात्ता ८ । ४ । २७८ ॥

शौरसेन्यां तस्माच्छब्दस्य ता इत्यादेशो भवति ता जाव पविसामि । ता अलं एदिणा माणेण ॥

मोन्त्याण्णोवेदेतोः ८ । ४ । २७९ । शौरसेन्या मन्त्यान्मकारात्पर इदेतोः परयोर्णकारागमो वा भवति ॥ इकारे, जुत्तं णिमं जुत्तमिणं । सरिसं णिमं । सरिसं मिणं । एकारे, किं णेदं किमेदं । एवं णेदं । एवमेदं ॥ एवार्थेय्येव । २८० । स्पष्टम् । ममय्येव बम्भणस्स ॥

हञ्जे चेट्या हाने । २८१ । शौरसेन्यां चेट्याह्वाने हञ्जे इति निपातः प्रयोक्तव्यः । हञ्जे चतुरिके ॥

हीमाणहे विस्मय निर्वेदे २८२ शौरसेन्यां हीमाणहे इत्ययं निपातो विस्मये निर्वेदेचप्रयोक्तव्यः । विस्मये, हीमाणहे जीवन्त वच्छा मे जणणी ॥ निर्वेदे, हीमाणहे पलिस्सन्ता हगे एदेण नियविधिणो दुव्ववसिदेण ॥

णं नन्वर्थे २८३ ।

शौरसेन्यां नन्वर्थेणमिति निपातः प्रयोक्तव्यः । णं अफलोदया । णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं येव आणत्तं । णं भवं मे अग्गदो चलदि ।

Aho ! Shrutgyanam

आर्षे वाक्यलङ्कारेऽपि दृश्यते। नमोत्थु णं। जयाणं। तयाणं।

अम्महे हर्षे। २८४। शौरसेन्याम् अम्महे निपातो हर्षे प्रयोक्तव्यः। अम्महे एआए सुम्मिला ए सुपलि गढिदो भवं॥ ही ही विदूषकस्य। २८५। शौरसेन्यां ही ही इति निपातो विदूषकाणां हर्षे द्योत्ये प्रयोक्तव्यः॥ ही ही–भो सम्पन्ना मणोरधा पिय वयस्सस्स॥

इह हचो हस्य।

इह शब्द सम्बन्धिनो "मध्यमस्येत्था हचौ" (८। ३। १४३) इति विहितस्य हच श्च हकारस्य शौरसेन्यां धोवाभवति॥ इध। होध। परित्तावध। पक्षे इह। होइ। परित्तायह॥

नवार्योय्यः ८। ४। २६६।

शौरसेन्यां र्यस्य स्थाने य्यो वा भवति॥ अय्य उत्त पय्याकुलीकदम्हि। पक्षे। अज्जो। पज्जा उलो। कज्ज परवसो॥

शेषं प्राकृतवत्॥ २८६॥ इति हेमः,

अथ मार्कण्डेमुनीन्द्रकृत प्राकृत सर्वस्वानुसारि-सौरसेनी विशेषकार्याणि प्रदर्श्यन्ते—

वेदसो, अङ्गारो। इदभावः–वेतसः, अङ्गारः।

वअरं,लवणं,लावण्णं,चउट्ठी,चउद्दही,मऊरो,मह्नुओ ओद्भावः

जधा, तधा, कुमारी। ह्रस्वा भावः

पिण्डं इत्यादि सु एद्भावः॥

किंसुओ केसुओ=किंशुकम्॥

तुण्डम्, इत्यादिषु ओत्वाभावः॥

मोत्ती=मुक्ता। पोक्खरम्–पुष्करम्। पोक्खरिणी=पुष्करिणी॥ उलूहलो। ओद्भावः॥ ईदिसं, कीदिसं। एद्भावः

पुरुषो, इद्भावः॥ जुहुट्ठिरो उवरि अद्भावः वेअणा, देअरो, इद्भावः॥

पओट्ठो, धत्वाभावः॥ देव्वं, अइत्वा ऽभावः। गोरवं गउरवं। पोरवो गोरवो अउत्वा भावः॥ आद्भावः। क्वचिद् भवति पउरवं॥

Aho ! Shrutgyanam

आदिसं तादिसं । मिओ=मृतः ॥ पिदणा=पूतना ॥ रुक्खो=वृक्षः नतु वच्छो

सीअरो (भ) घम्भिआ (म) न । पताकाऽव्यावृत गर्भितेभ्योऽन्यस्य तस्य दः ॥

पावो=पापः । कवन्धो=कबन्धः । (प०, म०, न) अउव्वं, अवरुव्वं अपुर्वम् ॥

अधा । भरधो ॥ सोदामिणी, बहुलं न दलोपः । क्वचित् । हिअअं । ध,भौ वृषदुष्कायौ मधुरं । (उ० मदुरं) रस्य ळः क्वचित् ॥ हळिद्दा, महुरो ।

सहलं=सफलम् । रहरी=सफरी । पासाणो । (प०, ह० न) दस, दह=दश । नाम्नि दसरहो ॥ एआरह । वारह । सावो । (छ० न) ।

ळङ्गलं । लोहलं । लंगूलं णत्वाभावः । अट्ठी=यष्ठी लत्वाभावः ॥ किरातो चत्वाभावः ॥ वुज्झमाणो=वृह्यमाणः । फोडओ=स्फोटकः । खत्वाभावः ॥ ठत्थिदो । ठत्वाभावः ॥ खणो खीरं सरिक्खं छत्वाभावः ॥ सम्मद्दो गद्दहो उत्वाभावः । कुम्हण्डो हत्वाभावः अहिमण्णुअत्वाभावः ॥ जण्णसेणो=यज्ञसेनः । इङ्गिअज्ञो इङ्गितज्ञः ॥ चिण्हम्, ण्हाभावः ॥

बाहो बप्फो वाष्पः ॥ भिन्दिवालो । भिण्डिवालो । भिन्दिपालः ॥ अब्बह्मणं अब्बम्हञ्ञ अब्रह्मण्यम् ॥ कण्णआ कञ्ञआ कन्याः लोपाभाव (सन्धौ ४-१ वत्) कोदूहलं, थूलं द्वित्वाभावः । कालाअसो भाअणम् अलुक् इदाणिं इदाणि लुक्वा मंसं । णूणं । कधं ॥

विहप्फदी बृहस्पतिः भआऽभावः ॥ पच्चुत्तणम्—त्तमभावः ॥ ङसेः दो एव क्वचित् अदन्तादा अपि 'तव कारणा किलिट्ठि सो जणो' ॥ अदन्ता ङे० रेः=रुक्खे । इदुद्भ्यां ङ म्मिः–अग्गिम्मि वाउम्मि । इदुद्भ्यां जसो वो आदेशाभावः कइणो कअओ । भाणुओ । भाणओ ॥ स्त्रियां जस डबभावः । मालाओ । णईओ, वहूओ ॥ टा, ङसि, ङस्ङीनामेत्=वालाए । णईए । वहुए ॥

द्वितीयायां मातुः=मादरं ॥ किमादेः स्त्रीया मत्वाऽभावः=का । जा । ताए । इमाए ॥ क्लीबे शसो णि वा वणाणि–वणाइं ॥

इदमादे राम एसि मभावः । तथा अमासह इदमः सिमभावः ॥ इमाणं । काणं । जाणं । ताणं, एदाणं, एतेसां । आस, स्सा, सो,

Aho ! Shrutgyanam

इति विभक्त्यादेशाः से इति पदादेशश्च न भवति ॥ कस्स । जस्स । तस्स, काए । ताए । इमाए । एदाए । कदो. जदो । तदो, इमादो ॥

कुदो । इदो इति तु भवतः । आहा, इआ, आहे. इत्यादयस्तु न भवन्ति ॥ कस्सि कहि कत्थ तस्सि ताहिं तत्थ ॥ स्मि नै भवति ॥ इध=इह । इदं वनं, इणं धणं । इति द्वे क्लीबे । इअं बाला । अअं रुक्खो ॥ एसो जणो ॥ अदसश्चाऽहा भावः । अमु जणो । अमु । वहू । अमु धणं ॥ एतद्वदलोर्ङ सिङस्म्याम् अदो । अदो कारणादो ॥ तुमं (त्वं, त्वां वा) ॥ तुम्हे (यूयम्, युष्मान् वा) ॥ तए (त्वया, त्वयि) । तुम्हेहिं=(युष्माभिः) तुम्हेहिन्तो=(युष्मभ्यम्, युष्मान्) । तुम्हाणं=युष्काकम् । तुम्हेसुं=युष्मासु, तुमादो=त्वत ॥ ते. दे, तुम्ह=(तव) वो=(युष्मान् युष्माकाम्) अहं=अहं । वअं=वयम् अम्हे=वयम्,-अस्मान् वा मं=मां । मए=(मया) मइ=मयि । ङसा मज्झादेशा भावः, (मत्) मे, मम, मह ॥ अम्हं, अम्हाणं=(अस्माकम्) ॥ मत्तो, ममादो अन्ये न भवन्ति ॥

धातोः । परस्मैपदमेव ॥ त्रिष्वपिकालेषु लङेव प्रायेण ॥ त्यादेस्तस्य दः=गच्छदु, भोदि, इत्यादि बहुत्वे तस्य धः ॥ उत्तमे म्हः ॥ उत्तमे मिपा सह स्समेव=गमिस्सं इ० ॥ धातुतिङो मध्यविहिता ज्ज, ज्जा, हा इति त्रयः, तिङां स्थाने ज्ज, ज्जा इत्युभौ च, सोच्छं वोच्छं इत्यादयश्च न भवन्ति ॥ देहि । भोदि । करिस्सदि इत्यादि ॥ भू=भो-हो=भोदि, भाविस्सदि । क्ते-भूः । भूदं ॥ दृशेः पेच्छ=पेच्छदि=ब्रुवो बुव=बुवदि । कथेः कधः=कधेदि घ्रातेः जिग्घः=जिग्घदि । भाते भाअः=भाअदि । ब्रूजेः फुंसः फुंसदि । घूर्णेः घुम्मः घुम्मदि । स्तोतुः थुणः=थुणदि । भियो भा=भादि । सृजतेः पसः । पसदि । लृटि दाअः दइस्सदि । चर्चेः चव्वः चव्वदि ग्रहे गेण्हः गेण्हदि ग्रहे थेपा सह गेज्झ-घेप्पौ-गेज्झदि, घेप्पदि ॥ शक्नोतेः सक्कुणसक्कौ सक्कुणादि । सक्कदि । म्लायो मिआअदि । उदासह तिष्ठतेः उत्थः=उत्थेदि ॥ स्वपेः सुअः सुअदि ॥ शीङः सुआदि । रुधे, रोवदि । रुदेः रोवदि ॥ मज्जेः—बुड्डदि

दुहादीनां यका सह दुब्भादयो न दुहीअदि । वहीअदि, लिहीअदि ॥

Aho ! Shrutgyanam

भिण्फो=(भीष्मः) सत्तुग्घो (शत्रुघ्नः) जेत्तिकं यावत्) तेत्तिकं। एत्तिकं। भट्टा। धूदा। दुहिदिआ। इत्थी। भादा, भादुओ। जमादा, जामादुओ इत्यादयः॥

दुउत्ति=द्राग्।

क्खु निश्चये विन्दुतः परे तु खु इत्येव। तं खु भणामि इत्यादि।

च्च=इव। चन्दो व्व॥

ज्जेव एवार्थे॥ विन्दो परे, तंजेव। तंजेव्व इति॥

णं—ननु॥ विअ=इव॥

इति शम्

समाप्तो ऽयं ग्रन्थः सटिप्पणः

शुभं भूयात्।

Aho ! Shrutgyanam

अथ कर्पूरमञ्जरी, सेतुबन्ध, कुमारपाल चरितादि प्राकृत निबन्ध ज्ञानाय ग्रन्थान्तरेभ्योऽपभ्रंशादि भाषा प्रपञ्चाय परिशिष्टम् प्रारभ्यते—

अथाऽपभ्रंशविचारः।

—:०:—

युस्मदः सौ तुहुं। ८। ४। ३६८॥ अपभ्रंशे युष्मदः सौ परे तुहुं इत्यादेशो भवति॥ तुहुं। त्वम्।

जस्-शसो स्तुम्हे तुम्हइं। ८। ४। ३६९॥ अपभ्रंशे युष्मदः। जसि शसि च प्रत्येकं तुम्हे, तुम्हइं इत्यादेशो भवतः। तुम्हे तुम्हइं जाणइ, पेच्छइ॥

टा-ड्यमा पइं तइं। ४। ३७०॥ अपभ्रंशे युष्मदः टा-ङि-अम् इत्येतैः सह पइं, तइं इत्यादेशौ भवतः॥ टा-पइं मुक्का। एवं तइं। ङिना "पइं मइं बेहिंविरणगयहिं को जय सिरि तक्केइ। केसहि लेप्पिणु जम घरिणि भणसुहु को थक्केइ" ॥ एवं तइं। अमा सह-

पइं मेल्लन्ति हे मह्णु मरणु मइं मेल्लन्त हो तुज्झु।

सारस जसु जो वेग्गला सो विकृदन्त हो सज्झु॥ एवं तइं सर्वत्र॥

भिसा तुम्हेहिं ८। ४। ३७१। अपभ्रंशे युष्मदो भिसा सह तुम्हेहिं इत्यादेशो भवति॥ तुम्हेहिं। युस्माभिः॥

ङसि ङस्भ्यां तउ तुज्झ तुध्र॥ ८। ४। ३७२॥ अपभ्रंशे युष्मदो ङसि ङस्भ्यां सह तउ, तुज्झ, तुध्र इत्येते त्रय आदेशा भवन्ति॥ ङसिना, तउ होन्तउ आगदो, तुज्झन्तउ आगदो। तुध्र होन्तउ आगदो। ङसा—तउ गुण-सम्पइ। तुज्झ मदि तुध्र अणुत्तरखन्ति जइ उप्पत्ति अन्नजण महि मण्डलि सिक्खन्ति। एवं तुध॥ तव॥

भ्यसाम्भ्यां तुम्हहं ८। ४। २७३॥

अपभ्रंशे युष्मदो भ्यस आम् इत्येताभ्यां सह तुम्हहं इत्यादेशो भवति॥ तुम्हहं होन्तउ आगदो॥ तुम्हहं केरउं-धणु॥

तुम्हासु सुपा ८। ४। ३७४॥

अपभ्रंशे युष्मदः सुपा सह तुम्हासु इत्यादेशो भवति॥ तुम्हासु ठिअं॥

Aho ! Shrutgyanam

सावस्मदो हउं ८ । ४ । ३७५

अपभ्रंशे अस्मदः सौ परे हउं इत्यादेशो भवति ॥ तसु हउं कलि जुगि दुल्लहहो ॥

जस्-शसो रम्हे अम्हइं ॥ ८ । ४ । ३७६ ॥

अपभ्रंशे अस्मदो जसि शसि च परे प्रत्येकम् अम्हे-अम्हइं इत्यादेशौ भवतः । जसि, अम्हे, अम्हइं, वयम् । शसि, अम्हे-अम्हइं पेक्खइ । अस्मान् ॥

टा ङ्यमा मइं ८ । ४ । ३७७ ॥

अपभ्रंशे अस्मदः टा-ङि-अम् इत्येतैः सह मइं इत्यादेशो भवति ॥

मइं । मया-मयि, माम् । टा, मइं जाणिउं पिअ विरहिअहं का-विधर होइ विआलि । णवरमिअङ्कुवितिहतइ जिहदिणावरु खय गालीअमा-मइं मेल्लन्तहो, तुज्झ ॥

अम्हेहिं भिसा ८ । ४ । ३७८ ॥

अपभ्रंशे अस्मदो भिसा सह अम्हेहिं इत्यादेशो भवति ॥

तुम्हाहं अम्हेहिं ज किअउं ॥

महु मज्झु ङसिङस्भ्याम् ८ । ४ । ३७९ ॥

अपभ्रंशे अस्मदो ङसिना ङसा च सह प्रत्येकं महु ज्झु इत्यादेशौ । भवतः । महु, मज्झु, मत्-मम । ङसिना महु, होन्त उ, गदो मज्झुहोन्तउ । ङसा-मज्झु पिपण । एवं महु ।

अम्हहं स्वसाम् भ्याम् । ८ । ३८० ॥

अपभ्रंशे अस्मदोभ्यसा आमा च सह अम्हहं इत्यादेशो भवति ॥ अम्यहं-अस्मत्, अस्माकम् ॥ आमा-महवग्गा अम्हहं तणा ।

सुपा अम्हासु ८ । ४ । ३८१ ॥

अपभ्रंशे अस्मदः सुपा सह अम्हासु इत्यादेशो भवति ॥ अम्हासु ठिअं ॥

स्यादौ दीर्घ ह्रस्वौ । ८ । ४ । ३३० । अपभ्रंशेमाम्नोऽन्तस्य दीर्घ ह्रस्वौ स्यादौ प्रायो भवतः ।

स्यमोरस्योत् ८ । ४ । ३३१

अपभ्रंशे अकारस्य स्यमोः परयो रुकारो भवति ॥

दहमुहु भुवण-भयंकरु तोसिअ-सङ्करु णिग्गउ रहवरि च-डिअउ चउमुहु छंमुहु झाइविएक्कहिंलाइविणाइइवें घडिअउ ।

Aho ! Shrutgyanam

ङसे हेंहू । ८ । ४ । ३३६ ॥

अकारात्परस्य ङसे हें हु इत्यादेशौ भवतः ॥ वच्छहे, हु ॥

भ्यसो हुं, । ४ । ३३७ ॥

अपभ्रंशेऽकारात्परस्यभ्यसः पञ्चमीवहुवचनस्य हुं इत्यादेशो भवति ॥ जिह गिरिसिङ्गहुं पडिअ सिलअन्नुविचूरुकरेइ ।

ङसः सु-हो-स्सुवः ८ । ४ । ३३८

अपभ्रंशे अकारात्परस्य ङसः स्थाने सु हो-स्सु इति आदेशा भवन्ति ॥ जो गुणगोइ अप्पणा पयडा करइ परस्स । तसु हउं कलिजुगि दुल्लहहो वलिकिज्जउं सु अण्णस्सु ॥

आमो हं । ८ । ४ । ३३९ ॥

अपभ्रंशे अकारात्परस्यामोह मित्यादेशो भवति ॥ तणहं ।

हुंचे दुज्याम् । ४ । ३४० ॥

अपभ्रंशे इकारो काराभ्यां परस्यामो हुं हं चोदशौ भवतः ॥ त: रुहुं, सउणिहुं । प्रायोऽधिकारात्क्वचित्सुपोऽपि हुं । दुहुं दिसिहिं

ङसि भ्यस्-ङीनां हे-हुं हयः ॥ ८ । ४ : ३४१ ॥

अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परेषां ङसि-भ्यस्-ङि इत्येतेषां यथासंख्यं हे-हुं-हि इत्येतेत्रय आदेशा भवन्ति ॥ ङसि, गिरिहेसिलायलु तरुहे फलुघेप्पइनीसावेन्नु । भ्यस्, तरुहुंविवक्कलु फलु मुणिविपरिहणु असणु लहन्ति सामिहुं एत्तिउ अग्गलउं आयरु भिच्चु गृहन्ति । ङि-अहविरलपहाउ जि कलिहि धम्मु ।

स्यम्-जस्-शसां लुक् । ८ । ४ । ३४४ ।

अपभ्रंशे सि-अम् जस्-शस् इत्येतेषां लोपो भवति । एइति घोडा एह थलि इत्यादि-अत्र स्यम् जसां लोपः । जिवँ जिवँ वंकिम लोअणहं णिरु सामलि सिक्खेइ । तिवँ तिवँवम्महु निअय-सरु खर पत्थरि तिक्खेइ । अत्र स्यम् शसां लोपः ।

षष्ठ्याः ८ । ४ । ३४५ ॥

प्रायो लुग् भवति ॥ सङ्गर-सएहि जु वण्णिअइ देक्खु अम्हारा कन्तु । अइमत्तहं चत्तङ्कुसहं गय कुम्भइं दारन्तु ॥ पृथग्योगो लक्ष्यानुसारार्थः ।

आमन्त्र्ये जसो होः । ८ । ४ । ३४६ ॥

अपभ्रंशे आमन्त्र्येर्थे वर्तमानान्नाम्नः परस्प जसो हो इत्यादेशो

१९

Aho ! Shrutgyanam

भवति ॥ लोपापवादः ॥ तरुणहो तरुणिहो मुणिउ मइं करहु म अप्पहो घाउ ॥

भिस्सुपो हिं ॥ ३४७ गुणहिं न संपइ कित्तिपर ॥ सुप्—भाईरहि जिवँ भारइ मग्गेहिं तिहिं वि पयट्टइ ॥

स्त्रियां जस् शसो रुदोत् ॥ ३४८ ॥ लोपापवादौ

जसः, अङ्गुलिउ उज्जरियाओ नहेण । शसः–सुन्दर–सव्वङ्गाउ विलासिणीओ पेच्छन्ताण ॥

ट ए ॥ ३४९ ॥ निअ–मुहकरहिं वि मुद्ध कर अन्धारइपडि पेक्खइ ।

ससि–मण्डल–चन्दिमए पुणु काइं न दूरे देक्खइ ॥

जहिं मरगय–कन्तिए संवलिअं—

ङस् ङस्यो र्हे ८ । ४ । ३५० ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमानान्नाम्नः परयो ङस् ङसि इत्येतयो र्हे इत्यादेशो भवति ॥ ङसः–तुच्छ मज्झहे जम्पिरहे । ङसेः–फोडेन्ति जे हि यडउं अप्पणउं ताहं पराइ कवण घण । रक्खेज्जहु लोअहो अप्पणा वालहे जाया विसम थण ।

भ्यसामो र्हुः ८ । ४ । ३५१ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां वर्तमाना न्नाम्नः परस्य भ्यस–आमश्च हु इत्यादेशो भवति ॥ भल्ला हुआ जो मारिआ बहिणि महारा कन्तु । लज्जेज्जं तु वयासअहु जइ भग्गा घरु एन्तु । वयस्याभ्यो–वयस्यानां वेत्यर्थः

ङेर्हि ८ । ४ । ३५२ ॥

अपभ्रंशेस्त्रियां वर्तमाना न्नाम्नः परस्यङे र्हि(हि)इत्यादेशो भवति । अह्ना वलया महिहिगय अद्धा फुट्ट तडति ।

क्लीबे जस्–शसोरिं ॥ ३५३ ॥

कमलइं मेल्लवि अलि–उलइं करि–गण्डाइं महन्ति ॥

कान्तस्याति उंस्यमोः ८ । ४ । ३५४ ॥

अपभ्रंशे क्लीबे वर्तमानस्य ककारान्तस्य नाम्नो यो कारस्तस्य स्यमोः परयो रुं इत्यादेशो भवति ॥ तुच्छउं, भग्गउं, पसरिअउं,

सर्वादे र्ङसेर्हां ८ । ४ । ३५५ ॥

अपभ्रंशे सर्वादे रकारन्तात्परस्य ङसेर्हां इत्यादेशो भवति ॥ जहां–तहां ।

Aho ! Shrutgyanam

किमो डिहेवा ८ । ४ । ३५६ ॥

अपभ्रंशे किमोऽकारान्तात्परस्य ङसेर्डिहे इत्यादेशो वा भवति ॥ किहो ।

३५६ तं कि हे वङ्केहिं लोअणेहि जोइज्ज उं सय-वार ॥

यत्तत्किभ्यो ङसो डासुर्नवा ८ । ४ । ३५८ ।

अपभ्रंशे यत्तत्किम्भ्योऽकारान्तेभ्यः परस्य ङसो डासु इत्यादेशो वा भवति ॥

ङे हिं ३५७ सर्वादे रकारान्तात्परस्य इत्येव ।

जहिं कप्पिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खग्गिण खग्गु । तहिं तेहइ भडघड निवहि कन्तु पयासइ मग्गु ॥ एक्कहिं अक्खिहिं सावणु अन्नहिं भद्दवउ । माहउ महिअल—सत्थरि गण्डत्थले सरउ । अङ्गिहिं गिम्हसुहच्छी तिल वणि मग्गसिरु ॥ तहे मुद्धहे मुहपङ्कइ आवासिउ सिसिरु । हिअडा फुट्टि तडत्ति करिकाल क्खेवें काइं ॥ देक्खउं हय विहि काहं ठवइ पइं विणु दुःख सयाइं ॥

यत्तत्किम्भ्यो ङसो डासुर्न वा ८ । ४ । ३५८ इत्येतेभ्यः परस्य ङसो डासु इत्यादेशो भवति । कन्तु महारउ हलि सहिए निच्छइं रूसइ जासु । अत्थिहि सत्थिहिंवि ठाउवि फेडइ तासु । जीविउ-कासु न वल्लहउं धणु पुणु कासु न इट्ठु । दोण्णिवि अवसर निवाडआइं तिणसम गणइ विसिट्ठु ॥

स्त्रियां डहे ८ । ४ । ३५९ ॥

अपभ्रंशे स्त्रीलिङ्गे वर्तमानेभ्यो यत्तत्किम्भ्यः परस्य ङसो डहे इत्यादेशो वा भवति ॥ जहे, तहे—कहे—केरउ

यत्तदः स्यमो ध्रुंत्रं ८ । ४ । ३६० ॥

अपभ्रंशे यत्तदोः स्थाने स्यमोः परयो यथा संख्यं ध्रुं त्रं इत्यादेशौ वा भवतः ॥ प्रङ्गणि चिट्ठदि नाहो—ध्रुंत्रं रणि करदि न भ्रन्ति । पक्षे तं बोल्लइ जु निव्वहइ ।

इदम इमुः । क्लीवे ८ । ४ । ३६१ ॥

स्यमोः परयोरित्येव ॥ इमु कुलु तुह तणउं । इमु कुलु देक्ख ।

एतदः स्त्री पुं—क्लीवे एह—एहो—एहु ॥ ८ । ४ । ३६२ ॥

अपभ्रंशे स्त्रियां पुंसि नपुंसके वर्तमानस्यैतदः स्थाने स्यमोः परयो यथासंख्यं एह—एहो—एहु इत्यादेशा भवन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

पइ जस् शसोः ८ । ४ । ३६३ ॥

अपभ्रंशे एतदो जस् शसोः परयो एइ इत्यादेशो भवति ॥ जसः-
ए इति घोडा एइ थलि । शस्-एइ पेच्छ ।

अदस ओइ ८ । ४ । ३६४ ॥

अपभ्रंशे अदसः स्थाने जस् शसोः परयो रोइ इत्यादेशो भवति ॥

इदम आयः ८ । ४ । ३६५ ॥

अपभ्रंशे इदम् शब्दस्य स्यादौ आय इत्यादेशो भवति ॥
आयइं लोअहो लोअणइं जाई सरइं न भन्ति । अप्पिए दिट्ठइ
मउलि अहिं पिए दिट्ठइ विहसन्ति । सोसउ म सोसउच्चिअ
उअही बडवानलस्स किं तेण । जं जलइ जले जलणो आएणवि
किं न पज्जत्तं । आयहो दड्ढकलेवरहो जं वाहिउ तं सारु । जइ
उट्ठब्भइ तो कुहइ अह अह उज्झइ तो छारु ।

सर्वस्य साहो वा ८ । ४ । ३६६ ॥

अपभ्रंशे सर्वशब्दस्य साह इत्यादेशो वा भवति ॥

किम काइं कवणौ वा ८ । ४ । ३६७ ॥

अपभ्रंशे किमः स्थाने काइं, कवण इत्यादेशौ वा भवतः ॥

त्यादेराद्यत्रयस्य बहुत्वे हिं न वा । ८ । ४ । ३८२ ॥

त्यादीना माद्यत्रयस्य सम्बन्धिनो बहुष्वर्थेषु वर्तमानस्य वचन-
स्यापभ्रंशे हिं इत्यादेशो वा भवति ॥ मुहु कवरिबन्ध तहे सोह
धरहिं नं मल्ल जुज्झ ससि राहु करहिं । तहे सहहिं कुरल भमर
उल तुलिअ नं तिमिर डिम्भखेल्लन्ति मिलिअ ।

मध्यत्रयस्याद्यस्य हिः । ८ । ४ । ३८३ ॥

त्यादीनां मध्यत्रयस्य यदाद्यं वचनं तस्यापभ्रंशे हि इत्यादे-
शो वा भवति ॥

बहुत्वे हुः । ८ । ४ । ३८४ ॥

त्यादीनां मध्यमत्रयस्य सम्बन्धि बहुष्वर्थेषु वर्तमानं यद्वचनं
तस्यापभ्रंशे हु इत्यादेशो भवति ॥ बाल अब्भत्थणि महु महणु
लहुई हुआ सोइ । जइ इच्छहु वड्डत्तणउं देहु म मग्गहु कोइ । पक्षे
इच्छह इत्यादि ।

अन्त्यत्रयस्याद्यस्य उं । ८ । ४ । ३८५ ।

त्यादीना मन्त्यत्रयस्य यदाद्यं वचनं तस्याऽपभ्रंशे उं इत्यादेशो

Aho ! Shrutgyanam

वा भवति ॥

वहुत्वे हुं । ८ । ४ । ३८६ ॥

त्यादीना मन्त्यत्रयस्य सम्बन्धि वहुप्वर्थेषु वर्तमानं यद्वचनं तस्य हुं इत्यादेशो भवति ॥ खग्ग विसाहिउं जहिं लहहुं पिय तहिं देसहिं जाहुं । रणदुब्भिक्खें भग्गाइं विणु जुज्झें न वलाहुं । पक्षे-लहिमु इत्यादि ।

हिस्व योरिदुदेत् ॥ ८ । ४ । ३८७ ॥

पञ्चम्यां-(लोडादेशस्य संज्ञेयम्) हिस्वयो रपभ्रंशे इ-उ-ए, इत्येते त्रय आदेशा वा भवन्ति ॥

वर्त्स्यति-स्यस्य सः । ८ । ४ः ३८८ ॥

अपभ्रंशे भविष्यदर्थ विषयस्य त्यादेः स्यस्य सो वा भवति ॥ दिअहा जन्ति झडप्पडहिं पडहिं मणोरह पच्छि । जं अच्छइ तं माणिअइ होसइ करतु म अच्छि । पक्षे-होहिहि

क्रिये कीसु ८ । ४ । ३८९ ॥

क्रिये इत्येतस्य क्रिया पदस्यापभ्रंशे कीसु इत्यादेशो वा भवति ॥ सन्ता भोगं जुपरिहरइ तसु कन्तहो वलि कीसु । तसु दइवेणवि मुण्डियउं जसु खल्लिहडउं सीसु । पक्षे-साध्यमानावस्थात् क्रिये इति संस्कृतशब्दादेषः प्रयोगः । वलिकिज्जउं सुअणस्सु ।

भुवः पर्याप्तौ हुच्च ॥ ८ । ४ । ३९० ॥

अपभ्रंशे भुवो धातोः पर्याप्ता वर्थवर्तमानस्य हुच्च इत्यादेशो भवति ॥ अइ तुङ्गत्तणु जं थणहं सा च्छेयउ न हु लाहु । सहि जइ केवइ तुडिवसेण अहरि पहुच्चइ नाहु ॥

ब्रूगो बुवो वा ८ । ४ । ३९१ ॥

अपभ्रंश-ब्रूगो 'ब्रूञः' धातो ब्रुव इत्यादेशो वा भवति ॥

ब्रजे वुञः । ८ । ४ । ३९२ ॥ ब्रुवह सुहासिउ किंपि । पक्षे-इत्तउं ब्रोप्पिणु सउणिट्ठिउ पुणु दूसासणु ब्रोप्पि ।

अपभ्रंशे ब्रजते र्धातो र्वुञ इत्यादेशो भवति ॥ वुञइ, वुञेप्पि, वुञेप्पिणु ।

दृशेः प्रस्सः ८ । ४ । ३९३ ॥

अपभ्रंशे दृशे र्धातोः प्रस्स इत्यादेशो भवति । प्रस्सदि ॥

Aho ! Shrutgyanam

ग्रहे गृण्हः ८।४।३९४॥

अपभ्रंशे ग्रहे र्धातो गृण्ह इत्यादेशो भवति ॥ पढ गृण्हेप्पिणु व्रतु।

तक्ष्यादीनां छोल्लादयः ८।४।३९५॥

अपभ्रंशे तक्षि प्रभृतीनां धातूनां छोल्ल इत्यादय आदेशा भवन्ति ॥

आदिग्रहणाद् देशीषु ये क्रियावचना उपलभ्यन्ते ते उदाहार्याः॥

अनादौ स्वरादसंयुक्तानां क-ख-त-थ-प-फां,-ग-घ-द-ध-ब-भाः ८।४।३९६॥ अपभ्रंशेऽपदादौ वर्तमानानां स्वरात्परेषामसंयुक्तानां क-ख-त-थ-प-फां स्थाने ग-घ-द-ध-ब-भाः प्रायो भवन्ति ॥ कस्यगः-जं दिट्ठउ सोम ग्गहणु असइहिंहसिउ निसङ्कु पिअमाणुस विच्छोह गरुगिलिगिलि राहुमयङ्कु। खस्य घः ॥ अम्मीणि सत्थावत्थेहिं सुधिं चिन्तिज्जइ माणु। पिए दिट्ठे हल्लोहलेण को चेअइ अप्पाणु। तथपफानां दधबभाः—

सबधु करेप्पिणु कधिदु मइं तसु पर सभलउ जम्मु। अनादाविति किम्। सबधु करेप्पिणु-अत्र कस्य गत्वं न। स्वरादिति किम् गिलिगिलि। असंयुक्तानां किम् एक्कहिं। प्रायः इति क्वचिन्न अकिपा इत्यादि।

मोऽनुनासिको वो वा ८।४।३९७॥

तथोक्तस्य मस्य अनुनासिको वकारो वा भवति ॥ कवँलु कमलु। भवँरु भमरु। लाक्षणिकस्यापि। जिवँ, तिवँ जेवँ तेवँ। अनादावित्येव। मयणु। असंयुक्तस्येत्येव। तसु पर सभलउजम्मु।

अभूतोऽपिक्वचित्। ८।४।३९९॥

अपभ्रंशे क्वचिदविद्यमानोऽपि रेफो भवति ॥ व्रासु महारिसि एउ भणइ जइ सुइ सत्थु पमाणु। मायहं चलण नवन्ताहं दिविगङ्गाण्हाणु॥ क्वचिदिति किम्, वासेणवि भारह खम्भि बद्ध।

आद्विपत्सम्पदां दइ ८।४।४००॥

अपभ्रंशे आपद् विपद् सम्पदां द इकारो भवति ॥ आवइ। विवइ संपइ। प्रायोधिकारात् गुणहिं न सम्पय कित्तिपर॥

कथं-यथा-तथां थादेरेमेमेहेधाडितः। ८।४।४०१॥

अपभ्रंशे कथं-यथा-तथा इत्येतेषां थादेरवयवस्य प्रत्येकम्

Aho ! Shrutgyanam

एम-इम-इह-इध-इत्येते डितश्चत्वार आदेशा भवन्ति ॥ केम समप्पउ दुट्टुदिणु किध रयणी छुडुहोइ । नव वहुदंसण लालसउ वहइ मणोरह सोइ । ओगोरीमुहनिज्जिअउ वद्दलि लुक्कु मियङ्कु । अन्नुविजो परिहविय तणु सो किवँ भवँइ निसङ्कु । बिम्बाहरि तणु रयण वणु किह ठिउ सिरिआणन्द । निरुवम-रसु पिएं पिअवि जणुसेसहो दिण्णी । मुद्द एवं तिधजिधा बुधाद्यायौं ।

याहक्ताहक्कीहशादिशांदादेर्डेहः ८ । ४ । ४०२ ॥

एषां दादेरवयवस्य डित एह इत्यादेशो भवति ॥ मइं भणिअउ वलिराय तुहं केहउ मग्गण एहु ॥

जेहु तेहु नवि होइ वढ सइं नारायणु एहु ॥

अतां डइसः ८ । ४ । ४०३ ॥

अदन्तानामेषां पूर्वोक्तानां दादेरयवस्य डइस इत्यादेशः । जइसो-तइसो-अइसो ।

यत्र तत्रयो स्त्रस्य डिदेत्थवत्तु ८ । ४ । ४०४ ॥

एतयो स्त्रस्य एत्थ अत्तु इत्यतौ डितौ भवतः ॥ जइसो घडदि प्रायवदी केत्थुवि लेप्पिणु सिक्खु । जेत्थुवि तेत्थुवि एत्थु जगि भण तो तहि सारिक्खु ॥ जत्तु-ठिदो तत्तु ठिदो ।

एत्थुकुत्राऽत्रे ८ । ४ । ४०५ ॥

कुत्राऽत्रयोस्त्रस्य डित्-एत्थु आदेशः ॥ केत्थुवि, लेप्पिणु । सिक्खु ॥ जेत्थुवि, तेत्थुवि-एत्थु-जगि ।

यावत्तावतो वादेर्मउं महिं । ८ । ४ । ४०६ ॥

अपभ्रंशे यावत्तावदित्यव्ययो वंकाराद् रवयवस्य-म-उं-महिं इत्येते त्रय आदेशा भवन्ति ॥ जाम न निवडइ कुम्भ यडि सीह चवेड चडक्क । ताम समत्तहं मय गलहं पइ पइ वज्जेइ ढक्का । तामहिं अच्छउ इयरुजणुसु—अणुवि अन्तरुदेइ ॥

वायत्तदोतो डेवडः ॥ ८ । ४ । ४०७ ॥

अपभ्रंशे यद् तद् इत्येतयो रत्वन्तयो र्यावत्तावतोर्वकारादेरवयवस्य डित् एवड इत्यादेशो वा भवति ॥ जेवडु अन्तरु रावण रामहं तेवडु अन्तरु पट्टण गामहं ॥ पक्षे जेत्तुलो, तेत्तुलो ।

वेदं किमोर्यादेः ८ । ४ । ४०८ ॥

इयत्कियतो र्यकारादेरवयवस्य डित् एवड इत्यादेशो वा

Aho ! Shrutgyanam

भवति ॥ एवड्ड अन्तरु। केवड्ड अन्तरु । पक्षे एत्तलो केत्तुलो।

परस्परस्यादिरः ८।४।४०९ ॥

अपभ्रंशे परस्परस्यादिरकारो भवति। अवरोप्परु ॥

म्हो म्भो वा।८।४।४१२ ॥

अपभ्रंशे म्ह इत्यस्य स्थाने म्भ इत्यादेशो भवति ॥

"क्ष्म इति पक्ष्म श्म ष्म स्म ह्मां म्हः" इति प्राकृत लक्षणविहितोत्रगृह्यते संस्कृतेतदसम्भवात्। गिम्भो सिम्भो । वम्भते विरला केविनर जे सवङ्ग छइल्ल । जेवङ्का ते वञ्चयर जे उज्जुअ ते वइल्लु।

प्रायसः प्राउ–प्राइव प्राइम्व पग्गिम्वाः।८।४।४१४।

प्रायस् इत्येतस्य–प्राउ–प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व इत्येत आदेशाः भवन्ति ॥

वान्यथोनुः ८।४।४१५ ॥

अन्यथा शब्दस्यनुर्वा ॥

कुतसः कउ कहन्तिहु।८।४।४१६ ॥

स्पष्टम् ॥

तत–स्तदो स्तोः ८।४।४१७ ॥

स्पष्टम् ॥

एवं–परं–समं–धुवं–मा–मनाक, एम्व–पर–समाणु–ध्रुवु–मं–मणाउं ॥ ८।४।४१८।

एव मादीनाम् यथाक्रमाम् एम्वादय आदेशा भवन्ति।

किला–ऽथवा–दिवा–सह–नहेः, किरा–हवइ–दिवं–सहुं–नाहि। ८।४।४१९ ॥ यथाक्रममादेशा ज्ञेयाः ॥

विषण्णोक्त–वर्त्मनो वुल–वुत्त विच्चं।८।४।४२१

विषण्णादीनां यथाक्रमं वुन्नादय आदेशा भवन्ति ॥

शीघ्रादीनां वहिल्ला दयः।८।४२२ ॥

शीघ्रस्य वहिल्लः। झकटस्य घङ्घलः । अस्पृश्यसंसर्गस्य—विट्टालः।भयस्य–द्रवक्कः। आत्मीयस्य अप्पणः। असाधारणस्य सड्ढलः। कौतुकस्य कोड्डः। क्रीडायाः खेड्डः। रम्यस्य रवण्णः। अद्‌भुतस्य ढक्करि। हे सखीत्यस्य हेल्लिः । पृथक् पृथगित्यस्य जुअं जुअः । मूढस्य नालिअवढौ। नवस्य नवखः। अवस्कन्दस्य दडवडः । सम्बन्धिनः केरतणौ मा भैषीरित्यस्य—मब्भीसेति । स्त्रीलिङ्गम् ।

Aho ! Shrutgyanam

यद्यदृष्टतत्तदित्यस्य-जाइट्ठिआ ।

हुहुरु-घुग्घादयः शब्द-चेष्टाऽनुकरणयोः ८ । ४ । ४२३ ॥

अपभ्रंशे हुहुर्वादय । शब्दानुकरण घुग्घादये श्चेष्टानुकरणे यथा संख्यंप्रयोक्तव्याः ॥

घइमा दयो ऽनर्थकाः ॥ ८ । ४ । ४२४

आदि पदाद्—खाइं इत्यादयः ॥

तादर्थ्ये केहिं-तेहिं-रेसि-रेसिं-तणेणाः ८ । ४ । ४२५

एतेपञ्च निपाता स्तादर्थ्ये प्रयोक्तव्याः ।

युष्मदादे रीयस्य डारः । ४ । ४३४ ।

अपभ्रंशे युष्मदादिभ्यःपरस्य ईय प्रत्ययस्य डार इत्यादेशो भवति । तुहार । त्वदीय ।

त्रस्य डेत्तहे । ८ । ४ । ४३६ ॥

अपभ्रंशे सर्वादेः सप्तम्यन्तात्परस्य त्र प्रत्ययस्य डेत्तहे इत्यादेशो भवति ।

तव्यस्य एइव्वउं एव्वउं एवा ८ । ४ । ४३८ ॥

अपभ्रंशे तव्यप्रत्ययस्य इएव्वउं एव्वउं एवा इत्येत आदेशा भवन्ति ॥

क्त इ-इउ-इवि-अवयः ८ । ४ । ४ । ४३९ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य एतेचत्वार आदेशाः ॥

तुम एव मणाऽणहमणहिं च ८ । ४ । ४० ॥

अपभ्रंशे तुमः प्रत्ययस्य एवम् अण-अणहम-अणहिं इत्येते चत्वार आदेशा भवन्ति ।

तृनोऽणअ ८ । ४ । ४४३ ॥

अपभ्रंशे तृन् प्रत्ययस्य अणअ इत्यादेशो भवति ॥

इवार्थे नं-नउ-नाइ-नावइ-जणि-जणवः । ८ । ४ । ४४४ ॥

अपभ्रंशे इवार्थे एते षट् भवन्ति ॥

लिङ्ग मतन्त्रम् । ८ । ४ । ४४५ ॥

अपभ्रंशे लिङ्ग मतन्त्रं व्यभिचारि प्रायो भवति ॥

शौरसेनीवत् ८ । ४ । ४४६ ॥

अपभ्रंशे प्रायः शौरसेनीवत् कार्यं भवति ॥

व्यत्ययश्च ८ । ४ । ४४७

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृतादि भाषालक्षणानां व्यत्ययश्च भवति । यथा मागध्यां तिष्ठश्चिष्ठः इत्युक्तं तथा प्राकृतपैशाची शौरसेनीष्वपि भवति । चिष्ठदि । अपभ्रंशे रेफस्याधोवा लुगुक्तो मागध्यामपि भवति । शद्-माणुश-मंश-भालके । कुम्भशहश्र वशाह शंचिदे इत्याद्यन्यदपि द्रष्टव्यम् । न केवलं भाषालक्षणानां त्याद्यादेशानामपि व्यत्ययो भवति । येवर्तमानेकाले प्रसिद्धास्तेभूतेऽपि भवन्ति । अहपेच्छइरहुतणओ । अथप्रेक्षांचक्रे इत्यर्थः । आभासइ रयणीअरे । आबभासेरजनीचरानित्यर्थः । भूते प्रसिद्धा वर्तमानेऽपि । सोहीअ एस वण्ठो । शृणोत्येष वण्ठ इत्यर्थः ।

शेषं संस्कृतवत्सिद्धम् । ८ । ४ । ४४८ । शेषं यदत्र प्राकृतभाषासु अष्टमेनोक्तं तत्सप्ताध्यायीनिबद्ध संस्कृतवदेव सिद्धम् ।

हेट्ठ-ट्ठिअ-सूर-निवारणाय छत्तं अहो इव वहन्ती । जयइ ससेसावराहसास दूरुक्खुया पुहवी ॥ अत्रतुर्थ्या आदेशोनोक्तः सच संस्कृतवदेव सिद्धः । उक्तमपि क्वचित् संस्कृतवदेव भवति । यथा प्राकृते उरस शब्दस्य सप्तम्येकवचनान्तस्य उरे उरम्मि इति प्रयोगौ भवतस्तथा क्वचिदुरसीत्यपि भवति । एवं सिरे सिरम्मि । सिरसि । सरे । सरम्मि । सरसि ।

इति हेमानुशासनेऽपभ्रंशविचारः ॥

लाटी चूलिकादीनां विशेष भेदाऽभावान्न ग्रन्थ विस्तरो वितन्यते मागध्याद्याः सविशेषं पूर्वमेवोक्ताः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अकारान्तः पुलिङ्गः(वच्छ=वत्स, वृक्ष शब्दः

प्र० वच्छो=वत्सः । वृक्षो वा एवं सर्वत्र ए० वच्छा, । वच्छे=वत्साः । व०(१) ।

द्वि० वच्छं=वत्सम् । ए०वच्छा, वच्छे=वत्सान् । व०

तृ० वच्छेण(२)=वत्सेन । ए० वच्छेहिं, वच्छेहिँ, वच्छेहि=वत्सैः । व०

पं० वच्छादु, वच्छाहि वच्छाओ=वत्सात् । ए० वच्छत्तो, वच्छाउ वच्छाहित्तो—इत्यादि क्वचित् वच्छाहिंतो=वच्छा सुंतो, वच्छेहिंतो, सुंतो, वत्सेभ्यः । व०

ष० वच्छस्स=वत्सस्य । ए० वच्छाण,वच्छाणं=वत्सानाम् । व०

सं० वच्छे,वच्छम्मि=वत्से। ए० वच्छेहिं, हुं(३)वत्सेषु सं-वच्छ, वच्छो=हे वत्स । शेषं प्रथमावत् गोशब्दः पुंसि गावो, गावे-इत्याद्यदन्तवत् वच्छा । एव मे-

(१) प्राकृत भाषासु द्विवचनं चतुर्थी विभक्तिश्च भवति। "सर्वत्र षष्ठीव चतुर्थ्याः"इति क्रमदीश्वरः । यथा विप्पस्स देहि ।

(२) कल्पलतिकाकारमते वच्छेणं, वच्छाणं टामोरूपम् ।

(३) अपभ्रंशे सप्तम्या बहुवचने सुपिहुं हुम्वाक्कचिद्भवति ।

कारौकारान्तादयः एवं देवकसण इत्यादयः अकारान्ताः शब्दाः बोध्याः ॥

इकारान्तः पुल्लिङ्गः (अग्गि=अग्नि शब्दः)

प्र० अग्गी=अग्निः । ए०(१) अग्गीओ=अग्नयः । व० अग्गिणो(२)

द्वि० अग्गि=अग्निम् । ए० अग्गी(३) अग्गिणो=अग्नीन् । व०

तृ० अग्गिणा=अग्निना । ए० अग्गीहि, अग्गीहिं=अग्निभिः । व०

पं० अग्गीदु,हि अग्गीदो=अग्नेः । ए० अग्गीसुंतो, अग्गीहिंतो=अग्निभ्यः । व०

ष० अग्गिस्स, अग्गिणो=अग्नेः । ए० अग्गिण, (अग्गीणं) क्वचित् अग्गिणं=अग्नीनाम् । व०

स० अग्गिम्मि=अग्नौ । ए० अग्गीसु, सुं=अग्निषु । व० सं-अग्गि=हे अग्ने ? । ए० एवं गिरि-अक्षादयः

(१) अग्गिशब्दस्य प्राकृते अग्गी, अग्गिणी इति द्वे रूपे भवतः इति केचिद् ।

(२) क्रमदीश्वरः "जस ओरो रिणश्चात्"इति सूत्रेण अग्गओ, अग्गरो, साहओ, साहरो इत्येतानि साधितवान् ।

(३) अग्गिओ, अग्गि, गुरुओ, गुरु, इति केषाञ्चिन्मते शासि रूपं स्यात् ।

Aho ! Shrutgyanam

उकारान्तः पुंल्लिङ्गो वाउ= वायु, शब्दः

प्र० वाऊ = वायुः । ए० वाउणो, वाउओ, वाउओ = वायवः । ब०

द्वि० वाउं = वायुम् । ए० वाउणो = वायून् । ब० वाउहूँ, हुं (अपभ्रंशे)

तृ० वाउणा = वायुना । ए० वाऊहि, वाऊहिं = वायुभिः। ब०

पं० वाउदो, दु, हि = वायोः । ए० वाउहिंतो, सुंतो = वायुभ्यः । ब०

ष० वाउस्स, वाउणो = वायोः । ए० वाउणं, ण = वायूनाम् । ब०

स० वाउम्मि = वायौ । ए० वाऊसु, सुं = वायुषु । ब०

सं० वाउ = हे वायो । ए० वाउओ–हे वायवः । ब एवं–कारु गुरु प्रभृतयः हेमचन्द्र मतानुसारेण सर्वे ईकारान्ता ऊकारान्ताश्च प्राकृते ह्रस्वाः प्रयुज्यन्ते अतः अग्निवायुवत्तेषां रूपाणि भवन्ति।

ऋकारान्तः पुंल्लिङ्गः (पिअर=पितृ)

प्र० पिआ, = (पिदा–शौर–) पिअरो पिता । ए० पिअरो, पिअरा पितरः । ब

द्वि० पिअरं = (पिदरं = शौर–) पितरम् । ए० पिदुणो, पिअरे = पितॄन् । ब०

तृ० पिदुणा, पिअरेण = पित्रा । ए० पिअरेहिं, हि = पितृभिः । ब०

पं० पियरादो, दु, हि (पिदुणो शौर०) = पितुः । ए० पिअराहिंतो, सुंतो पिदुहिंतो, सुंतो, = पितृभ्यः । ब०

ष० पिअरस्स = (पिदुणो शौर०)। पितुः ए० पिअराणं, ण पिदुणं = पितॄणाम् । ब०

स० पिअरे = पिअरम्मि, पिदुम्मि शौर० पिअरेसु सु = पितृषु० (पिदुसु, सु शौर–) पितरि । ए०

सं० हे पिअ, पिअर = हेपितः हे पिअरा = हेपितरः एवं जामातृ–भ्रातृ प्राभृतयः ।

ऋकारान्तः पुंल्लिङ्गो (भत्तार= भर्तृ) शब्दः

प्र० भत्तारो = भर्ता । ए० भत्तारा, भत्तुणो = भर्तारः । ब०

द्वि० भत्तारं = भर्तारम् । ए० भत्तारे, भत्तुणो = भर्तॄन् । ब०

तृ० भत्तारेण, भत्तुणा = भर्त्रा।ए० भत्तारेहिं भत्तुहिं = भर्तृभिः। ब०

पं० भत्ताराद्, हि, भत्तुणो भत्तारादो = भर्त्तुः । ए० भत्तारहिंतो, सुंतो भत्तुहिंतो, सुंतो = भर्तृभ्यः । ब०

ष० भत्तारस्स, भत्तुणो = भर्तुः । ए० भत्ताराणं, भत्तुणं = भर्तृणाम । ब०

स० भत्तारम्मि, भत्तुम्मि, भत्ता-

Aho ! Shrutgyanam

रे=भर्तरि । ए० । भत्तारेसु, सुं भत्तुसु, सु=भर्तृषु । ब०
सं० हे भत्तार=हे भर्तः । ए० हे भत्तारा=हे भर्तारः । ब० एवं कर्तृ होतृ प्रभृतयः ॥

आबन्तःस्त्रीलिङ्गो (माला शब्दः)

प्र० माला-माला । ए० माला मालाउ, ओ,=मालाः । ब०
द्वि० माल=मालाम् । ए० मालाउ, ओ, माला=मालाः । ब०
तृ० मालाइ, अ, आ मालाए= मालया । ए० मालाहि, मालाहिं=मालाभिः । ब०
पं० मालाए, मालादु,हि,मालाद्दो=मालायाः । ए० मालाहिंतो, सुंतो=मालाभ्यः । ब०
ष० मालाइ, मालाए=मालायाः । ए० मालाणं, ण=मालानाम् । ब०
स० मालाइ,मालाए=मालयाम् । ए० मालासु, सुं,=मालासु । ब०
सं० हे माले=हे माले । ए० हे मालाओ=हे मालाः । ब०
एवं वाला, लता, छाहा, हलद्दा प्रभृतयः । स्वसृ ननान्दृ दुहितृ इत्येतेषां क्रमात् ससा, नणंदा दुहिआ (१)इत्यादेशाः भवन्ति । एतेषां मालावद्रूपाणि ज्ञेयानि ।

इकारान्त स्त्रीलिङ्गो (मति) शब्दः

प्र० मती=मतिः । मतिओ, उ, मती=मतयः । ब०
द्वि० मतिं=मतिम् । ए० मतिओ, उ, मती=मतीः । ब०
तृ० मतीए, इ, आ, अ=मत्या । ए० मतीहिं, हि=मतिभिः। ब०
पं० मतीअ, । आ, । मतीए, इ= मत्याः ए० मतीहिंतो, सुंतो= मतिभ्यः । ब०
ष० मतीए, इ, आ=मत्याः। ए० मतीणं, ण=मतीनाम् । ब०
स० मतीए, इ, अ आ=मत्यां। ए० मतीसु, सुं=मतिषु। सं हे मती=हेमति । ए० हे मती, आ=हेमतयः । ब० एवं रुचि बुद्धि प्रभृतयः

---

(१) दुहितृ भगिन्यो धूआ वहिण्यौ ८ । २ । १२६ ॥
अनयोरेतावादेशौ वा भवतः । धूआ । दुहिआ=दुहिता ॥ वहिणी, भइणी=भगिनी ॥
स्वस्रादेर्डा ८ । ३ । ३५ स्वस्रादेः स्त्रियां वर्तमानात् डाप्रत्ययो भवति ॥
मातृ-पितुः स्वसुः सिआ-छौ ८ मातृ पितृभ्यां परस्य स्वसृ शब्दस्य सिआ छा इत्यादेशौ भवतः । माउ-सिआ माउ-छा, पिउ-सिआ पिउ-छा ॥ हे० ।

Aho ! Shrutgyanam

ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गो (णाई= नदी) शब्दः

प्र० णाई, आ नई, आ = नदी । ए० णाईओ, आ नईओ, ओ = नद्यः । व०

द्वि० णाईं नईं = नदीम् । ए० णाई, आ, आ नई, आ, आ = नदीः । व०

तृ० णाईए, इ, अ, आ नईए, इ, अ, आ = नद्या । ए० णाईहि-हिं नईहि, हिं = नदीभिः । व०

पं० णाईए, अ, इ, आ नईए, अ, इ, आ = नद्याः । ए० णाई, णाईहिंतो, सुंतो नई, नईहिंतो, सुंतो = नदीभ्यः । व०

ष० णाईए, ई, अ, आ नईए, ई, अ, आ = नद्याः । ए० णाईण, ण नईण, ण = नदीनाम् । व०

स० णाईए, इ, अ, आ नईए, इ, अ, आ = नद्याम् । ए० स णाईसु, सुं = नदीषु । व०

सं० हे णाइ-शेषं, प्रथमावत् एवं गौरी छाही हलद्दी प्रभृतयः ।

उकारान्तः स्त्रीलिङ्गो (धेनु) शब्दः

प्र० धेणू = धेनुः । ए० धेणू धेणूओ, धेणूउ = धेनवः । व०

द्वि० धेणुं = धेनुम् । ए० धेणू धणूओ, उ, = धेनूः । व०

तृ० धेणूए, इ, अ, आ = धेन्वा । ए० धेणूहि, हिं = धेनुभिः । व०

पं० धेणूदो, इ, ए, अ, आ = धेन्वाः । ए० धेणूहिंतो, सुंतो = धेनुभ्यः । व०

स० धेणूए, इ, आ = धेन्वाः । ए० धेणूणं, ण = धेनूनाम् । व०

स० धेणूए, इ, अ, आ = धेन्वाम् ए० धेनूसु, सुं = धेनुषु

सं० हे धेणु, णू हे धेनु-शे० प्रथमावत् एवं तनु रज्जु प्रियङ्गु प्रभृतयः

ऊकारान्तः स्त्रीलिङ्गो (वहू-वधू) शब्दः

ड० वहू = वधूः । ए० वहू, वहूओ, उ = वध्वः । व०

द्वि० वहुं = वधूम् । ए० वहू, वहूओ, उ = वधूः । व०

तृ० वहूए, इ, अ, आ = वध्वा वहूहि, हिं = वधूभिः । व०

पं० वहूदो, वहूए, अ, आइ = वध्वाः ए० वहूहिंतो, सुंतो = वधूभ्यः । व०

ष० वहूए, इ, अ, आ = वध्वाः । ए० वहूण, णं = वधूनाम । व०

स० वहूए, इ, अ, आ = वध्वाम् । वहूसु, सुं = वधूषु

सं हे वहू-हेवधु शे० प्रथमावत् एवं वामोरूप्रभृतयः

ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्गो (माअ=मातृ) शब्दः ।

प्र० माआ = माता । ए० माआः = मातरः । व०

Aho ! Shrutgyanam

द्वि० माअं (मादरं शौर०)= मातरम् । ए० माए=मातॄः । व०

तृ० माआइ, अ, आ, ए = मात्रा ए० माएहिं, हि = मातृभिः । व०

पं० मा आदो, ए, अ, आ = मातुः । ए० मा आहिंतो, सुंतो = मातृभ्यः । व०

ष० माआइ, ए, अ, आ = मातुः । ए० माआणं, ण = मातॄणाम्

स० मांआइ, ए, अ, आ = मातरि । ए० मा असु, सुं = मातृषु

सं० हमाअ = हे मातः । हेमचमातृशब्दस्य मा अरा, माई इति रूपद्वयमाबन्त मीबन्तश्च पपाठ । ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग गोशब्दस्य-गावी, गाई, गोणी इति रूपाणि भवन्ति अतः ईकारान्त णईवत् रूपाणिभवन्ति । गोपोतलिका रूपन्त्वाबन्त शब्दवज्ज्ञेयम् ॥

अकारान्त नपुसंक लिङ्गो (वण=बन) शब्दः

प्र० वणं = वनम् ए० वणाणि वणाइं, वणाइँ = वनानि । व० एवं द्वितीया । सं० हेवणं = हेवन शेषं पुंलिङ्गाकारान्तशब्दवत् ॥ एव धण कुल प्रभृतयः

इकारान्त नपुंसक लिङ्गो (दहि=दधि) शब्दः ।

प्र० दहिं, दहि = दधि । ए० दहीणि, इं, इँ = दधीनि व० ।

द्वि० एवं द्वितीया सं० हे दहि = हे दधि शे० प्रथमावत् शे० पुंलिङ्गेकारान्त शब्दवत् ॥

उकारान्त नपुंसक लिङ्गो (महु=मधु) शब्दः ।

प्र० महु, महु = । ए० महूणि, महूइं, इँ = मधूनि । व० एवं द्वितीया सं० महु = हे मधु, धो शेष मुकारान्त पुंलिङ्गवज्ज्ञेयम् ॥

नकारान्तःपुंलिङ्ग आत्मन् शब्दः ।

प्र० अत्ताणो, अप्पा, णो, अत्ता = आत्मा

अपाणा, णो,

आप्पा=आत्मानः

अप्पा,

अप्पाणो ।

अप्पाण ।

द्वि० अप्पाणं अप्पं, अप्पअं=आत्मानं

अप्पाणु. अप्पु । अप्पणो अप्पाणो } आत्मनः

Aho ! Shrutgyanam

तृ० अप्पणइआ=अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पाणण अप्पहा आत्मना अप्पाणोहि अप्पेहि } आत्मभि

पं० अप्पाणाओ अप्पणो, अप्पाओ अप्पादो, दु, हि=आत्मनः।

अप्पाणाहिंतो, सुंतो, अप्पाहितो, सुन्तो=आत्मभ्यः।

ष० अप्पाणस्स, अप्पाणो=आत्मनः। अप्पाणाणं, अप्पाणे=आत्मनाम्।

स० अप्पाणम्मि,अप्पे=आत्मनि अप्पाणेसु, सुं अप्पसु=आत्मसु।

सं० हे अप्पं। इत्यादि(१)।

(राजन्=राअ–)

प्र० राय=राआ(१)=राजा

राया, राआ, रायाणो, राआणो राइणो=राजानः

द्वि० रायं राअं=राजनम्।

राया, रायाणो, राए=राज्ञः।

राआणो।

तृ० राइणा, राएण, रण्णा, राञ्जिना,

रञ्जा=राज्ञा

राईहिं, राएहिं, रायाणेहिं=राजभिः

पं० रण्णो, रायाउ, राआदो, दु, हि=राज्ञः

राईहिन्तो, सुन्तो, राआहिंतो=राजभ्यः

ष० राइणो, रण्णो, राअस्स रायस्स=राज्ञः

राआणं राईणं,राआणण=राज्ञाम्

स० राइम्मि,राअम्मि, राए राज्ञि=राज्ञि राइसु, राएसु, सुं=राजसु, राआ, राअं रायं=हे राजन्। लाचा=राजन्(२)

एवं ब्रह्मन्, युवन्, अध्वन्, एवमादयो यथा लक्ष्य मवगन्तव्याः।

---

(१) भगवत् भवच्छब्दयोः सम्बोधन क्रमदीश्वरो भगवं, भवं इति।

(१) हेमचन्द्रेण विकल्पेन नान्तस्य पुंसि "आणो"आदेशो विहितः। यथा राआणो, राआ। क्रमदीश्वरेण–राइणा। राइण्णा, रण्णा, इति साधितम्।

(२) इदं पैशाच्यां बोध्यम्, अन्यत् समानम्।

Aho ! Shrutgyanam

अथ सर्वनामानि ।

(सर्व)

सव्वो = सर्वः। सव्वे = सर्वे । १ । व्वं = सर्वम्। सव्वे = सर्वान् । २। स. स व्वेण=सर्वेण । सव्वे-हिं = सर्वैः । ३ । सव्वदोष, त्तो दुः=हि सर्वस्मात् । सव्वेहिं-तो. सुंतो = सर्वेभ्यः । ५ । सव्व-स्स = सर्वस्य । सवेसिं सव्वा णं=सर्वेषाम् । ६ । सव्वस्सि, म्मि, त्थ, हिं = सर्वस्मिन् । स-व्वेसु सुं सर्वेसु । ७ । स्त्रीलिङ्गे नपुसकेचादन्तवत्

(तत्=त)

प्र० स, सो, सु=सः
ति, ते = ते
सा = सा
ता ताओ, ताउ, तीओ=ताः
त्तं, तं = तत्
द्वि० तं = तम्
तं = ताम् । ते तान्
तृ० णेण = तिणा तेण,
तेणं, नेन = तेन
णेहिं, तेहि, तेहिं=तैः
णाए, तिअ, नाइ = तया
ताहि = ताभिः
पं० तम्हा तत्तो, ३-१० तहा,
तदो ६-१०ता, ताओ = तस्मात्
तत्तो ६-१० तो ६-१० तेभ्यः
ष० तस्स, तसु, तासु = तस्य
ताण, ताणं, तास, तेसिं = तेषाम्
तहे, तास, ताए, तिस्सा, तीइ,
तीए, तीसे = तस्याः
तसिं=तासाम्
तम्मि, तस्सिं, तहिं(=तस्मिन्
तइआ = तदा ६-८ तस्मिन्काले
ताला ताहे काले
ताहिं = तस्याम्
तीए, तासु=तासु ।

(त्रिषु लिङ्गषु यद् शब्दः)

प्र० जो, जु=यः । जे, जि = ये । जा, जी = या । जाओ, जीओ = -याः । ज, जु, (धु)अप० = यत् । जाइं = यानि ।

द्वि० जं = यम् । जे = याम् । जं याम् ।

तृ० जिणा, जेण = येना जेहि, यः। जीस = यया ।

पं० जह्मा, जन्तो, दो, (जहां) काले जाओ = यस्मात् । जाहि-न्तो, सन्तो.

तुमत्तो, तुम्ह, तुम्हत्तो, तुम्ह, जाओ (अप) जाहिन्तो, सुन्तो = येभ्यः ।

ष० जसु, जाहं. जेसि, जस्स = यस्य । जाण=यत्पाम् । जिस्सा, जीए, जीसे, जास, जासु जोसिं जाण=येषाम्, जहे=यस्याः । जाण=यासाम् ।

स० जम्मि, जस्सिं, जहिं,=य-

Aho ! Shrutgyanam

स्मिन्, (जाला जाहे) जइआ (काले,)जेसु=येषु। जीए, जाहिं= यस्माम्। जासु=यासु॥

(त्रिषुलिङ्गेषुकिम् शब्दरूपाणि)

प्र० को=कः। के=के। का= का। किं=किम्।

द्वि० कं=कम्। के=कान्। काई=कानि।

तृ० किणा, केण=केन। केहि, केहिं=केः। काइ, काए, कीइ कीए=कया काहिं=काभिः।

पं० कह्मा, (कुदो शौ०) कुत्तो, दो=कस्मात् काओ, किणो, किहे, कीस (कहां) अप० काहिं- तो, सुंतो=केभ्यः।

ष० कसु, कासु, कास. कस्स= कस्य। कास, केसिं, काणं=केषा- म्। कास, काए, काइ, कहे, किस्सा, कास, कीअ, कीआ कीइ, कीए, =कस्याः। काण= कासाम्।

स० कस्मिन्,कहिं कस्सि, कम्मि, कत्थ=कस्मिन् (कइआ, कइया, काला-काले) केसु, सुं=केषु। काहे, काहिं, कीए=कस्याम्। कासु, कीसु=कासु।

(त्रिषु लिङ्गेषु इदम्)

प्र० अयं=(अप०) इमो,इमे=अ- यम् इमा, इअं, इमिआ=इयम् इमा=इमाः

द्वि० इणं.इणमो इदं,इमं,इमु=इदं (शौर०) आयइं=इमानि=अप०) इमण=इमम्, इमे, णे=इमान्

तृ० इमिणा इमेण, णेणं इमणं= अनेन इमेहिं, एहिं, णेहिं=एभिः इमाइ, इमाए, इमीए=अनया आहिं, इमाहिं=आभिः

पं० इदो, इमादो, इत्तो, =अस्मा- न् इमेहिंतो, इम एभ्यः सुन्तो।

ष० अस्स, अयहो, इमस्ससे= अस्य। इमाण, सिंशौर०=एषाम्। इमाइ=अस्याः सिं=आसाम्

अस्सि, इमम्मि इमस्सि=अ- स्मिन्। एसु=एषु। इदो=इतः। इह, इहं=इह इधं=इह

(अदस्-)

प्र० अह=असौ पुं० अह=असौ स्त्री अह=अदः नं० अमू=असौ पु० स्त्री अमुं=अदः ओइ=अमी- आमून् अमुणा=अमुना इअम्मि अमुष्मिन् अयम्मि=अमूसु=अ मूषु अन्य स्सुगकम।

(एतत्-)

प्र० इणम्, एस,एसो, एहो, =एषः इणमो, एसा, एह, एही, =एषा एआ=एताः, एत।

द्वि० एअ, एद. एस. एहु, एतत् ए=एते

एआइं=एतानि

एइ=एतान्

Aho ! Shrutgyanam

तृ० एएण, एदिणा = एतने एयाए = एतया
पं० एआओ = एतस्मात् एताहि, एत्तो = एतेभ्यो वा ।
ष० एअस्स, एदस्य = एतस्य एदाह, एआण = एतेषाम् ।
स० अयम्मि, = एतस्मिन् ईअम्मि, एअम्मि, एअस्सिं, एत्थ = एतस्मिन् एसु, एयेसु एतेषु ।

(अस्मद्=)

प्र० अम्मि, अम्हि, अह, हीं = शौर० अहयं. म्मि, हं, हउं, = (अप०) हगे, के = अहं, वयंवा = (माग०) = अहम् अम्ह अम्हइं अम्हे अम्हो, मे, मो, वअं, वयं = वयम् शौर०
द्वि० अम्मि, अम्ह, अम्हि, अहं, णं, णे, मं=शौर० मइं,इ = अप०ममं मम्ह, मि, मिमं = माम्
अम्ह अम्हइं, ई, अम्हे, (शौर) अप) अम्हो, णे अस्मान् ।
तृ० णे मइ, (अप) मइं, मए, ममए,ममं, ममाइ, मयाइ, मि, मे, = अम्ह अम्हाहि अम्हेअम्हेहि = (शौर अप) अम्हेहि ६-४७ णे = अस्माभिः
पं० मइत्तो मत्य = (अप)मज्झत्तो, ममत्तो, महत्तो मज्झु, मत्तो(= शौ) मह, = ममादो = (शौर)मत् ।
अम्हत्तो अम्हहं, अम्होहिंतो (अप०)
ष० अम्ह, अम्हं मइ मज्झ, मज्झु, मज्झं, मम, मह, शौर महं महु, (अप०) । मह्य = (अप०)मे शौर० = मम अम्हं अम्हहं अम्हाण = (शौर०) अम्हाणं, अम्हे, = (अप०) अम्हो, णे, णो, मज्झाण, मम्हाण, ममाण, णं महाण, ण अस्माकम्
स० अहम्मि मइ(= शौर० अप) मइँ, मए, = (शौर०) मज्झम्मि, ममम्मि, महम्मि, ममाइ, मि, मे = मयि अम्हासु (अप०) अम्हेसु, (शौर०) मज्झसु ममेसु महेसु = अस्मासु =

(युष्मद्-)

प्र० तं, तुं, तुमं-(शौर०) तुमयं, तुवं, तुह, तुहु मा (अपभ्रं०) = त्वम् । उम्हे, तुज्झ, तुज्झे, तुब्भे तुम्ह = (माग०) तुम्हाइं = (अप०) तुम्हे-(शौर० अप०) तुम्हे, भे = यूयम् ।
द्वि० तं, या = (अप०) तइं = (अप) तुए, तुं = (शौर०) तुमं मे, वं, ह, पइं = (अप०) उ, टहे = तुज्झ, तुज्झे, तुब्भे, तुम्हइं, तुम्हे, तुम्हेहि, (अप०) तुम्हे, भेवो युस्मान् ।
तृ० तइ, तइं, ए(शौर०) तुमइ, ए, तुमं, तुमाइ, तुमे, ते, दि, दे, मइं, भे, तइ, ए = त्वया

Aho ! Shrutgyanam

उज्झेहिं, उम्होहिं उण्होहिं तुज्झेहिं, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुय्हेहिं भे शौर० युस्माभिः

पं० तइत्तो, तत्तो, तउ, तहिन्तो, तुज्झ, तुज्झत्तो तुज्झु, तुभ्र, तुब्भ, तुब्भत्तो, तउहो, त, अप० तधुहोन्त, तह्युहोन्त' तुवतो, तुहतो, तुम्हादो, (शौरत्वत्) उम्हत्तो, उम्हत्तो. तुज्झत्तो, तुब्मत्तो, तुम्हत्तो, तुम्हइं, तुम्ह (अप) तुय्हत्तो, तुम्हाहिंतो, (शौर) युष्मत् ॥

ष० उज्झ, उब्भ, उम्ह. तव, उय्ह, ए, तइ, तउ, तु, तुं, तुज्झ, तुज्झु, तुध, तुब्भ, तुम, तुमाइ, तुम, मा. तुम्ह, हं (शौ) तुम्ह, तुव, तुह, तुहं, ते(शौ) दि, दे = (शौ) तह, (शौ) त्वत, उब्भाणं, उम्हाण, णं, तु, तुज्झ, तुज्झं, तुज्झ, तुज्झाण, णं तुब्भ, तुब्भाणं, तुब्भाण. णं, तुमाण, णं तुम्ह, म्हं = (अप) तुम्हहं, तुम्हा, णं = (शौ) तुवाण, णं, तुहाण, तुहाणं भे, वो=युष्माकम् ॥

स० तइ ६-३० तइं, ए, तुज्भम्मि, तुब्भामि, तुमए, तुमभि, तुमाइ. तुम, तुम्मि, तुम्हम्मि, तुवम्मि, पइ=त्वायि तुज्झसु, तुज्झासु. तुज्झसु, तुब्भसु, तुब्भासु, तुम्मसु, तुमसु, तुम्हसु, तुम्हासु, =(अप) तुम्हेसु, तुवसु, तुवेसु, तु सु, तुहसु, तुहेसुः = युष्मासु

अथ संख्यावाचकाः शब्दाः

(द्वि)

प्र० दुण्णि दोन्नि, दोणि, दुवे दो, वे, वेणि, वेणि, = द्वौ एवं द्वितीया । दोहिं, हि=द्वाभ्याम् वेहिं विहि दोहिन्तो, सुन्तो, वेहिंतो, = द्वाभ्याम् । ६५ । दुण्ह, = द्वयोः वैण्णं दोसु वेसु = द्वयोः

(त्रि)

तिण्णि = त्रयः । १ ।
तिण्णि = त्रीन् । २ ।
तीहिं = त्रिभि ३ ।
तीहिंतो = त्रिभ्यः ५
तिण्णं = त्रयाणाम् ६
तीसु = त्रिषु

(चतुर्)

चत्तारो चउरो, चत्तारिचत्वारः १
चउहिं = चतुर्भिः ३ चउहितो = चतुर्भ्यः ५ चउणं = चतुर्णाम् ६
चउरु = चतुर्षु ७

(पञ्चन्)

पञ्चे, पञ्च=पञ्च, पञ्चे = पञ्च २
पञ्चेहिं = पञ्चभिः ३ पञ्चेहिंतो पञ्चभ्यः । ५ । पञ्चण्ह = पञ्चानाम् । ६ । पञ्चेसु = पञ्चसु । ७ ।
स्त्रीलिङ्गेनपुंसकेचादन्तव द्रूपाणि बहुचनएव ।

इति प्राकृतप्रकाशे परिशिष्टे
शब्दरूप दिग्दर्शनम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ दिङ्मात्रेण धातुरूपाणि प्रदर्श्यन्ते ।

(भू–सत्तायाम्)

वर्त्तमाने

प्र० एक० होइ, हुवइ, होए, हुवए, हवइ, हवति, हवेइ, भोदि, होज्जइ, होज्जा, होज्जाइ = भवति भूयते च एव मन्यत्र ।

बहु० होन्ति हुवन्ति = भवन्ति

म० होसि, से, हुवसि, से, हवेसि = भवसि ।

बहु० होह, होहित्थ, हुवह, हुवहि, त्था = भवथ ।

उ० एक० होमि हुवामि, हुवमि = भवामि ।

बहु० होमो, मु, हुवामो, मु, भवामः =

भूते

प्र० एक० होहिअ हुवीअ = अभवत् बभूव, अभूत

बहु० होहीअ, हुवीअ = अभवन्, बभूवुः, अभूवन् ।

म०, एक० होहीअ हुवीअ = अभवः बभूविथ, अभूः

बहु० होहीअ, हुवीअ अभवत, बभूव, अभूत

उ० होहिअ, हुवीअ = अभवम् । बभूव । अभूवम् ।

बहु० होहीअ, हुवीअ = अभवाम, बभूविम, अभूम,

भविष्यति

एक०

प्र० होहिइ, हवहिइ, होज्ज, होज्जा, होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होसइ, होही, भविष्यति, भविता =

बहु० होहिन्ति, हुविहिन्ति = भविष्यन्ति, भवितारः

म० एक० होहिहिसि, हुविहिहि, हुविहिसि, होहिहि = भविष्यसि, भवितासि ।

बहु० होहित्था, होहिह, हुवित्था, हविहिह = भविष्यथ, भवितास्थ ।

उ० एक० होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्सं, होहिमो, भविष्यामि । भवितास्मि ।

बहु० होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामो, मु, म, होस्सामो, होस्सामु, म = भविष्यामः, भवितास्मः ।

विध्यादिषु

प्र० एक० होउ, भोदु, होदु, हुवउ, हुवदु, हुज्ज, होज्ज, होज्जउ, होज्ज, उ = भवतु, भवेत ।

बहु० होन्तु, हुवन्तु, = हवन्तु, भवन्तु, भवयुः ।

म० एक० होसु, हुवेहि, हुवसु हवेहि = भव, भवेः ।

बहु० होह, हुवह = इत्यादि० भवत, भवेत

Aho ! Shrutgyanam

उ० एक० होमु=हुवमु इत्यादि भवानि भवेयम्

बहु० होमो, हुवमो=भवाम भवेम

हेतुहेतुमद्भावे

प्र० एक० होज्ज, होज्जामाणं=अविष्यत् बहु० होज्ज, ज्जा, होहिन्ति हुविहिन्ति इत्यादि

म० एक० होज्ज, ज्जा,=होहिहिसि, हुवि हिसि होमाणं इत्यादिअभविष्य

बहु० होज्ज, ज्जा=होहित्था होमाणा इत्यादि अभविष्यत

उ० एक० होज्ज, होज्जा=अभविष्यम् होस्सा मो,होमाण इत्यादि।

बहु० होस्ता अभ ज्जा, होज्ज, अभविष्याम

(कृञ्, करणे वर्तमाने ।)

प्र० कुणइ, कइइ=करोति । कुणन्ति, करोहि=कुर्वन्ति ॥

म० कुणसि, करसि=करोषि । कुणह, कणित्था, करह करित्थाः=कुरुथ ॥

उ० कुणमो, मु, म, करमो, मु, म, करेमो, मु, म,=कुर्मः ॥ करेमि, करमि । कुणामि,करउं (हेम) करोमि ।

भूते ।

प्र० काहीअ, (अकासि, कासी, काही, (हेमः)) चकार, अकोरोत्, अकार्षीत् वा । एवं सर्वत्र ॥

भविष्यति ।

प्र० काहिइ=कर्ता, करिष्यति वा । काहिन्ति=करिष्यन्ति कर्तारो वा ॥

म० काहिसि=कर्तासि, करिष्यसि वा । काहित्था, काहिह=करिष्यथ ॥

उ० (काहं) (काहिमि हेमः) करिष्यामि । काहिमो, मु, म. करिष्यामः ॥

विध्यादौ ।

प्र० कुणउ० करउ=करोतु । कुणन्तु=करन्तु=कुर्वन्तु ॥

म० कुणसु, कुणेसु कुण, करहि, करि, करे,=कुरु करहा, करह, कुणह=कुरत ॥

उ० 'कुणमु, करमु, करेमु, करवाणि । कुणमो, कमरो, करमो, करवाम ॥ एवं लिङ्यपि ॥

हेतु हेतु मद्भावे कुणज्ज, ज्जा । करज्ज, ज्जा इत्यादि ।

णिचि ।

करावइ, करावेइ, कारेइ=कारयति एवं सर्वत्र ।

कर्मणि ।

किज्जदि, किज्जइ, कीरते, कीरई=क्रियते इत्यादि ।

ण्यन्तात्, करीअइ, करावीअइ, कराविज्जइ, करावीज्जइ, करिज्जइ,=कार्यते इत्यादि । कृत्सु, (क्त)(१)

---

(१) शानचि, शतरि वा कीरन्ती इति हेमः ।

Aho ! Shrutgyanam

कअ, कत, कद, कय, किअ = कृतः । एवम् कारिअ, कराविअ = कारितः ।

क्त्वायाम् ।

काउं, (१) काऊणं, (२) कडुअ, कडुय, करवि, करिउ, उं, करिय, अ, करिवि, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु = कृत्वा ।

एव मन्येषा मपि रूपाणि समूह्यानि ।

अथ कतिपय धातूना मादेशा व्याकरणान्तरेभ्यः प्रदृश्यन्ते—

भुज् (३)

भुञ्जइ, जिमइ, जेमइ, कम्मेइ, अण्हइ, समाणइ, चमढइ, चड्डइ, इत्यादि ।

प्र-विश् = रिअ,

रिअइ = प्रविशति इत्यादि ।

(दृश् (४)=निअ

दसइ, सइ, दावइ, दक्खइ, इत्यादि ।

(आस् = अच्छ्, (५) अच्छइ इत्यादि ।

(गम् = (१)

अईइ, अइच्छइ, इत्यादि ।

(स्था = (२)

ठाइ, थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ, इति ।

(स्ना = अब्भुत्त, (३)

(मस्ज् (४)

आउड्डइ, णिउड्डइ, बुड्डइ, मज्जइ, खुप्पइ ।

सुप्पाः । १०१ ।

(जल्प = जम्प । हेमस्तु कथ् = जम्प)

(दश् = डस् (५)

---

(१) ८ । १७ ।

(२) ४ । २३ । ॥ ८ । १७ ।

(३) भुजो भुञ्ज-जिम जेम-कम्मा ण्ह-समाण-चमढ-चड्डाः । ८ । ४ । ११० । हे०

(४) दृशेर्दाव-दस-दक्खवाः । ८ । ४ । २२ । ण्यन्तस्य । हे०

(५) गमिष्यमासां छः । ४ । २१५ ।

(१) गमे रई-अइच्छाऽणुवज्जाऽवज्जसो—कुसाऽक्कुस-पच्चड्ड-पच्छन्द—णिम्मह-णी-णीणणीलुक्क-पदअ-रम्भ-परिअल्ल-बोल-परिअल-णिरिणास-णिवहाऽवसेहाऽवहराः । ८ । ४ । १६२ ।

आङा अहिपच्चुअः । ८ । ४ । १६२ ।

समा अब्भिडः । ८ । ४ । १६४ ।

अभ्याङा म्मत्थः । ८ । ४ । १६५ ।

प्रत्याङा पलोट्टः । ८ । ४ । १६६ ।

(२) स्थष्ठा-थक्क-चिट्ठ-निरप्पाः १६ । उद ष्ठ कुक्कुरौ । १७ । उठइ, उक्कुक्कुइः ।

(३) स्नातेरब्भुत्तः । १४ ।

(४) मस्जे एउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-

(५) दंश-दहोः । २१८ । इति डः । शक्त-मुक्त-दष्ट=रुग्ण-मृदुत्वे को वा । २ । २ । एसु संयुक्तस्य को वा भवति । दट्ठ, डक्क, डट्ठ इति हे० ।

Aho ! Shrutgyanam

(स्तू = थुण् (१)
थुणिज्जइ, थुव्वइ (२)

(दह = उज्झ्, दह्)
अहिऊलइ, आलुंखइ (१)

इति प्राकृतप्रकाशे परिशिष्टे धातु-रूपाणा मादेशानाञ्च दिङ्-निदर्शनम् ।

—:०:—

(१) चि-जि-श्रु-हु-स्तू-लु-पू-धूगां णो ह्रस्व श्च । ८ । २४१ ।

(२) न वा कर्म भावे व्वः क्यस्य च लुक् । २४२ । च्यादीनां कर्मणि भावे च वर्तमानाना मन्ते द्विरुक्तो वकारागमो वा भवति । तत्सन्नि-योगे च क्यस्य लुक् । थुव्वन्त स्तूयमानः । हे० ।

(१) दहे रहिऊलाऽऽलुंखौ । ४ । २०८ । हे० ।

Aho ! Shrutgyanam

अथाऽकारादिक्रमेण सूत्रसूची।

अ

अइवले सम्भाषणे ९।१२
अंकोले ल्लः २।२५
अः क्ष्माश्लाघयोः ३।६३
अक्ष्यादिषु छः ३।३०
अचि मञ्च ४।१३
अज्ज आमन्त्रणे ९।१७
अत आ मिपि वा ७।३०
अत इदेतो लुक् च ११।१०
अत एसे ७।५
अत ओत्सोः ५।१
अतोमः ५।३
अत्पथि हरिद्रा पृथिवीषु १।१३
अदातो यथादिषु वा १।१०
अदसो दो मुः ६।२३
अदीर्घः सम्बुद्धौ ११।१३
अदूदुकूले वालस्य द्वित्वम् १।२५
अधोमनयां ३।२
अन् मुकुटादिषु १।२२
अन्त्यस्यहलः ४।६
अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ १२।३
अनन्त्य एच्च १२।२८
अमि ह्रस्वः ५।२१
अम्हे जश्शसोः ६।४३
अम्हे हिं भिसि ६।४७
अम्हाहिंतो अम्हासुन्तोभ्यसि ६।४९
अम्हेसु सुपि ६।५३
अस्थनि ३।११
अस्मदः सौ हके हगे अहके ११।९
अस्मदो हमहमहअं सौ ६.४०
अस्मदोजसावअं च १२।२५
अयुक्तस्य रिः १।३०
अयुक्तस्यानादौ २।१
अलाहि निवारणे ९।११
अवाद् गाहे वाहः ८।३४
अव्वो दुःख सूचना संभावनेषु ९।१०
अस्ते लोपः ७६
अस्ते रासिः ७।२५
अस्ते रच्छः १२।१९
अहम्मिरमिच ६।४१

आ

आङ्गिच तेदे ६।३२
आङि मे ममाइ ६।४५
आङोऽज्ञस्य ३।५५
आच्च सौ ५।३५
आ णोणमोरङसि ५।४४
आच्च गौरवे १।४३ १।४३
आत्मनि पः ३।४८
आत्मनोऽप्पाणो वा ५।४५
आदेरतः १।१
आदेर्योजः २।३१
आनन्तर्ये णवरि ९।८
आदीतौ बहुलं ५।२४
आपीडे मः २.१६
आम एसिं ६।४
आमालिं ६।१२
आमन्त्रणे वाविन्दुः ५।३७
आमोणं ५.४०
आम्रताम्रयो र्वः ३।५३
आलाने लनोः ४।२९
आलिवल्लोलवन्तेन्तामतुपः ४।२५

Aho ! Shrutgyanam

आवेच्च ७।२७
आविः क्त कर्मभावेषु वा ७ २८
आश्चर्यस्याच्चरिअं १२।३०
आसमृद्ध्यादिषु वा १।२
आहे।इआ काले ६।८

इ

इ गृध्रसमेषु १२।६
इच्च बहुषु ७।३१
इङ् मिपो र्मिः ७।३
इञशशसो र्दीर्घश्च ५।२६
इतएत्‌पिण्डसमेषु १।१२
इतेस्तपदादेः १।१४
इत्सदादिषु १।११
इत्पुरुषेरोः १।२३
इत्वद्धित्ववर्जं राजवदनादेशो५।४६
इत्सैन्धवे १।३८
इर किरकिलाऽनिश्चिताख्याने ९।५
इदम इमः ६।१४
इदुतोः शसोणो ५।१४
इः श्री ह्री क्रीत क्लान्त क्लेश म्लान स्वप्न स्पर्श हर्षार्ह गर्हेषु ३।६२
इदमेतत्कियतद्भ्य ष्टा इणावा ६।३
इद्भ्यः स्सासे ६।६
इदद्धित्वे ५।४३
इदीषत्पक्कस्वप्नवेतसव्यजन मृदङ्गाङ्गारेषु १।३
इदीतः पानीयादिषु १।१८
इदृष्यादिषु १।२८
इवस्य पिवः १०।४
इवस्य विअ १२।२४

ई

ईअ भूते ७।२३
ईच स्त्रियाम् ७ ११
ईर्त्सिहजिह्वयोश्च १।१७
ईदूतो ह्रस्वः ५।२९
ईद्धैर्ये १।३९

उ

उदूतो मधूके १।२४
उदृत्वादिषु १।२९
उत्सौन्दर्यादिषु १।४४
उत्तरीयाऽऽनीययोर्ज्जो वा २।१७
उत्तमे स्साहाच ७।१३
उः पञ्चतन्वीसमेषु ३।६५
उर्जश्शस् टाङस्सुप्सु वा ५।३३
उद्ध्म उद्धुमा ८।३२
उत ओत्‌तुण्डरूपेषु १।२०
उत्समोर्लः ८।४
उदिक्षु वृश्चिकयोः १।१५
उदुम्बरे दो लोपः। ४।२
उदो विजः ८।४३
उपरि लोपः क ग ड त द प ष साम् ३।१
उलूखलेल्वा वा १।२१
उसुमु विध्यादिष्वेकस्मिन् ७ १८

ऋ

ऋतोऽत् १।२७
ऋत्वादिषु तोदः २।७
ऋत आरः सुपि ५।३१
ऋतोऽरः ८।१२
ऋरीति १।३०

Aho ! Shrutgyanam

ऌ

ऌतः क्लृप्त इलिः १।३३

ए

एकाचोर्हीअ ७।२४

एच क्त्वातुमुन् तव्य भविष्यत्सु ७।३३

ए च सुप्यङि ङसोः ५।१२

एत इद्वेदनादेवरयोः १।३४

एवस्य जेव्व १२।२३

एशय्यादिषु १।५

एत्पीडा पीड कीदृगीदृशेषु १।१९

एन्नूपुरे १।२६

एतदः सावोत्वं वा ६।१९

एषामामो ण्हं ६।५९

एभ्यसि ६।६२

ऐ

ऐत एत् १।३५

ऐरावते च २।११

ओ

ओबदरे देन १।६

ओच द्विधाकृञः १।१६

ओतोद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः १।४०

ओद्वापयोः ४।२१

ओ सूचना पश्चात्तापविकल्पेषु ९।४

औ

औत ओत् १।४१

क ग च ज त द प यवां प्रायो लोपः २।२

कन्यायां न्यस्य १०।१०

कबन्धे बो मः २।१९

करेण्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः ४।२८

कार्षापणे ३।३९

कालायसे यस्य वा ४।३

कासेर्वासः ८।३५

किणो प्रश्ने ९।९

कुब्जे खः २।३४

किमः कः ६।१३

किं यत्तद्भ्यो ङस आस ६।५

किराते च २।३३

कृञः का भूतभविष्यतोश्च ८।१७

कृञः कुणो वा ८।१३

कृञ् गृङ्गमां कस्यडः ११।१५

कृगमो डुअः १२।१०

कृदा श्रुवाचि गमि रुदि दृश विदिरूपाणां काहं दाहं साच्छं वोच्छं गच्छं ऐच्छं दृच्छं वेच्छं ७।१६

कैटभेवः २।२९

कृष्णे वा ३।६१

कमस्य ३।४९

क्रीञः किणः ८।३०

क्रुधेर्जूरः ८।६४

क्त इअः १२।९

क्त्व ऊणः ४।२३

क्त्व स्तूनम् १०।१३

क्तान्तादुश्च ११।११

के ७।३२

क्तेड्डुः ८।२

केतुरः ८।५

क्तेन-दिण्णादयः ८।६२

क्तो दाणिः ११।१६

क्वचिद्युक्तस्यापि १।३१

क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः ५।१३
क्वथेर्ढः ८।३९
क्लिष्टश्लिष्टरत्न क्रियाशार्ङ्गेषु तत्स्वरत्पूर्वस्य ३।६०
कृञ् मृङ्गमांक्तस्यड्ः ११।१५
क्षस्य स्कः ११।८
क्षमावृक्ष क्षणेषु वा ३।३१
क्षियो झिज्जः ८।३७

ख

ख घ थ ध भांहः २।२७
खादि धाव्योः खाधौ ८।२७
खिदेर्विसूरः ८।६३

ग

गद्गदेरः २।१३
गमादीनां द्वित्वं वा ८।५८
गर्भितेणः २।१०
गर्तेडः ३।२५
गर्दभ संमर्द वितर्दि विर्छर्दिषु र्दस्य ३।२६
गृहे घरोऽपतौ ४।३२
ग्रहे दीर्घो वा ८।६१
ग्रहे गेण्हः ८।१५
ग्रसेर्विसः ८।२८

घ

घुणो घोलः ८।६
घत् स्का तुनुन् तव्येषु ८।१६

ङ

ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च ५।४२
ङसि तुमो तुह तुज्भ तुम्ह तुम्हाः ६।३१
ङसेरादोदुहयः ५।६
ङसो हो वा दीर्घत्वञ्च ११।१२
ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ६।३५
ङसा से ६।११
ङसोवा ५।१५
ङेः स्सि म्मित्थाः ६।२
ङे रेम्मी ५।९
ङेर्हिं ६।७
ङेर्देन हः ६।१६
ङौच मइ मए ६।४६
ङौ तुमम्मि ६।३८

च

चर्चेश्चम्पः ८।६५
चन्द्रिकायां मः २।६
चतुर्थी चतुर्दश्यो स्तुना १।९
चतुर्थ्याः षष्ठी ६।६४
चतुरश्चतारो चत्तारि ६।५८
चिञश्चिणः ८।२९
चवर्गस्य स्पष्टतया तथोच्चारणः ११।५
चिट्ठस्य चिष्ठः ११।१४
चिन्हे न्धः ३।३४
च्चो व्रज नृत्योः ८।४७
चौर्य समेषु रिअं ३।२०

छ

छायायां हः २।१८

ज

जल्पे र्लो मः ८।२४
जश्शसोर्लोपः ५।२
जश्शस्ङसां णो ५।३८
जश्शस्ङस्यां सु दीर्घः ५।११

Aho ! Shrutgyanam

जसश्च ओयूत्वम् ५।१६
जसोवा ५।२०
जिघ्रतेः पा पाऔ ८।२०
जृभो जंभाअः ८।१४
जायः ११।४
ज्याया मीत् ३।६४
ज्ञस्यञः २०।९
ज्ञो जाणमुणौ ८।२३

ञ

ञ ञ्च १०।११

ट

टाङसिङस्ङीनामिदेद्दातः५।२२
टाङ्योस्तइ तएतुमए तुमे ६।३०
टाणा ५।१७
टाणा ५।४१
टामो र्णः ५।४
टोडः २ । २०

ठ

ठोढः २।२४
ठाह्मागाश्च वर्तमान भविष्य द्विध्याद्येकवचनेषु ८।२६

ड

डस्य च २।२३
डुकृञः करः १२।१५

ण

णवरः केवले ९।७
णवि वैपरीत्ये ९।१३
णिच पदादेरत आत् ७।२६
णिर्जश्शसोर्वा क्लीवे स्वर दी-
र्घश्च १२।११
णुदो णोल्लः ८।७
णो नः १०।५
णो शसि ६।४४

त

ततिपो रिदेतो ७।१
तद ओश्च ६।१०
तदेतदोः स सावनपुंसके ६।२२
तल् त्वयोर्दात्तणौ ४।२२
तालवृन्तेण्टः ३।४५
तुं चामि ६।२७
तिण्णि जश्शस्भ्याम् ६।५६
तिपातिथ १२।२०
तुज्झे तुम्हे जसि ६।२८ ॥
तुज्झेहिं तुम्हेहिं तुम्मेहिं भि-सि ६।३४
तुज्झेसु तुम्हेसु सुपि ६।३९
तुमाइ च ६।३३
तुम्हाहिंतो तुम्हासुंतो भ्य-सि ६।३६
तूर्यधैर्यसौन्दर्याश्चर्यपर्यन्तेषु रः ३।१८
तृणइरः शीले ४।२४
तृपस्थिपः ८।२२
त्तो ङसेः ६।२०
त्तो दो ङसेः ६।९
त्तोत्थयो स्तलोप ६।२१
त्रेस्ति ६।५५
त्रसेर्वज्जः ८।६६
त्वर स्तुवरः ८।४
त्यथ्यद्यां चछजाः ३।२७

Aho ! Shrutgyanam

थ

थास्सिपोः सि से ७।२

द

ददातेर्दे दइस्स लृटि १२।१४
दशादिषु हः २।४४
दाढादयोबहुलम् ४।३३
दिक्प्रावृषोः सः ४।११
दिवसे सस्य २।४६
दूङो दूमः ८।८
दृशेः पुलअ णिअक्कअवक्खाः ८।६९
दृशेः पेक्खः १२।१८
दैत्यादिष्वइ १।३६
दैवे वा १।३७
दोला दण्ड दशनेषु डः २।३५
द्रेरो वा ३।४
द्वे दो ६।५४
द्वेर्दुवेदोणि वा ६।५७
द्विवचनस्य वहुवचनम् ६।६३

ध

धातो र्भविष्यति हिः ७।१२
धातो र्भावकर्तृ कर्मसु परस्मैपदम् १२।२७
ध्यह्मो र्झः ३।२८

न

न लृटि १२।१३
नङिङस्योरेदातौ ६।६१
नञोर्हलि ४।१४
नत्थः ६।१७
न धूर्तादिषु ६।२४
न नपुंसके ५।२५
नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ६।१८
नसान्त प्रावृट् शरदः पुंसि ४।१८
नविद्युति ४।९
नविन्दुपरे ३।५६
नरहोः ३।५४
नशिरो नभसी ४।१९
न स्तंबे ३।१३
नातोऽदातौ ५।२३
नान्त्यद्वित्वे ७।९
नानेकाचः ७।२२
नामन्त्रणे सावोत्वदीर्घविन्दवः ५।२७
निपाताः ९।१
निरो माङो माणः ८।३६
नीडादिषु ३।५२॥
नैद्रावे ७।२९
नोणः सर्वत्र २।४२
नोत्सुकोत्सवयोः ३।४२
न्ति हे त्था मो मु मा वहुषु ७।४
न्तमाणौशतृशानचोः ७।१०
न्तुहमो वहुषु ७।१९
न्मोमः ३।४३

प

पटे फलः ८।९
पत्तने ३।२३
पदस्य ६।२५
पदेः पालः ८।१०
पनसेऽपि २।३७
पर्य्यस्त पर्याण सौकुमार्येषु लः ३।२१
परुष पलितपरिखासुफः २।३६

Aho ! Shrutgyanam

पितृ भ्रातृ जामातृणामरः ५।३४
पुत्रेऽपि कचित् १२।५
पुरुष परिघ परिखासु फः २।३६
पृष्ठाक्षि प्रश्नाः स्त्रियां वा ४।२०
पैशाची १०।१
पोवः २।१५
पौरादिष्व उ १।४२
प्रकृतिः शौर सेनी १०।२।११।२
प्रकृतिः संस्कृतम् १२ २
प्रकृत्या दोला दण्ड दशनेषु १२।३१
प्रतिसर वेतस पताकासुडः २।८
प्रदीप्त कदंब दोहदेषु दोलः २।१२
प्रथमशिथिल निषधेषु ढः २ २८
प्रादेर्भवः ८।३
प्रादेर्मीलः ८।५४

फ

फोभः २।२६

ब

बिसिन्यांभः २।३८
बुड्डखुप्पौ मस्जेः ८।६८
ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां ण्यज्ञन्यानां ञो वा १२।७
ब्रह्माद्या आत्मवत् ५।४७ ॥

भ

भविष्यति मिपास्सं वा स्वरदीर्घत्वञ्च १२।२१
भाजने जस्य ४।३
भावकर्मणोर्व्वश्च २।५७
भिन्दिपालेण्डः ३।४६
भिदिच्छिदोरन्त्यस्यन्द ८।३८
भियो भावीहौ ८।१९
भिसो हिं ५ ५
भुजादीनां क्त्वा तुमुन् तव्येषु लोपः ८।५५
भुवो हो हुवो ८१
भोभुवस्तिङि १२।१२
भ्यसो हिंतो सुन्तो ५ ७

म

मज्झणो अम्ह अम्हाण मम्हे आमि ६ ५१
मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ङसौ ६।४८
मध्येच ७ २१
मध्यान्हे हस्य ३।७
मन्मथे वः २।३४
ममम्मिमङौ ६।५२
मं ममं ६।४२
मयूर मयूखयोर्व्वा वा १।८
मलिने लिनो रिलौ वा ४ ३१
मागधी ११।१
मातुरात् ५।३२
मांसादिषु वा ४।१६
मिनास्सं वा ७।१४
म्मिव मिवविआ इवार्थे ९।१६
मिपोलोटि च १२।२९
मिमो मुमानामधोहश्च ७।७
मृजेर्लुभसुपौ ८।६७
मृदो लः ८।५०
मे मम मह मज्झ ङसि ६।५०
मोबिन्दुः ४।१२

Aho ! Shrutgyanam

मो मुमैर्हिस्सा हित्था ७।१५
स्मश पञ्चाशत्पञ्चदशेषुणः ३।४४
म्लै बावाओ ८।२१

य

यक ईअइज्जौ ७।८
यमुनाया मस्य २।३
यपि तद्वर्गान्तः ४।१७
यष्ट्यां लः २।३२
युक्तस्य ३।९
युष्मदस्तं तुमं ६ २६
युधि बुध्योझः ८।४७
यावादादिषु वस्य ४ ५
राज्ञश्च ५ ३६
रुदेर्वः ८।४२
रुधेन्धम्भौ ८।४९
रुषादीनां दीर्घता ८।४६
रे अरे हिरे सम्भाषणरतिकलहाक्षेपषु ९।१५
रेस्यटः ३।२२
राज्ञो राचि टाङसिङस्ङिषु वा १०।१२
रो रा ७।८
र्यशय्याभिमन्युषुजः ३।१७
र्यस्यरिअः १०।८
र्यजयोर्य्यः ११।७

ल

लवण नवमल्लिकयोर्वेन १।७
लादेश वा ७।३४
लाहले णः २।४०
लिहेर्लिज्झ ८।५९
लोपोऽरण्ये १।४९
विसिन्यां भः २।३८
वसति भरतयो हः २।९
वर्तमान भविष्य दनतनयो ज्जं ज्जावा ७।२०
वर्गेषु युजः पूर्वः ३।५१
वक्रादिषु ४।१५
वर्गाणां तृतीय चतुर्थयोरयुजोरनाद्योराद्यो १०।३
वाष्पेऽश्रुणि हः ३।३८
विप्रकर्षः ३।५९
विद्युत्पीताभ्यां लः ४।२६
विअवेअ अवधारणे ९।३
विह्वले भहौ वा ३।४७
वेक्के च ८।३१
वेष्टेश्च ८।४०
वृक्षे वेन रुर्वा १।३२
बृहस्पतौ वहेर्भाओ ४।३०
वृश्चिकेञ्छः ३।४१
वृन्दे वोरः ४।२७
वृष कृष मृष हृषा मृतोऽरिः ८ ११
वृधेर्ढः ८।४४
वोभे तु ज्झाणं तुम्हाणं मामि ६।३७
वोच शसि ६।२९
व्यापृते डः १२।४

श,

शकादीनां द्वित्वम् ८।५२
शकेस्तरव अतीराः ८।७०
शदल पत्योर्डः ८।५१
शरदोदः ४।१०
शषोः सः २।४३

Aho ! Shrutgyanam

शस एत् ५।३९
शाकिरे भः २।५
शृगाल शब्दस्य शिआला शिआले शिआलका ११।१७
शेषः संस्कृतात् ९।१८
शेषं महाराष्ट्रीवत् १२।३२
शेषादेशयो र्द्धित्वमनादौ ३।५०
शेषाणामदन्तता ८।७१
शेषोऽदन्तवत् ६।६०
शौर सेनी १२।१
श्रुहुजिलु धुवां णोऽन्त्ये ह्रस्वः ८।५६
श्रत्सप्सां छः ३।४०
श्मश्रुश्मशानयो रादेः ३।६
श्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वार वर्ज हिलोपश्च वा ७।१७
श्वो घो वहः ८ ३३

ष

ष्क स्कयोः खः ३।२९
षट् शावक सप्तपर्णानां छः २।४१
षसोः शः ११।३
ष्म पक्ष्म विस्मयेषु म्हः ३।३२
ष्टस्य ठः ३।१०
ष्ट्स्य सटः १०।६
ष्ठाध्यागानां ठाअझाअभाआः ८।२५
ष्पस्य फः ३।३५

स

सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोर्णः १२।८
समासे वा ३।५७
सटा शकट कैटभेषु ढः २।४२
सर्वादेर्जस एत्वं ६।१
सर्वत्र लवरां ३।३
सर्वज्ञ तुल्येषु ञः ३।५
सर्वनाम्नां के सिंत्वा १२।२६
संख्यायां च २।१४
संज्ञायां वा २।४५
संधावचा मज्लोपविशेषा बहुलम् ४।१
सुपः सुः ५।१०
सपस्य सर्वत्र स्थितस्य ८।५३
सिच ३।३७
सुभिस्सुप्सुदीर्घः ५।१८
सूक्ष्मायाम् ९।१४
सूर्य्ये वा ३।१५
सेवादिषु च ३।५८
स्फटिक निकष चिकुरेषुकस्यहः २।४
स्फटिके लः २।२२
स्तस्मिमोरह्वा६।१५
स्नुषायां ण्हः २।४७
स्तस्यथः ३।१२
स्तंभेखः ३।१४
स्तम्बे ३।१३
स्फुटिचल्योर्वा ८।५३
स्फुटि चल्योर्वा, ८।५३
स्थाणावहरे ३।१५
स्फोटके ३।१६
स्थ श्छिद्वः १२।१६
स्मरतेः सुमरः १२ १७
स्त्रियामित्थी १२।२२
स्नस्य सनः १०।७
सोर्बिन्दुर्नपुंसके ५।३०

Aho ! Shrutgyanam

स्मरते भर सुमरौ८।१४
स्त्रियामात् ४।७
स्त्रियां शस उदोतौ ५।१९
स्त्रियामात एत् ५।२८
स्नेहे वा ३।६३
स्सो ङसः ५।८
ह
हरिद्रादीनां रोलः २।३०
हश्च सौ ६।२४
हन्ते र्म्मः८।४५
हु दान पृच्छा निर्धारणेषु ९।२
हुं क्खु निश्चय वितर्क सम्भावनेषु ९।६
ह्ल ह्ल ह्लेषुनलमां स्थितिरुर्द्ध्वं३।८
ह्न स्न ष्ण क्ष्ण ह्नां ण्हः ३।३३
हृक्रोर्हीरकीरौ ८।६०
हृदयस्य हितअकम् १०।१४
हृदयस्य हडक्कः ११।६
इति सूत्र सूची।

—:o:—

अथाऽकारादि क्रमेण प्राकृत प्रकाशस्थ पदानामनुक्रमणिका शब्दरूपाणामन्यत्रोल्लिखात्र न प्रदर्श्यन्ते।

अ
अअं=अयं ९।५
अइ-अयि ९।१२
अंस्सू-अश्रु ४।१५
अस्सो अश्वः २।२
अक्को-अर्कः २।१) ३-३
अग्गि-अग्निम् ४।१२
अग्गिणो=अग्नीन् ५।१४
अग्घोहो-अर्घः २।१
अरे=सम्भाषणादिषु ९।१५
अंकुसो-अंकुसः २।४३
अङ्को-अङ्कः ४।१७
अंकोल्लो-अङ्कोठः, अङ्कोलः २।२५
अंगुली-अगुरी २।३०
अच्छ-अस्ति १२।१९
अच्छं-अक्षि ४।१२-२०)
अच्छि-अक्षि ३।३०- ४।२०)
अच्छीहिं=अक्षिभ्याम् ९।१०
अच्चारिअं-आश्चर्यम् १२।३०
अच्छेरं=आश्चर्यम्१।५) ३।१८४०
अजसो=अयशसः २।२
अज्जा अज्ज=अहो ९।१७ आर्य-अद्य
अज्झाओ-अध्यायः ३।२
अट्ठी-अस्थि ३।११-५१
अणुत्तन्त, अनुवत्तन्त-अनुवर्त्तमान ४।५
अण्णं=अन्यत् ९।७
अण्णहुवअणं-अन्यथा वचनम् १।१४
अत्तुं=अत्तुम् ९।१०
अतुलं-अतुलम् २।२
अत्ता, अत्ताणो, अप्पा, अप्पाणो, आत्मा-आत्मानः ५।४६) ३।४८) ५-४५, ४६
अत्तो-आर्त्तः ३।२४
अत्थि-अस्ति १२।२०
अद्धा अद्धाणो-अध्वा ५।४७
अधीरो-अधीरः २।२७
अपारो-अपारः २।२
अप्पुल्लं-आत्मीयम् ४।२५

Aho ! Shrutgyanam

अमू=असौ ६।२३
अवरं=अपरं ९।१०
अवं अत्वं-आम्र ३।५३
अव्वो=अहो खेदे ९।१०
अंसो-अन्सः ४।१४
अह्म, अह्माणं, अह्म-अस्माक-
म् ६। ५१।
अम्हे=वयं ६।४३
अम्हेहिं-अस्माभिः ६।४७
अम्हाहिंतो-अस्मभ्यम ६।४८
अम्हासुंतो-अस्मात् ६।४९
अम्हेसु-अस्मासु ६ ५३
अरिहो-अर्हः ३।६२
अरे-अरे ९।१५
अलाहि-अलम् ९।११
अलिअं-अलीकम् ९।११
अल्हादो-आल्हाद १।१८
अलहादो-आल्हाद ३।८
अवक्खइ-पश्यति ८।६९
अवजलं-अपजलं २-२
अवरण्हो-अपराह्नः ३।८
अवरि-उपरि १।२२
अवयासइ-अवकासते ८।३५
अववाहइ-अवगाहते ८।३४
अवरइ-अपहरति ४ १३
अवहासो-अवहासः ४।२१
अवहोवासअं-उभयपार्श्वम् ४ ३३
अवसारिअं-अपसृतम् ४।२१ ५।१
अवत्तो-आवर्तः ३।९४
अव्वो अहो ९।१०
असिवअं, असिव्वअं=अशिवम
३।५८
असु, सुं-आसु ४।१६
असो, आसो-अश्वः ३।५४
अस्सा-अस्याः ६।१५-१७
अस्सि-अस्याम्-अस्मिन्
अस्सो-अश्वः १।१ ३।५८
अह-असौ-अदस् ६।२४
अहअं, अहं=अहम् ६।४०
अहम्मि-अहम,मां ६। ४१
अहके-अहम् ११।
अहिजाई-अभिजातिः १।२
अहिमज्जू-अभिमन्युः ३।११
अहिमुंको-अभियुक्तः ४।१५

आ

आअच्छदि=आगच्छति ११।१७
आअदो-आगतः २।७
आअडे=आगतः ११।१६
आइदी-आकृतिः २।७
आउदी-आवृतिः २।७
आणत्तिः-आज्ञप्तिः १।५५
आणा-आज्ञा ३।५५
आणालक्खंभो-आणालक्खभो=
आलानस्तम्भः ४।२९ ३।५७
आदरो-आदरः २।१
आपेलो, आमेलो=आपीडः १।१
आसि-आसीत् ७।२५
आसो-अश्वः १।२ ३।५८
आसु, सु-आसु ४।१६
आहि जाई-अभिजातिः १।२
ओवाहइ=अवगाहते ८।३४

इ

इअ-इति १। १४

Aho ! Shrutgyanam

इअरास्सि, इअराम्मि, इअरत्थ = इतरस्मिन् ६।२
इङ्गालो-अङ्गारः १।३ २।३०
इङ्गिअज्ञो, इङ्गितज्ञः ३।५
इङ्गि अण्णो = इङ्गितज्ञः १२।८
इणअं, इनअं इडम् = इदम् ६।१८
इत्थी—स्त्री १२।२२
इमो-इदम् ६।१४ १५-१६
इमिणा, इमेण अनेन ६।३-१४
इमेसिं-एषाम्-आसाम् ६।४
इसि ईषत् १।३
इसि-ऋषिः १।२८
इस्सरो-ईश्वरः ३।५८
इह = अस्मिन् ६ । १६-१७
ईसि-इषत् १।३

ई

ईसालू-ईर्षावान् ४ । २५
ईसारो-ईश्वरः ३ । ५८

उ

उअ, उअह = पश्य, पश्यत १।१४
उक्का-उल्का ५।३
उक्केरो-उत्करः १ । ५
उक्खअं,उक्खा = उत्खातम् १।१०
उच्छा-उक्षा ३।३०
उच्छित्तो-उत्क्षिप्तो ३।३०
उच्छू-इक्षुः १।१५ ३।३०
उज्जुओ-ऋजुक ३।५२
उत्तरिज्जं, उत्तरिअं-उत्तरीयम् २।१९
उडू-ऋतुः १।२९ २।७
उद्धुमाई-उद्धमति ८।३२
उप्पलं-उत्पलम् ३।१
उब्भवई-उद्भवति ८।३
उम्बरं-उदुम्बरम् ४।२
उम्हा-उष्मा ३=३२
उप्पाओ-उत्पातः ३।१
उलवो-उलपः ५।१५
उलूहलं-उलूखलम् १।२१
उव्विवई-उद्विजते ८।४३
उव्वेल्लई-उद्वेष्टते ८।४१
उवसग्गो-उपसर्गः २।१५
उस्सवो-उत्सवः ३।४२
उस्सुओ-उत्सुकः ३।४२

ए

एअ-एव ४।५
एव्वं एवम् ४।५
एअं-एकम्, एवम् ३।५८ ४।५
एआरह-एकादश २।१४-४४
एक्कं-एकम् ३।५८
एण्हि-इदानीम् ४।४३३
एत्तिअं, एद्दहं एतावत् ४।२५
एत्तो-एतस्मात् ६।२१ २०
एत्तह-एतस्मिन् ४।२१
एदं-एतद्-एनम् ६।५२
एदिणा-एदेण-एतेन ६।३
एदेसिं, एदाणं, एदाण-एतेषाम् एतासाम् ६।४
एरावणो-ऐरावतः १।३५ २।११
एरिसो-ईदृशः १।१९-३१
एव्व-एव ४ । ५
एश,-एशि, एशे=एषः ११।१०
एस, एसो = एषः ६ । १८-२२

Aho ! Shrutgyanam

ओ

ओक्खलं–उलूखलम १ । २१
ओवाहई–अवगाहते ८ । ३४
ओवासई–अवकासते ८ । ३५
ओसारिअं–अपसारितम् ४ । २१
ओहासो–अवहासः ४ । २१

क

कअं–कृतम् १।२७ ४२३ ५।२२
कइअवो–कैतवः १।३६
कइआ–कदा ६ ८
कई–कपिः २।२
कउरओ–कौरवः १।४२
कउसलो–कौशलम् १।४२
कय्यं–कार्य्यम् १०।११
कआ–कन्या १०।११
कञ्जआ–कन्यका १२ । ७
कडे–कृतः ११ । १५ ।
कढइ–कथति ८ । ८
कढोरं–कठोरम् २ । २४
कणअं–कनकम् २ । ४२
कणिआरो, कण्णि=कर्णिकारः ३ । ५८
कण्णऊरं, कण्णउरं–कर्णपूरम् ४ । १
कणेरु–करेणुः ४ । २८
कण्हो कसणो कृष्णः ३ । ३३–६१
कत्तरि–कर्तरि ३ । २४
कत्तो, कदो=कस्मात् ६ । ९
कधेहि=कथय ९ । २
कदुअ=कृत्वा १२। १०
कत्थ, कम्मि, कहिं, कस्सि=कस्मिन् ६ । ७–८
कसणं=कृष्णम् ९ । १६
कदोट्ठो–उत्पलम् ४ । ३३
कमंधो–कबन्धः २ । १९
कम्मो–कर्म ४ । ६–१८
कंसो–कंसः ४ । १४
कय्ये–कार्य्यम् ११ । ७
कर–कृ ८ । १३ । १२ । १५
करेमि=करोमि ६ । ४०–४१
करिदाणि–कृत्वा ११ । १६
कारेइ ७।२६
करावेइ ७।२७
कराविअं ७।२८।७२९
कराविज्जइ ७।२८
कारिअं ७।२८।७२९
कारावेइ ७।२७
कारिज्जइ ७।२८
करिसइ–कर्षति ८ । ११
करिसो=करीषः १ । १८
कलम्बो–कदम्बः २ । १२
कलुणं–करुणम् २ । ३०
कलहारं–कह्लारम् ॥ ३ । ८
कलेसि=कलयसि ९।१२
कसाअं–कषायम् २–४३
कह, कथम् ४ । १६
कहं, कहिं–कास्मिन्,कदा ६।७।८
कहाअ=चकार, कृतवान् ८।१७
काऊण–कृत्वा ४।२३।८–१७
काउं=कर्तुम् ८।१७
काअव्वं=कर्तव्यम् ८।१७

कातून-कृत्वा १०।१३
कालास कालासं कालायासम् ४ । ३
कास-कस्य, कस्याः ६।५
काहं-करिष्यामि ७।१६
काहावणो-कार्षापणः ६।३९
काहिआ-चकार ८।१७]७-२४
काहे—कदा ६।८
किं = किं ९।१२
किई-कृतिः १।२४
किच्चा-कृत्या १।२८
किणा-केन ६।३
किणइ-क्रीणाति ८।३०
किणो-किन्तु ९।९
किंत्ति=कृतिः ३।२४
किर-किल=किल ९।५
किरिआ-क्रिया ३।६०
किरीतो-क्रीतः ३।६२
किसित्थं=क्लिष्टम् ३।६३
किलेसो-क्लेशः ३।६२
किलित्तं-क्लृप्तम् १।३३
किवा-कृपा १।२८
किसरो-कृसरः १।२८
किसी-कृषिः १।२८
किस्सा-कस्याः ६।६

की

कीअ, कीआ, कीइ, ए, कीस कस्याः ६।६५।२४
कीरइ-क्रिते ८।६०
कुअलअं=कुवलयम् ४।५
कुक्खेअओ=कौक्षेयकः १।४४
कुच्छि=कुक्षिः ३।३०
कुणइ=करोति, कुरते ८।१३
कुंभ आरो, कुंभारो = कुम्भकारः ४।१
कुसुमप्पअरो, कुसुमपअरो = कुसुमप्रकारः ३।५७
केढवो-कैटभः २।२१-२९
केत्तिअं, केद्दहं = कियत् ४।२५
केरिसो-कीदृशः १।१९ १।३१
केलासो-कैलासः १।३५
केवओ-कैवर्तकः ३।२२
केसि=केषाम् कासाम् ६।४

को

कोट्टिमं-कुट्टिमम् १।२०
कोत्थुहो=कौस्तुभः १।४१ ३।१२
कोमुई=कौमुदी १।४१
कोसंबी-कौसाम्बी १।४१
कोसलो-कौशलम् १।४२
क्खु-खलु ९।६

ख

खइअं-खाइअं-खादितम् १।१०
खग्गो-खड्गः ३।१
खणं-क्षणम् ३।३१
खदो-क्षतः ३।२९
खंदो-स्कन्दः ३।२९
खंधो-स्कन्धः ३।२९
खमा-क्षमा ३।३१ ३।६३
खंभो-स्तम्भः ३।१४] ५०
खलिअं-स्खलितं ३।१] ५०
खाइ=खादति ८।२७

Aho ! Shrutgyanam

खाणू-स्थाणु ३।१५:
खुज्जो-कुब्जः २।३४
खुप्पइ-मज्जति ८।६८
खोडओ=स्फोटकः ३।१६

ग

गअणं=गगनम् ९।१६
गआ=गदा २।२
गउरवं=गौरवम् १।४२
गओ=गजः २।२
गग्गरो-गद्गदः २।१३
गच्छं-गमिष्यामि ७।१६
गडे-गतः ११।१५
गड्डो-गतः ३।२५
गड्डहो-गर्दभः ३।२६
गदुअ-गत्वा १२।१०
गब्भिणं-गर्भितम् २।१०
गम्मइ, गमिज्जइ, गमीअइ= गम्यते ७।९]८-५८
गरिहो=ग्रहः ३।६२
गरुअं-गुरु १।२२
गरुइ-गुर्वी ३।३५
गहवई=गृहपति ४।३२
गहिज्जइ, गाहिज्जइ-गृह्यते ८।६१
गहिरं-गभीरम् १।१८
गाइ, गाअं इति=गायति, गायन्ति ८।२५-२६
गारवं=गौरवम् १।४३
गाहा=गाथा २।२७
गिट्ठई=गृष्टिः १।२८
गिद्धो=गृद्धः १२।६
गिम्हो=ग्रीष्मः ३।३२
गिरा=गिर् ४।८
गुण्ठी=गृष्टिः ४।१५
गुज्झओ=गुह्यकः ३।२८
गेण्हइ=गृह्णाति ८।१५
गेण्ह, गृहाण ९।२
गोट्ठी=गोष्ठिः ३ १
गोला=गोदावरी ४।३३

घ

घणा=घृणा १।२७
घरं=गृहम् ४।३२-३३
घे, घेरत् ग्रह् ८।१६
घेऊण=गृहीत्वा ४।२३
घेत्तुं=गृहीतुम् ८।१६
घेत्तव्वं=गृहीतव्यम् ८।१६
घेत्तण=गृहीत्वा ८।१६
घत्तूनं=गृहीत्वा १०।१३
घोलइ=घूर्णते, घोणते ८।६

च

चइत्तो=चैत्रः १।३६
चउत्थी=चतुर्थी १।९
चउद्दह=चतुर्दश २।१४
चउद्दही=चतुर्दशी १।९
चऊहिं=चतुर्भिः ६।६०
चडु-चाडु=चाटु १।१०
चतुण्हं, चउण्हं=चतुर्णाम् ६।५९
चत्तारि, रो=चत्वारः चतुरः ६।५८
चंदिमा=चान्द्रिका २।६
चंदो-चंद्रो=चन्द्रः ३।४
चमरं-चामरं=चामरम् १।१०

Aho ! Shrutgyanam

चंपइ = चर्चयति ८।६५
चलइ, चल्लइ = चलति ८।५३
चलणो = चरणः २।३०
चातुलिअं = चातुर्य्यम् ६।३३
चिट्ठ = स्था १२।१६] ६।६३] ११।१४
चिणइ = चिनोति ८।२९
चिन्धं चिह्नं चेह्नं, चेधं = चिन्हम् १।१२] ३।३४
चिलादो = किरातः २।३०-३३
चिष्ठदि = तिष्ठति ११।१४
चिहुरो = चिकुरो २।४
चुं, वइ, बइ = चुम्बति ८।८१
चोत्थी, चोद्दही = चतुर्थी, चतुर्दशी ११९] २।४४
चोरिअं = चौर्य्यम् ३।२०

छ

छत्थी = षष्ठी २।४०
छणं = क्षणम् ३।३१
छत्तावण्णो = सप्तपर्णः २।४१
छमा = क्षमा ३।३१
छम्मुहो = षण्मुखः २।४२
छारं = क्षारम् ३।३०
छावओ = शावकः २।४१
छाहा=छाया २।१८५।२४
छिन्दइ = छिनत्ति ८।३८
छीरं = क्षीरम् ३।३०
छुअं = क्षुतम् ३।३०
छुण्णो = क्षुण्णः ३।३०
छुरं = क्षुरः ३।३०
छेत्तं = क्षेत्तुम ३।३०

ज

जआ-जइ = यदा १।११
जइआ यदा ६।८
जाउणा अडं, जउण अडं = यमुनातटम् ४।१
जउणा = यमुना २।६
जक्खो = यक्षः २।३१]३।२९-५१
जञ्जो = यज्ञः १२।७
जट्ठी = यष्टिः २।३१
जढरं = जठरम् २।२४
जणणओ = जनकः ३।५२
जण्णो = यज्ञः ३।२४
जण्हु = जन्हुः ३-३३
जत्तो, जदो = यस्मात् ६।९
जंपइ=जल्पति ८।२४
जभाअइ = जृम्भते ८।१४
जम्मो = जन्म ३।४३] ४।१८
जसो = यशः ४।३१]४।६-१८
जह-जहा = यथा १।१०
जहणं-जहणं = जघन २।२७२
जहिट्ठिलो = युधिष्ठिरः १।२२ २।३०
जा-यावत् ४।५
जाणइ = जानाति ८।२३
जामाउओ = जामातृकः १।२९
जामाआ-जामाअरो = जामाता ५।३५
जावा = यावत् ४।५
जास = यस्य ६।५
जाहे = यदा ६।८
जिणइ = जयति, ८।५६-५७

Aho ! Shrutgyanam

जिणा = येन ६।३
जिव्वइ = जीयते ८।५७] ७.९
जिस्सा = यस्याः ६.६
जिअं = जीवितम् २।२] ४'५
जीइ–जीए = यस्याः ६।६] ५।२
जीआ = ज्या ३।६६
जीविअं = जीवितम् ४।५
जीहा = जिह्वा १।१७ ३।३४
जुज्झइ = युध्यते ८।४८
जुगुच्छा = जुगुप्सा ३।४०
जुग्गं = युग्मम् ३।२
जुवा-जुवाणो = युवा ५।४७
जूरइ = कुध्यति ८।६४
जेद्दहं, जेत्तिअं=यावत् ४।२५
जेव्व = एव १२।२३
जोग्गो = योग्यः ३।२
जोव्वणवन्तो = योवनवान् ४।२५
जोव्वणं = योवनम् १ ४१] ४।५२

झ

झाइ–झाअंति = ध्यायति, ध्यायन्ति ८।२५
झिज्जइ = क्षयति ८।३७

ठ

ठा–ठाअंति तिष्ठन्ति ८।२५
ठिअं=स्थितम् ५ । १३··२२

ड

डण्डो = दण्डः २।३५]१२ ३१
डसणो = दशनः २।३५
डोला = दोला २।३५) १२।३

ण

णअणं = नयनम् २।२
णअरं = नगरम् २।२
णअइग्गामो, णअइगामो = नदीग्रामः ३।५७
णअ इसोत्तो = नदीश्रोतः ४।१) ३।५२
णई, = नदी २.४२] ५।१९–२२–२९) ६।६०
णउलं=नकुलम् २।२
णक्खो=नक्खः ३।५८
णग्गो=नग्नः ३।२
णच्चइ=नृत्यति ८।४७
णत्थि=नास्ति ४–१ टि०
णत्तओ=नर्तकः, ३.२२
णडो=नतः २।२०
णवर=केवलम् ९।७
णवरि=आनन्तर्ये ९।८
णवि=न,–अपि, विपरीतम् ९।१६
णहं=नमस् ४।६–१९
णहो=नखः ३.५८
णाहलो=लाहल २।४०
णिअक्कइ=पश्यति ८।६९]
णिक्कन्तो=निष्क्रान्तः ४–१ टि०
णिच्चं=नित्यम् ३।२७
णिज्झरो=निर्झरः ३।५१
णित्थुरो=निष्ठुरः ३।१
णिडालं=ललाटम्–४।३३
णिद्दा=निद्रा १।२२
णिद्दालू=निद्रावान् ४।२५
णिप्फाओ = निष्पापः अः ३।३५
णिम्माण अइ = निर्माति ८।३६
णिवत्तओ = निवर्तकः ३।२४
णिविडो = निविडः २।२३

Aho ! Shrutgyanam

णिव्वुदं = निर्वृतम् १।२९
णिव्बुदी = निर्वृत्तिः २।७
णिसढो = निषेधः २।२८
णिसा = निशा २।४३
णिस्सासो, णीसासो = निःश्वासः ३।५८
णिहसो = निवषः २।४
णिहिओ, णिहित्तो = निहितः ३।५८] ४।३३
णुणं-णूणं = नूनं ४।१६
णेउरं = नूपुरम् १।२६
णेड्डु = नीडम् १।१९ ३।५२
णेड्डा = निद्रा १।१२
णेहो = स्नेहः ३ १-६४
णो = नः, अस्मान् ६।४४-५१
णोमालिआ = नवमल्लिका १।७
णोल्लइ = नुदति, त ८।७
ण्हाणं = स्नानम् ३।४३

(त)

तआ, तइ = तदा १।११
तआणिं = तदानीम् १।१८
तइअं = तृतीयम् १।१८
तइ-तए = त्वया-त्वयि ६।३०
तइआ = तदा ६।८
तइत्तो = त्वत् ६ ३५
तं = तद्-तम् ६।२२
तं = त्वम् ६।२६
तंसं = त्र्यस्रम् ४।१५
तणं = तृणम् १।२७
तणुई = तन्वी ३।६५
तंबं = ताम्रं ३।५३
तंबो = स्तम्बः ३।१३
तरइ-तीरइ = शक्नोति ८।७०
तलाअं = तडागः २।२३
तलवेंठअं = तालवृन्तकम् १।१०।३।४५
तइ-तहा = तथा १।१०
तहि, हिं = तस्मिन्-तर्हि ४।१६] ६।७
ता = तावत् ४।५
तारिसो = तादृशः १।३१
तालवेण्टअं = तालवृन्तकम् १।१०
ताव = तावत् ४।५-६
तास = तस्य ६।५-११
ताहे = तदा ६।८
तिणा = तेन ६।३
तिण्णि = त्रयः-त्रीन् ६।५६
तिण्हं = तीक्ष्णम् ३।३३
तिण्हं त्रयाणाम् ६।५६
तिस्सा-तीसे-तीए, आ, अ, इ = तस्याः ६।६
तीहिं-तीसु = त्रिभिः-त्रिषु ६।५५-६०
तुज्झ,-तुम्म, तुम्ह = तव ६।३१
तुज्झ = यूयम्-युष्मान् ६।२४-२९ २६।३८
तुण्हिओ, क्को = तूष्णिकिः ३।५८ ८।२
तुं-तुमं = त्वं-त्वाम् ६।२६-२७
तुमाइ = त्वया ६।२३
तुमो-तुह = तव ६।३१
तुरिअं = त्वरितम् ८।५

Aho ! Shrutgyanam

तुवरइ = त्वरेत ८।४
तुह अद्धं, तुहद्धं = तवार्द्धम् ४।१
तूरं = तुर्यम् ३।१८-५४
तूसइ = तुष्यति ८।४६
ते = ते ६।२२
ते = तव-त्वया ६।३२
तेत्तिअं, तेद्दहम = तावत् ६।२५
तेरह, तेरहो = त्रयोदश १।५] २।१४-४४
तेलोअं, तैल्लोक्कं = त्रैलोक्यम् १।३५] ३।५८
तेसिं = तेषाम्-तासाम् ६ ४
ता, ततो, तदा = तस्मात् ६ १०
तोंडं = तुण्डः १।२०
त्ति = इति १ । १४-२७

थ

थवओ = स्तवकः ३।१२-५०
थाणू = स्थाणुः ३।१५
थिपइ = तृप्यति ८।२२
थुइ = स्तुति ३ १२

द

दइच्चो = दैत्यः १।६६
दइवं = दैवम् १।३७] ३।५८
दसणं = दर्शनम ४।१५
दइस्सं = दास्यामि १२।१४
दच्छं = द्रक्ष्यामि ७।१६
दच्छाओ = दक्षः ३।३०
दद्धं = दग्धम् = ८ ६२
दट्ठं = दष्टम्, दृष्टम् ४।१२
दवग्गी = दावाग्निः १।१०
दसमुहो = दशमुखः २।४५
दसरहो = दशरथः २।४५
दसबलो = दशबलः २।४५
दहिं = दधि ५।२५-३०
दसके = दक्षः १।१८
दाऊण = दत्वा ४।२३
दाडिमं = दाडिमम् २ २३
दाढा-दंष्ट्रा ४ । ३३
दातूनं = दत्वा १०।१३
दालिमं = दाडिमम् २।२३
दाहं = दस्यामि ७।१६
दिअरो = देवरः १।३४
दिअहो = दिवसः २।२-४६
दिग्घं = दीर्घम् ३।५८
दिट्ठी = दृष्टिः १।२८] ३।१०।५०।५१
दिण्णं = दत्तम् ८।६२
दिसा = दिशा ४।११
दीहं = दीर्घम् ३।५८
दुअलं-दुऊलं = दुकूलम् १।२५
दुइअं = द्वितीयम १।१८
दुक्खओ = दुःखितः ३।५८
दुट्टयणो = दुर्जनः १।१७
दुवे = द्वौ ६।५७
दुहारिओ = दौवारिकः १।४४
दुहाइअं, दुहाइज्जइ, दोहाइअं दोहाइज्जइ द्विधाकृतम, द्विधा-क्रियते १।१६
दुहिओ = दुःखितः ३।५८
दूमइ = दुनोति, दूयते ८८
दे = ते-त्वया ६।३२ दा ११।१४
देअरो = देवरः १ ३४
देवत्थुइ-ई = देवस्तुतिः ३।५७

देव्वं = दैवम् १।३७] ३।५८
देहि = देहि ६।६४
दो, दोणि = द्वौ ६ ५७
दोण्हं = द्वयोः ६।५९
दोहिं = द्वाभ्याम् ६।५४
दोहलो = दोहदम् २।१२
दोहो द्रोदो = द्रोहः ३।४
धणं=धनम् ४।१२५।३०
धणवन्तो धणलो = धनवान् ४।२५
धम्मिल्लं,धम्मेल्लं = धम्मिल्लः१।१२
धाइ = धावति ८।२७
धीआ = दुहिता ४।३३
धीरं = धैर्यम् १ ३९] ३।१८-५४
धुणइ = धूनाति ८।५६
धुत्तो = धुर्त्तः ३।२४
धुरा = धुर ४।८
धुव्वीस = धुयसे ९।९
धुव्वइ, धुणिज्जइ, धूयते ८।५७
धुदा = दुहिता ४ । ३३

(प)

पअडं, पाअडं = प्रकटम् १।२
पखलो = प्रखल २।२७
पउअं-पाउअं = प्राकृतम् १।१०
पउत्ति = प्रवृत्तिः।२९
पउमं = पद्मम् ३।६५
पउरो = पौरः १।४२
पउरिसो = पौरुषः १।४२
पओत्थो = प्रकोष्ठः १।४०
पच्चक्खं = प्रत्यक्षम् ३।२७
पच्छं = वथ्यम् ३।२७
पच्छिमं = पश्चिमम् ३।४०
पज्जत्तो = पर्याप्तः ३।१
पज्जुण्णो = प्रद्युम्नः ३।४४
पट्टणं = पत्तनम् ३ । २३
पदाआ = पताका २ । ४
पडइ = पतति ८।५१
पडि = प्रति २।४
पडिसुदं = प्रतिश्रुतम् ४।१५
पडिवआ = प्रतिपदा १] ४।७
पडिवादि = प्रतिपत्तिः २।७
पडिसरो = प्रतिसरः २।८
पडिसिद्धि = प्रतिस्पर्द्धिन् १।२ ३।३७
पढमो = प्रथमः २।२८
पण्णरहो = पञ्चदशः ३।४४
पण्हा, हो = प्रश्नः ३।३३।४।२०
पण्हुदं = प्रस्तुतम् ३।३३
पत्थरो, त्थारो = प्रस्तरः १।१०
पभवइ = प्रभवति ८।२
पमिलइ पमीलइ प्रमीलति ८।५४
पम्हो = पक्ष्म ३।३२
परहुओ = परभृतः १।२९
परिभवइ = परिभवति ८ ३
पलंघणो । प्रलंघनः २।२७
पलित्तं = प्रदीप्तम् २।१२
पल्लत्थं = पर्यस्तम् ३।२१
पल्लाणं = पर्याणम् ३।२१
पवट्ठो = प्रकोष्ठः १।४०
पवणुद्धअं, पवण उद्धअं = पवनोद्धतम् ४।१
पसुत्तं = प्रसुप्तम् १।२
पसूसइ = प्रशुष्यति ९।१२

Aho ! Shrutgyanam

पहरो, हारो = प्रहरः १।१०
पहो = पन्था १ १३
पाइ, पाअइ = जिघ्रति ८।२०
पाअवडणं = पादपतनम् ४।१
पाउअं = प्राकृतम् १।१०
पाउसो = प्रावृट् ४।११-१८
पाडिसिद्धी = प्रतिस्पर्द्धी १।२] ३।३७
पाणाइन्तो = प्राणवान् ४।२५
पाणिअं = पानीयम् १।१८
पाराओ, पारावओ = पारावतः ४।५
पालइ = पद्यते ८।१०
पावडणं = पादपतनम् ४।१
पिआ-पिअरो = पिता ५।३५
पिआ पिअं = पीतापीतम्-४।१
पिक्कं = पक्कम् १।३।३।२
पीणादा-पीणत्तणं = पुट्टं = पृष्ठम् ४।२०
पुडो, ड्डो = पुत्रः १२।५
पुप्फं = पुष्पम् ३।६५-५०
पुरिल्लं = पौरस्त्यम् ४।२५
पुरिसो = पुरुषः १.२३
पुलअइ = पश्यति ८।६९
पुलिशाह = पुरुषस्य ११।१२
पुव्वहण्हो = पूर्वाह्णः ३।८
पुसो, स्सो = पुष्यः ५।८
पुहवि = पृथवी १।१३-२९
पेक्खइ, पश्यति पेच्छते ५-३ ५।१४।१२।१८
पेक्ख = पश्य प्रेक्षते ५-३९
पेत्थं = पिष्टम् १।१२
पेण्डं = पिण्डं = पिण्डम् १।१२
पेम्मं = प्रेम ३।५२
पेरंतं = पर्यन्तम् १।१५।३।८
पोक्खरो = पुष्करः १।२०]११।२९
पोत्थओ = पुस्तकम् १।२०

(फ)

फंसो = स्पर्शः ६।३६] ४।१५
फणसो = पनसः २।३७
फंदणं = स्पंदनम् ३।३६
फरिसो = स्पर्शः ३।६२
फरुसो = पुरुषः २।३६
फलिअं = पाटितम् ८.९
फलिहा = परिखा २।३०-३६
फलिहो = परिघः २।३९-३६
फलिहो = स्फटिकः २ ४-२२
फुडइ, फुडइ = स्फुटति ८५;

(भ)

भअफई = बृहस्पति ४।३०
भइरवो = भरवः.१।३६
भत्तं = भक्तम् ३।१
भत्तारो = भर्ता ५।३१-३३
भद्दं = भद्रम् ४।१२
भमइ = भ्रमति, ८।७१
भमिरो = भ्रमणशीलः ४।२४
भरइ = स्मरति ते ८।१८
भरणिज्जं, भरणिअं = भरणीयं २।२७
भरहो = भरतः २।९
भाइ = बिभेति बिभीते ८।१९
भाअणं = भाजनम् ४।४

Aho ! Shrutgyanam

भाआ, भाअरो = भ्राता ५।३५
भारिआ = भार्या १०।८
भिंगारो = भृङ्गारः १।२८
भिंगो = भृङ्गः १।२८
भिण्डिवालो = भिन्दिपालः ३।४६
भिन्दइ = भिनत्ति ८।३८
भिब्भलो ३-४७ टि०
भिसिणी = बिसिनी २।३८
भुत्तं = भुक्तम् ३।५०
भोत्तुं = भोक्तुं ८।५५
भोत्तूण = भुक्त्वा ८।५५
भोत्तव्वं = भोक्तव्यम् ८।५५

(म)

मअं = मृतम् १।२७
मइ-मए = मया-मयि ६।४६-५२
मइत्तो = मत् ६।४८
मइलं = मलिनं ४।
मउडं = मुकुटम् १।२२।२।११
मउल, लो = मुकुलम् १।२२।२।१२
मऊरो = मयूरः १।८
मऊहो = मयूखः १।८
मओ = मदः २।२
मंसं = मानसम् ४।१६
मंसू = श्मश्रु ४।१५
मग्गो = मार्गः २।२] ३।५०
मच्छिआ = मक्षिका ३।३०
मज्झ = अस्मत् ६।५०-५
मज्झण्णो = मध्याह्नः ३।७
मज्झं = मध्यम् ३।२८
मडं = मृतः १।१५
मढं = मठः २।२४
मणंसिणी = मनस्विनी १।२।४।५
मणोज्ञा = मनोज्ञा ३।५
मण्डूरो = मण्डूकः ४।३३
मंथं = मुस्तम् ४।१५
मम्महो मन्मथः ३।४३
मं, मम = माम् ६।४२
मरइ = म्रियते ८।११
मलइ = मृद्गति ८।५०
मलिणं = मलिनम् ४।३१
मंसं-मांसं = मासम ४।१६
मसाणं = श्मशानम् ३।६
मस्सू = श्मश्रु ३।६।४।१५
मह-मज्झ = मम ६।५०
महअद्धं = ममार्द्धम् ४।१
महुअं = मधूकम् १।२४
महुं = सधु ५।२५-२७-३०
मा अन्दो = माकन्दः ४।३३
माआ = माता ५।३२
माउओ = मातृकः १।२९
माइन्दो = माकन्दः-चूतः ४।३३
माणं सिणी = मनस्विनी १।२]
४।१५
माणुसो = मनुष्यः २।४२
माला = माला ४।१९-२४]६।६०
मासं = मांसम ४।१६
मिअंको = मृगाङ्कः १।२८
मिओ, मिस्सो = मिश्रः ३।५८
मिच्छा = मिथ्या ३।२७
मिलाणं = म्लानम् ३।६२
मिव = इव ९।१६
मइंगो = मृदङ्गः १।३
मुक्खं = मुष्कः ३।४९

Aho ! Shrutgyanam

मुग्गो = मुद्गरः ३।१
गग्गा = मुद्गः ३।१
मुच्छा = मूर्च्छा ३।५१
मुञ्जाणो = मौञ्जायनः १।४४
मुणइ = जानाति ८।२३
मुणालो = मृणालः, नालः १।२९
मुत्ति = मूर्त्तिः ३।२४
मुद्धो = मुग्धः ३।१
मुहं = मुख २।२७
मुहालो = मुखरः २।३०
मूढत्तणं = मूढत्वम् ४।२२
मूढदा = मूढता ४।२२
मे = युष्माकम् ६।३७
मेहला = मेखआ २।२७
मेहो = मेघो २।२०
मेखो = मेघो १०।३
मोत्ता = मुक्ता १।२०
मोरो = मयूरः १।८
मोहो = मयूरखः १।८
म्मिव = द्रवः ९।१६
म्हि-म्हो-म्हु, म्ह = स्मि-स्मः ७।७

(र)

रअणं = रटनं ३।६०
रअदं = रजतम् २।२-७
रच्छा = रथ्या ३।२७
रणं = अरण्णम् १।४
रण्णो, ण्णा, = राज्ञः-राज्ञा ५।३८-४२
रत्तं = रक्तम् ८।६२
रत्ति = रात्रिः १।५८
रमणिज्जं, रमणिअं = रमणीयम् २।१७
रमिज्जइ, रम्मइ, रम्यते ८।५८
रसी-रस्सी = रश्मिः ३।२-५८
राअउलं राउलं राजकुलम् ४।१
राआ = राजा ५।३६-४४
राइणो रण्णो राज्ञः-५।३८-४२
राई = रात्रिः ३।५८
राच्चिना = राज्ञा १०।११
रासहो = रासभः २।२
राहा = राधा २।२७
रिच्छो = रिक्षः १।३०]३।३०
रिणं = ऋनम १।३
रिणो = ऋणः १।३०
रुक्खो = वृक्षः १।३२३।११
रुण्णं = रुदितम् ८।६३
रुद्दो-रुद्रो = रुद्रः ३।४
रुप्पं = रुक्ममम् ३।४९
रुप्पिणी = रुक्मिणी ३।४९
रुन्धइ, रुम्भइ = रुणद्धि ८।४९
रुवइ = रोदिति ८।४२
रूसइ = रुष्यति ८।४६
रे = भो सम्भावणादिषु ९।१५
रोच्छं = रोदिस्यमि ७।१६
रोत्तव्वं = रोदित्तव्यम् ८।५५
रोसाइत्तो = रोषवान् ४।२५
रोत्तु = रुदितुम् ८।५५

(ल)

लग्गइ = लगति ८।५२
लच्छी = लक्ष्मी ३।३०
लट्ठी = यष्टिः २।३२

Aho ! Shrutgyanam

लक्कशो = राक्षसः १।१४
लहुई = लध्वी ३।६५
लाला = राजा ११।१०
लिच्छा = लिप्सा ३।४०
लिज्झइ = लिह्यते ८।५९
लुणइ = नातिलु ८।५६
लुव्वइ = लुणिज्जइ = लूयते ८।५७
लुद्धओ लुब्धकः ३ ३
लुभइ = मार्ष्टि ८।६७
लोणं = लवणम् १।७
लोद्धओ = लुब्धकः १।२०] ३।३

व

वअइ = शक्नोति ८।७०
वअणं = वशनम् २।२।]४२
वअं = वयम् १२।२५
वइदेसो = वैदेशः १।३६
वइदेहो = वैदेहः १।३६
वइरं = वैरम् १।३६
वइसंपाअणो = वैशम्पायनः १।३६
वइसाहो = वैशाखः १।३६
वइसिओ वैशिखः १।३६
वक्कलं = वल्कलम् ३।३
वग्गी = वाग्मी ३।३
वंकं = वक्रम् ४।१५
वच्चइ = व्रजति ८।४७
वच्छाः = वृक्षाः ५।२
वच्छाणा = वत्सानां–वृक्षाणा५।४
वच्छरो = वत्सरः ३।४०
वच्छेण = वत्सेन–वृक्षेण ५।४
वच्छो = वृक्षः १।३२] ३।३१]
५।१–१३–२७] ६।६३
वच्छो वत्सः ३।४० वक्षः ३।३०]
४।१८
वच्छठिअं = वत्से स्थितं ५-१३
वज्जइ = त्रसति८।६६
वज्झओ = वाह्यकः ३।२८
वंचणिअं = वञ्चनीयम्४।१४
वडिसं = वडिशम् २।२३
वड्ढइ = वर्द्धते ८।४४
वणं = वनम् ४।१२।५-३०
वण्णो = वर्णः ४।१५
वण्हि = वह्निः ३।६३
वत्तमाणं = वर्तमानम् ३।२४
वत्ता = वार्त्ता ३।२४
वत्तिआ = वर्त्तिका३।२४
वद्धो = वृद्धः १।२७
वंदं = वृन्दम् ४।२७
वप्फो = वाष्पः उष्मा ३।३८
वंचणीअं = वञ्चनीयम् ४।१४
वम्महो = मन्मथः २।३९] ३।४३
वम्मो = वर्म ४।१८
वम्हञ्ञ = ब्रह्मण्यः १२।७
वम्हणो = ब्राह्मणः ३।८]६।६४
वम्हा, वम्हाणो = ब्रह्मा ५।४७
वरइ = वृणोति, वृणुते ८।१२
वलही = वडभी २।२३
वलिअं = व्यलीकम् १।१८
वले = अयि, अवले ९।१२
वसही = वसतिः २।९
वसहो = वृषभः १।२७]२।४३
वहिरो = वधिरः २।२७
वहुमुहं, वहूमुहं वहुमुखम् ४।१

वहू = वधू ५।१९-२१-२९] ६।६०
वहूहिं = वधूभिः ६।६०
वाइ, वाअइ = म्लायति ८।२१
वाआ = वाच् ४।७
वाअवडणं = पादपतनम् = ४-१
वाऊ = वायुः ५।१४-१८-२७] ६।६०-६१
वाऊहिं = वायुभिः ६।६०
वाऊशे = वायोः ६।६०
वाऊशे, दु, हि = वायोः ६।६१
वाउम्म = वायौ ६।६१
वाऊसु = वायुषु ६।६०
वाऊहितो, सुंतो = वायुभ्यः ६।६२
वाउस्स = वायोः ६।६०
वाउणो, वाउस्स = वायोः ५।१५
वाउओ, वाउणो = वायवः ५।१६
वाउण = वायुना ५।१७
वाऊहिं = वायुभिः ५।१८
वाऊसु = वायुषु ५।१८
वारह = द्वादशः २।१४-४४
वावडो = व्यापृतः १२।४
वाहित्तं = व्याहृतम् ॥ ३।५२
वाहो = वाष्पः ३।३८-४४
विअ = इव ९।३-१६] १२।२४
विअड्डी = वितर्दिः ३।२६
विअणा = वेदना १।३४
विअणो = व्यजनम् १।३
विआणं = वितानम् २।२
विआरिल्लो, विआरुल्लो विकारवान ४।२५
विइण्हो = वितृष्णः १।२८
विउदं = विवृत्तम् १।२९ २।७
विउलं = विपुलम् २।२
विहिअं = बृंहितम १।२८
विक्किवो = विक्लवः ३।३
विक्किणइ, विक्केइ = विक्रीणीते ८।३१
विच्छड्डी = विच्छर्दिः ३।२१
विज्जा = विद्या ३।२७
विज्जुली, विज्जू = विद्युत् ४।९-२६]
विच्छुओ, विञ्छुओ = वृश्चिकः १।१५-२८ ३।४१
विञ्जो = विज्ञः १२।७
विञ्जातो = विज्ञातः १०।९
विञ्झो = विन्ध्यः ३।१४
विड्वो = विटपः २।२०
विण्णाणं = विज्ञानं ३।४४
विण्हू = विष्णुः १।१२ ३।३३
विप्फरिसो = विस्पर्शः ३।५१
विब्भलो = विह्वलः ३।४७
विलाशे = विलासः ११।१
विसइ = ग्रसते ८।२८
विसं = विसम् २।३८
विसी = वृषी १।२८
विसूरइ = खिद्यते ८।६३
विस्सासो = विश्वासः ३।५८
वीरिअं = वीर्यम् ३।२९
वीसत्तो = विश्वस्तः १।१७
वीसम्भो = विश्रम्भः १।१७
वीसासो = विश्वासः ३।६८
विहओ = विस्मयः ३।३२
विह्लो = विह्वलः ३।४७
वीहइ = विभेति, विभेति ८।१९
वुज्झइ = बुध्यते ८।३८

Aho ! Shrutgyanam

बुड्डइ = मज्जति ८ । ६८
वुत्तंतो = वृत्तान्तः १ । २९
वुंदावणं = वृन्दावनम् १ । २९
वेअ=एव ९ । ३
वेअणा = वेदना १ । ३४]४ । १
वेच्छं = वेत्स्यामि ७ । १६
वेज्जं = वैद्यम् ३ । २७
वेडिसो = वेतसः १ । ३]२ । ८
वेडइ = वेष्टते ८ । ४०
वेण्हू = विष्णुः १।१२
वेत्तुं = वेदितुम् ८ ५५
वेत्तव्वं वेदितव्यम् ८।५५
वेत्तूण = विदित्वा ८।५५
वेब्भलो = विह्वलः ३।४७
वेवइ = वेपन्ती ७।११
वेवन्ती = वेपन्ती ७ ११
वेवमाणा = वेपमाना ७।११
वेलुरिअं = वैदूर्यम् ४।३३
वेल्ली = वल्लिः १।२५
वो = वः ६ २७ २९-३७
वोच्छं = वक्ष्यामि ७।१६
वोरं = वदरम् १।६
व्रंदं = वृन्दम् ४।२७] ३।४

(श)

शाहिदाणि = सोढ्वा ११।१६
शिअला, शीआला, शिआल,
शिआलके=शृगालः ११।१७

(स)

सअढो = शकिटः २।२१
सअहुत्तं = शतकृत्वः ४।२५
सआ, सइ = सदा १।११
सइरं = स्वैरम् = १।३६
संवत्तो=सम्बर्तकः ३।२४
संवुदं = संवृत्तम् २।७
संवेल्लइ = संवष्टते ८।४१
संकंतो = संक्रान्तः ३।५६
संका = शङ्का ४ । १७
संकंती = संक्रान्ति ४-१ टि०
सक्कइ = शक्नोति ८।५२
सक्को = शक्रः ३।३
सग्गामो = संग्रामः १०।३
सचावं = सचापम् २।२
सज्जो = षड्जः ३।१
संजदो = संयतः २।७
संजादो = संयानः २।७
सढा = सटा २।२१
सडइ-शीयते ८।५१
सणेहो = स्नेहः ३।४४
संडाविअं = संस्थापितम् १।१०
संठोसंढो = षण्ढः २।४३
सण्णा = संज्ञा ३।५५
सण्हं = श्लक्ष्णम् ३।३३
सद्दालो = शब्दवान् २।४२
सद्दो-शब्दः २ ४२
सनानं = स्नानम् १०।७
सनेहो = स्नेहः १०।७
सप्फं = शष्पम् ३।३५
सब्भावं = सद्भावं ९।२
सभरि = शफरी २।२६
सभलं = सफलम् २।२६
समत्तो = समस्तः ३।१२
समिद्धी = समृद्धिः १।२

संपत्ती = सम्पत्तिः ४.१७
संपदि = संप्रति २।७
संभव = सम्-भवः ८।३
सम्मड्डो = सम्मर्दः ३।१२
सरइ = सरति, ते ८।१२
सरदो = शरद् ४।१०।१८
सरफलं = सरभसम १०.३
सररुहं, सरोरुहं = सरोरुहम ४.१
सरिआ = सरित् ४ ७
सरिच्छं = सदृशम् १।२३।३०]
१।३१
सरिसो = सदृशः १।३१
सरो = सरम् ४।६-१८
सलफा = शलभः १०।३
सलाहा = श्लाघा ३।६३
सवहो = शपथः २।१५-२७
सवमुहओ = सर्वमुखः ४।१
सवमूओ सर्पमुख ४।१
सवोमूओ=सर्वमुखः ४.१
सवोमुओ = सर्पमुखः ४।१
सव्वज्जो = सर्वज्ञः १२।८
सव्वञ्जो = सर्वज्ञः १०।७
सव्वण्णो = सर्वज्ञः १२।८
सव्वे = सर्वे ६-१
सव्वत्थ, सव्वस्सिं सव्वम्मि = सर्वस्मिन् ६।२
सहमाणा, णी = सहमाना ५।२४
सहस्सहुत्तं=सहस्रकृत्वसः ४।२५
सहइ, ए = सहते ७।१
सहा = सभा २।२७
सहामि = सहे ७।३
सहीअइ = सह्यते ७।८
सहिज्जइ = सह्यते ७।८
साअरो = सागरः २।२
सामिद्धी = समृद्धिः १।२
सारङ्गो = शारङ्गः ३।६०
सारिच्छं = सदृक्षम् १.२
साल = शाले=५।१५
सि = असि ७.६
सिआलो = शृगालः १।२८
सिआसिअं = सितासितम् ४ १
सिङ्गारो = शृङ्गारः १।२८
सिट्ठी = सृष्टिः १।२८
सिढिलो = शिथिलः २।२
सिणिद्धो = स्निग्धः ३।१
सिण्हो = शिश्नः ३।३३
सित्थओ = सिक्थकम् ३।१
सिन्दूरं = सिन्दूरम् १।१२
सिन्धवं = सैन्धवम् १।३८
सिभा = शिफा २।२६
सिं = तेषाम्-तासाम् ६।१२
सिरं = शिरः ४।११
सिरवेअणं, सिरोवेअणं = शिरोवेदना ४।१
सिरी = श्रीः ३।६२
सिलिट्ठं = श्लिष्टम् ३।६०
सिविणो = स्वप्नः २।३ ३।६२
सीआसीअं = सीतासीतम् ४।१
सीभरो = शीकरः २।५
सीहो = सिंहः १।१७
सुइदी = सुकृतिः २।७
सुउरिसो = सुपुरुषः २।२

Aho ! Shrutgyanam

सुज्जो = सूर्यः ३।१९
सुणइ = शृणोति ८।५
सुण्डो = शुराडः १।४४
सुन्देरं = सौन्दर्य्यम् [१।५-४४] ३।१८
सुत्तो-सुप्तः ३।१] ७।६
सुपइ = मार्ष्टि ८।६७
सुप्पणहा = सूर्पनखा ५।२४
सुमरइ = स्मरति, ते ८।१८] १२।१७
सुव्वइ = श्रूयते ८।५७] ७ ९
सू = धिक् ९।१४
सूई = सूची २।२
सूरो = सूर्य्यः ३ । १९
सूसइ = शुष्यति ८।४६
से = तस्य-तस्याः ६ ११
सेच्छं = शैत्यम् १।३५
सेज्जा = शय्या १।५।३।११
सेंदूर = सिन्दूरम् १।१२
सेभालिआ = सेफालिका २ २६
सेवा, सेव्वा = सेवा ३।५८
सेलो = शैलः १।३५
सो = सः ६।२२
सोइहि = शोचति ५।३२
सोअमल्लं = सौकुमार्य्यम् [१-२२] ३।२१
सोऊण, सोइहि = श्रुत्वा ४।२३
सोच्छं = श्रोष्यामि ७ १६
सोच्छिइ, सोच्छिहिइ = श्रोष्यति ७।१७
सोच्छिन्ति, सोच्छिहिन्ति = श्रोष्यन्ति ७।१७
सोच्छिसि, सोच्छिहिसि = श्रोष्यसि ७।१७
सोच्छिथा, सोच्छिहित्था = श्रोष्यथ ७।१७
सोत्तं = स्रोतम् ३।५२
सोमालो = सुकुमारः २ ३०
सोम्मो = सौम्यः ३।२
सोरिअं = शौर्यम् ३।२०
सोस्सं = शुष्म ३ २] ३।३२
सोहन्ति = शोभन्ते ५-२

ह

हके, हगे = अहम् ११ ९(१)

---

(१) अह्मे = वयं ६ । ४३
मे = मया ६ ४६
ममाइ = मया ६।४५
अह्मेहिं = अस्माभिः ६।४७
मत्त = मत् ६ ४८
मइत्तो = मत् ६।४८
ममादो, दु, हि = ६।४८
अह्माहितो, सुंतो = अस्मत् ६।४९
मे = मम, मे ६।५०
मम = मम, मे ६।५०
मह = मम, मे ६।५०
मज्झ = मम, मे ६।५०
मज्झणो = अस्माकम् ६।५१
ममम्मि = मयि ६।५२
अह्मेसु = अस्मासु ६।५
प्रसङ्गाद्युष्मद्रूपाण्यपि प्रदर्श्यन्ते
तुम्हे = यूयं, युष्मान् ६।२८,२९

Aho ! Shrutgyanam

हडक्के = हृदयम् ११।६
हणुमन्तो, हणुमा = हनुमान्४।२५
हत्थो = हस्तः ३।१२=५०।
हदो = हृतः २।७
हं = अहम् ६।४०'५३
हंसो = हस्वः ४।१५
हम्मइ = हन्ति ८।४'१
हरिसइ = हर्षति, हृष्यति ८।११
हरिसो = हर्षः ३।६२
हलद्दा, हलद्दी = हरिद्रा १।१३ ५।२४ २।३०
हलिओ = हालिकः १।१०
हविं = हाविष् ५।२'१]४।६
हशिदु, दि, दे, द = हसितः ११।११
हसई = हसन्ती ७।११
हसंतो = हसन् ७।१०
हसिरो = हसनशीलः ४।२४
हस्सइ, हसिज्जइ = हस्यते ७.९ ८।५८
हसंति = हसन्ति ७।४
हसमाणो = हसमानः ७।१०
हसह = हसथ ७।४
हसिहिइ = हसिष्यति, ने ७।१२
हसिहिंति = हसिष्यन्ति ७ १२
हसमाणा = हसमाना ७।११
हसिहिमो, मु, म = हस्सिस्सामो
हसिहामो हसिष्यामः ७।१५
हसिहित्था = हसिष्यामः ७।१५
हालिओ = हालिकः १।१०
हिअअं = हृदयम् १।२८
हित अकं = हृदयम् १०।१४
हित्थं = त्रस्तम् ८।९२-३७
हिरी = ह्रीः ३।६२
हिरे = सम्भाषणादिषु ९।१९
हीरइ = ह्रियते ८।६०
हुं पृच्छायाम् ९।२ निश्चये ९।६
हुअं = भूतम् ८।२
हुणइ = जुहोति ८ ५६-'५७
हुवइ = भवति ८।१
हुव्वइ, हुणिज्जइ = हूयते ८।'५७
हुत्तं-हुतम् ४।२'५
हुवीअ = अभवत् ७।२३
हुवसु = भव ९।२
होइ = भवति ८।१
होज्ज होज्जा भवति भविष्यति भवतु ७।२०
होस्सं = भविष्यामि ७।१४
होस्सामि, होहामि, होहिमि, भविष्यामि ७।१४

तुमए, तुमे = त्वया, त्वयि ६।३०
तुज्झेहिं, तुह्मेहिं, तुम्महि = युष्माभिः । ६।३४
तत्तो, = त्वत् ६।३'५
तुमादो, दु, हि = त्वत् ६।३५
तुम्हाहिंतो, सुन्तो = युष्मत् ६ ३६
मे = युष्माकम् ६।३७
तुज्झाणं = युष्माकम् ६।३७
तुह्माणं = युष्माकम् ६।३७
तुमम्मि = त्वयि ६।३८
तुज्झेसु = युष्मासु ६।३९
तुह्मेसु = युष्मासु ६।३९
विस्तरस्त्वन्यत्र

Aho ! Shrutgyanam

होहिइ = भविष्यति ७।१२
होहिंति = भविष्यन्ति ७ १२
होहिमो, मुअ, होस्सामो, होहामो = भविष्यामः ७।१५
होहित्था = होहिस्सा भविष्यामः ७।१५
होहीअ = अभूत् ७।२४
होहिस्साम = भविष्यामः ७।१५
मुद्रण समयेऽप्राप्तांशाः।
आलले = आदरः ११६
इर = अतिश्चिता ख्याने
ओ = सूचनादिषु
कज्जक रसरंजिएहिं =
कज्जल रस रञ्जिताभ्याम् ९।१०
कलह वंधेण = कलहबन्धेन९।११
कसटं = कष्टम् ९ ६
केसवो = केशवः १०।३
क्खु = खलु १०।३
गकनम् = गमनम् ।१०।३
गहिदच्छले = गृहीतच्छलः ११।५
गुरुओ = गुरुः
गोविंतो = गोविन्दः १०।३
णाअ = नागः ९।१५
णिज्झरो = णिर्झरः १०।३
तलुनी = तरुणी १०।५
दस्के = दक्षः ११।८
दसवतनो = दश वदनः १०।३
पलिचए = परिचयः ११।५
पिव = इव १०।१२
पुलिशा = पुरुषाः ११।१२
पुलिशे = पुरुषः ।११।१४
पुलिशश्श = पुरुषस्य ।११।१२
माथवो = माधवः १०।३
माशे = माषः ११।१
यायते = जायते ११।४
रक्खसो = राक्षसः ९।६
वग्घो = व्याघ्रः १०।३।
विलाशे = विलासः ११।१।
वियले = विजलः ११।५।

इति शम्

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam